हिन्दी उपन्यास कोश

खण्ड २

१९१८–१९३६

लेखक

डॉ० गोपाल राय

ग्रन्थ निकेतन, पटना-६

श्रद्धेय डॉ० नगेन्द्र को
सादर

पुरोवाक्

'हिन्दी उपन्यास-कोश' का महत्त्व समझनेवाले पाठकों को उसके द्वितीय खंड के प्रकाशन से निश्चित ही आह्लाद और सन्तोष होगा। इस खंड में १९१८ ई० से १९३६ ई० तक के उपन्यासों का प्रामाणिक विवरण संकलित है।

डॉ० गोपाल राय ने प्रामाणिकता पर कितना ध्यान रखा है, यह प्रेमचन्द के उपन्यासों की मीमांसा देखने से ही स्पष्ट हो जाता है। प्रेमचन्द के उपन्यासों की प्रकाशन-तिथियों को लेकर भी भूलें और भ्रान्तियाँ हो सकती हैं, यह प्रायः अकल्पनीय है किन्तु डॉ० राय ने उनका सविस्तर विवेचन किया है। इस प्रसंग में उनका यह कथन ध्यान देने योग्य है : "हिन्दी के सर्वश्रेष्ठ और सर्वप्रिय उपन्यासकार प्रेमचन्द को दिवंगत हुए अभी तैंतीस वर्ष भी पूरे नहीं हुए हैं पर उनके उपन्यासों के रचना-काल तथा प्रकाशन-तिथियों के सम्बन्ध में हिन्दी आलोचना और अनुसन्धान-ग्रन्थों में भ्रान्तिपूर्ण और अप्रामाणिक सूचनाओं का इतना अंबार जमा हो चुका है कि यदि उनका उल्लेख मात्र किया जाए तो वह उबाने और क्षोभ पैदा करने वाला होगा।" जहाँ प्रेमचन्द जैसे महान् और लोकप्रिय उपन्यासकार की कृतियों की यह स्थिति है, वहाँ अन्य उपन्यासकारों की स्थिति का सहज ही अनुमान किया जा सकता है।

इस कोश के द्वारा भ्रान्तियों का निवारण कर तथा प्रामाणिक विवरण प्रस्तुत कर डॉ० राय ने हिन्दी उपन्यास-साहित्य के वैज्ञानिक अध्ययन के लिये सुदृढ़ आधार निर्मित किया है, साथ ही उपन्यासेतर क्षेत्रों में ऐसा काम करने के लिये श्लाघ्य प्रतिमान भी स्थापित किया है। यही वास्तविक शोध है।

हिन्दी के अनेक लब्धख्याति आलोचकों ने और विद्वानों ने मुझसे 'उपन्यास-कोश—प्रथम खंड' की मुक्तकंठ प्रशंसा की। मुझे विश्वास है कि यह द्वितीय खंड उन्हें द्विगुण प्रशस्य प्रतीत होगा।

मैं इस महत्त्वपूर्ण तथा आयाससाध्य कृति के लिये डॉ० गोपाल राय को हार्दिक बधाई देता हूँ और शुभाशंसा करता हूँ कि 'उपन्यास-कोश' प्रमाण के रूप में चर्चित एवं उद्धृत हो।

पटना

१८ सितम्बर, १९६९

देवेन्द्रनाथ शर्मा
आचार्य तथा अध्यक्ष
हिन्दी विभाग
पटना विश्वविद्यालय

प्राक्कथन

हिन्दी उपन्यास कोश, खंड १, के प्रकाशन के लगभग आठ महीने के भीतर ही इसका दूसरा खंड प्रस्तुत करते हुए मैं सन्तोष और सुख या अनुभव कर रहा हूँ। हिन्दी प्रकाशन-व्यवसाय में छायी मन्दी को देखते हुए इतने व्ययसाध्य प्रकाशन की सफल निष्पत्ति कम से कम सन्तोष का विषय तो है ही। ग्रन्थ निकेतन के संचालक श्री गिरीश प्रसाद सिंह की अपूर्व निष्ठा, जीतोड़ श्रम और सतत जागरूकता के फलस्वरूप ही इस ग्रन्थ का प्रकाशन इतना शीघ्र हो पाया है; अतः उन्हें प्राक्कथन के आरम्भ में ही साधुवाद दे रहा हूँ।

'हिन्दी उपन्यास कोश' के प्रथम खंड में सन् १८०० ई० से सन् १९१७ ई० तक के बीच प्रकाशित उपन्यासों और कथापुस्तकों का परिचय प्रस्तुत किया गया था। द्वितीय खंड में सन् १९१८ ई० से १९३६ ई० के बीच प्रकाशित उपन्यासों का विवरण दिया गया है। यह अवधि हिन्दी उपन्यासालोचन में 'प्रेमचन्द युग' के नाम से प्रसिद्ध है। यों प्रेमचन्द ने लिखना १९०० ई० के आसपास ही आरम्भ कर दिया था पर हिन्दी उपन्यास क्षेत्र में उनका वास्तविक रूप से पदार्पण 'सेवासदन' के साथ हुआ, जिसका प्रकाशन-वर्ष १९१८ ई० है। इसके बाद प्रेमचन्द १९३६ ई० तक, यानी मृत्युपर्यन्त, हिन्दी उपन्यास को अपनी कृतियों से गति और दिशा देते रहे। उन्होंने इस अवधि में ११ उपन्यासों की रचना की और इन ग्यारह उपन्यासों से ही उन्हें इतना यश और लोकप्रियता मिली कि इस युग का नाम 'प्रेमचन्द युग' पड़ गया। मजे की बात यह है कि 'प्रेमचन्द युग' की चर्चा के प्रसंग में समालोचक इस बात को प्रायः भूल जाते हैं कि इस अवधि में अन्य लेखकों ने भी उपन्यास-रचना की थी। इसका एक प्रमुख कारण इस अवधि में लिखे गये उपन्यासों की प्रामाणिक तालिका का अभाव भी है। अधिकतर लोग इस तथ्य से अनभिज्ञ हैं कि प्रेमचन्द के उपन्यासों के अलावे इस युग में चार सौ साठ मौलिक उपन्यास लिखे गये थे तथा तीन सौ चौवालीस उपन्यासों के विभिन्न भाषाओं से अनुवाद प्रस्तुत किये गये थे। इसके अतिरिक्त ८० पौराणिक कथाएँ भी प्रकाशित हुई थीं। ये आँकड़े उन पुस्तकों के हैं जिनका परिचय अथवा सूचना प्रस्तुत ग्रन्थ में दी गयी है। सम्भव है कुछ और पुस्तकें इस अवधि लिखी गयी हों जिनकी सूचना प्रस्तुत पंक्तियों के लेखक को न हो।

ये आँकड़े कम से कम यह तो सिद्ध करते ही हैं कि चाहे प्रकार की दृष्टि से इस युग के प्रेमचन्देतर उपन्यास अधिक महत्त्वपूर्ण न हों, पर परिमाण की दृष्टि से वे निश्चय ही अनुपेक्षणीय नहीं हैं। इन उपन्यासों की उपेक्षा अज्ञान के कारण हुई है। आलोचकों ने बिना इनका अध्ययन किये ही इन्हें रद्दी की टोकरी में डाल दिया है। यदि इन उप-न्यासों का सूक्ष्मता और गम्भीरता के साथ अध्ययन किया जाए तो अनेक नये तथ्य हाथ

की ग्रन्थसूचियों अथवा 'हिन्दी पुस्तक साहित्य' से प्राप्त की गयी हैं। जिन स्रोतों से सूचनाएँ प्राप्त की गयी हैं उनका उल्लेख तत्टिप्पणियों में यथास्थान कर दिया गया है।

प्रस्तुत ग्रन्थ में प्रत्येक पुस्तक के लेखक, प्रकाशक और प्रकाशन काल की सूचना देने के बाद संक्षेप में इसके विषय का भी संकेत दे दिया गया है। यदि पुस्तक किसी विशेष दृष्टि से महत्त्वपूर्ण है तो उसका भी उल्लेख कर दिया गया है। जिन पुस्तकों का रचना या प्रकाशन-काल विवादग्रस्त है, उन पर विस्तार से विचार किया गया है और प्रमाणों के आधार पर किसी विशेष तिथि के सम्बन्ध में निर्णय किये गये हैं।

सुविधा के लिए पुस्तक दो खंडों में विभक्त है। प्रथम खंड में मौलिक उपन्यासों के और द्वितीय खंड में अनूदित उपन्यासों के विवरण संकलित हैं। मौलिक उपन्यासों का 'सामान्य उपन्यास', 'ऐतिहासिक उपन्यास', 'अपराध प्रधान और जासूसी कथाएँ' तथा 'ऐयारी तिलस्मप्रधान कथापुस्तकें', शीर्षकों में विभाजन कर पुनः प्रत्येक शीर्षक के अन्तर्गत पहले प्रमुख लेखकों की कृतियों का और तदनन्तर फुटकल पुस्तकों का विवरण दिया गया है। अनुवाद खंड में भी विभाजन का लगभग यही क्रम है। अन्त में पौराणिक कथाओं के विवरण हैं।

अनुक्रमणिकाओं में तीन प्रकार की सूचियाँ प्रस्तुत की गयी हैं। सर्वप्रथम उपर्युक्त वर्गीकरण को ध्यान में रखते हुए उपन्यासों की तिथिक्रमीय सूची दी गयी है। उसके बाद 'मौलिक' और 'अनूदित' इन दो शीर्षकों के अन्तर्गत अक्षरक्रम से उपन्यास-कारों के नाम और उनकी कृतियों की सूची है। अन्त में ग्रन्थानुक्रमणिका है, जो अक्षरक्रम से बनायी गयी है।

इस ग्रन्थ के निर्माण में इतने लोगों का मुझे सहयोग मिला है कि सबका उल्लेख करने में कई पृष्ठ लग जाएँगे। आचार्य देवेन्द्रनाथ शर्मा ने प्रथम खंड के 'पुरोवाक्' में लिखा था, "मैं इस कोश के उत्तरार्ध की भी उत्सुकता से प्रतीक्षा कर रहा हूँ जिसमें १९१७ ई० के बाद के हिन्दी उपन्यासों का विवरण रहेगा।" आज इस ग्रन्थ को प्रकाशित देखकर उन्हें कितनी प्रसन्नता होगी, इसे मेरे सिवा कोई नहीं जान सकता। उनके प्रोत्साहन का ही फल है कि दूसरा खंड इतना शीघ्र प्रकाश में आ गया। यद्यपि अभी १९३६ ई० के बाद के उपन्यासों का विवरण प्रस्तुत करना शेष है, पर गुरुकृपा से तीसरे और चौथे खंडों में वह विवरण भी आ जाएगा, इसका मुझे पूरा विश्वास है।

ग्रन्थ हिन्दी के वरेण्य समालोचक और सहृदयता तथा अनुशासन के अद्भुत समन्वय, डॉ० नगेन्द्र, को सादर समर्पित है। इस अववसर पर उन्हें मेरी सश्रद्ध प्रणति।

ग्रन्थ के प्रकाशक श्री गिरीश प्रसाद सिंह को आरम्भ में ही साधुवाद दे चुका हूँ। उन्होंने अनुक्रमणिकाओं के निर्माण में भी मेरी काफी मदद की है, जिसके लिए मैं उनका हृदय से अनुगृहीत हूँ। अनुक्रमणिकाओं के निर्माण तथा प्रूफ संशोधन में श्री सकलदेव शर्मा, प्रो० सवित्री शर्मा तथा श्री रमाकान्त राय का भी सहयोग मिला है जिसके लिए मैं उन्हें धन्यवाद दिये बिना नहीं रह सकता। सिनहा पुस्तकालय, पटना के

विषय-सूची

मौलिक उपन्यास

ऐतिहासिक उपन्यास

अनूदित उपन्यास

खंड १

मौलिक उपन्यास

मौलिक उपन्यास

जैसा 'प्राक्कथन' में स्पष्ट किया जा चुका है, १९१८-१९३६ ई० के बीच रचित हिन्दी उपन्यास साहित्य को 'प्रेमचन्द युग' की संज्ञा दी जाती है। वस्तुतः प्रेमचन्द इस अवधि के सर्वप्रमुख उपन्यासकार थे और इस युग का उपन्यास साहित्य किसी न किसी रूप में उनसे अवश्य प्रभावित है। प्रेमचन्द ने हिन्दी उपन्यास को पहली बार सही जमीन प्रदान की और उसे आभिजात्य से मंडित किया। इस युग पर प्रेमचन्द एक प्रकार से छाये रहे। पर इसका यह अर्थ नहीं कि इस अवधि में दूसरे उपन्यासकार हुए ही नहीं। प्रायः हिन्दी उपन्यासविषयक शोध और आलोचना ग्रन्थों में प्रेमचन्द-युगीन उपन्यास साहित्य के विवेचन-क्रम में केवल प्रेमचन्द के उपन्यासों के विवेचन से ही सन्तोषकर लेने की परिपाटी सी चल पड़ी है। आलोचक और शोधकर्ता जैसे यह मान बैठे हैं कि प्रेमचन्द युग में और कोई प्रमुख उपन्यासकार हुआ ही नहीं। यह तो सही है कि प्रेमचन्द के सामने इस अवधि के अन्य उपन्यासकार बहुत साधारण प्रतीत होते हैं, पर जब तक इस काल के सभी उपन्यासकारों की कृतियों का विवेचन-विश्लेपण सम्यक् रीति से न किया जाए तब तक इस युग की सामान्य प्रवृत्ति, रुचि और भावना को समझना मुश्किल है। अतएव इस ग्रन्थ में प्रेमचन्द के अतिरिक्त इस काल के अन्य सभी उपन्यासों का विवरण प्रस्तुत किया जा रहा है; पहले प्रमुख उपन्यासकारों की कृतियों का फिर फुटकल उपन्यासों का।

प्रेमचन्द के उपन्यास

हिन्दी के सर्वश्रेष्ठ और सर्वप्रिय उपन्यासकार प्रेमचन्द को दिवंगत हुए अभी तैंतीस वर्ष भी पूरे नहीं हुए हैं, पर उनके उपन्यासों के रचना-काल तथा प्रकाशन-तिथियों के सम्बन्ध में हिन्दी आलोचना और अनुसन्धान-ग्रन्थों में भ्रान्तिपूर्ण और अप्रामाणिक सूचनाओं का इतना अम्बार जमा हो चुका है कि यदि उनका उल्लेख मात्र किया जाए, तो वह उबाने और क्षोभ पैदा करने वाला होगा। प्रेमचन्द के सम्बन्ध में अनेक छोटी-बड़ी पुस्तकें हिन्दी में लिखी गयी हैं, पर किसी ने भी, श्रीमती डॉ० गीता लाल के जनवरी १९६०ई० में 'साहित्य' में प्रकाशित 'प्रेमचन्द के जीवन तथा साहित्य-सम्बन्धी तिथियों में भ्रान्तियाँ' शीर्षक निबन्ध के पूर्व,[१] प्रेमचन्द के उपन्यासों की प्रकाशन-तिथियों के सम्बन्ध में गम्भीरता से विचार नहीं किया है। इन तिथियों के सम्बन्ध में हिन्दी आलोचकों और शोधकर्ताओं का मनमानापन देखकर दाँतों तले उँगली दबानी पड़ती है। बिना कोई प्रमाण दिये, इन आलोचक-प्रवरों ने अशुद्ध तिथियों की सूचना इतने धड़ल्ले

१. डॉ० गीता लाल, प्रेमचन्द के जीवन तथा साहित्य सम्बन्धी तिथियों में भ्रान्तियाँ, साहित्य, जनवरी १९६०।

डॉ० माताप्रसाद गुप्त ने[1] 'सेवा सदन' का प्रकाशन-काल १९१८ ई० बताया है, जो शुद्ध है। इनमें से प्रथम दो लेखकों ने अपने कथन की पुष्टि में कोई प्रमाण नहीं दिया है। डॉ० गीता लाल के प्रमाण भी पर्याप्त नहीं हैं। डॉ० माताप्रसाद गुप्त ने अपने 'प्रेमचन्द की कृतियों की प्रकाशन-तिथियाँ' शीर्षक निबन्ध में १९१९ ई० के बंगाल के गजट में प्रकाशित प्रथम त्रैमासिक पुस्तक-सूची के आधार पर 'सेवासदन' के प्रथम संस्करण की प्रकाशन-तिथि '१५-१२-१८' दी है, जो एक पुष्ट प्रमाण है।

कुछ दिन पूर्व, १९६२ ई० में, श्री अमृत राय द्वारा लिखित एवं सम्पादित 'प्रेमचन्द : कलम का सिपाही' तथा प्रेमचन्द से सम्बद्ध अन्य कई ग्रन्थ प्रकाशित हुए। यह देख कर आश्चर्य होता है कि प्रेमचन्द के सम्बन्ध में प्रामाणिक सूचनाएँ प्रस्तुत करने का वादा करने वाले इन नवीनतम ग्रन्थ में भी प्रेमचन्द के उपन्यासों की प्रकाशन-तिथियों के सम्बन्ध में अनेक भ्रान्तियाँ हैं। 'सेवासदन' के प्रकाशनकाल के सम्बन्ध में उक्त ग्रन्थ में कहा गया है: "छपाई में लगभग साल भर का समय लेकर सेवा सदन १९१९ के मध्य में प्रकाशित हुआ।"[2] इस सूचना का आधार लेखक की कल्पना के अलावा और कुछ नहीं हो सकता। पूरे ग्रन्थ में कहीं भी इस कथन के लिए कोई प्रमाण नही दिया गया है। चैतन्य पुस्तकालय, पटना में उपलब्ध 'सेवासदन' की प्रति में प्रदत्त सूचना के प्रकाश में यह सूचना मनमानेपन का उदाहरण मात्र सिद्ध होती है। उक्त प्रति में 'सेवासदन' के प्रथम संस्करण का प्रकाशन-काल सं० १९७५ वि० मुद्रित है। सं० १९७५ वि० का अर्थ है मार्च (लगभग) १९१८ से मार्च (लगभग) १९१९ ई० के बीच की अवधि। पर किसी भी हालत में हम सं० १९७५ को खींच कर १९१९ के मध्य में नहीं ला सकते। इसके अतिरिक्त खुद प्रेमचन्द ने ७४ अप्रैल १९१९ को लिखित अपने एक पत्र में श्री दयानरायन निगम को सूचित किया था, "आप यह सुनकर खुश होंगे कि मेरे हिन्दी नाविल ने खूब शोहरत हासिल की और अक्सर नक्क़ादों ने उसे हिन्दी जबान का बेहतरीन नाविल कहा है। यह बाज़ारे-हुस्न का तर्जुमा है।"[3] इन पंक्तियों से स्पष्ट है कि 'सेवा सदन' अप्रैल १९१९ से बहुत पहले प्रकाशित हो चुका था। फिर फरवरी १९१९ ई० की 'सरस्वती' में 'सेवा सदन' का निम्न-लिखित परिचय प्रकाशित हुआ था: "सेवा-सदन; श्रीयुक्त प्रेमचन्द; प्रकाशक : महावीर प्रसाद पोद्दार, व्यवस्थापक हिन्दी पुस्तक एजेंसी, कलकत्ता; पृ० ५१२। भाषा सरल और लिखने की शैली रोचक है। यह उपन्यास की पुस्तक वेश्या-नृत्यादि बहुतेरी सामाजिक कुरीतियों को दिखलाती है।"[4] जब फरवरी १९१९ में 'सेवा सदन'

१. साहित्य, वर्ष ११, अंक १, अप्रैल १९६० ई०।
२. अमृत राय, प्रेमचन्द : कलम का सिपाही, जीवनी खंड, पृ० १९३ तथा ६१४।
३. वही, चिट्ठी-पत्री १, पृ० ८३।
४. सरस्वती, भाग २०, सं० २, फरवरी १९१९ ई०

निगम के नाम पत्रों के आधार पर मूल उर्दू पांडुलिपि का लेखन-काल जनवरी १९१७ से जनवरी १९१८ तक ठहरता है, पुष्ट नहीं मालूम पड़ता।[१]

'बाजारे हुस्न' का लेखन अगस्त १९१७ या उसके तनिक बाद समाप्त हो गया, पर उर्दू में प्रकाशकों के अभाव के कारण यह तुरन्त प्रकाशित न हो सका। इधर हिन्दी में उपन्यास-पाठकों और प्रकाशकों का अभाव नहीं था। प्रेमचन्द ने उर्दू से निराश हो कर अपने उपन्यास को पहले हिन्दी में प्रकाशित करने का निश्चय किया। दयानरायन निगम के नाम ८ अगस्त १९१७ को लिखे गये अपने पत्र में उन्होंने अपना यह निश्चय व्यक्त किया था।[2]

हिन्दी में 'सेवा सदन' का लेखन-काल लगभग जनवरी १९१८ से मई १९१८ तक ठहरता है। दयानरायन निगम के नाम लिखे गये प्रेमचन्द के पत्रों से यह बात प्रमाणित होती है। २९ जनवरी को उन्होंने लिखा था, "अपना नाविल हिन्दी में लिख रहा हूँ। फुर्सत नहीं मिलती। न कोई तातील ही पड़ती है। मगर आज इरादा करता हूँ कि साफ़ करने में हाथ लगा दूँ।"[३] फिर २ जून १९१८ को निगम साहब के पास लिखे अपने एक पत्र में प्रेमचन्द ने सूचित किया, "...अपने हिन्दी नाविल को प्रेस में देना है।"[४] स्पष्ट है कि इसके पूर्व 'बाजारे-हुस्न' का हिन्दीकरण 'सेवा सदन' के नाम से समाप्त हो चुका था। दिसम्बर १९१८ के पूर्व 'सेवा सदन' हिन्दी पुस्तक एजेंसी, कलकत्ता से प्रकाशित भी हो गया।

अमृत राय के अनुसार 'बाजारे हुस्न' अपने मूल (उर्दू) रूप में १९२० ई० में 'कहकशाँ' नामक उर्दू पत्र के सम्पादक जनाब इम्तयाज अली 'ताज' द्वारा प्रकाशित हुआ।[५] पर यह सूचना अशुद्ध है। १६ फरवरी १९२२ ई० तक 'बाजारे हुस्न' नहीं छपा था। १६ फरवरी १९२२ के अपने पत्र में प्रेमचन्द ने 'ताज' साहब को लिखा था, "जब तक 'बाजारे हुस्न' प्रेस से निकलेगा, शायद नया नाविल का हिस्सये-अव्वल आपकी खिदमत में हाजिर हो जाये।"[६] सम्भवत: मई १९२२ के पूर्व 'बाजारे हुस्न' प्रकाशित हो चुका था।[७] जो हो, उर्दू पाठकों और आलोचकों ने इस उपन्यास का कोई खास स्वागत नहीं किया। अमृत राय ने इसका कारण यह बताया है कि "उर्दू वालों के लिए कोठे की जिन्दगी और उसके मसालों में कोई नयापन नहीं था। नजीर अहमद, सरशार और मिर्जा रुसवा जैसे लोग उसके बारे में बहुत लिख चुके थे और बहुत अच्छा लिख चुके थे।"[८]

---

१. अमृत राय, प्रेमचन्द : कलम का सिपाही, जीवनी खंड, पृ० ६५४।
२. प्रेमचन्द : चिट्ठी-पत्री–२, पृ० ६५।
३. अमृत राय, प्रेमचन्द : कलम का सिपाही, जीवनी खंड, पृ० १८०।
४. अमृत राय, प्रेमचन्द : कलम का सिपाही, चिट्ठी-पत्री १, पृ० ७०।
५. वही, जीवनी खंड, पृ० १६४।
६. वही, चिट्ठी पत्री-२, पृ० १३५।
७. चिट्ठी-पत्री–२, पृ० १२२।
८. प्रेमचन्द : कलम का सिपाही, जीवनी-खंड, पृ० १६४।

प्राप्त करने में असमर्थ रहा है, पर अप्रैल १९२१ ई० की 'सरस्वती' के 'पुस्तक परिचय' स्तम्भ में इस उपन्यास का एक संक्षिप्त 'परिचय' प्रकाशित हुआ था, जिसकी कुछ महत्त्वपूर्ण पंक्तियाँ निम्नलिखित हैं :—

"वरदान; लेखक : श्रीयुत प्रेमचन्द; प्रकाशक : मैनेजर, ग्रन्थ भण्डार, लेडी हार्डिंज रोड, माटूंगा, बम्बई। हिन्दी में अभी तक उच्च कोटि के मौलिक उपन्यासों का अभाव है। प्रेमचन्द जी ने 'सेवा सदन' लिख कर हिन्दी के उपन्यास-लेखकों में सर्वोच्च स्थान प्राप्त किया है। यह आपका दूसरा उपन्यास है। इसमें वह विशेषता नहीं है जो आपके 'सेवा सदन' में है। ··छोटे आकार में २३९ पृष्ठों की सुन्दर जिल्द बँधी हुई पुस्तक का मूल्य २।) है।"[1]

उक्त परिचय से यह स्पष्ट है कि 'वरदान' 'सेवा सदन' के बाद और अप्रैल १९२१ ई० के निकट पूर्व में, सम्भवतः १९२१ ई० में ही, ग्रन्थ भंडार, बम्बई से प्रकाशित हुआ था। अमृत राय के अनुसार "इसका प्रकाशन उर्दू संस्करण के लगभग नौ बरस बाद १९२१ में ग्रन्थ भण्डार, बम्बई से हुआ। लेखक की ओर से प्रकाशक को दिये गये अधिकार-पत्र पर १८ अक्टूबर १९२० की तिथि अंकित है। मई १९२१ में प्रकाशित एक पुस्तक के पीछे उसका विज्ञापन भी मिलता है।"[2]

इस उपन्यास के रचना-काल और प्रकाशन-तिथि के सम्बन्ध में अनेक अनिश्चित और प्रमाणरहित मत हिन्दी में प्रचलित हैं। हंसराज रहबर के अनुसार "प्रेमचन्द ने यह उपन्यास सन् १९०५-०६ में लिखा।"[3] रामदीन गुप्त के अनुसार "वरदान, हिन्दी में प्रेमचन्द की सम्भवतः प्रथम रचना है।···'वरदान' के रचना-काल के आसपास ही सन् १९०६ में गोर्की का विश्व विश्रुत उपन्यास 'माँ' प्रकाशित हुआ था।"[4] डॉ० राजेश्वर गुरु इसे प्राक्-'सेवासदन' कृति मानते हैं, पर इसका रचना-काल या प्रकाशन-तिथि बताने का प्रयास नहीं करते।[5] ब्रजरत्नदास के अनुसार, "इनका (प्रेमचन्द का)[6] एक परिहास-प्रधान उपन्यास, वरदान उर्दू में लिखा गया था। पर जब इस भाषा में न छप सका तब उसका सार हिन्दी में इस नाम से सं० १९६४ (सन् १९०७ ई०) के लगभग छपा था।[7] डॉ० प्रतापनारायण टंडन के अनुसार इसका प्रकाशन १९२० ई० में हुआ।

---

१. सरस्वती, वर्ष २२, अंक ४, अप्रैल १९२१, पुस्तक-परिचय।

२. अमृत राय, प्रेमचन्द : कलम का सिपाही, जीवनी-खंड, पृ० ६५४।

३. हंसराज रहबर, प्रेमचन्द : जीवन और कृतित्व, पृ० २१२।

४. रामदीन गुप्त, प्रेमचन्द और गाँधीवाद, पृ० १४२।

५. डॉ० राजेश्वर गुरु, प्रेमचन्द : एक अध्ययन, पृ० १३५।

६. कोष्ठक के शब्द प्रस्तुत लेखक के हैं।

७. ब्रजरत्नदास, हिन्दी-उपन्यास, पृ० १८६।

ई० सिद्ध किया है। डॉ० गीता लाल का तर्क निर्दोष है, पर प्रस्तुत पंक्तियों के लेखक को ऐसे प्रमाण मिले हैं जिनसे 'प्रेमाश्रम' का प्रकाशन-काल १९२२ ई० ही सिद्ध होता है। जून १९२२ ई० की 'सरस्वती' के पुस्तक-परीक्षा स्तम्भ में 'प्रेमाश्रम' का निम्नलिखित संक्षिप्त परिचय प्रकाशित हुआ था : "प्रेमाश्रम : प्रेमचन्द जी का यह नया उपन्यास है, अभी हाल में प्रकाशित हुआ है। ६५५ पृष्ठों में यह पूरा हुआ है। अच्छे टाइप में अच्छे कागज पर छपा है। खद्दर की सुन्दर जिल्द बँधी है। कलकत्ता (१२६, हरिसन रोड) की हिन्दी पुस्तक एजेन्सी ने इसे प्रकाशित किया है। मूल्य ३॥) है।"[1]

प्रेमचन्द ने अपने ३१ मई १९२२ के पत्र में श्री दयानरायन निगम को लिखा था : "बाजारे-हुस्न' पढ़िएगा। मैं ज़माना में रिव्यू का मुन्तजिर हूँ। मेरा नया नाविल भी छाया हो गया। बड़े अच्छे रिव्यू हो रहे हैं।"[2] यद्यपि इसमें उपन्यास का नाम नहीं आया है पर प्रेमचन्द के अन्य पत्रों के साथ पढ़ने पर स्पष्ट हो जाता है कि यह 'प्रेमाश्रम' ही है।

इन तथ्यों से 'प्रेमाश्रम' का मई १९२२ ई० से पूर्व प्रकाशित होना निर्विवाद सिद्ध होता है। फिर 'होली १९७९' का क्या अर्थ है? इसकी एक ही व्याख्या मेरी समझ में आती है। बहुत से लोग, अज्ञान के कारण ही सही, यह धारणा रखते हैं कि वसन्तोत्सव के दिन नया संवत् आरम्भ हो जाता है। सम्भव है, 'प्रेमाश्रम' के 'अनुवचन' के लेखक ने होली १९७८ को होली १९७९ (नया संवत्) लिख दिया हो, अन्यथा इस तिथि का कोई अर्थ नहीं। डॉ० माताप्रसाद गुप्त ने भी बंगाल के १९२२ ई० के गजट में प्रकाशित द्वितीय त्रैमासिक पुस्तक-सूची के आधार पर 'प्रेमाश्रम' की प्रकाशन-तिथि १३ अप्रैल, १९२२ बतलायी है,[3] जिससे 'होली १९७९' की उपर्युक्त व्याख्या ही ठीक जान पड़ती है।

'प्रेमाश्रम' की रचना सर्वप्रथम उर्दू में 'नाकाम' और 'नेकनाम' शीर्षकों से २ मई १९१८ से लेकर २५ फरवरी १९२० तक की अवधि में हुई थी। अमृत राय के अनुसार 'प्रेमाश्रम' की पांडुलिपि पर उपर्युक्त रचना-काल अंकित है।[4] गोरखपुर से ५ सितम्बर १९१९ को दयानरायन निगम के नाम लिखित अपने एक पत्र में प्रेमचन्द ने सूचित किया था : "बाजारे-हुस्न' निस्फ़ से ज्यादा साफ़ कर रहा हूँ। नया नाविल खूब तावील हो रहा है। इसका नाम अभी 'नेकनाम' रक्खा है। गालिबन दिसम्बर तक खत्म हो जाएगा। 'नेकनाम' तैयार हो जाए तो उसे उर्दू में खुद शाया करने का क़स्द है।"[5] १८ फरवरी १९२० को गोरखपुर से ही प्रेमचन्द ने निगम साहब को

---

१. सरस्वती, वर्ष २३, अंक ६, जून १९२२, पुस्तक-परीक्षा।
२. अमृत राय, प्रेमचन्द : कलम का सिपाही, चिट्ठी-पत्री १, पृ० १२१।
३. डॉ० माताप्रसाद गुप्त, प्रेमचन्द की कृतियों की प्रकाशन-तिथियाँ, साहित्य, अप्रैल १९६०।
४. अमृत राय, प्रेमचन्द : कलम का सिपाही, जीवनी-खंड, पृ० ६५४।
५. उपरिवत्, चिट्ठी-पत्री १, पृ० ८६।



प्रथम संस्करण : सितम्बर १९६९



मूल्य : पचीस रुपये



प्रकाशक : ग्रन्थ निकेतन, रानीघाट, पटना-६



मुद्रक : रचना प्रेस, पटना-६

अमृत राय ने एक स्थान पर लिखा है, "२५ फरवरी १९२० को मुंशी जी ने उर्दू 'प्रेमाश्रम' का लिखना समाप्त किया।"[1] यह कथन नितान्त भ्रान्तिपूर्ण है। २० अक्टूबर १९२० को प्रेमचन्द ने श्री इम्तयाज अली 'ताज' को लिखा था : "ईश्वर ने चाहा तो चन्द माह में मेरा अपना नाविल तैयार हो जायगा।"[2] फिर २९ जनवरी १९२१ को उन्होंने 'ताज' साहब को सूचित किया, "....इन किस्सों के अलावा एक नाविल 'नाकाम' साफ़ कर रहा हूँ, जो तसनीफ़ से कम जाँसोज काम नहीं है।"[3] इससे सिद्ध होता है कि 'नाकाम' ('प्रेमाश्रम' का उर्दू रूप) २९ जनवरी १९२१ के कुछ पूर्व समाप्त हुआ, न कि २५ फरवरी १९२० को।

'प्रेमाश्रम' के हिन्दी में प्रकाशित हो जाने के बाद प्रेमचन्द ने उसका उर्दू संस्करण 'गोशए आफियत' शीर्षक से प्रकाशनार्थ तैयार किया, पर उर्दू में प्रकाशकों के अभाव के कारण यह बहुत दिनों तक अप्रकाशित ही पड़ा रहा।

'प्रेमाश्रम' हिन्दी पाठकों में काफी लोकप्रिय हुआ। मेरा अनुमान है कि अब तक 'प्रेमाश्रम' के २० से अधिक संस्करण अवश्य प्रकाशित हो चुके हैं, और यह इस उपन्यास की लोकप्रियता का असन्दिग्ध प्रमाण है।

'प्रेमाश्रम' की विषयवस्तु भारत के शोषित किसानों और सामान्य जनता से सम्बद्ध है। इसमें एक ओर जमीन्दार है दूसरी ओर मध्य और निम्नवर्गीय पीड़ित किसान। प्रेमचन्द ने पूरी सहानुभूति के साथ मध्यम और निम्न वर्ग को वाणी दी है। उच्च वर्ग पराजित ही नहीं होता वह मध्यम और निम्नवर्ग का संरक्षक और सहायक भी बन जाता है। इससे उपन्यास के अन्त में रामराज्य की अवतारणा होती है और ग्रामीण जनता सुखी, सन्तुष्ट और प्रसन्न हो जाती है।

रंगभूमि

प्रेमचन्द का आकार की दृष्टि से सबसे वृहत् उपन्यास 'रंगभूमि' १९२५ ई० में, दो भागों में, गंगा पुस्तकमाला कार्यालय, लखनऊ से प्रकाशित हुआ। 'रंगभूमि' के प्रथम संस्करण की प्रतियाँ पटना विश्वविद्यालय, पटना, राष्ट्रभाषा परिषद् पुस्तकालय, पटना, और आर्यभाषा पुस्तकालय, काशी में उपलब्ध हैं. जिनके मुखपृष्ठ पर 'प्रथमावृत्ति सं० १९८१ वि०' मुद्रित है।[4] 'रंगभूमि' के प्रथम भाग के जो भी प्रथम संस्करण मुझे प्राप्त हुए हैं, उनके आरम्भिक पृष्ठों के नष्ट हो जाने के कारण मैं प्रथम संस्करण के साथ संलग्न प्रकाशकीय वक्तव्य को पाने में असमर्थ रहा हूँ, पर 'रंगभूमि' के ग्यारहवें

---

१. अमृतराय, प्रेमचन्द : कलम का सिपाही, पृ० २२८।
२. उपरिवत्, चिट्ठी-पत्री २, पृ० १२४।
३. अमृत राय, प्रेमचन्द, चिट्ठी २, पृ० १२८।
४. मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—"रंगभूमि (द्वितीय भाग); लेखक—प्रेमचन्द; प्रकाशक—गंगा पुस्तकमाला कार्यालय, २९-३० अमीनाबाद पार्क, लखनऊ, प्रथमावृत्ति, सं० १९८१ वि०।

निकलता। फिर अपना नया नाविल भी लिखना चाहता हूँ।'[1] इससे पूरी तरह स्पष्ट तो नहीं होता, पर ध्वनित जरूर होता है, कि नये उपन्यास का लिखना (और वह 'रंगभूमि' ही होगा) अभी आरम्भ नहीं हुआ था। सम्भव है, प्रेमचन्द ने १ अक्टूबर १९२२ से ही उपन्यास का प्रारूप तैयार करना आरम्भ कर दिया हो और उसका लेखन आरम्भ हुआ हो फरवरी १९२३ ई० में। प्रेमचन्द के २२ अप्रैल १९२३, ३ जुलाई १९२३ और २६ सितम्बर १९२३ के निगम साहब के नाम लिखित पत्रों से ज्ञात होता है कि इस अवधि में वे 'रंगभूमि' लिखने में व्यस्त थे।[2] १७ फरवरी १९२४ को प्रेमचन्द ने निगम साहब को सूचित किया: "मैंने इधर पाँच महीने में अपने नाविल 'रंगभूमि' के साथ एक ड्रामा लिखा है जिसका नाम है कर्बला'।"[3] इससे 'रंगभूमि' का इससे पूर्व समाप्त होना ध्वनित होता है, पर खुद प्रेमचन्द ने इसकी समाप्ति १२ अगस्त १९२४ को बतायी है। सम्भव है, १७ फरवरी १९२४ को 'रंगभूमि' समाप्तप्राय हो और १२ अगस्त १९२४ को उसकी प्रेस कॉपी तक तैयार हो गयी हो।

अमृत राय ने 'रंगभूमि' के प्रकाशन-काल के सम्बन्ध में लिखा है: "पुस्तक के प्रथम संस्करण पर बसन्त पंचमी १९१८ छपा है, लेकिन शिवपूजन सहाय के नाम चिट्ठी से प्रकट है कि पुस्तक शुरू जनवरी १९२५ में ही निकल गयी थी।"[4] पर यह निष्कर्ष सही नहीं प्रतीत होता। २ जनवरी १९२५ को प्रेमचन्द ने लखनऊ से शिवपूजन सहाय को सूचित किया था कि "रंगभूमि के ४० फार्म छप चुके हैं।"[5] इसका यह अर्थ है कि २ जनवरी १९२५ तक रंगभूमि का आधा से थोड़ा अधिक छप चुका था, पूरा नहीं। फिर २२ फरवरी १९२५ को प्रेमचन्द ने शिवपूजन सहाय को लिखा: "लीजिए जिस पुस्तक पर आपने कई महीने दिमाग़रेजी की थी वह आपका अहसान अदा करती हुई आपकी खिदमत में जाती है और आपसे विनती करती है कि मुझे दो-चार घंटों के लिए एकान्त का समय दीजिए और तब आप मेरी निस्बत जो राय कायम करें वह अपनी मनोहर भाषा में कह दीजिए।··मैं 'रंगभूमि' पर आपकी आलोचना का बड़ी बेसबरी से इन्तजार करूँगा।"[6] इस पत्र से 'रंगभूमि' का फरवरी १९२५ ई० में ही प्रकाशित होना ध्वनित होता है, जनवरी १९२५ के शुरू में नहीं। 'बसन्त पंचमी १९८१' तिथि एकदम शुद्ध है।

'रंगभूमि' के रचना-काल और प्रकाशन-तिथि के सम्बन्ध में भी हिन्दी के आलोचकों ने अविवेकपूर्ण सूचनाएँ दी हैं। डॉ० श्रीकृष्ण लाल 'रंगभूमि' का प्रकाशन-काल १९२२

---

१. अमृत राय, प्रेमचन्द: कलम का सिपाही, पृ० ६५५ चिट्ठी पत्री १, पृ० १२६।
२. उपरिवत्, पृ० १२६-३९।
३. उपरिवत्, चिट्ठी पत्री १, पृ० १४१।
४. उपरिवत्, जीवनी खंड, पृ० ६५५।
५. उपरिवत्, चिट्ठी पत्री २, पृ० २२१।
६. उपरिवत्।

१९६१ तक 'रंगभूमि' के कम से कम १६ संस्करण अवश्य प्रकाशित हो चुके थे, जो साढ़ पाँच सौ पृष्ठों के डिमाई आकार के मोटे ग्रन्थ के लिए (हिन्दी में) कम सौभाग्य की बात नहीं है।

जैसा कहा जा चुका है 'रंगभूमि' प्रेमचन्द का आकार की दृष्टि से सबसे बड़ा उपन्यास है। इसमें मुख्य रूप से औद्योगीकरण और पूँजीवाद के बढ़ते चरण, पुरानी सामन्ती व्यवस्था के धीरे धीरे टूटने तथा पूँजीवाद और साम्राज्यवाद की सम्मिलित शक्ति के समक्ष किसानों के घुटने टेकने का चित्रण है। प्रेमचन्द ने इस उपन्यास में भी ग्रामीण जीवन का विश्वसनीय और मार्मिक चित्रण किया है। समस्त उपन्यास पर यह जीवन दर्शन व्याप्त है कि जीवन एक खेल का मैदान है और प्रत्येक मानवप्राणी इस मैदान का खिलाड़ी है। सूरदास उपन्यास का प्रमुख पात्र है।

कायाकल्प

'रंगभूमि' के बाद प्रेमचन्द का 'कायाकल्प' नामक उपन्यास १९२६ ई० में भार्गव बुक डीपो, वाराणसी से प्रकाशित हुआ। प्रस्तुत पंक्तियों का लेखक 'कायाकल्प' के प्रथम संस्करण को प्राप्त करने में असमर्थ रहा है, पर जनवरी १९२७ की 'सरस्वती' में प्रकाशित 'कायाकल्प' के परिचय से उपर्युक्त कथन की पुष्टि होती है।[१] डॉ० माताप्रसाद गुप्त ने उत्तर प्रदेश के १९२७ ई० के गजट में प्रकाशित प्रथम त्रैमासिक पुस्तक-सूची के साक्ष्य पर 'कायाकल्प' की प्रकाशन-तिथि '१-११-२६' तथा प्रकाशक का नाम भार्गव बुक डीपो, काशी बताया है।[2] डॉ० गीता लाल ने 'माधुरी' के १९२६ ई० के कई अंकों में प्रकाशित 'कायाकल्प' के निम्नलिखित विज्ञापन का उद्धरण अपने पूर्वोक्त निबन्ध में दिया है :—

"निकल गयी! निकल गयी!! प्रेमचन्द जी की दो नवीन रचनाएँ : 'कायाकल्प' और 'प्रेमप्रतिमा'।"[३]

अमृत राय के अनुसार 'कायाकल्प' की मूल पांडुलिपि हिन्दी में है। **"उसको देखने से पता चलता है कि आरम्भ में पुस्तक के तीन नाम रखे गये थे—'असाध्य साधना', 'माया-स्वप्न', 'आर्तनाद।' इसका लेखन १० अप्रैल १९२४ को शुरू हुआ। यह तिथि पांडुलिपि के प्रथम पृष्ठ पर ही अंकित है। प्रकाशन १९२६ में हुआ।"[४]** प्रेमचन्द के एक पत्र में, जो १७ जुलाई १९२६ को दयानरायन निगम को लिखा गया था,

---

१. सरस्वती, भाग २८, संख्या १, जनवरी १९२७, पुस्तक परिचय।
२. डॉ० माताप्रसाद गुप्त, प्रेमचन्द की कृतियों की प्रकाशन तिथियाँ, साहित्य, अप्रैल १९६० ई०।
३. डॉ० गीता लाल, प्रेमचन्द के जीवन तथा साहित्य सम्बन्धी तिथियों में भ्रान्तियाँ, साहित्य, जनवरी १९६० ई०, पृ० ४३।
४. अमृत राय, प्रेमचन्द : कलम का सिपाही, पृ० ६५५।

निम्नलिखित सम्पादकीय टिप्पणी से इस सूचना की पुष्टि होती है : "गत वर्ष श्रीयुक्त प्रेमचन्द जी ने 'चाँद' के प्रेमी पाठकों के समक्ष 'निर्मला' नामक उपन्यास उपस्थित करके वृद्ध-विवाह के दुष्परिणामों का भयंकर दिग्दर्शन कराया था।"[1] नवम्बर १९२६ के 'चाँद' अंक में 'निर्मला' के चौबीसवें, पचीसवें, छब्बीसवें और सत्ताईसवें परिच्छेद प्रकाशित हुऐ थे।[2] 'चाँद' के १९२६ के अन्य अंक प्रस्तुत पंक्तियों के लेखक को प्राप्त नहीं हो सके हैं।

'निर्मला' पुस्तक रूप में जनवरी १९२७ ई० में 'चाँद' कार्यालय, इलाहाबाद से प्रकाशित हुई। इसका प्रथम संस्करण आ० भा० पु०, काशी में उपलब्ध है।[3] १९२६ ई० में निर्मला का 'चाँद' में धारावाहिक रूप में और जनवरी १९२७ ई० में पुस्तक रूप में प्रकाशित होना इस बात का प्रमाण है कि प्रेमचन्द इस समय तक हिन्दी पाठकों में काफी लोकप्रिय हो चुके थे। 'चाँद' कार्यालय, इलाहाबाद की 'निर्मला' सम्बन्धी एक विज्ञप्ति की निम्नलिखित पंक्ति से भी इस तथ्य की पुष्टि होती है : " 'चाँद' के अनेक मर्मज्ञ पाठकों के निरन्तर अनुरोध से यह पुस्तकाकार प्रकाशित किया जाता है।"[4]

'निर्मला' के रचना-काल और प्रकाशन-काल के सम्बन्ध में भी विद्वानों ने अपनी स्वच्छन्द वृत्ति का परिचय दिया है। हंसराज रहबर के अनुसार "यह उपन्यास सन् २२-२३ में लिखा गया था।"[5] डॉ० राजेश्वर गुरु इसका काल (प्रकाशन-काल अथवा रचना-काल का स्पष्टीकरण उन्होंने नहीं किया है) १९२३ ई० मानते हैं।[6] डॉ० प्रतापनारायण टंडन के अनुसार, "सन् १९२८ में 'निर्मला' तथा सन् १९१९ में 'प्रतिज्ञा' का प्रकाशन हुआ।[7] डॉ० इन्द्रनाथ मदान के अनुसार इसका प्रकाशन-काल १९२३ ई० है।[8] यह कहना आवश्यक है कि ये सभी सूचनाएँ भ्रामक हैं।

अमृत राय के अनुसार 'निर्मला' को "चाँद के द्वारा महिलाओं में इतनी जबर्दस्त लोकप्रियता मिल चुकी थी कि छपने के साल भर के अन्दर उसका संस्करण समाप्त हो

---

१. चाँद, वर्ष ५, खंड १, सं० ३, जनवरी १९२७।
२. प्रा० स्या०-वि० रा० भा० पु०, पटना।
३. मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—निर्मला; क्रान्तिकारी सामाजिक उपन्यास; सेवा-सदन, प्रेम पूर्णिमा, प्रेमाश्रम, रंगभूमि, प्रेम-पचीसी, प्रेम प्रतिमा कायाकल्प आदि-आदि अनेक सुप्रसिद्ध पुस्तकों के माधुरी के सम्पादक, श्री प्रेमचन्द जी; प्र०—चाँद कार्यालय, इलाहाबाद; प्रथम संस्करण २०००; रचयिता, जनवरी १९२७।
४. मेहरुन्निसा, हरिसाधन मुखोपाध्याय, (प्र०का० १९२७) के अन्तिम आवरण पृष्ठ पर प्रकाशित निर्मला का विज्ञापन।
५. हंसराज रहबर, प्रेमचन्द : जीवन और कृतित्व, पृ० २३३।
६. डॉ० राजेश्वर गुरु, प्रेमचन्द : एक अध्ययन, पृ० १६७।
७. डॉ० प्रतापनारायण टंडन, हिन्दी उपन्यास में कथा-शिल्प का विकास, पृ० २८५।
८. डॉ० इन्द्रनाथ मदान, प्रेमचन्द : एक विवेचना, परिशिष्ट ३।

रूप में यह उपन्यास सर्वप्रथम १९२९ ई० में सरस्वती प्रेस, वाराणसी से प्रकाशित हुआ। प्रस्तुत पंक्तियों का लेखक इस उपन्यास के प्रथम संस्करण को पाने में असमर्थ रहा है। डॉ० माताप्रसाद गुप्त ने उत्तर प्रदेश के १९२९ ई० के गजट में प्रकाशित तृतीय त्रैमासिक पुस्तक-सूची के आधार पर इसकी प्रकाशन तिथि '४-६-२९' और प्रकाशक का नाम सरस्वती प्रेस, वाराणसी बताया है।[1] डॉ० गुप्त द्वारा प्रदत्त सूचना की प्रामाणिकता इस बात से सिद्ध होती है कि २२ जून १९२९ के 'मतवाला' में 'चाकलेट विधाता' लिखित 'प्रतिज्ञा की परख' शीर्षक एक लम्बा लेख, जिसमें 'प्रतिज्ञा' की कटु आलोचना प्रस्तुत की गयी थी, प्रकाशित हुआ था।[2]

'प्रतिज्ञा' के सम्बन्ध में यह उल्लेखनीय है कि यह १९०७ ई० प्रकाशित 'प्रेमा' का ही संशोधित रूप है। प्रधान कथा और पात्र पुराने ही हैं, केवल घटनाओं तथा कुछ अन्य विवरणों में परिवर्तन कर दिया गया है। यही उपन्यास बाद में उर्दू में 'बेवा' नाम से भी प्रकाशित हुआ।[3]

'प्रतिज्ञा' का दसवाँ संस्करण १९५० ई० में अमृत राय द्वारा हिन्दुस्तानी पब्लिशिंग हाउस, वाराणसी से प्रकाशित हुआ।[4] इसका एक 'नवीन संस्करण' हंस प्रकाशन, इलाहाबाद से जुलाई १९६२ ई० में प्रकाशित हुआ है। यह संस्करण पाँच हजार का है।[5]

जैसा कहा जा चुका है, 'प्रतिज्ञा' १९०७ ई० प्रकाशित 'प्रेमा अर्थात् दो सखियों का विवाह, का परिष्कृत रूपान्तर है। 'प्रेमा' में प्रेमचन्द ने विधवा विवाह की समस्या का चित्रण बहुत कुछ आर्यसमाजी जोश से किया है और उपन्यास के कलापक्ष की एक प्रकार से उपेक्षा की है। 'प्रतिज्ञा' में मुख्य समस्या के रूप में तो विधवा विवाह ही है, पर प्रेमचन्द इस समस्या को उपन्यास में तार्किक परिणति पर नहीं पहुँचा पाये हैं। 'प्रेमा' में घटनाओं और चरित्रों के प्रस्तुतीकरण में जो एक अपरिपक्वता है, वह इस उपन्यास में नहीं। अमृतराय उपन्यास के प्रमुख पात्र हैं।

गबन

प्रेमचन्द का 'गबन' नामक उपन्यास मार्च १९३१ ई० में सरस्वती प्रेस, वाराणसी से प्रकाशित हुआ। इस उपन्यास का प्रथम संस्करण आ० भा० पु०, काशी

के अनुसार 'प्रतिज्ञा' चाँद के जनवरी १९२७ से नवम्बर १९२७ तक के ही अंकों में छपी थी। (प्रेमचन्द : कलम का सिपाही, पृ० ६५५) अतः डॉ० गीता लाल की सूचना गलत प्रतीत होती है।

१. डॉ० माताप्रसाद गुप्त, प्रेमचन्द की कृतियों की प्रकाशन तिथियाँ, साहित्य, अप्रैल १९६०।

२. प्रा० स्था०—आ० भा० पु०, काशी।

३. रामदीन गुप्त : प्रेमचन्द और गाँधीवाद, पृ० १४५।

४. प्रा० स्था०—आ० भा० पु० काशी।

५. प्रा० स्था०—हिन्दी पुस्तक संसार, पटना।

भी हंस प्रकाशन, इलाहाबाद से छपा है, जिसका नवाँ संस्करण अगस्त १९६१ में (तीन हजार प्रतियों का) प्रकाशित हुआ।

'गबन' सम्भवतः प्रेमचन्द के उर्दू उपन्यास 'किशना' का परिवर्धित-परिष्कृत रूपान्तर या कलात्मक विकास कहा जा सकता है। सम्प्रति 'किशना' अनुपलब्ध है, पर 'जमाना' नामक उर्दू पत्र के अक्तूबर १९०७ के अंक में इस उपन्यास की नौबत राय 'नजर' लिखित एक आलोचना प्रकाशित हुई थी, जिससे इसकी कथावस्तु और विषय 'गबन' से बहुत कुछ मिलते-जुलते प्रतीत होते हैं। उक्त आलोचना के अनुसार "यह (किशना) एक उपन्यास है और हमारे सोशल रिफार्म से ताल्लुक़ रखता है।...उन्होंने औरतों में जेवर के फ़िजूल शौक़ की अच्छी चिथाड़ की है, गोया यह एक ऐसी औरत की लाइफ है जिसे जेवरों का शौक नहीं बल्कि सनक थी।...साथ ही शादी ब्याह की कुछ रस्मों का भी ख़ाका उड़ाया गया है, खासकर करार-दाद और उसका सख्ती से वसूल करना।"

'गबन' अपने वर्तमान रूप में मध्यवर्गीय जीवन का प्रामाणिक दस्तावेज है। अपने अन्य उपन्यासों के समान प्रेमचन्द ने इसमें ग्रामीण और कृषक समाज का चित्रण न कर बिलकुल मध्यवर्गीय समाज का चित्र प्रस्तुत किया है। मध्य वर्ग की कमजोरियों, विवशताओं, नैतिक मूल्यों, आर्थिक स्थिति और महत्त्वाकांक्षाओं आदि का जैसा चित्रण इस उपन्यास में है, वैसा उनके अन्य किसी उपन्यास में नहीं मिलता। जालपा के रूप में उन्होंने सदियों से घर और परम्परा को कैद मे जकड़ी नारी के जागरण का भी चित्रण किया है। जालपा और रमानाथ इस उपन्यास के प्रमुख पात्र हैं।

कर्मभूमि

सन् १९३२ ई० में प्रेमचन्द का 'कर्मभूमि' नामक उपन्यास सरस्वती प्रेस, बनारस से प्रकाशित हुआ। प्रस्तुत पंक्तियों का लेखक 'कर्मभूमि' के प्रथम संस्करण को प्राप्त करने में असमर्थ रहा है। पर इसके सातवें संस्करण के 'निवेदन' के अन्त में 'सितम्बर १९३२' मुद्रित है, जिससे इसके प्रथम संस्करण के प्रकाशन-काल का अनुमान होता है। प्रेमचन्द के पत्रों से इस अनुमान की पुष्टि होती है। १५ अगस्त १९३२ को उन्होंने जैनेन्द्र कुमार को लिखा था : "कर्मभूमि के बीस फार्म छप चुके हैं। अभी करीब छः फार्म बाकी हैं।"[1] पुनः ७ दिसम्बर १९३२ को उन्होंने जैनेन्द्रकुमार को लिखा : "कर्मभूमि तुम्हें बहुत बुरी नहीं लगी, इससे खुशी हुई।"[2] इससे सिद्ध है कि 'कर्मभूमि' दिसम्बर १९३२ के एक-दो महीने पूर्व अवश्य प्रकाशित हो चुकी होगी। डॉ० माताप्रसाद गुप्त द्वारा प्रदत्त सूचना से भी उक्त तिथि की पुष्टि होती है। उन्होंने १९३२ ई० के उत्तर प्रदेशीय गजट में प्रकाशित प्रथम त्रैमासिक पुस्तक-सूची के आधार पर 'कर्मभूमि' की प्रकाशन-तिथि '१८-१२-३२' बतायी है।[3]

---

१. अमृत राय, प्रेमचन्द : चिट्ठी पत्री, पृ० २६।

२. उपरिवत् पृ० २७।

३. डा० माताप्रसाद गुप्त, प्रेमचन्द की कृतियों की प्रकाशन तिथियाँ, साहित्य, अप्रैल १९६०।

मध्यवर्गीय समाज और राजनीतिक चेतना का उदय है। अन्तर्जातीय प्रेम और विवाह, किसानों पर जमीन्दारों और महन्थों के अत्याचार आदि का चित्रण भी उपन्यास में हुआ है। अमरकान्त उपन्यास का प्रमुख पुरुष पात्र और सुखदा प्रमुख पात्री है।

गोदान

प्रेमचन्द का अन्तिम (पूर्ण) उपन्यास 'गोदान' सन् १९३६ ई० में हिन्दी ग्रन्थ रत्नाकर कार्यालय, बम्बई और सरस्वती प्रेस, वाराणसी से प्रकाशित हुआ। इसका प्रथम संस्करण पटना कॉलिज पुस्तकालय में उपलब्ध है।[1] इसके प्रकाशन-काल के सम्बन्ध में भी हिन्दी के आलोचना-ग्रन्थों में कोई भ्रम नहीं है।

प्रेमचन्द के पत्रों से ज्ञात होता है कि फरवरी १९३२ में 'गोदान' का लेखन आरम्भ हो गया था। अपने २५ फरवरी १९३२ के पत्र में प्रेमचन्द ने दयानरायन निगम को सूचित किया था : "इधर गबन का तर्जुमा भी शुरू कर दिया है, एक नया नाविल भी शुरू कर दिया है। मगर सर्दबाजारी बलाये-जान हो रही है।"[2] फिर २८ नवम्बर १९३४ को उन्होंने जैनेन्द्रकुमार को लिखा : "उपन्यास के अन्तिम पृष्ठ लिखने बाकी हैं, उधर मन ही नहीं जाता।"[3] १० जून १९३६ को उन्होंने फिर जैनेन्द्र को लिखा : "'गोदान' निकल गया। कल तुम्हारे पास जाएगा। खूब मोटा हो गया है, ६०० से (ऊपर) गया। अपना विचार लिखना।"[4]

सन् १९६० तक 'गोदान' के कम से कम १६ संस्करण अवश्य प्रकाशित हो चुके थे। सरस्वती प्रेस, इलाहाबाद के कर्मचारियों से पूछताछ करने से ज्ञात हुआ कि नवें संस्करण तक प्रायः प्रत्येक संस्करण की दो दो हजार प्रतियाँ छपती थीं। पर दसवें संस्करण से तीन तीन हजार प्रतियाँ मुद्रित होने लगीं। इस हिसाब से १९६० ई० तक 'गोदान' की कम से कम ३९ हजार प्रतियाँ अवश्य मुद्रित हो चुकी थीं। पर यह संख्या सन्तोषजनक नहीं कही जा सकती। १७ अप्रैल १९५९ को महबूब स्टूडियो, बान्दरा, में 'गोदान' के 'मुहूरत' के अवसर पर आयोजित एक समारोह के सम्मानित अतिथि, रूस के बम्बई-स्थित उपवाणिज्यदूत आइगोर काम्पेन्त्सेव ने बताया कि रूस में प्रेमचन्द जी अत्यधिक लोकप्रिय हैं। उनके 'गोदान' पुस्तक की नव्वे हजार प्रतियाँ वहाँ हाथों-हाथ बिक गयीं।[5] इसे देखते हुए भारत में, २४ वर्षों में गोदान की केवल ३९ हजार प्रतियों का बिकना हिन्दी पाठकों की पठन-क्षमता पर एक कटु व्यंग्य है।

---

१. प्रा० स्थान—मेरा निजी पुस्तकालय, मुख पृष्ठ की प्रतिलिपि—गोदान, लेखक—प्रेमचन्द सरस्वती प्रेस बनारस : हिन्दी ग्रन्थ रत्नाकर कार्यालय बंबई, प्रथम संस्करण १९३६, पृ० सं० ६१२।

२. अमृत राय, प्रेमचन्द : चिट्ठी पत्री १, पृ० १९२।

३. उपरिवत्. चिट्ठी पत्री २, पृ० ३८।

४. उपरिवत्, पृ० ६४।

५. अनजान, गोदान के मुहूरत की एक झलक, आज १० मई, १९५९ ई०।

माला से प्रकाशित होने के बाद इसकी लोकप्रियता में दिन दूनी रात चौगुनी वृद्धि हो गयी। दसवें संस्करण की निम्नोद्धृत 'भूमिका' से, जिसके लेखक उपन्यास के प्रकाशक श्री दुलारे लाल भार्गव हैं, इस उपन्यास की लोकप्रियता के तथ्य पर प्रकाश पड़ता है :

"यह उपन्यास अल्प काल में ही इतना लोकप्रिय हुआ कि इसके ६ संस्करण प्रकाशित हो गए, और बात की बात में बिक गए। द्वितीय महायुद्ध-काल में जब कागज आदि प्राप्त करने की सुविधाएँ न थीं, और मँहगाई बढ़ी हुई थी, हमने पाठकों के अनुरोध से पर्याप्त व्यय उठाकर इसके तीन संस्करण एक के बाद एक प्रकाशित किए जो हाथोहाथ बिक गए।......सौभाग्य से आज 'हृदय की परख' का यह दसवाँ संस्करण लेकर हम पाठकों की सेवा में पुनः उपस्थित हो रहे हैं, जो उनके ही अनुरोध के द्वारा संभव हो सका है।"[1]

व्यभिचार

डॉ० माताप्रसाद गुप्त के अनुसार शास्त्री जी का 'व्यभिचार' नामक उपन्यास, जिसमें प्रेम सम्बन्धी एक सामाजिक विकृति का निरूपण किया गया है, १९२४ ई० में, भद्रसेन वर्मा द्वारा, बुलन्दशहर से प्रकाशित किया गया।[2] मुझे इस पुस्तक के उपन्यास होने में सन्देह है। इस सन्देह का कारण 'हृदय की प्यास' नामक उपन्यास के 'निवेदन' की यह पंक्ति है कि "उपन्यासों के अलावा आपका 'अंतस्तल' नामक एक 'गद्यकाव्य' और 'व्यभिचार' नाम की 'देशदर्शन' ढंग की अन्य पुस्तक भी प्रकाशित हो चुकी है।"[3] डॉ० शुभकार कपूर ने अपने शोधप्रबन्ध में इसे चिकित्सा सम्बन्धी ग्रन्थ बताया है।[4]

शिवनारायण श्रीवास्तव के अनुसार यह उपन्यास है तथा इसमें 'विकृत प्रेम का रसमय ढंग से वर्णन है।'[5] 'सरस्वती' के नवम्बर १९२४ ई० के अंक में प्रकाशित पुस्तक-परिचय के अनुसार "......यह सचमुच 'भयंकर' है, अधिकांश तो पढ़ने योग्य ही नहीं है। यदि इस पर लेखक का नाम न रहता तो हम यही समझते कि यह किसी विज्ञापनबाज वैद्य की कला कुशलता का नमूना है, जो केवल स्वार्थ सिद्धि को साहित्य सेवा समझता है। ऐसी पुस्तकों का प्रकाशन देखकर किसको दुःख नहीं होगा।"

प्रस्तुत पंक्तियों का लेखक इस पुस्तक को प्राप्त करने में असमर्थ रहा है।

---

१ हृदय की परख, ले० आचार्य चतुरसेन शास्त्री, प्रकाशक-श्री दुलारेलाल, अध्यक्ष गंगा पुस्तकमाला कार्यालय, लखनऊ, दशमावृत्ति १९५५ ई०, भूमिका।

२. डॉ० माताप्रसाद गुप्त, हिंदी पुस्तक साहित्य, पृ० १०२ तथा ४३६।

३. हृदय की प्यास, ले० चतुरसेन शास्त्री, प्र०—गंगा पुस्तकमाला कार्यालय, लखनऊ, अष्टमावृत्ति २०११ वि०, प्रथमावृत्ति का निवेदन।

४. डॉ० शुभकार कपूर, आचार्य चतुरसेन का कथा साहित्य, विवेक प्रकाशन, लखनऊ, १९६५, पृ० ९२।

५. हिन्दी उपन्यास, पृ० १८४

अमर अभिलाषा

सन् १९३३ ई० में विवेच्य उपन्यासकार का 'अमर अभिलाषा' नामक उपन्यास साहित्य मंडल, दिल्ली से प्रकाशित हुआ ।[१] इस उपन्यास में विधवा-विवाह की समस्या का चित्रण है। इसमें भगवती, नारायणी, सुशीला, कुमुद, मालती और वसन्ती नामक छह विधवाओं की कहानियों द्वारा हिन्दू समाज में विधवाओं पर होने वाले अत्याचारों का चित्रण कर समस्या का समाधान भी प्रस्तुत किया गया है। उपन्यासकार ने आत्यन्तिक स्थिति में विधवा विवाह का समर्थन किया है। शिल्प की दृष्टि से उपन्यास में थोड़ी नवीनता है। कहानियाँ परस्पर स्वतन्त्र सी हैं। विषय के द्वारा ही ये परस्पर सम्बद्ध मानी जा सकती हैं।

डॉ० माताप्रसाद गुप्त के अनुसार १९३३ ई० में चतुरसेन शास्त्री का इस्लाम का विषवृक्ष नामक उपन्यास भारत प्रिंटिंग प्रेस, दिल्ली से छपा ।[2] इस पुस्तक में इस्लाम धर्म एवं उसके भारत में आगमन का वर्णन है, अतः इसे उपन्यास कहना उचित नहीं।

आत्मदाह

आर्यभाषा पुस्तकालय की पुस्तक-सूची के अनुसार जून १९३५ ई० में चतुरसेन शास्त्री का 'आत्मदाह' नामक उपन्यास साहित्य मंडल, बाजार सीताराम, दिल्ली से प्रकाशित हुआ। डॉ० शुभकार कपूर ने इसका प्रकाशन-काल १९३४ ई०[३] तथा डॉ० माताप्रसाद गुप्त ने १९३६ ई० दिया है ।[४] इस उपन्यास में सुधीन्द्र नामक पात्र की कथा कही गयी है, जो जीवन के विविध अनुभवों के बीच से गुजरता है।

दुर्गा प्रसाद खत्री

दुर्गा प्रसाद खत्री, यों तो, तिलिस्मी, अपराध-प्रधान और वैज्ञानिक उपन्यासों के लेखक के रूप में प्रसिद्ध हैं, पर सामाजिक समस्याओं पर भी इन्होंने कुछ उपन्यासों की रचना की थी।

प्रोफेसर भोंदू

डॉ० माताप्रसाद गुप्त के अनुसार सन् १९२० (?) ई० में दुर्गा प्रसाद खत्री का 'प्रोफेसर भोंदू' नामक उपन्यास स्वयं लेखक द्वारा बनारस से प्रकाशित हुआ ।[५] इसका नवीन संस्करण १९६० ई० में लहरी बुक डिपो, काशी से प्रकाशित हुआ ।[६]

---

१. हिन्दी पुस्तक साहित्य, पृ० ४३६ ।
२. डॉ० माताप्रसाद गुप्त, हिन्दी पुस्तक साहित्य, पृ० २३९ ।
३. डॉ० शुभकार कपूर, 'आचार्य चतुरसेन का कथा साहित्य, पृ० ९५ ।
४. डा० माताप्रसाद गुप्त, हिन्दी पुस्तक साहित्य, पृ० ४३६ ।
५. उपरिवत्, पृ० २३६ तथा ४७८ ।
६. प्रा० स्था०– मेरा व्यक्तिगत पुस्तकालय ।

प्रति है, पर उसके मुखपृष्ठ के नष्ट हो जाने के कारण पुस्तक के सम्बन्ध में कोई सूचना नहीं मिलती।

समझ का फेर

खत्री जी द्वारा सम्पादित 'समझ का फेर' नामक एक उपन्यास भी लहरी प्रेस, बनारस से प्रकाशित हुआ था। माहेश्वर पुस्तकालय, पटना में इस पुस्तक की एक प्रति उपलब्ध है, पर उसके मुखपृष्ठ पर प्रकाशक अथवा प्रकाशन-काल सम्बन्धी सूचना नहीं दी गयी है। फिर दुर्गा प्रसाद खत्री को इस पुस्तक का सम्पादक ही कहा गया है, लेखक नहीं। पुस्तक में दो कथाएं 'समझ का फेर' और 'जागता यंत्र' संगृहीत हैं, जिनमें प्रथम में २४ पृष्ठ तथा दूसरे में ३२ पृष्ठ हैं। पुस्तक के सभी पृष्ठों पर, ऊपर, कोने में, 'उपन्यास' शब्द मुद्रित है, जिससे ज्ञात होता है कि सम्पादक या प्रकाशक इसे उपन्यास ही समझते थे।

चन्द्रशेखर पाठक

विचित्र समाज सेवक

सन् १९२० ई० में पं० चंद्रशेखर पाठक द्वारा लिखित 'विचित्र समाज सेवक' नामक उपन्यास रिखबदास वाहिती एंड कम्पनी, कलकत्ता से प्रकाशित हुआ। आर्य भाषा पुस्तकालय काशी में इस उपन्यास की एक प्रति है पर उसके मुखपृष्ठ के न रहने से कोई सूचना नहीं प्राप्त होती। उपर्युक्त सूचनाएं आर्य भाषा पुस्तकालय की पुस्तक-सूची से प्राप्त की गयी हैं। इस उपन्यास का उद्देश्य पाश्चात्य सभ्यता की तुलना में भारतीय सभ्यता की श्रेष्ठता प्रतिपादित करना है। अँगरेजी शिक्षा के दोषों का चित्रण विस्तार के साथ किया गया है।

आदर्श लीला

सन् १९२१ ई० में विवेच्य उपन्यासकार द्वारा लिखित 'आदर्शलीला' नामक उपन्यास रिखब दास वाहिती एंड कम्पनी, कलकत्ता से प्रकाशित हुआ।[1] इसका दूसरा संस्करण १९२३ ई० में उपर्युक्त प्रकाशन-संस्था द्वारा ही प्रकाशित हुआ।[2] इस उपन्यास में हिंदू मान्यताओं के अनुरूप आदर्श स्त्री चरित्र का वर्णन किया गया है। लीलावती, जगदम्बा, रघुनन्दन, कमलेश्वर आदि पात्रों की कथा के द्वारा पातिव्रत्य, सच्चरित्रता और धर्मपालन की महिमा सिद्ध की गयी है।

---

१. प्राप्तिस्थान-आ० भा० पु०, काशी। मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—आदर्श लीला (सचित्र सामाजिक उपन्यास) ले० पं० चंद्रशेखर पाठक, प्रकाशक रिखबदास वाहिती, प्रोप्राइटर दुर्गाप्रेस और आर० डी० वाहिती एंड कं०, नं० ४, चोरबगान, कलकत्ता, प्रथमबार १०००, सन् १९२१।

२. प्रा० स्था०—सिनहा पुस्तकालय, पटना।

सद्‌गुणी सुशीला

आर्यभाषा पुस्तकालय की पुस्तक-सूची के अनुसार चन्द्रशेखर पाठक कृत 'सद्‌गुणी सुशीला' नामक उपन्यास १९३५ ई० में आदर्श हिन्दी पुस्तकालय, कलकत्ता से प्रकाशित हुआ था। प्रस्तुत पंक्तियों का लेखक इस उपन्यास को भी प्राप्त करने में असमर्थ रहा है।[१]

जगदीश झा विमल

प्रेमचन्द युग के उपन्यासकारों में जगदीश झा विमल भी उल्लेखनीय हैं। इन्होंने १६२० ई० से लेकर १९३६ ई० तक अनेक उपन्यासों की रचना की थी।

निर्धन की कन्या

सर्वप्रथम विमलजी का 'निर्धन की कन्या' नामक उपन्यास १९२० ई० में उपन्यास बहार आफिस, काशी से प्रकाशित हुआ।[२] इस उपन्यास की चित्रणीय समस्या यह है कि गरीब घर के लड़के का धनी घर की लड़की से विवाह का परिणाम अच्छा नहीं होता। जमीन्दार की शीलहीन लड़की से गरीब की सुशिक्षित तथा सुशील कन्या हजारगुना अच्छी होती है। वैवाहिक कुप्रथाओं और रीति रिवाजों—जैसे तिलक-दहेज, फिजूलखर्ची आदि—की आलोचना भी यत्र तत्र हुई है।

उपन्यास) लेखक पंडित चन्द्रशेखर पाठक, प्रकाशक—रिखवदास वाहिती, प्रोप्राइटर "दुर्गा प्रेस" और आर० डी० वाहिती एंड को० नं० ४, चोर बगान, कलकत्ता, द्वितीय वार सन् १६२४।

१. वारांगना रहस्य के चौथे भाग में (द्वितीय संस्करण १६२२) पं० चन्द्रशेखर पाठक को निम्नलिखित पुस्तकों का रचयिता बताया गया है। इनमें तारांकित पुस्तकों की सूचना इस ग्रन्थ में दी गयी है।

मौलिक पुस्तकें—

रमा* ; मदालसा, विलासिनी विलास, कृष्णवसना सुन्दरी* ; भीम सिंह* ; शैला, आदर्श लीला*; प्रेम संहार ; महाराणा प्रताप सिंह, पृथ्वीराज; विचित्र समाज सेवक* ; अंगरेजी शिक्षावली; प्रतिमा विसर्जन; शोणितचक्र* ; वारांगना रहस्य ६ भाग* ; हेमलता दो भाग* ; रामायण रहस्य; ठग वृत्तान्त* ; लीना, अंगरेजी शिक्षक, सिकन्दर शाह, भयानक बदला, महात्मा गाँधी, मायापुरी*

अनूदित पुस्तकें :—

शोणित तर्पण; लार्ड किचनर; नेपोलियन बोनापार्ट; कपालकुंडला; मृणालिनी; दुर्गेशनन्दिनी; गोधन; राई से पर्वत; विराज बहू; अर्थ में अनर्थ, पीतल की मूर्ति; जर्म्मन षड्‌यंत्र; जासूस के घर खून; ब्रह्मचर्य।

२. प्राप्ति स्थान—आर्य भाषा पुस्तकालय, काशी। मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—निर्धन की कन्या, लेखक 'विमल', असरगंज, प्रकाशक-उपन्यास बहार आफिस, काशी, बनारस, प्रथमावृत्ति १९२०, पृ० सं० ७१।

लीलावती

सन् १९२४ ई० में 'विमल' जी द्वारा लिखित 'लीलावती' नामक उपन्यास एस० आर० बेरी ऐंड कम्पनी, कलकत्ता से प्रकाशित हुआ।[1] इस उपन्यास में युवक पुत्र के रहते पिता द्वारा किसी नवयुवती से विवाह करने का कुपरिणाम दिखाया गया है। तिलक-दहेज के कुफल भी उपन्यास में चित्रित किये गये हैं। स्त्री शिक्षा का महत्त्व सिद्ध किया गया है। यत्र तत्र देश की राजनीतिक स्थिति पर भी प्रकाश डाला गया है। इस उपन्यास का द्वितीय संस्करण १९३४ ई० (१९९१ वि०) में हिन्दी पुस्तक एजेंसी, २०३, हरिसन रोड, कलकत्ता से प्रकाशित हुआ।[2]

आशा पर पानी

फरवरी १९२५ ई० में विवेच्य उपन्यासकार का 'आशा पर पानी' नामक उपन्यास चाँद कार्यालय, इलाहाबाद से प्रकाशित हुआ।[3] इस उपन्यास में देश की सामाजिक कुरीतियों का चित्रण तथा उनका समाधान प्रस्तुत किया गया है। अँगरेजी शिक्षा के शिकार युवकों की दयनीय स्थिति का चित्रण विस्तार के साथ हुआ है। देशसेवा और राष्ट्रीय जागरण इस उपन्यास का भी प्रमुख स्वर है।

रमणी रहस्य

सन् १९२६ ई० में, अथवा उसके कुछ पूर्व, विमल जी द्वारा लिखित 'रमणी रहस्य' नामक उपन्यास उपन्यास बहार आफिस, काशी से प्रकाशित हुआ।[4] पुस्तक के मुखपृष्ठ पर प्रकाशन काल नहीं दिया हुआ है, पर पं० श्याम सुन्दर द्विवेदी द्वारा लिखित 'पंचवटी' नामक कहानी संग्रह (प्रकाशन काल १९२६ ई०) के अन्तिम पृष्ठ पर विवेच्य उपन्यास का विज्ञापन मुद्रित है, जिससे इसका उपर्युक्त रचना-काल अनुमित होता है।[5] प्रेम और सतीत्व का महत्त्व-प्रतिपादन उपन्यास का प्रधान

---

१. प्राप्ति स्थान—आ० भा० पु० काशी। मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि-लीलावती (सचित्र सामाजिक-उपन्यास), लेखक जगदीश झा 'विमल' (साहित्य सदन जमालपुर), प्र०-एस० आर० बेरी एंड कम्पनी २०१, हरिसन रोड, कलकत्ता, प्रथम संस्करण १०००, १९२४, पृ० सं० २१२।

२. प्रा० स्था०—सिंनहा पुस्तकालय, पटना।

३. प्राप्ति स्थान—आ० भा० पु० काशी। मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि-आशा पर पानी, (मौलिक-सामाजिक उपन्यास), ले० श्री जगदीश झा 'विमल', प्र० चाँद कार्यालय, इलाहाबाद, फरवरी १९२५, पहला संस्करण २०००, पृ० सं० १०४।

४. प्राप्ति स्थान—आ० भा० पु० काशी। मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि - रमणी रहस्य, लेखक 'विमल', प्र० शिवराम दास गुप्त, उपन्यास बहार आफिस, राजघाट, काशी, बनारस. पृ० सं० ६०।

५. पं० श्यामसुन्दर द्विवेदी, पंचवटी (कहानी संग्रह), प्र० साहित्य ग्रन्थ रत्नाकर कार्यालय, कलकत्ता, १९२६ ई०।

मेरठ की 'ललिता' नामक पत्रिका में भी प्रकाशित हुआ।" प्रस्तुत पंक्तियों का लेखक इसके आरम्भिक संस्करणों को प्राप्त करने में असमर्थ रहा है। इसका पाँचवा संस्करण १९३८ ई० में हिन्दी पुस्तक एजेंसी, कलकत्ता से प्रकाशित हुआ।[1]

प्राणनाथ

डॉ० माताप्रसाद गुप्त के अनुसार सन् १९२५ ई० में गंगा प्रसाद श्रीवास्तव कृत 'प्राणनाथ' नामक उपन्यास प्रकाशित हुआ।[2] हरिसाधन मुखोपाध्याय लिखित 'मेहरुन्निसा' (प्र० का० १९२७) के साथ संलग्न विज्ञापन से ज्ञात होता है कि इसके पूर्व इस उपन्यास का द्वितीय (नवीन) संस्करण चाँद कार्यालय, इलाहाबाद से प्रकाशित हो चुका था। १९२९ ई० के 'चाँद' के किसी अंक में मुद्रित विवेच्य उपन्यास के एक विज्ञापन से ज्ञात होता है कि इसके पूर्व इसका तीसरा संस्करण प्रकाशित हो चुका था और इसकी ६००० प्रतियाँ हाथोहाथ बिक चुकी थीं। इससे इस उपन्यास की लोकप्रियता सिद्ध होती है।

इस उपन्यास में स्त्रीशिक्षा और अन्य सामाजिक सुधारों का चित्रण किया गया है।

दिल की आग उर्फ दिल जले की आह

सन् १९३२ ई० में जी० पी० श्रीवास्तव कृत 'दिल की आग उर्फ दिल जले की आह' शीर्षक उपन्यास प्रकाशित हुआ।[3] प्रस्तुत पंक्तियों का लेखक इस संस्करण को प्राप्त करने में असमर्थ रहा है। इस उपन्यास का दूसरा संस्करण मई १९४६ ई० में भार्गव पुस्तकालय, गायघाट, बनारस से प्रकाशित हुआ।[4]

'दिल की आग उर्फ दिल जले की आह' में निःस्वार्थ प्रेम का चित्रण किया गया है। पर अवान्तर कथा, जो अपराध-प्रधान है, तथा प्रेम के मार्ग में बाधक बन कर आयी है, अधिक ध्यानाकर्षक बन गयी है। डॉ० रामकुमार वर्मा ने उपन्यास की भूमिका में इसे 'उच्च कोटि का समस्या उपन्यास' कहा है। यद्यपि समस्याएँ इसमें हैं, बीच-

---

१. प्राप्ति स्थान-आ० भा० पु० काशी। मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि-महाशय भड़ाम सिंह शर्मा उपदेशक (हास्यपूर्ण उपन्यास), ले० श्रीयुत जी० पी० श्रीवास्तव, प्र०-हिन्दी पुस्तक एजेंसी, २०३, हरिसन रोड, कलकत्ता, पंचम संस्करण १९९५, पृ० सं० १२०।

२. डॉ० माताप्रसाद गुप्त, हि० पु० सा०, पृ० सं० २३७।

३. दिल की आग उर्फ दिल जले की आह, ले० जी० पी० श्रीवास्तव, प्र० भार्गव पुस्तकालय, गायघाट, बनारस, दूसरा संस्करण मई १९४६ ई०, भूमिका।

४. प्राप्ति स्थान—बि० रा० भा० प० पु०, पटना। मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—दिल की आग उर्फ दिल जले की आह, ले०-जी० पी० श्रीवास्तव, भूमिका ले०-डॉ० रामकुमार वर्मा, प्र० भार्गव पुस्तकालय, गायघाट, बनारस, दूसरा संस्करण मई १९४६ ई०।

मदारी लाल गुप्त

गौरी शंकर

सन् १९२३ ई० में मदारी लाल गुप्त का 'गौरी शंकर' नामक उपन्यास चाँद कार्यालय, इलाहाबाद से प्रकाशित हुआ।[1] इस उपन्यास में 'गौरी' नामक बालिका के पातिव्रत्य, सच्चरित्रता एवं स्वावलम्बन का वर्णन किया गया है। गौरी अतुल सम्पत्ति की स्वामिनी होने पर भी अपने को उसके दुष्प्रभावों और अन्य प्रलोभनों से मुक्त रखने में सफल होती है। नारी चरित्र का आदर्श प्रस्तुत करना ही उपन्यासकार का प्रमुख उद्देश्य है।

सखाराम

१९२४ ई० में गुप्त जी का 'सखाराम' नामक उपन्यास चाँद कार्यालय, इलाहाबाद से प्रकाशित हुआ।[2] इस उपन्यास में वृद्ध-विवाह के दुष्परिणामों का चित्रण किया गया है। "निर्धन पिता की कन्या का भाग्य हमारे समाज में कैसा है और इससे समाज में क्या क्या खराबियाँ उत्पन्न हो जाती हैं, लेखक ने इन्हें स्वाभाविक रूप में रखने का प्रयास किया है।··इस पुस्तक का आदर्श है पात्रों का पश्चात्ताप करना और समाज सेवा में लग जाना।"[3] 'चाँद', फरवरी, (१९२८) में प्रकाशित विवेच्य उपन्यास के एक विज्ञापन से ज्ञात होता है कि "पहला २००० का संस्करण केवल १ महीने में समाप्त हो गया था"।[4] प्रस्तुत पंक्तियों के लेखक को इस उपन्यास का द्वितीय संस्करण नहीं प्राप्त हो सका है।

मानिक मन्दिर

सन् १९२६ ई० में विवेच्य उपन्यासकार का 'मानिक मन्दिर' नामक उपन्यास चाँद कार्यालय, इलाहाबाद से प्रकाशित हुआ। इस उपन्यास की एक प्रति माहेश्वर सार्वजनिक पुस्तकालय, पटना में उपलब्ध है, पर उसके मुखपृष्ठ के न रहने से पुस्तक के सम्बन्ध में कोई सूचना नहीं मिल पाती। उपर्युक्त सूचनाएँ आर्य भाषा पुस्तकालय की पुस्तक सूची से प्राप्त की गयी हैं।

'मानिक मन्दिर' प्रधानतः घटनाप्रधान एवं गौणतः समाज सुधार का चित्रण करने वाला उपन्यास है। अपराध प्रधान और दुराचरण की घटनाओं से ही उपन्यास की कथावस्तु का निर्माण हुआ है। अधिकांश पात्र एक दूसरे से बदला लेते दिखाई

---

१. प्राप्ति स्थान—आ० भा० पु० काशी। मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि-गौरीशंकर, एक मौलिक उपन्यास, ले० श्रीयुत मदारी लाल गुप्त, प्र० 'चाँद' कार्यालय, इलाहाबाद, प्रथम बार मार्च, १९२३, पृ० सं० ८४।

२. प्राप्ति स्थान-आ० भा० पु० काशी। मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—सखाराम, वृद्ध विवाह के स्वाभाविक दुष्परिणामों को लक्ष्य कर लिखा हुआ एक मौलिक और सामाजिक उपन्यास, ले० श्रीयुत मदारी लाल गुप्त, प्रकाशक 'चाँद' कार्यालय, इलाहाबाद, फरवरी १९२४, प्रथमवार।

३. सखाराम, प्रकाशक का निवेदन।

४. चाँद, वर्ष ६, खंड १, फ़रवरी १९२८, सखाराम (विज्ञापन)

चंद हसीनों के खतूत

उग्र जी का प्रसिद्ध उपन्यास 'चंद हसीनों के खतूत' सर्वप्रथम १६२७ ई० में 'मतवाला' में प्रकाशित हुआ था ।[1] इसका प्रथम संस्करण १६२७ ई० में ही नवजादिक लाल श्रीवास्तव द्वारा कलकत्ता से प्रकाशित किया गया ।[2] बाद में यह उपन्यास हिंदी पुस्तक एजेंसी, कलकत्ता से प्रकाशित हुआ । आर्य भाषा पुस्तकालय, काशी में हिंदी पुस्तक एजेंसी, कलकत्ता से प्रकाशित विवेच्य उपन्यास का सातवाँ संस्करण उपलब्ध है पर इस संस्करण के मुखपृष्ठ पर प्रकाशन-काल नहीं दिया हुआ है ।[3] इसका आठवाँ संस्करण १६५५ ई० में उग्र प्रकाशन, दिल्ली से 'खुदीराम और चंद हसीनों के खतूत' शीर्षक से प्रकाशित हुआ ।[4] इस संस्करण के मुखपृष्ठ पर भी प्रकाशन-काल नहीं दिया हुआ है, पर प्रकाशकीय के नीचे '१-६-५५' तिथि मुद्रित है ।इस संस्करण की भूमिका में उग्र ने इसके प्रकाशन तथा इसकी लोकप्रियता के सम्बन्ध में सूचना देते हुए लिखा है–"चंद हसीनों के खतूत' सन् १९२७ ई० में कलकत्ते के 'मतवाला' में जैसा कुछ प्रकाशित हुआ था अथवा उसके प्रारंभिक संस्करणों का जो पाठ था, वह पाठ दूसरे प्रकाशक के यहाँ से छपने पर न रह सका । तपते हुए अंग्रेजों के भय से उनके शासन के विरुद्ध किये गये अनेक उग्र इशारे नहीं छापे गये । अब पुस्तक के इस ८वें संस्करण में दो-चार शब्द मैंने स्वयं बदल दिये या हल्के कर दिये हैं, जिनका संबंध हमारे मुसलिम भाइयों से था । याद रहे, यह उपन्यास १९२७ में लिखा गया था, याने पाकिस्तान के जन्म से बीसों बरस पहले । ....'चंद हसीनों के खुतूत' से जो मुझे शोहरत मिली उससे मैं मालामाल हो गया ।"[5]

इस उपन्यास में उग्रजी ने यह प्रतिपादित किया है कि मनुष्य हिन्दू या मुसलमान या अन्य किसा जाति विशेष का सदस्य होने के पहले मनुष्य है । मुरारी और नर्गिस की प्रेमकहानी के माध्यम से उपन्यासकार ने प्रेम की महत्ता सिद्ध की है ।

उपन्यास पत्रों के रूप में लिखित है ।

(कलकत्ता रहस्य) उपन्यास का 'मालेमस्त मारवाडी' खण्ड, उग्र प्रकाशन–दिल्ली और गऊघाट, मिर्जापुर (उ० प्र०), प्रथम संस्करण (मुखपृष्ठ पर प्रकाशन काल नहीं दिया हुआ है) 'ठाट' के अंत में '१५ अगस्त १९५५' तिथि छपी है ।

१. खुदाराम और चंद हसीनों के खुतूत, ले० पांडेय बेचन शर्मा उग्र, अष्टम संस्करण, १६५५, 'प्रकाशकीय' ।

२. डॉ माताप्रसाद गुप्त, हिंदी पुस्तक साहित्य, पृ० ५२४ ।

३. मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—चंद हसीनों के खतूत, लेखक बेचन शर्मा उग्र, प्र० हिंदी पुस्तक एजेंसी २०३, हरिसन रोड, कलकत्ता, सातवीं बार ।

४. प्राप्तिस्थान—आर्यभाषा पुस्तकालय, काशी, मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि-खुदीराम और चंद हसीनों के खुतूत—ले० पांडेय बेचन शर्मा 'उग्र', प्रकाशक, दिल्ली, गऊघाट, मिर्जापुर, अष्टम संस्करण ।

५. उपरिवत्, भूमिका ।

विनोद शंकर व्यास द्वारा प्रकाशित किया गया ।[1] इसका दूसरा संस्करण १९३८ ई० में पुस्तक भवन, बनारस से प्रकाशित हुआ ।[2] इस उपन्यास में मदिरालयों, ताड़ीखानों तथा वेश्यालयों के घृणित जीवन का चित्रण किया गया है ।

उपन्यास की केन्द्रीय समस्या शराबखोरी एवं उसके दुष्परिणामों का चित्रण है । प्रसंगत: हिन्दू समाज में स्त्रियों की उस स्थिति का भी अंकन है जिसके कारण या तो वे वेश्यावृत्ति अपनाती हैं या आत्महत्या के लिए बाध्य होती हैं । उपन्यास का अन्त एक युवक द्वारा वेश्या से विवाह तथा शराबबन्दी की घटना से हुआ है । उपन्यास का स्वर सुधारवादी एवं आदर्शवादी है, यों वेश्यागृहों एवं मदिरालयों का यथार्थ वर्णन है ।

गिरिजादत्त शुक्ल 'गिरीश'

संदेह

सन् १९२५ ई० में गिरिजादत्त शुक्ल 'गिरीश' का 'संदेह' नामक उपन्यास बेलवेडियर प्रेस, प्रयाग से प्रकाशित हुआ ।[3] इस उपन्यास में राजा आत्मानन्द की चापलूसी, धूर्तता, पदवृद्धि-लालसा और निन्द्य आचरण का वर्णन किया गया है ।

प्रेम की पीड़ा

सन् १९३० ई० में गिरीश जी द्वारा 'प्रेम की पीड़ा' नामक उपन्यास लेखक मंडल, दारागंज, प्रयाग से प्रकाशित हुआ ।[4] इस उपन्यास में राधावल्लभ नामक एक निर्धन किन्तु भावुक विद्यार्थी एवं कवि तथा निर्मला नाम की एक अविवाहिता नवयुवती की असफल प्रेम-कहानी का वर्णन किया गया है । उपन्यास पत्र-शैली में लिखित है ।

अरुणोदय

डॉ० माताप्रसाद गुप्त ने अपने 'हिन्दी पुस्तक साहित्य' में विवेच्य उपन्यासकार द्वारा लिखित और १९३० ई० में प्रकाशित 'अरुणोदय' नामक उपन्यास का उल्लेख किया है ।[5] प्रस्तुत पंक्तियों का लेखक इस उपन्यास को प्राप्त करने में असमर्थ रहा है ।

---

१. डॉ० माताप्रसाद गुप्त, हिन्दी पुस्तक साहित्य, पृ० ५५४ ।

२. प्रा० स्था०—सिनहा पुस्तकालय पटना, मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि-शराबी, लेखक बेचन शर्मा उग्र, प्रकाशक पुस्तक भवन, बनारस सिटी, द्वितीय संस्करण संवत् १९९५, पृ० सं० २०४ ।

३. प्राप्ति स्थान—आ० भा० पु० काशी, मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—संदेह, ले० गिरिजादत्त शुक्ल 'गिरीश', प्र० बेलवेडियर प्रेस, प्रयाग, प्रथम संस्करण १९२५ ई०, पृ० स० १८८ ।

४. प्राप्ति स्थान—आ० भा० पु० काशी, मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—प्रेम की पीड़ा (उपन्यास), ले० पं० गिरिजादत्त शुक्ल 'गिरीश', प्र० लेखक मंडल, दारागंज, प्रयाग, प्रथम संस्करण २००० प्रतियाँ, सन् १९३०, पृ० सं० ७६ ।

५. हिन्दी पुस्तक साहित्य, पृ० ४१९ ।

इस उपन्यास में ब्राह्मण समाज में व्याप्त उस कुरीति का चित्रण है जिसमें विवाह हो जाने के पश्चात् किसी साधारण सी बात पर चिढ़कर वर-पक्ष वाले कन्या को छोड़ देते हैं और लड़के का दूसरा विवाह कर लेते हैं। इस उपन्यास की नायिका रजनी एक ऐसी कन्या है जिसकी जाति का पता नहीं है। वह एक कान्यकुब्ज ब्राह्मण द्वारा पाली गयी है। विवाह हो जाने पर लड़के के पिता को इस बात का पता लगता है और वह अपनी पुरानी परिपाटी के अनुसार कन्या को छोड़कर चले जाते हैं और अपने लड़के का दूसरा विवाह कर लेते हैं। रजनी घबड़ाती नहीं, वरन् अपना चित्त पढ़ने में लगाती है और मेडिकल कॉलेज से डाक्टरी पास करके अपना जीवन रोग-पीड़ितों के लिए उत्सर्ग कर देती है। अन्त में अपने पति से उसका मिलन होता है। रजनी उपन्यास की नायिका और सुशील नायक है। उपन्यास में रजनी का चरित्र ही प्रधान है।

त्यागमयी

वाजपेयी जी का 'त्यागमयी' नामक उपन्यास १९२९ ई० में प्रकाशित हुआ। प्रस्तुत पंक्तियों का लेखक इस उपन्यास के प्रथम संस्करण को प्राप्त करने में असमर्थ रहा है। पर इसके तीसरे संस्करण के साथ संलग्न 'भूमिका' के अन्त में '२०।३।२९' तिथि मुद्रित है, जिससे इसके प्रकाशन-काल का पता चलता है।[1] 'त्यागमयी' का दूसरा संस्करण साहित्य मंदिर, दारागंज, प्रयाग से १९३२ ई० में[2] और तीसरा संस्करण सरस्वती प्रकाशन मन्दिर, इलाहाबाद से १९४० ई० में प्रकाशित हुआ।[3]

डॉ० माताप्रसाद गुप्त के अनुसार 'त्यागमयी' १९३२ ई० में स्वयं लेखक द्वारा प्रकाशित हुआ था,[4] पर इस सूचना की प्रामाणिकता सन्दिग्ध है।

मुसकान

सन् १९२९ई० में ही वाजपेयी जी का 'मुसकान' नामक उपन्यास साहित्य मन्दिर, दारागंज, प्रयाग से प्रकाशित हुआ।[5]

सामाजिक उपन्यास) लेखक श्री भगवती प्रसाद जी वाजपेयी, प्रकाशक 'चाँद' कार्यालय, इलाहाबाद, नवम्बर १९२८, प्रथम संस्करण २०००, मूल्य २), पृ० सं० १७०

१. भगवती प्रसाद वाजपेयी, त्यागमयी, तीसरा संस्करण १९९७ वि०, भूमिका।

२. आ० भा० पु० काशी की पुस्तक सूची।

३. प्रा० स्था०—आ० भा० पु० काशी। मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि-त्यागमयी (राष्ट्रीय जागरण के भावों से ओत प्रोत सरस सामाजिक उपन्यास,) लेखक श्री भगवती प्रसाद वाजपेयी, प्रकाशक—सरस्वती प्रकाशन मन्दिर, जार्ज टाउन, इलाहाबाद, १९९७, तीसरा संस्करण।

४. डॉ० माताप्रसाद गुप्त, हि० पु० सा०, पृ० सं० ५२९।

५. प्रा० स्था०—आ० भा० पु० काशी। मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—मुसकान (राष्ट्रीय जागरण के भावों से ओत प्रोत सरस सामाजिक उपन्यास) लेखक पंडित भगवती प्रसाद वाजपेयी, प्रकाशक साहित्य मन्दिर, दारागंज, प्रयाग, प्रथम संस्करण अप्रैल सन् १९२९, पृ० सं० १११।

पतझड़

डॉ० माताप्रसाद गुप्त के अनुसार १९३० ई० में ही मुक्त जी का 'पतझड़' नामक उपन्यास, स्वयं लेखक द्वारा इलाहाबाद से प्रकाशित हुआ।[1] प्रस्तुत पंक्तियों का लेखक इस उपन्यास को प्राप्त करने में असमर्थ रहा है।

जेलयात्रा

सन् १९३१ ई० में मुक्त जी द्वारा लिखित 'जेलयात्रा' नामक उपन्यास साहित्य मंडल, दिल्ली से प्रकाशित हुआ।[2] डॉ० माताप्रसाद गुप्त के अनुसार यह 'कहानी-संग्रह' १९३२ ई० में भारत प्रिंटिंग वर्क्स, दिल्ली से मुद्रित हुआ।[3]

तलाक

सन् १९३२ ई० में मुक्त जी का 'तलाक' नामक उपन्यास साहित्य मंडल, दिल्ली से प्रकाशित हुआ।[4] इस उपन्यास की एक प्रति आ० भा० पु० काशी में उपलब्ध है पर उसके मुखपृष्ठ के नष्ट हो जाने से पुस्तक के सम्बन्ध में कोई सूचना नहीं मिलती।

वृन्दावन लाल वर्मा

वृन्दावन लाल वर्मा यद्यपि ऐतिहासिक उपन्यासकार के रूप में विश्रुत हैं, पर उन्होंने कुछ सामान्य उपन्यासों की भी रचना की है। प्रेमचन्द युग में रचित-प्रकाशित इनके पाँच उपन्यास हैं—लगन, संगम, प्रत्यागत, कुंडलीचक्र और प्रेम की भेंट। वर्मा जी के नाम पर गंगा पुस्तकमाला कार्यालय लखनऊ से १९३१ ई० में प्रकाशित 'कोतवाल की करामात'[5] नामक एक उपन्यास भी उपलब्ध होता है, पर डॉ० शशिभूषण सिंहल के नाम प्रेषित वर्मा जी के एक पत्र से ज्ञात होता है कि यह उपन्यास उनका लिखित नहीं, उनके किसी मित्र का लिखा है।[6] वर्माजी ने प्रकाशन के लिए यह उपन्यास गंगा पुस्तकमाला कार्यालय में भिजवाया, और उनलोगों ने लेखक के स्थान पर वर्माजी का ही नाम डाल दिया। वर्माजी ने अपने पत्र में उस मित्र का नाम नहीं बताया है।

आश्रम, इलाहाबाद, पहली बार नवम्बर, १९३०।

१ डॉ० माताप्रसाद गुप्त, हि० पु० सा०, पृ० ५०७।

२ आ० भा० पु० काशी की पुस्तक सूची।

३ डॉ० माताप्रसाद गुप्त, हि० पु० सा०, पृ० ५०८।

४ आ० भा० पु० काशी की पुस्तक सूची तथा हि० पु० सा०, पृ० ५०८।

५ प्रा० स्या०—सिनहा पुस्तकालय, पटना; मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—कोतवाल की करामत (उपन्यास), लेखक श्री वृन्दावन लाल वर्मा बी० ए०, एल० एल० बी०, एडवोकेट, (लेखक गढ़ कुंडार, प्रेम की भेंट, कुंडली चक्र आदि) प्रकाशक गंगा पुस्तकमाला कार्यालय, प्रकाशक और विक्रेता, लखनऊ, प्रथमावृत्ति, सं० १९८८ वि०, मूल्य सजिल्द १॥), सादी १) पृ० सं० २४९

६ डॉ० शशिभूषण सिंहल, उपन्यासकार वृन्दावन लाल वर्मा, प्र०—विनोद पुस्तक मन्दिर, हॉस्पिटल रोड, आगरा, पृ० २९८।

कुंडलीचक्र

वर्मा जी ने सन् १९२८ ई० में[1] 'कुंडली चक्र' नामक उपन्यास की रचना की, जो १९३२ ई० में गंगा पुस्तकमाला कार्यालय, लखनऊ से प्रकाशित हुआ। प्रस्तुत पंक्तियों का लेखक 'कुंडली चक्र' के प्रथम संस्करण को प्राप्त करने में असमर्थ रहा है, पर पाँचवे संस्करण के साथ संलग्न 'दो शब्द' के अन्त में '२४-४-३२' तिथि मुद्रित है।[2] उक्त 'दो शब्द' से यह भी ज्ञात होता है कि पुस्तक रूप में प्रकाशित होने के पूर्व यह उपन्यास 'सुधा' मासिक पत्र में सं० १९८८ वि० के श्रावण से चैत्र मास तक के ९ अंकों में धारावाहिक रूप से प्रकाशित हुआ और हिन्दी प्रेमियों ने भी इसे बहुत पसन्द किया था।[3]

'कुंडलीचक्र' का चौथा संस्करण १९४५ ई० में[4], पाँचवाँ संस्करण १९५१ ई० में (भारती भवन दिल्ली से)[5] तथा छठा संस्करण १९५४ ई० में[6] प्रकाशित हुआ।

प्रेम की भेंट

वर्मा जी का 'प्रेम की भेंट' नामक उपन्यास १९२८ ई० में प्रकाशित हुआ।[7] प्रस्तुत पंक्तियों का लेखक इस उपन्यास को प्राप्त करने में असमर्थ रहा है।

ऋषभचरण जैन

ऋषभचरण जैन प्रेमचन्द युग के उन उपन्यासकारों में हैं जिन्होंने अपने उपन्यासों में 'उग्र' जी की तरह समाज के नग्न यथार्थ का वर्णन करने का साहस दिखाया था। समाज में फैले व्यभिचार और कुरीतियों का जिस साहस के साथ ऋषभचरण जैन ने उद्घाटन किया, वह अभूतपूर्व था। यही ऋषभचरण जैन की प्रसिद्धि का कारण भी था और उपन्यासकार के रूप में उनकी मृत्यु का भी। समाज के अनुद्घाटित व्यभिचार कृत्यों को प्रकाश में लाने के जोश में ये भूल गये कि सामयिकता के चित्रण से कोई उपन्यासकार तत्कालीन पाठकों के बीच चाहे जितना लोकप्रिय हो जाए, उसका व्यक्तित्व स्थायी नहीं हो सकता।

---

१. डॉ० शशिभूषण सिंहल, उपन्यासकार वृन्दावन लाल वर्मा, पृ० ३८४।
२. वृन्दावन लाल शर्मा, कुंडलीचक्र, प्रथमावृत्ति सं० २००८ वि०, दो शब्द।
३. उपरिवत्।
४. उपरिवत्, वक्तव्य (चतुर्थावृत्ति पर)
५. प्रा० स्था०—वि० रा० भा० प० पु० पटना। मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—कुंडलीचक्र (सामाजिक उपन्यास), लेखक—वृन्दावन लाल वर्मा, प्रकाशक—भारती (भाषा) भवन, दिल्ली, पंचमावृत्ति सं० २००८ वि०।
६. आ० भा० पु० काशी की पुस्तक सूची।
७. उपरिवत्।

दिल्ली का व्यभिचार

सन् १९२९ ई० में विवेच्य उपन्यासकार द्वारा लिखित 'दिल्ली का व्यभिचार' नामक उपन्यास हिंदी पुस्तक कार्यालय, दिल्ली से दूसरी बार प्रकाशित हुआ।[1] प्रस्तुत पंक्तियों का लेखक इस उपन्यास के प्रथम संस्करण को प्राप्त करने में असमर्थ रहा है। इसका तीसरा संस्करण १९३८ ई० में प्रकाशित हुआ।[2] डॉ० माताप्रसाद गुप्त ने इस उपन्यास के प्रथम संस्करण का प्रकाशन-काल १९३८ ई० दिया है, जो अशुद्ध है।[3] सम्भव है, डॉ० गुप्त ने इसका प्रकाशन-काल १९२८ दिया है जो मुद्रण की भूल के कारण १९३८ हो गया है। हिंदी पुस्तक साहित्य के पृ० २४० पर इस उपन्यास के लेखक का नाम रामजी दास बताया गया है, जो एक पहेली है।[4]

इस उपन्यास में दिल्ली नगर में फैले व्यभिचार से सम्बद्ध १२ कहानियाँ वर्णित हैं। लेखक की एक 'हौआ कमेटी' है जिसमें बारह सदस्य हैं। इस 'कमेटी' का सभापति स्वयं लेखक है। 'कमेटी' के सभी सदस्य दिल्ली के व्यभिचार से सम्बद्ध एक-एक कहानी सुनाते हैं। इन्हीं कहानियों के संग्रह के रूप में यह उपन्यास है।

सत्याग्रह

डॉ० माताप्रसाद गुप्त के अनुसार सन् १९३० ई० में ऋषभचरण जैन का 'सत्याग्रह' नामक उपन्यास जंगीदा ब्राह्मण प्रेस, दिल्ली से मुद्रित हुआ।[5] प्रस्तुत पंक्तियों का लेखक इस उपन्यास के प्रथम संस्करण को प्राप्त करने में असमर्थ रहा है। इसका चौथा संस्करण १९५३ ई० में और पाँचवाँ संस्करण १९५५ ई० में ज्ञान-प्रकाशन, दिल्ली द्वारा प्रकाशित हुआ।[6] इस पुस्तक में औपन्यासिक शैली में महात्मा गांधी के अफ्रीका पहुँचने, वहाँ अँगरेज सरकार और पूँजीपतियों के विरुद्ध सत्याग्रह आन्दोलन छेड़ने और वहाँ से सफलता प्राप्त कर भारत लौटने का वर्णन है।

बुरकेवाली

सन् १९३० ई० में विवेच्य लेखक कृत 'बुरकेवाली' नामक उपन्यास हिन्दी पुस्तक

---

१. प्राप्तिस्थान—आ० भा० पु० काशी। मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—दिल्ली का व्यभिचार, लोमहर्षक व्यभिचार—कथा में, लेखक—श्रीयुत ऋषभचरण जैन, प्रकाशक—हिन्दी पुस्तक कार्यालय, कूचा पाती राम, देहली, दूसरी बार, सन् १९२९ ई०।

२. प्राप्तिस्थान—माहेश्वर सार्वजनिक पुस्तकालय, पटना।

३. डॉ० माताप्रसाद गुप्त, हिन्दी पुस्तक साहित्य, पृ० ३८९।

४. उपरिवत्, पृ० २४०।

५. उपरिवत्, पृ० ३८८।

६. प्रा० स्था० सिनहा पुस्तकालय, पटना; मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—सत्याग्रह, लेखक ऋषभ चरण जैन, प्र० ज्ञान प्रकाशन, ७।१६, दरियागंज, दिल्ली, चौथी बार १९५३, पाँचवीं बार १९५५, पृ० सं० ८०, मूल्य १॥)।

१९४९ ई० में गंगा ग्रन्थागार, ३६, लाटूश रोड, लखनऊ से प्रकाशित हुआ।[1]

'भाग्य' में कुमारी और करुणा नामक की दो सखियों के प्रेम और ईर्ष्या का चित्रण किया गया है और भाग्य अथवा प्रारब्ध के अस्तित्व और महत्त्व का प्रतिपादन किया गया है।

मधुकरी

'हिन्दी पुस्तक साहित्य' के अनुसार १९३३ ई० में विवेच्य उपन्यासकार द्वारा लिखित 'मधुकरी' नामक उपन्यास जंगीदा ब्राह्मण प्रेस, दिल्ली से दो भागों में मुद्रित हुआ।[2] प्रस्तुत पंक्तियों का लेखक इस उपन्यास को प्राप्त करने में असमर्थ रहा है।

दिल्ली का कलंक

सन् १९३६ ई० में ऋषभचरण जैन लिखित 'दिल्ली का कलंक' नामक उपन्यास साहित्य मंडल, दिल्ली से प्रकाशित हुआ।[3] दिल्ली के चावड़ी बाजार में वेश्याओं के निवास के फलस्वरूप जो अपराधपूर्ण घटनाएँ होती हैं, उनका वर्णन इस उपन्यास में कहानियों के रूप में किया गया है।

मन्दिर दीप

१९३६ ई० में ही विवेच्य उपन्यासकार द्वारा लिखित 'मन्दिर दीप' नामक उपन्यास साहित्य मंडल, बाजार सीताराम, दिल्ली से प्रकाशित हुआ।[4] प्रस्तुत पंक्तियों का लेखक इस उपन्यास को प्राप्त करने में असमर्थ रहा है।

बुरादाफरोश

डॉ० माताप्रसाद गुप्त के अनुसार सन् १९३६ ई० में विवेच्य उपन्यासकार द्वारा लिखित 'बुरादाफरोश' नामक उपन्यास रूपवाणी प्रिंटिंग हाउस, दिल्ली से प्रकाशित हुआ। पर हिन्दी पुस्तक साहित्य के पृ० २३९ पर इसका प्रकाशन काल १९३६ ई० और पृ० ३८९ पर १९३७ दिया हुआ है। पता नहीं दोनों में कौन ठीक है। प्रस्तुत पंक्तियों का लेखक इस उपन्यास को प्राप्त करने में असमर्थ रहा है।

व्यभिचार, बिखरे मोती, सत्याग्रह, हड़ताल, गऊवाणी आदि) प्र०—गंगा पुस्तकमाला कार्यालय, प्रकाशन और विक्रेता, लखनऊ, प्रथमावृत्त सं० १९८८ वि० मूल्य, सजिल्द २।।) सादी २) पृ० सं० १४६।

१. प्रा० स्था०—सिन्हा पुस्तकालय पटना।

२. डॉ० माताप्रसाद गुप्त, हिंदी पुस्तक साहित्य, पृ० ३८८ तथा आ० भा० पु० की पुस्तकसूची।

३. प्राप्तिस्थान—आ० भा० पु० काशी। मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि- दिल्ली का कलंक (कुछ वीभत्स चित्र) लेखक-श्री ऋषभ चरण जैन-प्रकाशक-साहित्य मंडल, बाजार सीताराम, दिल्ली, प्रथम बार अप्रैल १९३६ ई०, पृ० सं० १८४।

४. आ० भा० पु० काशी की पुस्तक सूची तथा डॉ० माताप्रसाद गुप्त, हिन्दी पुस्तक साहित्य, पृ० ३८६।

उपन्यास एम० एम० सोजतिया ऐंड कम्पनी, इन्दौर सिटी से प्रकाशित हुआ।[1] इस उपन्यास में भी व्यभिचार सम्बन्धी घटनाओं के वर्णन का ही प्रावान्य है। उपन्यास के मुखपृष्ठ पर मुद्रित वाक्य—यह उपन्यास चुलबुला है, मीठा है, जासूसी है, अपूर्व क्रान्तिकारी है—ही इसके विषय का संकेत दे देता है।

सोहागरात का चांद

१६२६ ई० में ही विवेच्य उपन्यासकार का 'सोहागरात का चांद' नामक उपन्यास एम० एम० सोजतिया ऐंड कम्पनी, इन्दौर से प्रकाशित हुआ।[2] यह उपन्यास भी अपराध-प्रधान घटनाओं से भरा हुआ है।

शर्मीला घूँघट

सन् १९३० ई० में 'प्रभात किरण' का 'शर्मीला घूँघट' नामक उपन्यास एम०एम० सोजतिया ऐंड कम्पनी, इन्दौर से प्रकाशित हुआ।[3] इसका दूसरा संस्करण १९३३ ई० में उपर्युक्त प्रकाशन संस्था से ही प्रकाशित हुआ।[4] इस उपन्यास में शृंगार-प्रधान घटनाओं की प्रधानता है।

सिनेमा का शैतान

सन् १९३० ई० में ही विवेच्य उपन्यासकार द्वारा लिखित 'सिनेमा का शैतान'

---

१. प्राप्ति स्थान —आ० भा० पु० काशी, मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि-दो आना माला, नवाँ और दसवाँ डबल अंक, स्लेव्स ऑफ वाइफ्ज औरतों के गुलाम, "यह उपन्यास चुलबुला है—मीठा है—जासूसी है, अपूर्व क्रांतिकारी है।" लेखक— श्रीयुक 'प्रभात किरण, सेप्टेंबर और अक्टोबर १९२९ प्र०—एम० एम सोजतिया एंड कंपनी, दो आना माला ऑफिस-इन्दौर सिटी। पृ० सं० ८२।

२. प्राप्तिस्थान- आ० भा० पु० काशी। मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि-दो आना माला ग्यारहवां और बारहवां डबल अंक- हनीमून, सोहागरात का चांद, यह उपन्यास पराधीन देश के धधकते हुए हृदय की आग है। क्रान्ति का संदेश है। सच्ची सोहागरात की झाँकी है। एक बार इसे पढ़ें। लेखक—सामाजिक क्रान्ति के उपासक श्रीयुत प्रभात किरण, नव्हेंबर-डिसेंबर सन् १९२९, प्रकाशक —एम० एम० सोजतिया एंड कंपनी, दो आना माला आफिस, बड़ा सराफा, इन्दौर-प्रथम वार २००० । पृ० सं० ७६।

३. पुस्तक सूची, आ० भा० पु० काशी।

४. मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि–दो आना माला, पंद्रहवाँ अंक, शर्मीला घूँघट, अपनी शर्मीली फूहड़ बीवियों को घूँघट के गहन इंद्रजाल में कैद करके—संसार की निगाहों में एक अजीब दिल्लगी का पिटारा कहलाने, वाले अभागे हिन्दू समाज के नैतिक पतन की हृदय विदारक सच्ची कहानी, सुनना होतो-आप इस महान क्रांतिकारी छोटी सी पुस्तिका को अवश्य पढ़ें। लेखक-काला पंजा-धधकता अग्निकुंड—हिंदू मारशल ला—बलिदान की चिनगारियाँ, औरतों के गुलाम-आदि अनेक क्रांतिकारी पुस्तकों के प्रणेता। एम० एम० सोजतिया 'प्रभात किरण', सन् १९३३, प्र० - एम० एम० सोजतिया एंड कंपनी, इन्दौर सिटी, दूसरी वार २०००, पृ० सं० ३९।

राख में अंगार याने स्त्री रहस्य

सन् १९३३ ई० में 'प्रभात किरण' का 'राख में अंगार याने स्त्री रहस्य' नामक उपन्यास पाँच भागों में, एम० एम० सोजतिया एँड कम्पनी इन्दौर से प्रकाशित हुआ।[1] यह भी एक अपराध-प्रधान उपन्यास है। इसका पाँचवाँ भाग १९३४ ई० में प्रकाशित हुआ था।[2]

अनूपलाल मंडल

निर्वासिता

सन् १९२९ ई० में अनूपलाल मंडल का 'निर्वासिता' नामक उपन्यास चाँद कार्यालय, इलाहाबाद से प्रकाशित हुआ।[3] इस उपन्यास में हिन्दू समाज की कुरीतियों का, विशेषकर वैवाहिक समस्याओं का, चित्रण किया गया है।

समाज की वेदी पर

सन् १९३१ ई० में विवेच्य उपन्यासकार द्वारा लिखित 'समाज की वेदी पर' शीर्षक उपन्यास युगान्तर साहित्य मन्दिर, पूर्णिया से प्रकाशित हुआ।[4] इसका तीसरा संस्करण १९३७ ई० में निकला।[5] केवल छह वर्षों में इसके तीन संस्करणों का प्रकाशन इसकी लोकप्रियता का परिचायक है। यह उपन्यास पत्र-शैली में लिखा गया है तथा इसमें प्रेम और विवाह सम्बन्धी समस्याओं का चित्रण है।

---

१. प्राप्तिस्थान—आ० भा० पु० काशी। दो आना माला मासिक सिरीज, सत्ताईसवाँ अंक, प्रथम भाग, राख में अंगार याने स्त्री रहस्य, प्रेम के नाम पर दुराचार की भंयकर बाढ़ में बहते हुए बीसवीं सदी के युवक-युवतियों की रहस्यमयी और गुप्त कहानियाँ सुनानेवाला—एक महान् कून्तिकारी उपन्यास। लेखक एम० एल० सोजतिया—'प्रभात किरण', १ अगस्त १९३३, प्रकाशक-एम० एम० सोजतिया एंड कम्पनी, दो आना माला इन्दौर सिटी, प्रथम वार ३०००, पृ० सं० ४३। (दूसरे, तीसरे और चौथे भागों की सूचनाएँ भी उपरिवत् हैं।)

२ पाँचवाँ भाग, राख में अंगार उर्फ स्त्री रहस्य याने हिया नो हार (उत्तरार्ध), साविश्री सी पतिव्रता कोमलांगी के पतन की करुण कहानी पढ़कर आपकी आँखें आँसू बरसाये बिना न रह सकेंगी। लेखक एम० एम० सोजतिया श्री 'प्रभात किरण', १ दिसम्बर सन् १९३४, प्र० एम० एम० सोजतिया, दो आना माला आफिस, इंदौर, प्रथमवार २०००, पृ० ५५।

३. प्राप्तिस्थान—आ० भा० पु० काशी; मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—निर्वासिता (मौलिक सामाजिक उपन्यास) लेखक—अनूप लाल जी मंडल, साहित्य रत्न, सम्पादक श्री सत्यभक्त भूतपूर्व सम्पादक 'प्रणवीर' आदि, प्रकाशक—चाँद कार्यालय, चन्द्रलोक, इलाहाबाद, नवम्बर १९२९, प्रथमवार ३०००, पृ० सं० ३८२।

४. प्राप्तिस्थान—आ० भा० पु० काशी; मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—समाज की वेदी पर, ले० श्री अनूप लाल मंडल, साहित्यरत्न, प्र०—युगान्तर साहित्य मन्दिर, गुरु बाजार, पूर्णिया, प्रथम संस्करण १९८८, पृ० सं० १७२।

५. प्रा० स्था०-प० वि० पु०, पटना।

कोई सूचना नहीं प्राप्त होती। उपन्यास की भूमिका के अन्त में '१९-१०-२९' तिथि मुद्रित है, जिससे इसका लेखन-काल १९२९ का अन्त अथवा (अधिक सम्भव है) १९३० ई० का आरम्भ सिद्ध होता है। डॉ० माताप्रसाद गुप्त के अनुसार यह उपन्यास १९३० ई० में नाथूराम प्रेमी द्वारा वम्बई से प्रकाशित हुआ था।[1] 'सरस्वती' के नवम्बर १९३० के अंक में 'परख' की समीक्षा प्रकाशित हुई थी।

'परख' का दूसरा संस्करण लगभग ११ वर्ष बाद १९४१ ई० में हिन्दी ग्रन्थ रत्नाकर कार्यालय, वम्बई से प्रकाशित हुआ।[2] 'परख' के तीसरे और चौथे संस्करण पटना कॉलेज पुस्तकालय, पटना में उपलब्ध हैं, पर किसी में भी प्रकाशन-काल नहीं दिया हुआ है। इस उपन्यास का छठा संस्करण १९५३ ई० में[3] तथा सातवाँ संस्करण जून १९५४ ई० में[4] प्रकाशित हुआ।

'परख' का केन्द्रीय विषय प्रेम के एक विशेष आदर्श का चित्रण है। सत्यधन, कट्टो और बिहारी उपन्यास के प्रमुख पात्र हैं। कट्टो बालविधवा है। वह अपने मास्टर सत्यधन को प्यार करने लगती है। सत्यधन भी कुछ करुणावश, कुछ प्यार वश उसे अपना लेना चाहता है। पर उसका विवाह बिहारी को बहन गरिमा से लगभग तय हो चुका है। उसके मन में संघर्ष तो बहुत होता है पर अन्ततः वह गरिमा से ही विवाह करने का निर्णय करता है। इधर बिहरी कट्टो को अपना लेता है। पर दोनों पति-पत्नी की तरह नहीं, मन से विवाहित, पर शरीर से अलग रहने का व्रत लेते हैं। उपन्यास में विधवा कट्टो के प्रेम तथा उसके मानसिक संघर्ष का सुन्दर चित्रण हुआ है।

स्पर्धा

१९३० ई० में ही जैनेन्द्र का 'स्पर्धा' नामक एक लघु उपन्यास नाथू राम प्रेमी द्वारा वम्बई से प्रकाशित हुआ।[5] प्रस्तुत पंक्तियों का लेखक इस उपन्यास के प्रथम संस्करण को प्राप्त करने में असमर्थ रहा है। 'सरस्वती' के नवम्बर १९३३ के अंक में इस उपन्यासिका का निम्नलिखित 'परिचय' प्रकाशित हुआ था--'स्पर्धा' : लेखक-श्रीजैनेन्द्र कुमार, प्रकाशक-भारती भंडार, काशी, पृ०सं० ५५ और मूल्य ।=) है। यह एक छोटा सा उपन्यास है। इसकी रंगभूमि इटली है। जब इटली दूसरों की गुलामी में था उस समय वहाँ के क्रान्तिकारी देशभक्तों की एक छोटी सी घटना का इसमें वर्णन किया गया है।"

---

१. डॉ० माताप्रसाद गुप्त, हि० पु० सा० पृ० ४५७।
२. जैनेन्द्र कुमार, परख, तृतीय संस्करण, प्र० हिन्दी ग्रंथ रत्नाकर कार्यालय, वम्बई।
३. आ० भा० पु० काशी की पुस्तक-सूची।
४. प्रा० ख्या०-वि० रा० भा० प० पु०, पटना।
५. डॉ० माताप्रसाद गुप्त, हि० पु० सा०, पृ० ४५७।

'सुनीता' में जैनेन्द्र ने नैतिकता की सर्वथा नवीन व्याख्या प्रस्तुत की है। श्रीकान्त अपने अभिन्न मित्र हरिप्रसन्न की भटकन को किसी प्रकार समाप्त करना चाहता है। हरिप्रसन्न के मन में कोई गाँठ है, जिसके कारण वह क्रान्तिकारी बन गया है, अपने को तिल तिल कर के मार रहा है। श्रीकान्त चाहता है कि हरिप्रसन्न की क्षमता व्यर्थ नहीं जाए, वह समाज के लिए उपयोगी बने। वह जानता है कि यह गाँठ इसलिए है कि हरिप्रसन्न को प्रेम नहीं मिला है। अतः वह अपनी पत्नी को इस बात के लिए प्रेरित करता है कि वह नैतिकता की परिचित सीमा को लाँघ कर भी हरिप्रसन्न की गाँठ को खोले, उसमें वह बँध कर बैठने की चाह उत्पन्न करे। सुनीता पति की आज्ञा का पालन करती है और घोर जंगल में हरिप्रसन्न के साथ अकेली जाकर अपने को निर्वसन करके समर्पित कर देती है। हरिप्रसन्न उसे नारी रूप में ग्रहण तो नहीं कर पाता, पर श्रीकान्त की बातचीत से ऐसा लगता है, कि उसके मन की गाँठ खुल जाती है। यों पाठक की समझ में नही आता कि वह गाँठ कैसी थी और यह खुलती किस तरह और किस रूप में है।

सुनीता हिन्दी का पहला व्यक्तिवादी उपन्यास है और जैनेन्द्र ने इसके द्वारा हिन्दी में उपन्यास की नयी दिशा की सम्भावनाएँ उद्घाटित कीं।

जयशंकर प्रसाद

जयशंकर प्रसाद मुख्यतः कवि और नाटककार थे, पर उपन्यास-क्षेत्र में भी, थोड़ा लिखकर जितना यश और सम्मान उन्होंने अर्जित कर लिया, वह दूसरों के लिए सम्भव न हो सका। प्रसाद जी ने केवल तीन उपन्यास लिखे—कंकाल, तितली और इरावती (अधूरी) और केवल इन्हीं से वे हिन्दी उपन्यास-क्षेत्रमें 'एक स्कूल' के संस्थापक माने जाने लगे। आदर्शोन्मुख यथार्थवादी उपन्यासों की परम्परा, जिसके प्रवर्तक प्रेमचन्द थे, प्रेमचन्द स्कूल के अन्तर्गत रखी जाती थी और यथार्थवादी या प्रकृतवादी उपन्यासों की परम्परा, जिसके जनक जयशंकर प्रसाद थे, प्रसाद स्कूल की संज्ञा से अभिहित होती थी। प्रसाद जी के प्रथम दो उपन्यास, 'कंकाल' और 'तितली', सामाजिक जीवन और उसकी समस्याओं से सम्बद्ध हैं जबकि 'इरावती' ऐतिहासिक उपन्यास है।

कंकाल

प्रसाद' जी का पहला उपन्यास 'कंकाल' है जो १९३० ई० के आरम्भ (जनवरी-फरवरी) में भारती भंडार, लीडर प्रेस, इलाहाबाद से प्रकाशित हुआ। प्रस्तुत पंक्तियों का लेखक इस उपन्यास के प्रथम संस्करण को प्राप्त करने में असमर्थ रहा है। कंकाल के द्वितीय तथा परवर्ती संस्करणों में प्रथम संस्करण का प्रकाशकीय वक्तव्य दिया हुआ है जिसके अन्त में "गणेश चतुर्थी माघ १९७६" मुद्रित है। "गणेश चतुर्थी माघ १९७६" का अर्थ होगा जनवरी-फरवरी १९२० ई०। पर 'कंकाल' के प्रथम संस्करण का प्रकाशन-काल

नारायण टंडन के अनुसार भी 'तितली' का प्रकाशन-काल १९३४ ई० है।[1] 'हंस' के जुलाई १९३५ ई० के अंक में प्रेमचन्द ने 'तितली' की समीक्षा की थी, जिसमें उन्होंने लिखा था : " 'तितली' प्रसाद जी का दूसरा उपन्यास है और यद्यपि इसमें कंकाल की साहित्यिक छटा नहीं है, पर दृष्टिकोण की स्पष्टता और विचारों की प्रौढ़ता में उससे बढ़ा हुआ है" ।[2]

तितली का द्वितीय संस्करण सन् १९३८ ई० (सं० १९९५ वि०) में[3] (भारती भंडार, लीडर प्रेस, इलाहाबाद से), चतुर्थ संस्करण १९४५ ई० (सं० २००२ वि०) में[4], सातवाँ संस्करण १९५६ ई० (सं० २०१३ वि०) में[5] तथा आठवाँ संस्करण १९५८ ई० (सं० २०१५) में[6] में प्रकाशित हुआ।

'तितली' में यथार्थ की पीठिका पर आदर्श की प्रतिष्ठा की गयी है। ग्राम संघटन आदि के द्वारा ग्रामीणों के जीवन का उन्नयन ही उपन्यासकार का प्रमुख उद्देश्य है।

किसान-मजदूर पर होनेवाले अत्याचार, तहसीलदार, महन्थ आदि के हथकंडे, कलकत्ता महानगरी के जुआड़ी-जेवकतरों के कारनामे तथा निम्नवर्ग की दयनीय दशा, वेश्या मैना की धनलोलुपता, निरुपाय मधुवन की आत्मसम्मान के लिए मर मिटने की अदम्य आकांक्षा एवं विधवा राजो की अतृप्त कामनाओं आदि का अत्यन्त यथार्थ और सप्राण चित्रण हमें 'तितली' में देखने को मिलता है।

उपन्यास की नायिका तितली—अविचल कर्तव्यनिष्ठा और अनन्य प्रेम की साकार प्रतिमा है। नारी पात्रों में शैला, मैना, अनवरी और पुरुष पात्रों में मधुवन, रामजस, इन्द्रदेव आदि विशेष उल्लेखनीय हैं। शैला और इन्द्रदेव का परिणय, हिन्दी उपन्यास में सम्भवतः पहली वार, अन्तरराष्ट्रीय विवाह का उदाहरण प्रस्तुत करता है।

सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला'

सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला' मुख्यतः कवि थे, पर उन्होंने कुछ उपन्यास भी लिखे थे। प्रेमचन्द युग में उन्होंने चार उपन्यासों की रचना की थी—अप्सरा, अलका, निरुपमा और प्रभावती। इनमें प्रथम तीन सामाजिक तथा अन्तिम ऐतिहासिक उपन्यास है।

---

१. डॉ० प्रताप नाराण टंडन, हिन्दी उपन्यास में कथा शिल्प का विकास, पृ० २८४।
२. अमृत राय, प्रेमचंद, विविध प्रसंग ३, पृ० ३७८।
३. प्रा० स्था०–ज० पु० चुन्नी।
४. प्रा० स्था०–प० का० पु० पटना।
५. प्रा० स्था०–सिनहा पुस्तकालय, पटना।
६. प्रा० स्था०–मेरा निजी पुस्तकालय।

यथार्थ चित्रण किया गया है। विधवा वीणा से अजित का विवाह कराकर निराला ने विधवा-विवाह का समर्थन भी किया है।

निरुपमा

डॉ० माताप्रसाद गुप्त के अनुसार 'निराला' का 'निरुपमा' नामक उपन्यास १९३६ ई० में लीडर प्रेस, इलाहाबाद से प्रकाशित हुआ।[१] 'निरुपमा' के आठवें संस्करण के साथ संलग्न 'समर्पण' के अन्त में "२१-३-३६" तिथि मुद्रित है, जिससे उक्त सूचना की पुष्टि होती है। इसका छठा संस्करण १९५२ ई० (२००९ वि०) में[२] तथा आठवाँ संस्करण १९५६ ई० (सं० २०१३ वि०) में[३] प्रकाशित हुआ।

'निरुपमा' निराला का सर्वश्रेष्ठ उपन्यास है। इसमें ग्रामीण जीवन का जैसा यथार्थ और विश्वसनीय चित्र प्रस्तुत किया गया है, वह निराला के अन्य उपन्यासों में तो नहीं ही मिलता, प्रेमचन्द को छोड़कर हिन्दी के तत्कालीन अन्य किसी उपन्यास में भी दुर्लभ है। ग्रामीण जनों के अन्धविश्वासों, सामाजिक रूढ़ियों तथा उन पर होने वाले अत्याचारों का सजीव वर्णन हुआ है। ग्रामीण महिलाओं का तो ऐसा यथार्थवादी और सूक्ष्म चित्रण हुआ है कि लेखक की पर्यवेक्षण शक्ति और यथार्थ की पकड़ की तारीफ किये बिना नहीं रहा जाता।

'निरुपमा' में निरुपमा और देवी सावित्री के चरित्रांकन में उपन्यासकार ने बहुत सुझबूझ का परिचय दिया है। देवी सावित्री एक सामाजिक विद्रोहिणी के रूप में प्रस्तुत की गयी हैं।

भगवतीचरण वर्मा

चित्रलेखा

भगवतीचरण वर्मा की गणना प्रेमचन्दोत्तर युग के प्रमुख उपन्यासकारों में होती है, पर इन्होंने उपन्यास लेखन का आरम्भ प्रेमचन्द युग में ही किया था। इनका 'चित्रलेखा' नामक उपन्यास सर्वप्रथम १९३४ ई० में साहित्य भवन लिमिटेड, इलाहाबाद से प्रकाशित हुआ।[४] 'हिन्दुस्तानी' के अक्टूबर १९३४ के अंक में 'चित्रलेखा' की समीक्षा प्रकाशित हुई थी।

'चित्रलेखा' हिन्दी के सर्वाधिक लोकप्रिय उपन्यासों में से एक है। भारती भंडार, लीडर प्रेस, इलाहाबाद से इसका सातवाँ संस्करण १९४७ ई० में[५] तथा चौदहवाँ

---

१. डॉ० माताप्रसाद गुप्त, हि० पु० सा०, पृ० ६७०।

२. प्रा० स्था०—सिनहा पुस्तकालय, पटना।

३. उपरिवत्।

४. आ० भा० पु० की पुस्तक सूची।

५. उपरिवत्।

फुटकल उपन्यास

सुकुमारी

सन् १९१८ ई० में पं० मणिराम शर्मा लिखित 'सुकुमारी' नामक उपन्यास का द्वितीय संस्करण ओंकार प्रेस, प्रयाग से प्रकाशित हुआ।[1] प्रस्तुत पंक्तियों का लेखक इस उपन्यास के प्रथम संस्करण को प्राप्त करने में असमर्थ रहा है। इस उपन्यास में स्त्रियों के अशिक्षित रहने के दोष दिखाये गये हैं।

सुघड़ चमेली

मार्च १९१८ ई० के निकट पूर्व में रामजी दास भार्गव लिखित 'सुघड़ चमेली' नामक उपन्यास गंगा पुस्तकमाला कार्यालय, लखनऊ से प्रकाशित हुआ।[2] इसमें चमेली नामकी कन्या की कथा के व्याज से लड़कियों को उनके योग्य कामकाज की शिक्षा दी गयी है।[3]

भारत रहस्य

मार्च १९१८ के निकट अतीत में ही 'भारत रहस्य' नामक उपन्यास 'भारत रहस्य' कार्यालय, बहादुरगंज, इलाहाबाद से २० भागों में प्रकाशित हुआ। प्रस्तुत पंक्तियों का लेखक इस उपन्यास को प्राप्त करने में असमर्थ रहा हैं। २५-३-१९१८ ई० के 'प्रताप' में इस उपन्यास का विज्ञापन निकला था। यह भी सम्भव है कि विज्ञापित होने के बावजूद यह उपन्यास प्रकाशित न हो पाया हो या इसके एक दो भाग प्रकाशित होकर रह गये हों।

विचित्र वारांगना

सन् १९१८ ई०में बाबू शिवनारायण लाल वर्मा लिखित 'विचित्र वारांगना' नामक 'एक सत्य घटनापूर्ण शिक्षाप्रद उपन्यास' आर० एल० वर्म्मन एंड कम्पनी, "वर्म्मनप्रेस", कलकत्ता से प्रकाशित हुआ।[4] इस उपन्यास में हिन्दू-समाज की एक कुप्रथा—सन्तान न होने पर प्रथम सन्तान को किसी देवता को अर्पण करने की मनौती—का चित्रण किया गया है।

---

१. प्रा० स्था०—आ० भा० पु० काशी; मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—सुकुमारी, स्त्री शिक्षा की एक अनूठी पुस्तक, लेखक पं मणिराम शर्मा, प्रकाशक पं० ओंकार नाथ वाजपेयी, ओंकार प्रेस, प्रयाग में छपा, सन् १९१८ ई०, द्वितीय बार।

२. सरस्वती, भाग १९, अंक ३, मार्च १९१८, पुस्तक परिचय।

३. उपरिवत्।

४. प्रा० स्था०—आ० भा० पु०, काशी; मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—विचित्र वारांगना, एक सत्य घटना पूर्ण शिक्षाप्रद उपन्यास, लेखक बाबू शिवनारायण लाल वर्मा, प्रकाशक आर० एल० वर्म्मन एंड कम्पनी, बर्म्मन प्रेस, कलकत्ता १९१८ ई०, प्रथम बार २०००।

नाटक चक्र अथवा कोट का बटन

१९१९ ई० में ही बाबू फूलचन्द अग्रवाल रचित 'नाटक चक्र अथवा कोट का बटन' नामक उपन्यास साहित्य कार्यालय, मुरार (ग्वालियर) से प्रकाशित हुआ[१] इस उपन्यास में दिखाया गया है कि "आजकल की नाटक कम्पनियों के शौक में अमीरों के लड़के किस प्रकार नष्ट हो जाते हैं, वेश्याएँ किस प्रकार जाल फैलाकर युवकों का जीवन नष्ट कर डालती हैं और किस प्रकार वेपरवाही से सन्तान बिगड़ जाती है।[२]

भीषण नारी हत्या

इसी वर्ष बनारसी प्रसाद वर्मा कृत 'भीषण नारी हत्या' नामक उपन्याम, उपन्यास दर्पण कार्यालय, बनारस से प्रकाशित हुआ।[३]

भयानक तूफान

डॉ० माताप्रसाद गुप्त के अनुसार सन् १९१९ ई० में लाला जयगोपाल लिखित 'भयानक तूफान' नामक उपन्यास आर्य बुक डिपो (स्थान का नाम नहीं दिया हुआ है) से प्रकाशित हुआ।[४] प्रस्तुत पंक्तियों का लेखक इस उपन्यास को प्राप्त करने में असमर्थ रहा है।

पतित पति वा भयंकर भूल

सितम्बर १९२० ई० में श्रीयुत रूपनारायण शर्मा द्वारा लिखित 'पतित पति वा भयंकर भूल' नामक उपन्यास, उपन्यास बहार आफिस, काशी से प्रकाशित हुआ।[५]

भारत प्रेमी

मई १९२० ई० के पूर्व भगवत प्रसाद शुक्ल लिखित 'भारतप्रेमी' नामक उपन्यास, स्वयं लेखक द्वारा बुधवारीपुरा, छिन्दवाड़ा से प्रकाशित हुआ।[६] प्रस्तुत पंक्तियों का लेखक इस उपन्यास को प्राप्त करने में असमर्थ रहा है।

प्रेमा

इसी समय के लगभग श्रीयुत श्रीकृष्ण मिश्र लिखित 'प्रेमा' नामक उपन्यास,

---

१. प्रा० स्था०--आ० भा० पु०, काशी, मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि--नाटकचक्र अथवा कोट का बटन (प्रथम भाग), (एक उपदेशपूर्ण उपन्यास) लेखक बाबू फूलचंद अग्रवाल, प्रकाशक साहित्य कार्यालय, पो० मुरार, ग्वालियर, प्रथम बार १०००, १९१९।

२ उपरिवत्, निवेदन।

३. आ० भा० पु०, काशी की पुस्तक सूची।

४. डॉ० माताप्रसाद गुप्त, हि० पु० सा०, पृ० ४५१।

५. प्रा० स्था०--आ० भा०पु०, काशी; मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि-पतित पति वा भयंकर भूल, लेखक श्रीयुत रूपनारायण शर्मा, प्र० उपन्यास बहार आफिस, काशी, बनारस। दूसरी बार सेप्टेम्बर १९२०, पृ० सं० १३५।

६, सरस्वती भाग २१, अंक ५, मई १९२०, पुस्तक परीक्षा।

की रचना की, जो सम्भवतः १९२१ ई० में सरस्वती ग्रन्थमाला कार्यालय, आगरा से प्रकाशित हुआ।[1] पुस्तक के मुखपृष्ठ पर प्रकाशन-काल नहीं दिया हुआ है। पर वक्तव्य के अन्त में दिसम्बर १९२० ई० मुद्रित है जिससे इसका रचनाकाल तथा प्रकाशनकाल अनुमित होता है। इस उपन्यास में तत्कालीन समाज के दोषों, यथा बालविवाह, वृद्धविवाह, विधवा दुर्दशा, कुशिक्षा, पारस्परिक फूट आदि का चित्रण किया गया है।

आरामनंदन

सन् १९२० ई० में ही पं० ललित विजय जी महाराज द्वारा लिखित 'आरामनंदन' नामक उपन्यास श्री आत्मतिलक ग्रन्थ सोसायटी, रतनपोल (अहमदाबाद) द्वारा प्रकाशित हुआ।[2]

सुशीला या स्वर्गदेवी

मार्च १९२१ ई० के निकटपूर्व में पं० छविनाथ पांडेय द्वारा लिखित 'सुशीला या स्वर्गदेवी' नामक उपन्यास लक्ष्मण साहित्य भंडार, चौक, लखनऊ से प्रकाशित हुआ।[3]

पुनरुत्थान

सन् १९२१ ई० में कृष्णलाल वर्मा ने 'पुनरुत्थान' नामक उपन्यास की रचना की, जो ग्रंथ भंडार, बंबई से प्रकाशित हुआ।[4] पुस्तक के मुखपृष्ठ पर प्रकाशनकाल नहीं दिया हुआ है, पर 'दो बातें' के अन्त में "कृष्ण जन्माष्टमी सं० १९७८" मुद्रित है, जिससे इसका रचना-काल अनुमित होता है। इस उपन्यास में तत्कालीन असहयोग आन्दोलन का चित्र प्रस्तुत किया गया है।

विचित्र संसार अथवा लाले वो बच्चे

सन् १९२१ ई० में ही ऋषीश्वरशरण गुप्त द्वारा लिखित 'विचित्र संसार अथवा लाले वो बच्चे' नामक उपन्यास स्वयं लेखक द्वारा प्रकाशित हुआ।[5] इस उपन्यास

---

१. प्रा० स्था०—बि० रा० भा० प० पु० पटना। मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—कल्याणी (एक शिक्षाप्रद सामाजिक उपन्यास)—लेखक प० मन्नन द्विवेदी गजपुरी, बी० ए०, सम्पादक—पं० गौरी शंकर शुक्ल, प्रकाशक—सरस्वती ग्रन्थमाला कार्यालय, बेलनगंज, आगरा प्रथमावृत्ति।

२. प्रा० स्था०—आ० भा० पु० काशी। मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—आरामनन्दन, लेखक—पं० श्रीमान् ललित विजय जी महाराज, प्रकाशन श्री आत्मतिलक ग्रंथ सोसायटी, रतनपोल—अहमदाबाद, प्रथमावृत्ति १०००, वीर सं०, २४४७ विक्रम सं० १९७७, पृ० सं० ३६।

३. प्रतिमा, मार्च १९२१, पुस्तक-परिचय।

४. प्रा० स्था०—आ० भा० पु० काशी तथा बि० रा० भा० प०, पटना। मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—पुनरुत्थान, लेखक, कृष्णलाल वर्मा, प्र० मैनेजर, ग्रंथभंडार, लेडी हार्डिंज रोड, माटुंगा (बम्बई), प्रथम संस्करण, पृ० सं० २०४।

५. प्रा० स्था०—मा० पु० पटना। मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—विचित्र संसार अथवा लाले और बच्चे (एक सामाजिक उपन्यास)...लेखक—ऋषीश्वर शरण गुप्त, प्रथमावृत्ति १०००) प्र० ऋषीश्वरशरण गुप्त।

लग सकते हैं। विषय और शिल्प के क्षेत्र में इस अवधि के उपन्यासकारों ने अनेक ऐसे प्रयोग किये, जिसे प्रेमचन्द नहीं कर सके थे। उदाहरणार्थ प्रकृतवादी या व्यक्तिवादी उपन्यास लिखने के प्रयास प्रेमचन्देतर लेखकों ने ही किये थे। पत्र, डायरी और आत्म-कथा प्रविधियों का उपन्यास-शिल्प के रूप में प्रयोग प्रेमचन्द ने नहीं किया, पर इस युग के कई उपन्यासकारों ने इन रूपों में उपन्यास लिखे।

इस अवधि में प्रकाशित उपन्यासों के आँकड़ों का पहले के आँकड़ों से तुलनात्मक अध्ययन किया जाए तो कई बड़े रोचक तथ्य सामने आएँगे। यद्यपि १९०१-१९१७ और १९१८-१९३६ में प्रकाशित मौलिक उपन्यासों की संख्या लगभग समान रही पर उनके प्रकार में बहुत भेद आ गया। १९०१-१९१८ में सामान्य या सामाजिक उपन्यासों की संख्या केवल १८० थी जबकि विवेच्य अवधि में इनकी संख्या बढ़कर ३५१ हो गयी। इसके विपरीत जहाँ पूर्वोक्त काल में ७८ ऐतिहासिक उपन्यास प्रकाशित हुए, वहाँ विवेच्य अवधि में इनकी संख्या केवल ४६ रही। सबसे भारी कमी इस युग में तिलस्म-ऐयारी प्रधान कथा-पुस्तकों में आयी। जहाँ १९०१-१९१७ में ४५ तिलस्मी रोमांस (जिनमें कुछ बीस-बीस, पचीस-पचीस भागों में समाप्त हुए थे) प्रकाशित हुए वहाँ इस अवधि में उनकी संख्या १५ से आगे बढ़ न सकी। अपराधप्रधान कथा-पुस्तकों में भी कमी हो गयी। पूर्वोक्त युग में १३२ मौलिक जासूसी कथाएँ प्रकाशित हुई थीं, जबकि विवेच्य युग में ७४ पुस्तकें ही प्रकाशित हुईं। अनूदित उपन्यासों की संख्या में भी रोचक परि-वर्तन हुए। १९०१-१७ में बँगला से केवल ९० उपन्यास अनूदित हुए थे, जबकि विवेच्य अवधि में उनकी संख्या १५४ हो गयी। पर यह मजेदार बात है कि अँगरेजी से अनूदित उपन्यासों की संख्या में कोई उल्लेखनीय परिवर्तन नहीं हुआ। पिछले युग में मराठी और गुजराती से केवल १३और ८ उपन्यास अनूदित हुए थे, पर इस अवधि में इनकी संख्या क्रमशः १९ और ९ रही। इस युग की एक उल्लेखनीय विशेषता यह भी रही कि अँगरेजी के अलावा फ्रेंच, रूसी, स्वीडिश, इतालवी और जापानी भाषाओं से भी (उनसे सीधे नहीं, अँगरेजी अनुवाद से) उपन्यासों के अनुवाद हुए। ये तथ्य इस बात के संकेतक हैं कि विवेच्य युग के उपन्यासों का अध्ययन अनेक दृष्टिकोणों से किया जा सकता है।

कहने की आवश्यकता नहीं कि प्रस्तुत ग्रन्थ में जितने उपन्यासों का विवरण प्रस्तुत किया गया है उतना और किसी ग्रन्थ में नहीं मिल सकता। डॉ० माताप्रसाद गुप्त के 'हिन्दी पुस्तक साहित्य' में इस अवधि के केवल १५९ मौलिक और दसेक अनूदित उप-न्यासों का विवरण दिया गया है, जबकि प्रस्तुत ग्रन्थ में ४७१ मौलिक, ३४४ अनूदित और ८० पौराणिक उपन्यासों (कथाओं) के विवरण संकलित हैं। सूचनाओं की प्रामाणिकता पर विशेष ध्यान दिया गया है। अविकल सूचनाएँ पुस्तकों के आवरणपृष्ठ अथवा मुखपृष्ठ से ली गयी हैं और उनकी पुष्टि के लिए पादटिप्पणी के रूप में उनकी प्रतिलिपि दे दी गयी है। जो पुस्तकें उपलब्ध नहीं हो पायीं, उनकी सूचनाएँ तत्कालीन पत्रपत्रिकाओं में प्रकाशित समीक्षाओं से प्राप्त की गयी हैं। थोड़ी सी सूचनाएँ ऐसी भी हैं जो पुस्तकालय

समुद्र की सैर' नामक उपन्यास आर० एल० वर्म्मन एंड कंपनी कलकत्ता से प्रकाशित हुआ।[1] प्रस्तुत पंक्तियों का लेखक इस उपन्यास को प्राप्त करने में असमर्थ रहा है।

तरंग

डॉ० माताप्रसाद गुप्त के अनुसार सन् १९२१ ई० में रधिका रमण प्रसाद सिंह द्वारा लिखित 'तरंग' नामक उपन्यास बिहार प्रादेशिक हिन्दी साहित्य सम्मेलन, मुजफ्फरपुर से प्रकाशित हुआ।[2] प्रस्तुत पंक्तियों का लेखक इस उपन्यास को प्राप्त करने में असमर्थ रहा है।

आदर्श महिला

सन् १९२२ ई० में श्रीराम बेरी कृत 'आदर्श महिला' नामक उपन्यास का द्वितीय संस्करण निहालचन्द एंड कम्पनी, कलकत्ता से प्रकाशित हुआ।[3] इसका तृतीय संस्करण १९२५ ई० में छपा। प्रस्तुत पंक्तियों का लेखक इस पुस्तक के प्रथम संस्करण को प्राप्त करने में असमर्थ रहा है।

अंजना देवी

मार्च १९२२ ई० के पूर्व पंडित रामस्वरूप शर्मा शार्दूल लिखित 'अंजना देवी' नामक उपन्यास जगदीश पुस्तक भंडार, लुहारी दरवाजा, लाहौर से प्रकाशित हुआ।[4]

करुणा देवी

'सरस्वती' जून, १९२२ ई० के 'पुस्तक-परिचय' से ज्ञात होता है कि इसके पूर्व श्रीयुत मणिराम शर्मा कृत 'करुणा देवी' नामक 'स्त्रियों के लिए शिक्षाप्रद उपन्यास' प्रकाशित हुआ। परिचयदाता के अनुसार कथा में कोई नवीनता नहीं है। देवरानी-जेठानी और सास-बहू का झगड़ा है। करुणा ने अन्त में अपने सद्गुणों से सबको वशीभूत कर लिया है।[5]

पतितोद्धार

सन् १९२२ ई० में श्रीयुत जंगबहादुर सिंह द्वारा लिखित 'पतितोद्धार' नामक उपन्यास

---

१. आ० भा० पु० काशी की पुस्तक सूची।
२. डॉ० माताप्रसाद गुप्त, हि० पु० सा०, पृ० २३६ तथा ५७६।
३. प्रा० स्था०—आ० भा० पु०, काशी। मुखपृष्ठ से प्राप्त सूचना—आदर्श महिला, एक शिक्षाप्रद उपन्यास, लेखक बाबू श्रीराम बेरी, प्रकाशक निहालचन्द एंड कम्पनी, सं० १, नारायण प्रसाद बाबू लेन कलकत्ता, दूसरी बार २०००, संवत् १९७९।
४. सरस्वती, मार्च १९२२, पुस्तक-परिचय।
५. सरस्वती, जून १९२२, पुस्तक परिचय।

दुलारी बहू

इसी वर्ष श्री कृष्ण हसरत लिखित 'दुलारी बहू' नामक उपन्यास जगन्नाथ बुक डिपो, राजघाट, काशी से प्रकाशित हुआ।[1]

कृष्ण कुमारी

सन् १९२२ ई० में ही बाबू हरदीप नारायण सिंह रचित 'कृष्णकुमारी' नामक उपन्यास स्वयं लेखक द्वारा शिवहर से प्रकाशित हुआ।[2]

अनाथ सरला

इसी वर्ष विश्वम्भर सहाय 'प्रेमी' कृत 'अनाथ सरला' नामक उपन्यास विश्व-साहित्य भंडार, मेरठ से प्रकाशित हुआ।[3] इस उपन्यास में साहूकारों के अत्याचार, विवाह योग्य बालिकाओं के निर्धन माता-पिता की कठिनाइयों तथा विधवाओं की दयनीय दशा का चित्र प्रस्तुत किया गया है।

हेर फेर

१९२२ ई० में ही श्री मोहन लिखित 'हेर फेर' नामक उपन्यास सरस्वती पुस्तक-माला कार्यालय, कनखल (सहारनपुर) से प्रकाशित हुआ।[4]

भागवंती

इसी वर्ष श्री सुदर्शन लिखित 'भागवन्ती' नामक उपन्यास नारायण दत्त सहगल एंड संस, लाहौर से प्रकाशित हुआ।[5] यह अपराधप्रधान घटनाओं से पूर्ण एक नितान्त साधारण उपन्यास है।

विचित्र उपन्यास), लेखक—मणिराम शर्मा, १९२२, प्र० बेलवेडियर प्रेस, इलाहाबाद, प्रथम संस्करण १०००।

१. प्रा० स्था०—आ० भा० पु० काशी। मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—दुलारी बहू, एक शिक्षाप्रद सामाजिक उपन्यास, ले० श्रीकृष्ण हसरत, प्र० जगन्नाथ बुकडिपो, राजघाट, काशी, प्रथम संस्करण १०००, १९२२, पृ० सं० ९२।

२. प्रा० स्था—आ० भा० पु० काशी। मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—कृष्णकुमारी—जिसने हृदय के रक्त से की प्रेम-पद-पूजा सही, हम प्रेमियों की दुर्दशा पूरी समझ सकती वही—लेखक तथा प्रकाशक—बाबू हरदीप नारायण सिंह (शिवहर), सम्वत् १९७९, प्रथमबार १०००, पृ० सं० ६५।

३. प्रा० स्था—आ० भा० पु० काशी। मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—अनाथ सरला, लेखक—विश्वम्भर सहाय 'प्रेमी', रचयिता आत्मविजय आदि, प्रकाशक विश्वसाहित्य भंडार, मेरठ शहर, संवत् १९७९ वि०, प्रथम संस्करण, पृ० सं १५५।

४. प्रा० स्था—आ० भा० पु० काशी। मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—हेर फेर, लेखक श्रीयुत मोहन, प्रकाशक सरस्वती पुस्तक माला कार्यालय, कनखल (सहारनपुर), प्रथम संस्करण १९७९, पृ० सं० १३४।

५. प्रा० स्था०—आ० भा० पु० काशी। मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—भागवंती, एक शिक्षाप्रद मनोरंजक

सीधे पंडित

इसी वर्ष ठाकुर प्रसिद्ध नारायण सिंह द्वारा लिखित 'सीधे पंडित' नामक उपन्यास स्वयं लेखक द्वारा कादिराबाद (गाजीपुर) से प्रकाशित हुआ।[१] इस उपन्यास में यह दिखाया गया है कि विद्याबुद्धियुक्त सरलता एक सराहनीय गुण है। उपन्यास की भूमिका के अन्त में '२ जून १९१९ ई०' तिथि अंकित है, जिससे अनुमान होता है कि इसकी रचना १९१९ ई० में हो चुकी थी।

सुमति

'प्रताप', २२ अक्टूबर १९२३ के 'साहित्यावलोकन' से ज्ञात होता है कि इसके पूर्व श्रीमती रत्नवती देवी शर्मा लिखित 'सुमति' नामक उपन्यास श्री चिरंजी लाल शर्मा द्वारा ३३, जार्जटाउन, इलाहाबाद से प्रकाशित हुआ। उक्त 'साहित्यावलोकन' के अनुसार 'इस पुस्तक में लेखिका ने सपत्नीयुक्त गृहस्थों का चित्र खींचा है।'[२]

कामिनी : शैलकुमारी

सन् १९२३ ई० में अथवा उसके कुछ बाद चाँद कार्यालय, इलाहाबाद से श्रीमती विमला देवी चौधरानी द्वारा लिखित 'कामिनी' तथा पं० रामकिशोर मालवीय लिखित 'शैलकुमारी' नामक उपन्यास प्रकाशित हुए। प्रस्तुत पंक्तियों का लेखक इन पुस्तकों को प्राप्त करने में असमर्थ रहा है। उपर्युक्त सूचनाएँ मदारीलाल गुप्त लिखित 'गौरी-शंकर' नामक उपन्यास (प्र० का० १९२३) के अन्तिम पृष्ठ के विज्ञापन से प्राप्त की गयी हैं।

'कामिनी' में भारतीय विधवाओं के जीवन पर प्रकाश डाला गया है तथा 'शैलकुमारी' में तत्कालीन स्त्री-शिक्षा एवं अनमेल विवाह के दोषों का वर्णन है।[३]

आदर्श माता

सन् १९२३ ई० में ही पारसनाथ त्रिपाठी लिखित 'आदर्श माता' नामक उपन्यास एस० आर० बेरी एंड कम्पनी, कलकत्ता से प्रकाशित हुआ।[४]

---

१. प्रा० स्था०—प० वि० पु०, पटना; मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—सीधे पंडित (एक दार्शनिक उपन्यास) ठाकुर प्रसिद्ध नारायण सिंह, बी० ए०, एम० एल० द्वारा लिखित और प्रकाशित, सन् १९२३ ई०, प्रथमावृत्ति, प्रकाशक—ठाकुर प्रसिद्ध नारायण सिंह, बी० ए०, मु०—कादिराबाद, पो० कमालपुर, जिला गाजीपुर।

२. प्रताप, २२-१० १९२३, साहित्यावलोकन।

३. मदारीलाल गुप्त, 'गौरीशंकर', १९२३, अन्तिम पृष्ठ का विज्ञापन।

४. प्रा० स्था०—आ० भा० पु० काशी, मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—आदर्शमाता (एक शिक्षाप्रद दिलचस्प उपन्यास) ले० पारसनाथ त्रिपाठी, प्र०—एस० आर० बेरी एंड कम्पनी २०१, हरिसन रोड, कलकत्ता, प्रथम संस्करण २०००, सन १९२३ ई०।

सम्मतियों से (मार्डन रिव्यू की सम्मति) उपर्युक्त सूचनाएँ प्राप्त की गयी हैं। 'समाज जीवन' (मार्च १९२४) की सम्मति के अनुसार "लेखक ने विशुद्ध प्रेम की महत्ता बताते हुए ऊँचे से ऊँचे आर्य आदर्शों को पाठकों पर प्रगट करने की अपनी शक्ति इस पुस्तक में पूर्ण की है। आधुनिक राजनैतिक हलचल, उसमें चलते हुए दम्भ, पूजा की निर्बलता, धनियों की स्वार्थपरायणता, कायरवृत्ति और मजदूर और मालिकों के बीच में जलता हुआ ज्वालामुखी इन सब आवश्यक प्रश्नों की चर्चा की है।"[१]

माया

'माधुरी' (मार्च १९२४ ई०) के 'पुस्तक परिचय' के अनुसार पं० रामगोपाल मिश्र लिखित 'माया' नामक उपन्यास इसके पहले कमर्शल प्रेस, जुही, कानपुर से प्रकाशित हो चुका था। उक्त 'परिचय' के अनुसार 'एक महान् उद्देश्य माया-बन्धन में पड़कर किस भाँति निष्फल हो जाता है, यही इस मनोहर कहानी का विषय है। बीच में दार्शनिक विचारों का समावेश मिलता है'।[2]

चन्द्रभवन

'माधुरी' (मार्च १९२४ ई०) में प्रकाशित 'पुस्तक परिचय' से ज्ञात होता है कि इसके पूर्व पं० राम गोपाल मिश्र लिखित 'चन्द्रभवन' नामक उपन्यास कमर्शल प्रेस, जुही कानपुर से प्रकाशित हो चुका था। उक्त 'परिचय' के अनुसार इस उपन्यास में बाल विवाह, वृद्ध विवाह और विषम विवाह के कुपरिणाम दर्शाये गये हैं।[३]

शीलमणि

'माधुरी' (मार्च १९२४) में प्रकाशित 'पुस्तक परिचय' के अनुसार इसके पूर्व पं० टीकाराम तिवारी लिखित 'शीलमणि' नामक उपन्यास प्रकाशित हो चुका था। उक्त 'परिचय' के अनुसार 'शीलमणि' में एक पति के एक विधवा के प्रेम में पड़ने और स्वप्न में अपनी दिवंगत पत्नी द्वारा उपदेश पाकर उसे विधवाश्रम में पहुँचा देने का वर्णन किया गया है।[४]

स्वर्गीय जीवन

माधुरी' (मई १९२४) में प्रकाशित 'पुस्तक-परिचय' से ज्ञात होता है कि इसके पूर्व मनमोहन कौशल्य विशारद लिखित 'स्वर्गीय जीवन' नामक उपन्यास श्रेष्ठि केवलराम गौरी द्वारा क्वेटा (बिलोचिस्तान) से प्रकाशित हो चुका था। उक्त परिचय

---

१. राखालदास बंद्योपाध्याय, मयूख (अ०-बजरंगबली गुप्त प्र० का० १९२९) के साथ 'समाज जीवन' (मार्च १९२४) की उद्धृत सम्मति।

२. माधुरी, वर्ष २, खंड २, सं० २, मार्च १९२४, पुस्तक परिचय।

३. माधुरी, वर्ष २, खंड २, सं० २, मार्च १९२४, पुस्तक परिचय।

४. उपरिवत्।

प्रेम : भविष्य

सन् १९२४ ई० में डॉ मथुरा प्रसाद खत्री द्वारा लिखित 'प्रेम' और 'भविष्य' नामक दो उपन्यास (प्रकाशक ने इन्हे उपन्यास की ही संज्ञा दी है) दुर्गाप्रसाद खत्री द्वारा सम्पादित होकर 'प्रेम और भविष्य' शीर्षक संग्रह में लहरी प्रेस, काशी से प्रकाशित हुए ।[१] मुखपृष्ठ पर सम्पादक का ही नाम है, लेखक का नाम मुखपृष्ठ की पीठ पर मुद्रित है । इस कारण अचानक भ्रम होता है कि इसके लेखक दुर्गाप्रसाद खत्री ही हैं ।

सत्यानन्द

सन् १९२४ ई० में ही ठाकुर कल्याण सिंह शेखावत लिखित 'सत्यानन्द' नामक उपन्यास हिन्दी पुस्तक भवन, कलकत्ता से प्रकाशित हुआ ।[२] पुस्तक के 'निवेदन' के अनुसार "यह एक सामाजिक उपन्यास है, जिसमे दिखाया गया है कि सद्गुणों को धारण कर एक हीन स्थिति का मनुष्य कितना उच्च स्थान प्राप्त कर सकता है ।"[३]

भाई-भाई

डॉ० माताप्रसाद गुप्त के अनुसार सन् १९२४ ई० में नित्यानन्द देव लिखित 'भाई-भाई' नामक उपन्याम स्वयं लेखक द्वारा डुमराँव से प्रकाशित हुआ ।[४]

खुशीराम और लज्जावती

जुलाई १९२४ ई० में ही गुरांदित्ता खन्ना लिखित 'खुशीराम और लज्जावती' नामक उपन्यास स्वयं लेखक द्वारा प्रकाशित हुआ। इसका दूसरा संस्करण जनवरी १९२९ ई० में निकला ।[५] प्रस्तुत पक्तियों का लेखक इस 'कहानी' के प्रथम संस्करण को प्राप्न करने में असमर्थ रहा है, पर दूसरे संस्करण के 'चार शब्द' में प्रथम संस्करण का प्रकाशन-काल दिया हुआ है । उक्त 'चार शब्द' के अनुसार "जिस समय मैंने इस मनके की

लाल श्रीवास्तव प्र०—भारती पुस्तक माला, २२, सरकार लेन, कलकत्ता, प्रथम संस्करण सं० १९८१ वि० ।

१. प्रा० स्था०—आ० भा० पु० काशी । मुखपृष्ठ को प्रतिलिपि—रेलवे सीरीज (अंक १३) प्रेम और भविष्य. सम्पादक—दुर्गाप्रसाद खत्री, 'लहरी प्रेस', काशी में दुर्गाप्रसाद खत्री द्वारा मुद्रित और प्रकाशित, पहलीवार १९२४ ई० ।

२. प्रा० स्था०—आ० भा० पु० काशी । मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—सत्यानन्द (एक उद्देश्यपूर्ण सामाजिक उपन्यास) लेखक—श्रीमान् ठाकुर कल्याण सिंह जी शेखावत, बी० ए०, जागीरदार—खाचरियावास (जयपुर राज्य). प्रकाशक-हिन्दी पुस्तक भवन, १८१ हरीसन् रोड, कलकत्ता, प्रथमबार २०००), चैत्र १९८१ वि० ।

३. उपरिवत्, निवेदन ।

४. डॉ० माताप्रसाद गुप्त, हि० पु० सा०, पृ० २३७ तथा ४९६ ।

५. प्रा० स्था०—आ० भा० पु०, काशी । मुखपृष्ठ को प्रतिलिपि—खुशीराम और लज्जावती (एक काल्पनिक करुणाजनक कहानी), लेखक और प्रकाशक—गुरांदित्ता खन्ना । मिलने का पता—

सेवाश्रम : शैलकुमारी

सन् १९२४ ई० में ही सूर्यानन्द वर्मा 'आनन्द' लिखित 'सेवाश्रम' नामक उपन्यास हिन्दी साहित्य कार्यालय, दरभंगा से[1] और राम किशोर मालवीय लिखित 'शैलकुमारी' नामक उपन्यास आर० सहगल द्वारा इलाहाबाद से प्रकाशित हुआ।[2] प्रस्तुत पंक्तियों का लेखक इन पुस्तकों को प्राप्त करने में असमर्थ रहा है। शैलकुमारी में आधुनिक स्त्रीशिक्षा, स्त्री स्वातन्त्र्य तथा विषम विवाह के दोष दिखाये गये हैं।[3]

रमणी रहस्य

सन् १९२५ ई० में गौरीशंकर शुक्ल 'पथिक' लिखित 'रमणी रहस्य' नामक उपन्यास एस० आर० बेरी एंड कम्पनी, कलकत्ता से प्रकाशित हुआ।[4] इस उपन्यास में सद्धर्म की विजय और अधर्म की पराजय दिखायी गयी है।

कमला कुसुम

सन् १९२५ ई० में ही गिरिजा देवी द्वारा लिखित 'कमला कुसुम' नामक उपन्यास गंगा पुस्तक माला कार्यालय, लखनऊ से प्रकाशित हुआ।[5] इस उपन्यास में पातिव्रत्य का चरम आदर्श प्रस्तुत किया गया है, जो विश्वसनीय नहीं बन पाया है।

भीषण पाप और उसका परिणाम

इसी वर्ष गुरांदित्ता खन्ना लिखित 'भीषण पाप और उसका परिणाम' नामक 'एक काल्पनिक कहानी' स्वयं लेखक द्वारा अमृतसर से प्रकाशित हुई।[6] इस कहानी में खत्री समाज में प्रचलित वृद्ध-विवाह के दुष्परिणाम चित्रित किये गये हैं।

कर्त्तव्याघात

सन् १९२५ ई० में ही श्रीयुत देवनारायण द्विवेदी लिखित 'कर्त्तव्याघात' शीर्षक उपन्यास हिन्दी पुस्तकालय, मिर्जापुर से प्रकाशित हुआ। प्रस्तुत पंक्तियों का लेखक

---

१. आ० भा० पु०, काशी की पुस्तक सूची।

२. डॉ० माताप्रसाद गुप्त, हि० पु० सा०, पृ० ५७७

३. हरिसाधन मुखोपाध्याय, मेहरुन्निसा, १९२७ के अन्तिम पृष्ठों का विज्ञापन।

४. प्रा० स्था०—आ० भा० पु० काशी। मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—रमणी रहस्य (सचित्र शिक्षाप्रद सामाजिक उपन्यास), लेखक गौरी शंकर शुक्ल 'पथिक', प्रकाशक एस० आर० बेरी एंड कम्पनी, प्रथम संस्करण १०००, सन् १९२५, पृ० सं० ५४५।

५. प्रा० स्था०—मा० पु०, पटना। मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—कमला कुसुम, लेखिका—स्वर्गीय गिरिजादेवी, प्रकाशक—गंगा पुस्तकमाला कार्यालय, २९-३०, अमीनाबाद पार्क लखनऊ, पहली बार सं० १९८२ वि०।

६. प्रा० स्था—आ० भा० पु० काशी, मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—भीषण पाप और उसका परिणाम, एक काल्पनिक कहानी, लेखक और प्रकाशक—गुरांदित्ता खन्ना, पुस्तक मिलने का पता—देशराज

के रहने पर भी, कितना कष्ट होता है, इसका बड़ा ही यथार्थ और स्वाभाविक चित्रण उपन्यास में हुआ है।

महात्मा की जय

सन् १९२५ ई० में ही पंडित व्रजकृष्ण गुर्टू लिखित 'महात्मा की जय' नामक उपन्यास लखनऊ से प्रकाशित हुआ।[1] इस उपन्यास में विधवा विवाह का चित्रण एवं उसका प्रतिपादन किया गया है। उपन्यास का प्रतिपाद्य यह भी है कि लड़के-लड़की का विवाह आर्थिक कठिनाई या जाति-पाँति के बन्धनों के कारण उनकी पसन्द के लड़की-लड़के से न कर दूसरे से कर देना दुःखद भविष्य का जनक होता है। हिन्दू समाज में जाति-पाँति का मिथ्या दम्भ इस उग्रता के साथ व्याप्त था (आज भी वह पूरी तरह समाप्त नहीं हुआ है) कि छोटे मोटे जाति-भेदों के नाम पर परस्पर प्रेम करने वाले युवक-युवती का विवाह-सम्बन्ध सम्भव नहीं हो पाता था जिसके परिणाम स्वरूप उनका समस्त जीवन दुःखपूर्ण हो जाता था।

साहित्यिक दृष्टि से उपन्यास साधारण है।

उषा : क्षमा

डॉ० माताप्रसाद गुप्त के अनुसार सन् १९२५ ई० में ही शिवदास गुप्त 'कुसुम' लिखित 'उषा' नामक उपन्यास गंगा पुस्तकमाला कार्यालय, लखनऊ से[2] और श्रीनाथ सिंह द्वारा लिखित 'क्षमा' नामक उपन्यास सुदर्शनाचार्य द्वारा इलाहाबाद से प्रकाशित हुआ।[3] 'क्षमा' में अन्तरजातीय प्रेम का चित्रण किया गया है। इस उपन्यास की नायिका, रत्नमाला, एक मुसलमान नवयुवक से प्रेम करती है, यहाँ तक कि एक हिन्दू से विवाह होने के बाद भी अपने मुसलमान प्रेमी के पास चली जाती है। बाद में उसका पति उसका उद्धार करता है और उसे 'क्षमा' कर देता है।

अपूर्व संयोग

जनवरी १९२६ ई० की 'सरस्वती' के 'पुस्तक परीक्षा' स्तम्भ से ज्ञात होता है कि इसके पूर्व जगन्नाथ प्रसाद शर्मा तथा श्रीयुत केशवदेव गौड़ लिखित 'अपूर्व

सिंह, विशारद, प्र०—दुर्गा प्रसाद खत्री–लहरी बुक डिपो, काशी, प्रथमबार १०००; १९२५, पृ० सं० ६३।
पंडित
१. प्रा० स्था०—मा० पु० पटना, मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—महात्मा की जय, लेखक—व्रजकृष्ण गुर्टू, १९२५, प्रथमावृत्ति १०००, के० सी० वनर्जी के प्रबन्ध से एंग्लो ओरियंटल प्रेस, लखनऊ में छपी–१९२५, प्रकाशक और पुस्तक मिलने का पता—पंडित विश्वम्भरनाथ शर्मा, ३५ कल्लन की लाट, लखनऊ।

२. डॉ० माताप्रसाद गुप्त, हि० पु० सा०, पृ० ६३७।

३. उपरिवत्, पृ० ६४९।

देहाती दुनिया

सन् १९२६ ई० में ही शिवपूजन सहाय लिखित 'देहाती दुनिया' नामक उपन्यास हिन्दी पुस्तक भंडार, लहेरियासराय से प्रकाशित हुआ।[१] इसका पाँचवाँ संस्करण १९५० ई० में तथा छठा संस्करण १९५१ ई० में ग्रन्थमाला कार्यालय, पटना से निकला।[२]

'देहाती दुनिया' अपने ढंग की विशिष्ट पुस्तक है। इसके लेखक ने इसे 'उपन्यास' की संज्ञा दी थी, जब कि उस समय उपन्यास के विषय में जो आम धारणा थी, उसे देखते हुए यह बेतुकी बात लगती है। इधर आकर हिन्दी के अनेक आलोचकों ने इसे हिन्दी का 'पहला आंचलिक उपन्यास' घोषित किया है।

'देहाती दुनिया', 'वास्तव में' ग्रामीण जीवन के अनेक प्रसंगों का संकलन है। इसमें ग्रामीण समाज की अनेक झाँकियाँ, जो बिलकुल वास्तविक हैं, प्रस्तुत की गयी हैं। 'उपन्यास' एक छोटे बालक के अवलोकन-बिन्दु से प्रस्तुत किया गया है, यद्यपि बीच बीच में लेखक इस बात को भूल जाता है और स्वयं भी कहानी कहने लगता है। 'उपन्यास' विधा कितनी लचीली है, यह इस पुस्तक से भलीभाँति सिद्ध होता है।

मंगल प्रभात

डॉ० माताप्रसाद गुप्त के अनुसार सन् १९२६ ई० में ही चंडी प्रसाद हृदयेश, बी० ए० लिखित 'मंगलप्रभात' नामक उपन्यास चाँद आफिस, इलाहाबाद से प्रकाशित हुआ।[३] आर्यभाषा पुस्तकालय, काशी में इस उपन्यास की एक प्रति है पर मुख पृष्ठ के नष्ट हो जाने के कारण प्रकाशन आदि के सम्बन्ध में कोई सूचना नहीं मिलती। यह ७२४ पृष्ठों का दीर्घकाय उपन्यास है। चाँद, जुलाई १९२७ में प्रकाशित विज्ञापन के अनुसार 'इस उपन्यास में मानव-हृदय की रंगभूमि पर वासना के नृत्य का दृश्य दिखलाया गया है। सामाजिक अत्याचार और बेमेल विवाह का परिणाम तथा विशुद्ध प्रेम और सहानुभूति की झलक उपन्यास में सर्वत्र दिखायी गयी है।'

शान्ता

सन् १९२६ ई० में ही पं० रामकिशोर मालवीय लिखित 'शान्ता' नामक उपन्यास का द्वितीय संस्करण चाँद कार्यालय, इलाहाबाद से प्रकाशित हुआ।[४] प्रस्तुत

---

१. प्रा० स्था०—बि० रा० भा० प० पु०, पटना। मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—देहाती दुनिया (ठेठ देहात का औपन्यासिक चित्र), लेखक—शिवपूजन सहाय, प्रकाशक—हिन्दी पुस्तक भंडार, लहेरियासराय (बिहार), श्री रामनवमी वि० सं० १९८३, मुद्रक—माधव विष्णु पराड़कर, ज्ञानमंडल यंत्रालय, कबीर-चौरा, काशी।

२. प्रा० स्था०—आ० भा० पु०, काशी।

३. डॉ० माताप्रसाद गुप्त, हि० पु० सा०, पृ० ४३६।

४. प्रा० स्था—मा० पु०, पटना। मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि-शान्ता, ले० पं० रामकिशोर मालवीय, प्र०

(भाग २३) के साथ संलग्न विज्ञापन के अनुसार इस उपन्यास में "वेश्याओं के जीवन का रहस्य, वेश्याओं के भेद, उनके अपनी शोहरत करने के तरीके, सलामों की किस्में, धनी नवयुवकों पर जाल डालने की विधियाँ, धन विनाश के कारण अनेक प्रपंच आदि धनी घरों की तबाही कर देश में बढ़ती हुई अपराधों और अत्याचारों की संख्या में वेश्याएँ किस तरह सहायक होती हैं उन सबका अनूठा और अनुपम दृश्य इसके पढ़ते पढ़ते नाटक के परदे की तरह आँखों के सामने खिच जाता है।"[1]

विलासिनी

सन् १९२७ ई० में अखौरी गंगा प्रसाद सिंह 'विशारद' द्वारा लिखित 'विलासिनी' नामक उपन्यास लहरी बुक डिपो, काशी से प्रकाशित हुआ।[2] वस्तुतः यह पुस्तक तीन कथाओं—विलासिनी, ममता और मित्र-का संग्रह है, किन्तु इस पुस्तक के प्रत्येक पृष्ठ पर, कोने में, ऊपर, 'उपन्यास' शब्द मुद्रित है। लगता है, लेखक या प्रकाशक 'उपन्यास' और 'कहानी' में कोई अन्तर नहीं समझता।

मृगमरीचिका

आर्यभाषा पुस्तकालय, काशी में अखौरी गंगा प्रसाद सिंह लिखित तथा श्री सच्चिदानन्द द्वारा मध्यमेश्वर, हिन्दी साहित्य समिति, बनारस से प्रकाशित 'मृगमरीचिका' नामक उपन्यास उपलब्ध है।[3] पुस्तक के मुखपृष्ठ पर प्रकाशन काल नहीं दिया हुआ है।

निर्मला वा अनमेल विवाह

सन् १९२७ ई० में ही श्रीयुत केदारनाथ सेठ लिखित 'निर्मला वा अनमेल विवाह' नामक उपन्यास हिन्दी साहित्य कार्यालय, लहेरियासराय, दरभंगा से प्रकाशित हुआ।[4] इस उपन्यास में हिन्दू समाज की कुरीतियों, विशेष कर वृद्धविवाह की समस्या का चित्रण किया गया है।

गुणलक्ष्मी : लक्ष्मीबहू

सन् १९२७ ई० में ही बाबू देवबली सिंह द्वारा लिखित 'गुणलक्ष्मी'[5] और

---

१. गंगा प्रसाद गुप्त, कृष्णकान्ता सन्तति, भाग २३ (प्र० का० १९२७), विज्ञापन।

२. प्रा० स्था०—मा० पु०, पटना। मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—विलासिनी, 'रेलवे सिरीज'-अंक ३२, ले० अखौरी गंगा प्रसाद सिंह, विशारद, दुर्गा प्रसाद खत्री, प्रोप्राइटर लहरी बुक डिपो काशी, द्वारा प्रकाशित, प्रथम बार १०००, १९२७।

३. मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—मृगमरीचिका, लेखक—श्री अखौरी गंगा प्रसाद सिंह, प्रकाशक—श्री सच्चिदानन्द, मध्यमेश्वर, हिन्दी साहित्य समिति, बनारस, पृ० सं० १६०।

४. प्रा० स्था—आ० भा० पु० काशी। मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—निर्मला वा अनमेल विवाह (एक सामाजिक उपन्यास), लेखक—श्रीयुत केदारनाथ सेठ, प्रकाशक—हिन्दी साहित्य कार्यालय, लहेरिया सराय (दरभंगा), प्रथम बार १९८४, पृ० सं० १४१।

५. प्रा० स्था०—आ० भा० पु० काशी। मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—गुणलक्ष्मी, एक सामाजिक

मीठी चुटकी

इसी वर्ष 'त्रिमूर्त्ति'(भगवती प्रसाद वाजपेयी, श्री 'वर्म्मा' और शम्भूदयाल सकसेना) रचित 'मीठी चुठकी' नामक उपन्यास साहित्य मंदिर, दारागंज, प्रयाग से प्रकाशित हुआ।[१] डॉ० माताप्रसाद गुप्त ने केवल भगवती प्रसाद वाजपेयी को इस उपन्यास का लेखक बताया है, जो भ्रामक है।[2] इस उपन्यास में आधुनिक शिक्षा प्राप्त समाज के जीवन का चित्र अंकित किया गया है। कई लेखकों के सम्मिलित प्रयास के रूप में उपन्यास-लेखन का हिन्दी में यह पहला प्रयास है। सम्भवतः इसके लेखकों को बँगला के 'बारोवारी' नामक उपन्यास से, जिसे बँगला के बारह उपन्यासकारों ने मिलकर लिखा था, प्रेरणा मिली थी।

रंगीला भक्तराज

१९२७ ई० में ही श्री 'दिनेश' ने 'रंगीला भक्तराज' नामक उपन्यास की रचना की जिसका द्वितीय संस्करण १९३४ ई० में पुस्तक भवन, बनारस सिटी से प्रकाशित हुआ।[३] प्रस्तुत पंक्तियों का लेखक इस उपन्यास के प्रथम संस्करण को प्राप्त करने में असमर्थ रहा है। 'निवेदन' के अन्त में 'श्री दीपावली, संवत् १९८४' मुद्रित है, जिससे इसका रचना-काल ज्ञात होता है।[४] इस उपन्यास में बगुलाभगत साधुओं का चित्रण किया गया है। 'जैसी करनी वैसी भरनी' सिद्धान्त का प्रतिपादन भी लेखक का उद्देश्य जान पड़ता है।

अबलाओं का इंसाफ

सन् १९२७ ई० में ही श्रीमती स्फुरना देवी द्वारा लिखित 'अबलाओं का इंसाफ' नामक उपन्यास 'चाँद' कार्यालय, इलाहाबाद से प्रकाशित हुआ।[५]

अत्यन्त शिक्षाप्रद सामाजिक और मौलिक उपन्यास, लेखक 'तरुण तपस्विनी', 'क्षमा', 'सती पद्मिनी और 'बाल कवितावली' आदि पुस्तकों के रचयिता तथा भूतपूर्व 'दैनिक देशबन्धु' के सम्पादक ठाकुर श्रीनाथ सिंह, प्रकाशक—पं० सुदर्शनचार्य बी० ए०, 'गृहलक्ष्मी' कार्यालय, प्रयाग, प्रथम सं०१९८४ वि०, पृ० सं० २२०।

१. प्रा० स्था०—आ० भा० पु० काशी। मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—मीठी चुटकी (सामाजिक क्रान्ति के भावों से ओत-प्रोत एक सरस मौलिक उपन्यास) लेखक—'त्रिमूर्त्ति', प्रकाशक—साहित्य-मंदिर, दारागंज, प्रयाग, प्रथम संस्करण सं० १९८४ वि०।

२. डा० गुप्त, हि० पु० सा०, पृ० ५२९।

३. प्रा० स्था०—आ० भा० पु०, काशी। मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—रंगीला भक्तराज (सचित्र सामाजिक उपन्यास) लेखक-श्रीयुत 'दिनेश', प्रकाशक पुस्तक भवन, बनारस सिटी, द्वितीयावृत्ति दिसंबर १९३४।

४. उपरिवत्, निवेदन।

५. प्रा० स्था०—बि० रा० भा० प० पु०, पटना। मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—अबलाओं का इन्साफ

वर्तमान पुस्तकालयाध्यक्ष श्री रामशोभित प्रसाद सिंह का भी मुझे अमूल्य सहयोग मिला है। इसी प्रकार आर्य भाषा पुस्तकालय, ना० प्र० स०, काशी, बिहार राष्ट्रभाषा परिषद् पुस्तकालय, पटना तथा पटना विश्वविद्यालय पुस्तकालय, पटना के पुस्तकालयाध्यक्षों एवं अन्य कर्मचारियों का मैं हृदय से अनुगृहीत हूँ जिन्होंने कष्ट उठाकर भी मेरे लिए पुस्तकें जुटायी थीं। इसके अतिरिक्त उन सभी व्यक्तियों एवं संस्थाओं के प्रति मैं अपना आभार व्यक्त करता हूँ, जिन्होंने प्रत्यक्ष-अप्रत्यक्ष रूप में मेरी सहायता की है।

१५ सितम्बर, १९६९ —*गोपाल राय*



संकेत और संक्षेप

न० सं०	नवीन संस्करण
अनु०	अनुवादक
आ० भा० पु०	आर्यभाषा पुस्तकालय (नागरी प्रचारिणी सभा, काशी)
चै० पु०	चैतन्य पुस्तकालय, पटना सिटी
तृ० सं०	तृतीय संस्करण
द्वि० सं०	द्वितीय संस्करण
प० का० पु०	पटना कॉलेज पुस्तकालय
प० वि० पु०	पटना विश्वविद्यालय पुस्तकालय
पृ० सं०	पृष्ठ संख्या
प्र० सं०	प्रथम संस्करण
प्रा० स्था०	प्राप्ति स्थान
बि० रा० भा० प० पु०	बिहार राष्ट्रभाषा परिषद् पुस्तकालय, पटना
मा० पु०	माहेश्वर सार्वजनिक पुस्तकालय, पटना-६
रा० पु०	राष्ट्रीय पुस्तकालय, कलकत्ता
सं०	सम्पादक
हि० पु० सा०	हिन्दी पुस्तक साहित्य (डॉ० माताप्रसाद गुप्त)

अवला

सन् १९२८ ई० में ही रमाशंकर सक्सेना लिखित 'अवला' नामक उपन्यास गंगा पुस्तक माला कार्यालय, लखनऊ से प्रकाशित हुआ।[1] इस उपन्यास में हिन्दू घरों की स्त्रियों की समस्याओं का चित्रण किया गया है। लड़कियों की वैवाहिक समस्याओं का विस्तारपूर्वक अंकन है। नववधू के कष्टों और सास के अत्याचारों का विस्तारपूर्वक वर्णन किया गया है। मुसलमान गुंडों द्वारा हिन्दू स्त्रियों के भगा ले जाने और मुसलमान बनाने का चित्रण किया गया है। स्त्री शिक्षा का समर्थन किया गया है। पुलिस विभाग के अत्याचारों का भी वर्णन है।

विदा

डॉ० माताप्रसाद गुप्त के अनुसार सन् १९२८ ई० में प्रताप नारायण श्रीवास्तव लिखित 'विदा' नामक उपन्यास गंगा फाइन आर्ट प्रेस, लखनऊ से प्रकाशित हुआ।[2] इस उपन्यास का तीसरा संस्करण १९३८ ई० में[3], पाँचवाँ संस्करण १९४५ ई० में[4] सातवाँ संस्करण १९४६ ई० में[5] और आठवाँ संस्करण १९५३ ई० में गंगा ग्रंथागार लखनऊ से[6] प्रकाशित हुआ। तृतीय संस्करण की प्रकाशकीय विज्ञप्ति की निम्नांकित पंक्तियों से भी इस उपन्यास की लोकप्रियता पर प्रकाश पड़ता है "हर्ष की बात है, हिन्दी संसार ने हमारे इस उपन्यास का यथेष्ट आदर किया है, जिनसे कुछ ही वर्षों में इसके तीन संस्करण निकालने पड़े। इस बीच में प्रतिभाशाली लेखक के दो और उपन्यास निकल गये हैं (१) विजय और (२) विकास। इनकी भी खूब माँग है।"[7]

'विदा' का प्रमुख प्रतिपाद्य सेवा और प्रेम है। कुलवधुओं के लिए सेवा को

---

१. प्राप्ति स्थान—मा० पु० पटना। मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—अवला, (स्त्री-शिक्षा-पूर्ण गार्हस्थ उपन्यास), लेखक —श्री रमाशंकर सकसेना, प्रकाशक—गंगा पुस्तक माला कार्यालय, २९-३०, अमीनाबाद पार्क, लखनऊ, प्रथमावृत्ति सं० १९८५ वि०।

२. डॉ माताप्रसाद गुप्त, हि० पु० सा०, पृ० ५०७

३. प्रा० स्था०—सिनहा पुस्तकालय, मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—विदा (मौलिक सामाजिक उपन्यास), लेखक प्रताप नारायण श्रीवास्तव, वी० ए०, एल०एल० वी० (विजय, विकास, आशीर्वाद और पाप की ओर के रचयिता), मिलने का पता—गंगा ग्रन्थागार, ३० अमीनावाद-पार्क, लखनऊ, तृतीयावृत्ति सं० १९९५ वि०, मूल्य सजिल्द ३.००, सादी २॥); पृष्ठ सं० ४२८।

४. प्रा० स्था०—मेरा व्यक्तिगत ग्रन्थागार। मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—विदा (मौलिक सामाजिक उपन्यास), लेखक—प्रताप नारायण श्रीवास्तव, वी० ए०, एल० एल० वी०, (विजय, विकास, आशीर्वाद और पाप को ओर के रचयिता), मिलने का पता—गंगा ग्रन्थागार ३६, लाटूशरोड; लखनऊ, पंचमावृत्ति सं० २००२ वि०।

५. प्रा० स्था०—वि० रा० भा० प० पु०, पटना।

६. प्रा० स्था०—प० का० पु०, पटना।

७. प्रताप नारायण श्रीवास्तव, विदा, पंचमावृत्ति सं० २००२ वि०, विज्ञप्ति।

होने के कारण वेश्या जीवन अंगीकार करने पर विवश होती है। परन्तु वह अनधिक-काल में ही एक स्वयं सेवक की सहायता से प्रायश्चित्त द्वारा आत्म संशोधन करके आदर्श उपकारिणी देवी के रूप में परिणत हो जाती है।'

बिन्नो देवी अर्थात् शुद्धि की देवी

सन् १९२८ ई० में ही पं० वंशीधर पाठक रचित 'बिन्नो देवी अर्थात् शुद्धि की देवी' नामक उपन्यास वैदिक आर्य पुस्तकालय, बरेली से प्रकाशित हुआ।[1] आर्य समाज द्वारा प्रवर्तित शुद्धि आन्दोलन को विषय बनाकर इस उपन्यास की रचना हुई है।

विधवाश्रम : आधुनिक चक्र

सन् १९२८ ई० में ही जमुनादास मेहराकृत 'विधवाश्रम' नामक उपन्यास नारायण दत्त सहगल एंड सन्स, लाहौर[2] से तथा विश्वनाथ सिंह शर्मा लिखित 'आधुनिक चक्र' नामक उपन्यास वाणी विनोद पुस्तक भंडार, कलकत्ता से[3] प्रकाशित हुआ। प्रस्तुत पंक्तियों का लेखक इन उपन्यासों को प्राप्त करने में असमर्थ रहा है।

अपराधी

इसी वर्ष यदुनन्दन प्रसाद लिखित 'अपराधी' नामक उपन्यास चाँद कार्यालय, इलाहाबाद से प्रकाशित हुआ।[4] आर्य भाषा पुस्तकालय में इस उपन्यास की एक प्रति है, पर मुख पृष्ठ के नष्ट हो जाने के कारण कोई सूचना नहीं मिलती। १९२९ के 'चाँद' में प्रकाशित एक विज्ञापन से ज्ञात होता है कि इसके पूर्व यह उपन्यास चाँद कार्यालय, इलाहाबाद से प्रकाशित हो चुका था। इस विज्ञापन के अनुसार इस उपन्यास में "सच्चरित्र, ईश्वर-भक्त विधवा बालिका सरला का आदर्श जीवन, उसकी पारलौकिक तल्लीनता, बाद को व्यभिचारी पुरुषों की कुदृष्टि, सरला का बलपूर्वक पतित किया जाना, अन्त को उसका वेश्या हो जाना, यह सब ऐसे दृश्य उपस्थित किये गये हैं, जिन्हें पढ़ कर आँखों से आँसुओं की धारा बह निकलती है।"

---

१. प्रा० स्था०—आ० भा० पु०, काशी। मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—बिन्नो देवी अर्थात् शुद्धि की देवी, लेखक—आर्य समाज के प्रसिद्ध महोपदेशक, वैदिक सिद्धान्तों के मर्मज्ञ देशभक्त, सुवाग्मी, भूत-पूर्वाचार्य गुरुकुल अहरौला, वर्तमान सहायक मुख्याधिष्ठाता, गुरुकुल वृन्दावन पं० वंशीधर पाठक, सम्पादक श्यामलाल सत्यदेव, अध्यक्ष—वैदिक आर्य पुस्तकालय, बरेली प्रथमावृत्ति १००० प्रति १९२८। पृ० सं० १५२।

२. आ० भा० पु०, काशी की पुस्तक सूची।

३. उपरिवत्।

४. उपरिवत्।

मा

सन् १९२९ ई० में पं० विश्म्भर नाथ शर्मा 'कौशिक' रचित 'मा' नामक उपन्यास, दो भागों में, गंगा पुस्तकमाला कार्यालय, लखनऊ से प्रकाशित हुआ।[1] यह उपन्यास इतना लोकप्रिय हुआ कि १९६१ ई० तक इसके सात संस्करण प्रकाशित हो चुके थे।[2]

इस उपन्यास में लेखक ने एक आदर्श मा का चरित्र प्रस्तुत करने का प्रयास किया है पर उपन्यास में वेश्यागमन के दोषों एवं युवकों को उससे बचाने का चित्रण प्रधान हो गया है। उपन्यास रोचक है तथा इसके कई पात्र बड़े ही सज्जन और उत्कृष्ट हैं। पात्रों के मनोभावों का भी चित्रण होने के कारण उपन्यास एक सीमा तक पठनीय है।

'मा' प्रेमचन्द के उपन्यासों की तुलना में एक साधारण कृति है। विषय और शिल्प दोनों ही दृष्टियों से कौशिक जी प्रेमचन्द से बहुत पीछे हैं। विषय की दृष्टि से इस उपन्यास का क्षेत्र बहुत सीमित कहा जाएगा। आदर्श माँ और वेश्यागमन की बुराइयों का चित्रण ही इस उपन्यास का प्रतिपाद्य है, जो प्रेमचन्द के उपन्यासों में चित्रित विषय की व्यापकता और जटिलता के समक्ष बहुत ही अमहत्वपूर्ण प्रतीत होता है। पात्रों के मनोभावों का चित्रण भी प्रेमचन्द की तुलना में बहुत प्रारम्भिक है। फिर भी उपन्यास इसलिए उल्लेखनीय है कि यह आदि से अन्त तक रोचक बना रहता है और कहीं कोई अविश्वसनीय घटना नहीं है। उपन्यास की भाषा सरल, देवकीनन्दन खत्री की परम्परा में आती है।

भिखारिणी

२४ दिसम्बर १९२९ ई० के 'मतवाला' में प्रकाशित 'विज्ञापन' से ज्ञात होता है कि इसके पूर्व पं० विश्वम्भर नाथ शर्मा 'कौशिक' लिखित 'भिखारिणी' नामक उपन्यास बीसवीं सदी पुस्तकालय, गऊघाट, मिर्जापुर सिटी से प्रकाशित हो चुका था।[3] उक्त विज्ञापन के अनुसार 'यह उपन्यास ३०० से ऊपर पृष्ठों में समाप्त हुआ है। .... देहाती जमीन्दार ठाकुर अर्जुन सिंह और उनके भिक्षुक प्रेमी पुत्र तथा भिखारिणी जस्सो के चरित्र हृदयस्पर्शी रूप में चित्रित किये गये हैं।"

इसका दूसरा संस्करण १९४८ ई० में विनोद पुस्तक मन्दिर, हास्पिटल रोड, आगरा से प्रकाशित हुआ।[4]

---

१. प्रा० स्था०—आ० भा० पु०, काशी। मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—मा (दूसरा भाग) लेखक—पं० विश्वम्भर नाथ शर्मा 'कौशिक', प्रकाशक—गंगा पुस्तकमाला कार्यालय, प्रकाशक और विक्रेता लखनऊ, प्रथमावृत्ति सं० १९८६ वि०।

२. प्रकाशक—गंगा पुस्तकमाला कार्यालय, लखनऊ, सप्तमावृत्ति सं० २०१८ वि०, आकार डबल क्राउन, पृ० सं० ४०८।

३. मतवाला, १४ दिसम्बर १९२९, विज्ञापन।

४. प्रा० स्था०—प० वि० पु०, पटना। मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—भिखारिणी (सामाजिक उपन्यास)

तथा अत्याचारी दारोगा का हृदय परिवर्तन हो जाता है और वे आश्रम के सहायक बन जाते हैं।

उपन्यास में राजनीतिक और सामाजिक जागृति का चित्रण है, यद्यपि जो समाधान प्रस्तुत किया गया है, वह गांधीवादी समाधान है। उपन्यास बहुत कुछ प्रेमचन्द की परम्परा में है, यद्यपि कला की दृष्टि से साधारण है।

प्रणय

इसी वर्ष देवनारायण द्विवेदी लिखित 'प्रणय' नामक उपन्यास साहित्याश्रम, मिर्जापुर से प्रकाशित हुआ।[१] एक विज्ञापन के अनुसार "प्रेम में कैसी आकर्षण शक्ति है, मनुष्य में किस प्रकार भ्रान्त धारणा उत्पन्न हो जाती है और कोमल हृदय भी कभी कभी कितना कठोर बन जाता है, इसका बड़ा सुन्दर और उपदेशप्रद चित्र खींचा गया है। अल्पावस्था होते हुए भी पंडिता रमा का गंभीर उत्साह है तथा कष्टसहिष्णुता एवं निर्लोभ के साथ अद्भुत रूप से देश सुधार करना और रूठे हुए पति को बिना मनाये ही अपनाना हिन्दी संसार में बिलकुल नयी वस्तु है।"

शुक्ल और सोफिया

मई सन् १९२९ ई० में ठाकुर कल्याण सिंह शेखावत लिखित 'शुक्ल और सोफिया अर्थात् पूर्व और पश्चिम' नामक उपन्यास चाँद कार्यालय, इलाहाबाद से प्रकाशित हुआ।[२]

गिरिबाला

सन् १९२९ ई० में ही ब्रजकृष्ण गुट्टू लिखित 'गिरिबाला' नामक उपन्यास गंगा पुस्तक माला कार्यालय, लखनऊ से प्रकाशित हुआ।[३]

'गिरिबाला' में विधवा-विवाह के औचित्य का प्रतिपादन किया गया है पर कोई सन्तोषजनक समाधान प्रस्तुत नहीं किया जा सका है। सामाजिक मान्यताओं और परम्पराओं को तोड़ने की प्रक्रिया में इसके पात्र स्वयं टूट गए हैं। सास-बहू के झगड़े, विमाता की हृदयहीनता और अत्याचार, हरिद्वार जैसे तीर्थों में होनेवाले दुराचारों का चित्रण एवं धर्म तथा नीति के नाम पर जनता को ठगनेवाले तथाकथित नेताओं के हथकंडों का इस

---

१. आ० भा० पु० काशी की पुस्तकसूची।

२. प्रा० स्था०—आ० भा० पु० काशी। मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—शुक्ल और सोफिया अर्थात पूर्व और पश्चिम, लेखक—आनंद की पगडंडियाँ, समयदर्शन, जातियों को संदेश, एशिया में प्रभात, सत्यानंद तथा प्राकृतिक सौन्दर्य आदि पुस्तकों के रचयिता ठाकुर कल्याणसिंह शेखावत, बी० ए०, जज, जयपुर हाइकोर्ट, प्रकाशक—'चाँद' कार्यालय, इलाहाबाद, पहला संस्करण २०००, मई १९२९।

३. प्रा० स्था—वि० रा० भा० प० पु० पटना तथा सिनहा पुस्तकालय, पटना। मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि गिरिबाला (मौलिक सामाजिक उपन्यास) ले० ब्रजकृष्ण गुट्टू, बी०ए०, एल०एल०बी०, प्रकाशक–गंगा पुस्तक माला कार्यालय, प्रकाशक और विक्रेता, लखनऊ, प्रथमावृत्ति सं० १९८६ वि०(१९२९ ई०),पृ०सं० १४४।

जो ऊब पैदा करने के साथ साथ आत्मकथात्मक प्रविधि के प्रभाव को भी कम करते हैं।

हिन्दी में व्यक्तिवादी उपन्यास लिखने की जो प्रवृत्ति उस समय उभर रही थी उसका यह उपन्यास भी प्रतिनिधित्व करता है।

छुईमुई

जनवरी १९३० ई० की 'सरस्वती' में शिलीमुख द्वारा लिखित 'छुईमुई' नामक उपन्यास अंशतः प्रकाशित हुआ। यह उपन्यास शायद पूरा नहीं छप सका।

गहरी दोस्ती का फल

मई १९३० ई० की 'सरस्वती' में प्रकाशित 'पुस्तक-परिचय' से ज्ञात होता है कि इसके पूर्व श्री छोटेराम शुक्ल लिखित 'गहरी दोस्ती का फल' नामक उपन्यास प्रताप सागर पुस्तकालय, जालना, निजाम स्टेट से प्रकाशित हो चुका था।[१] उक्त परिचय के अनुसार "यह उपन्यास अनमेल विवाह को लक्ष्य में रखकर लिखा गया है।"

भ्रमित पथिक

सरस्वती, जून १९३० ई० में प्रकाशित 'पुस्तक-परिचय' से ज्ञात होता है कि इसके पूर्व पं० सद्‌गुरुशरण अवस्थी लिखित 'भ्रमित पथिक' नामक उपन्यास अभ्युदय प्रेस, प्रयाग से प्रकाशित हो चुका था।[२] उक्त 'परिचय' के अनुसार यह "पुस्तक एक अन्योक्ति रूप गद्यमय काव्य है। यह वनयन की 'पिलग्रिम्स प्रोग्रेस' नामक प्रसिद्ध पुस्तक के समान है। चाहे जो हो, पथिक की भ्रान्तता का इसमें सुन्दर ढंग से चित्रण किया गया है।.... पथिक अपनी पहली ही यात्रा में भिन्न भिन्न सम्प्रदायों के साधुओं के झमेले में पड़ महन्थ बन जाता है और महन्थ के रूप में तरह तरह के भोगों का उपभोग करता है।......अन्त में एक सन्त का उपदेश सुनकर उस स्थान से भाग खड़ा होता है। उसे मनुष्य मात्र से घृणा हो जाती है।......अन्त में वह भूखों मरने लगता है।......वह अपने एक साथी साधु की स्वर्ण मुद्रा चुराकर जुआ खेलता है और बात की बात में सट्टेबाजी से धनकुबेर बन जाता है।..वह फिर निर्धन हो जाता है। अन्त में वही अवधूत फिर उससे मिलता है और उसे धर्मोपदेश द्वारा सान्त्वना प्रदान करता है। इसके प्रारम्भ में जिस भाषा का प्रयोग किया गया है, वह काव्योचित होते हुए भी संस्कृतबहुल है।[३]"

बड़े बाबू

सन् १९३० ई० में ही श्री विजय वर्मा लिखित 'बड़ेबाबू' नामक उपन्यास गाँधी

---

१. सरस्वती, भाग ३१, अंक ५, मई १९३०, पुस्तक परिचय।

२. सरस्वती, जून, १९३०, पुस्तकपरिचय।

३. उपरिवत्।

कारण सामाजिक जागृति का वहाँ नामोनिशान नहीं। अधिकाधिक संख्या में पहाड़ी लोग विधर्मी बन रहे हैं। इस छोटे उपन्यास में इस समस्या की ओर हिन्दू पाठकों का ध्यान आकर्षित करने की चेष्टा की गयी है।"

घिरचा

इसी वर्ष श्रीयुक्त 'व्यग्र' लिखित 'घिरचा' नामक उपन्यास संहारक साहित्य मंडल, कलकत्ता से प्रकाशित हुआ।[1] इस उपन्यास में बालकों के साथ किये गये अप्राकृतिक व्यभिचार का वर्णन कर उसके विरुद्ध आन्दोलन का समर्थन किया गया है। 'उपन्यास' के रूप में कृति नितान्त हलकी है।

पाप का पराभव

१९३० ई० में ही रामशंकर द्विवेदी कृत 'पाप का पराभव' नामक उपन्यास महादेव प्रसाद धवन द्वारा मिरजापुर से प्रकाशित हुआ।[2]

पुनर्मिलन

इसी वर्ष रामानन्द शर्मा 'प्रेमयोगी' लिखित 'पुनर्मिलन' नामक उपन्यास श्री कार्यानन्द शर्मा द्वारा लखीसराय से प्रकाशित हुआ।[3] सितम्बर १९३१ ई० की 'सरस्वती' में प्रकाशित पुस्तक-परिचय से ज्ञात होता है कि इसमें "लक्ष्मी देवी की पतिभक्ति, आंजनेय की कुटिलता, सुब्रह्मण्यम् की अज्ञता, भीरुता, दुष्टता तथा लक्ष्मीबाई के पिता का सीधापन आदि चित्र बड़ी उत्तमता से अंकित किये गये हैं।"[४]

गोरी : विधवा की आत्मकथा

सन् १९३० ई० में ही रमाशंकर सक्सेना रचित 'गोरी' नामक उपन्यास गंगा पुस्तकमाला कार्यालय, लखनऊ से तथा श्रीमती प्रियंवदा देवी लिखित 'विधवा की आत्मकथा' नामक उपन्यास आदर्श हिन्दी पुस्तकालय, कलकत्ता से प्रकाशित हुए।[५]

---

१. प्रा० स्था०—आ० भा० पु० काशी। मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—घिरचा, मानव कलंक का नग्न-चित्र, लेखक—श्रीयुत् 'व्यग्र', प्रकाशक संहारक साहित्य मण्डल, ३६१, अपर चीतपुर रोड, कलकत्ता, प्रथम संस्करण १०००, १९३०।

२. प्रा० स्था०—आ० भा० पु० काशी। मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—पाप का पराभव, लेखक रामशंकर द्विवेदी, प्रकाशक—महादेव प्रसाद धवन, खिचरी समाचार, मिरजापुर, प्रथम बार १००० प्रति, नवम्बर सन् १९३० ई०, पृष्ठ सं० १०४।

३. प्रा० स्था०—आ० भा० पु०, काशी। मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—पुनर्मिलन, लेखक श्री रामानन्द शर्मा 'प्रेमयोगी', प्रथम संस्करण १९८७ वि०, प्रकाशक—श्री कार्यानन्द शर्मा, चितरंजन पुस्तक माला, लखीसराय, ई० आइ० रेलवे। पृ० सं० १७५।

४. सरस्वती, अक्टूबर १९३१, पुस्तक परिचय (पुनर्मिलन)

५. आ० भा० पु० काशी की पुस्तक सूची।

विधवा

सन् १९३१ ई०. में ही पं० हेरम्ब मिश्र रचित 'विधवा' नामक उपन्यास दी पपुलर ट्रेडिंग कम्पनी, कलकत्ता से प्रकाशित हुआ।[१] इस उपन्यास में एक ढोंगी साधु के कुकृत्यों का वर्णन किया गया है जिसे चन्द्रनाथ नामक व्यक्ति गारुड़नाद (Ventriloqism) की सहायता से दंडित करता है।

बाइसवीं सदी

सन् १९३१ ई० में ही राहुल सांकृत्यायन लिखित 'बाइसवीं सदी' नामक कथापुस्तक युगान्तर पुस्तकमाला कार्यालय, पटना से प्रकाशित हुई[२]। इसके 'दो शब्द' से पता चलता है कि इसका लेखन १९१८ ई० में ही आरम्भ हो चुका था। प्रथम लेख के खो जाने पर पुनः इसका लेखन हजारीबाग जेल में ९-२-१९२४ को आरम्भ हुआ। पुस्तक कब समाप्त हुई इसका पता नहीं चलता। 'दो शब्द' में इसे निबन्ध की संज्ञा दी गयी है।

इस पुस्तक में बाईसवीं सदी में भारत में विज्ञान की सहायता से होनेवाले परिवर्तनों का वर्णन किया गया है।

क्रान्ति की लपट : मिलन पूर्णिमा

सन् १९३१ ई० में आर० ए० सिंह लिखित 'क्रान्ति की लपट' नामक उपन्यास हिन्दी पुस्तक एजेंसी कलकत्ता से[३] तथा जगमोहन विकसित रचित 'मिलनपूर्णिमा' नामक उपन्यास दी पपुलर ट्रेडिंग कम्पनी, कलकत्ता से प्रकाशित हुआ।[४]

माया

माघ,१९८८ (फरवरी, १९३२) के 'अग्रवाल' नामक मासिक पत्र में प्रकाशित 'पुस्तक-परिचय' से ज्ञात होता है कि इसके पूर्व पं० चंडिका प्रसाद मिश्र लिखित 'माया' नामक 'चरित्र-चित्रण सम्बन्धी' उपन्यास पं० शिवशरण जी त्रिवेदी द्वारा प्रिमियर प्रेस, सदर बाजार, कानपुर से प्रकाशित हो चुका था।[५] 'उक्त परिचय' के अनुसार माया में स्त्रियों के चरित्र पर लेखक ने बड़ा अच्छा प्रकाश डाला है।

---

१. प्रा० स्था०—आ० भा० पु० काशी। मु० पृ० की प्रतिलिपि—विधवा, ऊँचे दर्जे का सामाजिक उपन्यास, लेखक—पं० हेरम्ब मिश्र, भूतपूर्व सम्पादक, 'हिन्दी केसरी', 'सूर्य' आदि. प्रकाशक—दी पोपुलर ट्रेडिंग कम्पनी २४/१ ए० शम्भू चटर्जी स्ट्रीट, कलकत्ता, प्रथम संस्करण संवत् १९८८, पृ० सं० १२२।

२. प्रा० स्था०—प० वि० पु०। मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—बाइसवीं सदी, लेखक राहुल सांस्कृत्यायन, युगान्तर पुस्तकमाला कार्यालय, महेन्द्र, पटना, १९८८ वि०, प्रथम बार।

३. आ० भा० पु० काशी की पुस्तक-सूची।

४. उपरिवत्।

५. अग्रवाल, वर्ष २, सं० २, माघ १९८८, पुस्तक परिचय।

फूलरानी

सन् १९३२ ई० में ही बाबू केदार नाथ खुरशीद लिखित 'फूलरानी' नामक उपन्यास लाला पन्ना लाल द्वारा न्यू नेशनल बुक डिपो, लाहौर से प्रकाशित हुआ।[1]

मुन्नी की डायरी

सन् १९३२ ई० में ही आदित्य प्रसन्न राय लिखित 'मुन्नी की डायरी' नामक उपन्यास बलदेव मिश्र मंडल द्वारा राजा दरवाजा, बनारस सिटी से प्रकाशित हुआ।[2] डायरी शैली में लिखित यह हिन्दी का प्रथम उपन्यास है। इस में हिन्दू समाज की पोल खोली गयी है।

अद्‌भुत बनवीर

सन् १९३२ ई० में ही श्री कैलाश बिहारी लिखित 'अद्‌भुत बनवीर' नामक उपन्यास के प्रथम और द्वितीय भाग महावीर प्रसाद द्वारा, दयालबाग से प्रकाशित हुए। इस उपन्यास के तृतीय और चतुर्थ भाग १९३३ ई० में उपर्युक्त प्रकाशक द्वारा ही प्रकाशित हुए।[3] इसमें अन्धपरम्परानुसार कन्या की रुचि के विरुद्ध उसका विवाह कर देने के कुपरिणाम चित्रित किये गये हैं।

कसक

सन् १९३२ ई० में ही पं० राम विलास शुक्ल 'उदय' लिखित 'कसक' नामक उपन्यास हिन्दी साहित्य प्रकाशक मंडल, दिल्ली से प्रकाशित हुआ।[4] डॉ० गुप्त ने इसका प्रकाशन काल १९३१ ई० दिया है, जो भ्रामक है।[5]

---

१. प्रा० स्था०—आ० भा० पु० काशी। मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—फूलरानी, लेखक—श्रीयुत बाबू केदारनाथ खुरशीद, लुहारी दरवाजा, लाहौर, प्रकाशक—लाला पन्ना लाल, मालिक न्यू नेशनल बुक डिपो, लुहारी गेट, लाहौर, प्रथम बार २०००, १९३२-ई०, पृष्ठ सं० १४०।

२. प्रा० स्था०—आ० भा० पु० काशी तथा सि० पु० पटना: मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—मुन्नी की डायरी लेखक—आदित्य प्रसन्न राय, १९३२, प्र०—बलदेव मित्र मंडल, राजा दरवाजा, बनारस सिटी, प्रथम संस्करण, पृ० सं० १७१।

३. प्रा० स्था०—आ० भा० पु० काशी। मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—अद्‌भुत बनवीर (भाग पहला और दूसरा), एक मनोरंजक उपन्यास, जिसमें अंध परम्परानुसार कन्या की रुचि के विरुद्ध विवाह का उद्योग करने और क्रोधान्ध होने के परिणाम दिखाए गए हैं। लेखक—कैलाश बिहारी, बी० ए०, प्रकाशक—महावीर प्रसाद, बी० ए०, रिटायर्ड हेडमास्टर, दयालबाग प्रेस में मुद्रित, पहला संस्करण १९३२, भाग तीसरा और चौथा (अन्य सूचनाएँ उपरिवत्), प्रथम संस्करण १९३३।

४. प्रा० स्था०—आ० भा० पु० काशी। मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—कसक, लेखक—पं० रामविलास शुक्ल 'उदय', प्रकाशक—हिन्दी साहित्य प्रकाशक मंडल, बाजार सीताराम, दिल्ली, प्रथम बार २०००, १९८८, पहली बार १९३२, पृ० सं० १६६।

५. डॉ० गुप्त, हि० पु० सा०, पृ० ५८६।

साहसी राजपूत

सन् १९३३ ई० में श्री द्वारका प्रसाद 'मौर्य' लिखित 'साहसी राजपूत' नामक उपन्यास का द्वितीय संस्करण चौधरी एंड संस, बनारस से प्रकाशित हुआ।[1] कदाचित् इसका प्रथम संस्करण 'विचित्र संन्यासी' शीर्षक से प्रकाशित हुआ था।

अन्धकार

सन् १९३३ ई० में ही श्रीयुत् केशव कुमार ठाकुर लिखित 'अन्धकार' नामक उपन्यास साहित्य मन्दिर, दारागंज, प्रयाग से प्रकाशित हुआ।[2] 'अग्रवाल', वर्ष ४, सं० १ में प्रकाशित समीक्षा के अनुसार यह पुस्तक सामाजिक समस्याओं के समाधान के लिए लिखी गयी है। उपन्यास की नायिका के जीवन में सत्यनिर्णय पातिव्रत्य उज्ज्वल आचार विचार आदि अलौकिक गुण मिलते हैं। वह निरन्तर विपत्ति में रहती है फिर भी अपने इन गुणों की रक्षा करने में कमाल कर दिखाती है। इसी प्रकार उपन्यास के नायक श्री तारानाथ के जीवन में देशहित की श्लाघनीय लगन मालूम होती है।

जगतमाया

सन् १९३३ ई० में ही बाबू हरस्वरूप जी गुप्ता लिखित 'जगत माया' नामक उपन्यास का द्वितीय संस्करण रत्न प्रकाश गुप्ता द्वारा प्रकाशित हुआ।[3] यह एक धार्मिक उपन्यास है जिसमें सत्संग एवं कभी भी हताश न होने का उपदेश दिया गया है।

मधुवन

सन् १९३३ ई० में ही ज्योतिर्मयी ठाकुर लिखित 'मधुवन' नामक उपन्यास प्रकाशित हुआ। माहेश्वर सार्वजनिक पुस्तकालय, पटना में इस उपन्यास की एक प्रति है, पर मुखपृष्ठ के फटे रहने के कारण पुस्तक के सम्बन्ध में कोई सूचना नहीं प्राप्त होती। 'भूमिका' के नीचे वैशाख सोमवती अमावस्या संवत् १९९० वि०' मुद्रित रहने से इसके प्रथम प्रकाशन या रचनाकाल का पता चलता है। 'भूमिका' से ज्ञात होता है कि 'मधुवन सामाजिक उपन्यास है और जीवन की उन साधारण बातों को लेकर उसमें चरित्र चित्रण किया गया है जिनमें मनुष्य सहज ही अपने सुख-सौभाग्य की रचना के लिए छल-पाप

---

१. प्रा० स्था०—आ० भा० पु० काशी। मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—साहसी राजपूत (विचित्र संन्यासी का नवीन रूप), लेखक—राजकुमार कुणाल, विचित्र योगी, विचित्र मिलन, हैदर अली तथा सप्त सोपान आदि के रचयिता श्रीयुत द्वारका प्रसाद 'मौर्य' बी० ए०, एल० एल० बी०, प्रकाशक—चौधरी एंड संस, पुस्तक विक्रेता और प्रकाशक, द्वितीय संस्करण सन् १९३३ ई०।

२. प्रा० स्था०—आ० भा० पु० काशी। मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—अन्धकार (मौलिक, सामाजिक उपन्यास), लेखक—श्रीयुत् केशव कुमार ठाकुर, प्रकाशक—साहित्य मन्दिर, दारागंज, प्रयाग, प्रथम संस्करण संवत् १९९०, १९३३ ई०, पृ० सं० २५२।

३. प्रा० स्था०—बि० रा० भा० प० पु० पटना। मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—जगत माया, ले० स्व० बाबू हरस्वरूप जी गुप्ता, प्रकाशक—रत्न प्रकाश गुप्ता, द्वितीय बार, १९३३ ई०।

नैना :

१९३३ ई० में ही पंडित शिवशेखर द्विवेदी रचित 'नैना' नामक उपन्यास पाठक एंड कम्पनी, कलकत्ता से प्रकाशित हुआ।[१]

गोद

इसी वर्ष सियारामशरण गुप्त ने 'गोद' नामक उपन्यास की रचना की जिसका द्वितीय संस्करण १९३१ ई० में तथा छठा संस्करण १९४५ ई० में साहित्य सदन, चिरगाँव से प्रकाशित हुआ।[२] इसकी भूमिका ('विश्वास') के अन्त में "फाल्गुन पूर्णिमा १९८९" मुद्रित है, जिससे इसका रचना-काल ज्ञात होता है।

मनसा

सन् १९३३ ई० में ही श्री शिवमौलि मिश्र लिखित 'मनसा' नामक उपन्यास स्वयं लेखक द्वारा कलकत्ता से प्रकाशित हुआ।[३] इस उपन्यास में बाल-विवाह, वृद्ध-विवाह, दहेज तथा हिन्दू समाज की अन्य कुप्रथाओं का चित्रण किया गया है।

हृदय की ज्वाला

इसी वर्ष व्यथित हृदय कृत 'हृदय की ज्वाला' नामक उपन्यास गौड़ पुस्तक भंडार, प्रयाग से प्रकाशित हुआ।[४] यह उपन्यास पत्र-शैली में लिखा गया है। 'सरस्वती', मार्च १९३४ ई० में प्रकाशित इस उपन्यास के 'परिचय' के अनुसार इसमें 'लड़की को छल द्वारा हर लेने और पीछे से उसकी दुर्दशा का चित्रण किया गया है। सच्चे और झूठे प्रेम की झलक भी दिखाई गयी है।"

प्रायश्चित्त

१९३३ ई० में ही पं० नित्यानन्द पन्त लिखित 'प्रायश्चित्त' नामक उपन्यास, पन्त एंड को०, कलकत्ता से प्रकाशित हुआ।[५]

---

१. प्रा० स्था०—आ० भा० पु० काशी। मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि, नैना, लेखक—पण्डित शिवशेखर द्विवेदी, प्रकाशक—पाठक एण्ड कम्पनी, ५, शिमला स्ट्रीट, कलकत्ता, प्रथम संस्करण १९३३, पृ० सं० १३२।

२. प्रा० स्था०—प० वि० पु०; मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि : गोद, श्री सियारामशरण गुप्त, साहित्यसदन चिरगाँव (झाँसी), द्वितीय बार १९९६ वि०, पृ० सं० १५८, छठे संस्करण का प्रा० स्था०, आ० भा० पु० काशी।

३. प्रा० स्था०—आ० भा० पु० काशी। मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—मनसा (ऊँचे दर्जे का सामाजिक उपन्यास), लेखक—श्री शिवमौलि मिश्र, कलकत्ता, प्रकाशक—श्री शिवमौलि मिश्र, कलकत्ता, प्रथम बार संवत् १९९०, पृ० सं० १७४।

४. प्रा० स्था०—आ० भा० पु० काशी। मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—हृदय की ज्वाला, लेखक—व्यथित हृदय, प्रकाशक—गौड़ पुस्तक भण्डार, कटरा, प्रयाग, प्रथम संस्करण १९३३, पृ० सं० ११७।

५. प्रा० स्था०—आ० भा० पु० काशी। मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—प्रायश्चित्त (सामाजिक उपन्यास),

उर्फ कालेज गर्ल ५२, अबलाओं के आँसू ५२, औरतों के गुलाम ५२, सोहागरात का चाँद ५३, शर्मीला घूँघट ५३, सिनेमा का शैतान ५३, इन्दौर का रहस्य ५४, बलिदान की चिनगारियाँ ५४, राख में अंगार याने स्त्री रहस्य ५५

अनूपलाल मंडल, निर्वासिता ५५, समाज की वेदी पर ५५, साकी ५६, रूपरेखा ५६, ज्योतिर्मयी ५६

जैनेन्द्र कुमार, परख ५६, स्पर्धा ५७, तपोभूमि ५८, सुनीता ५८

जयशंकर प्रसाद, कंकाल ५९, तितली ६०

सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला', अप्सरा ६२, अलका ६२, निरुपमा ६३

भगवतीचरण वर्मा, चित्रलेखा ६३, तीनवर्ष ६४

फुटकल उपन्यास, सुकुमारी ६५, सुघड़ चमेली ६५, भारत रहस्य ६५, विचित्र वारांगना ६५, आदर्श महिला ६६, श्यामा ६६, विचित्र परिवर्तन ६६, नकली और असली धर्मात्मा ६६, मेम और साहब ६६, नाटक चक्र अथवा कोट का बटन ६७, भीषण नारी हत्या ६७, भयानक तूफान ६७, पतित पति वा भयंकर भूल ६७, भारत प्रेमी ६७, प्रेमा ६७, बलिदान ६८, नेटाली हिन्दू ६८, उड़नखटोला या मायाजाल ६८, अनुचरी या सहचरी ६८, कल्याणी ६८, आरामनन्दन ६९, सुशीला या स्वर्गदेवी ६९, पुनरुत्थान ६९, विचित्र संसार अथवा लाले वो बच्चे ६९, बात की चोट, ७०, वनदेवी ७०, टापू की रानी या समुद्र की सैर ७०, तरंग ७१, आदर्श महिला ७१, अंजना देवी ७१, करुणा देवी ७१, पतितोद्धार ७१, आत्म-विजय ७२, सत्याग्रह की मूर्ति गंगोत्तरी ७२, सुहागिनी ७२, महारानी शशिप्रभा देवी ७२, हेरफेर ७३, अनाथ सरला ७३, कृष्ण कुमारी ७३, दुलारी बहू ७३, भागवन्ती ७३, निकुंज ७४, जीवन या वमविभ्राट् ७४, संसार रहस्य अथवा अवःपतन ७४, सुन्दरी ७४, सूरज-मुखी ७४, आदर्श माता ७५, कामिनी ७५, शैल कुमारी ७५, सुमति ७५, सीधे पंडित ७५, उपेक्षिता ७६, चरित्र चित्रण ७६, जीवन ७६, मायावती ७६, सरला ७६, उषा आर अरुण ७६, चन्द्रभवन ७७, माया ७७, शीलमणि ७७, स्वर्गीय जीवन ७७, पाप का अन्त ७८, रूप सुन्दरी ७८, शान्ति निकेतन ७८, खुशीराम और लज्जावती ७९, प्रेम ७९, भविष्य ७९, भाई भाई ७९, सत्यानन्द ७९, अपूर्व ब्रह्मचारी ८०, उमा सुन्दरी ८०, पुष्पकुमारी ८०, सेवाश्रम ८१, शैलकुमारी ८१, रमणी रहस्य ८१, कमला कुसुम ८१, भीषण पाप और उसका परिणाम ८१, कर्त्तव्याघात ८१, माधुरी ८२, महात्मा की जय ८३, उषा ८३, क्षमा ८३, अपूर्व संयोग ८३, जयश्री ८४, अबला ८४, विचित्र योगी ८४, महामाया ८४, देहाती दुनिया ८५, मंगल प्रभात ८५, शान्ता ८५, लोकवृत्ति ८६, सोने की प्याली ८६, परोपकारी ८६, वेश्या रहस्य ८६, विलासिनी ८७, मृग मरीचिका ८७, निर्मला वा अन-मेल विवाह ८७, गुणलक्ष्मी ८७, लक्ष्मी बहू ८७, चारुशीला वा कुत्सित कांड ८८, प्रेम का मूल्य ८८, प्रेम परीक्षा ८८, मीठी चुटकी ८९, रंगीला भक्तराज ८९, अबलाओं का इन्साफ ८९, मनोरमा ९०, गुरुदर्शन ९०, स्मृतिकुंज ९०, अबला ९१, विदा ९१, करमा

'दो शब्द' के अनुसार "पश्चिमी सभ्यता की डींग मारने वाले ढोंगी कैसे नीच और कलुषित कार्य करने पर उतारू हो जाते हैं व भारत की गौरवशील रमणियाँ किस प्रकार दुष्टों को क्षमा प्रदान कर अपने विशाल हृदय और पवित्र आत्मा का परिचय देती हैं, इसका दिग्दर्शन कराने की चेष्टा की गयी है।"

कन्या बलिदान

सन् १९३४ ई० में ही चन्द्रनाथ योगी लिखित 'कन्या बलिदान' नामक उपन्यास शिवनाथ योगी द्वारा अहमदाबाद, गुजरात से प्रकाशित हुआ।[1] इस उपन्यास में हिन्दू समाज की कुरीतियों, विशेषकर बालहत्या जैसे बर्बर कार्यों का चित्रण किया गया है।

मधुवन : रक्षाबन्धन

डॉ० माताप्रसाद गुप्त के अनुसार सन् १९३४ ई० में ही वृन्दावन विहारी लिखित 'मधुवन' नामक उपन्यास मानिक चंद जैन द्वारा आरा से[2] तथा देवचरण, बी० ए० लिखित 'रक्षाबंधन' नामक उपन्यास भदावर प्रेस, दिल्ली से[3] प्रकाशित हुआ।

अन्तिम आकांक्षा

सन् १९३४ ई० में ही सियाराम शरण गुप्त लिखित 'अन्तिम आकांक्षा' नामक उपन्यास साहित्य सदन, चिरगाँव से प्रकाशित हुआ। आ० भा० पु० काशी में इस उपन्यास की एक प्रति है, पर उसके मुखपृष्ठ के नष्ट हो जाने से पुस्तक के सम्बन्ध में कोई सूचना नहीं प्राप्त होती। अन्तिम पृष्ठ पर "आषाढ़ कृष्ण १३, १९९१ मुद्रित होने से इसका रचना-काल ज्ञात होता है। अन्य सूचनाएँ आ० भा० पु० की पुस्तकसूची से ली गयी हैं। इसका तीसरा संस्करण १९५० ई० में साहित्य प्रेस, चिरगाँव से प्रकाशित हुआ[4] मार्च १९३५ की सरस्वती में प्रकाशित समीक्षा के अनुसार गुप्त जी ने 'इस कथा की आड़ में 'भोंड़े ढंग से' अछूत समस्या एवं साम्यवादी विचारों का विवाद उपस्थित किया है।'[5]

वस्तुतः इस उपन्यास में बहुत सहानुभूति के साथ एक नौकर के आदर्श चरित्र का चित्रण किया गया है। रामलाल गरीब तथा निम्नवर्गीय समाज का होने पर भी चरित्र की दृष्टि से महान् है। रामलाल का चरित्र उसके समवयस्क मालिक के अवलोकन-बिन्दु से

---

१. प्राप्ति स्थान—आ० भा० पु०, काशी। मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—कन्या बलिदान, ले०—चन्द्रनाथ योगी, योगाश्रम, बोहर जिला, रोहतक (पंजाब), संवत् १९९१ विक्रमी, प्रकाशक—शिवनाथ योगी, मु० योगाश्रम, दुधेश्वर रोड, पो० शाहीबाग, अहमदाबाद, गुजरात, प्रथमावृत्ति १००० प्रतियाँ। हिन्दू मात्र को छापने का अधिकार।

२. डॉ० माताप्रसाद गुप्त, हि० पु० सा०, पृ० ६१९।

३. उपरिवत्, पृ० ४८०।

४. प्रा० स्था०—सिनहा पुस्तकालय, मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—अन्तिम आकांक्षा, लेखक सियाराम शरण गुप्त, प्र० साहित्य प्रेस, चिरगाँव झाँसी, तृतीय बार २०००, पृ० सं० १६८,

५. सरस्वती, मार्च १९३५, नई पुस्तकें (अंतिम आकांक्षा)

पराजय

इसी वर्ष प्रभावती भटनागर लिखित 'पराजय' नामक उपन्यास नवलकिशोर प्रेस, लखनऊ से प्रकाशित हुआ।[1] प्रस्तुत पंक्तियों का लेखक इस उपन्यास को प्राप्त करने में असमर्थ रहा है।

मालती

सन् १९३४ ई० में ही सुरेन्द्र शर्मा द्वारा लिखित 'मालती' नामक उपन्यास चाँद प्रेस लि०, इलाहाबाद से प्रकाशित हुआ।[2]

मालती का मुख्य विषय ग्राम-सेवा, स्त्री-शिक्षा का प्रचार और पीड़ित मानवता की सेवा का चित्रण है। इसमें 'मालती' की चारित्रिक दृढ़ता के साथ उसके त्याग और सेवा की कहानी कही गयी है। नारी-जागरण और स्त्री-शिक्षा के प्रचार के लिए वह न केवल मेरठ में आन्दोलन चलाती है वरन् गाँव गाँव में रात्रि पाठशाला, कन्या पाठशाला, व्यायामशाला आदि की व्यवस्था करती है और स्वयं पढ़ाती भी है। आयुर्वेद का अध्ययन कर वह एक अस्पताल खोलती है और दीन दुखियों की सेवा में अपना जीवन लगा देती है। अपने पति (पंडित रामदीन) को वह गाँवों में भेजती है, जो कंचनपुर गाँव को अपना केन्द्र बनाकर ग्रामीणों की सेवा करते हैं।

इसके अतिरिक्त इसमें जमीन्दार, मुखिया, पटवारी, पुलिस और कारिन्दों के जोर-जुल्म और अत्याचार का भी यथार्थ चित्रण देखने को मिलता है। एक ओर इसमें रिश्वत और पारिवारिक कलह का वर्णन है तो दूसरी ओर ऊँच-नीच, छूत-अछूत, दहेज एवं शादी-विवाह में की जाने वाली फिजूलखर्ची, आदि का दृढ़ता के साथ विरोध किया गया है।

श्यामा

सन् १९३५ ई० में कृष्ण विहारी प्र० सिंह लिखित 'श्यामा' नामक उपन्यास राम विलास सिंह द्वारा साहित्य पुस्तकालय, बनारस सिटी से प्रकाशित हुआ।[3]

लन्दन में भारतीय विद्यार्थी

१९३५ ई० में ही राजकुमार मानसिंह जी द्वारा लिखित 'लन्दन में भारतीय

श्रीनाथ सिंह, प्रकाशक इंडियन प्रेस लिमिटेड, प्रयाग, प्रथम संस्करण १९३४, पृ० सं० २८७।

१. आ० भा० पु० की पुस्तक सूची।

२. प्रा० स्या०—सिनहा पुस्तकालय,, मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—मालती, (मौलिक सामाजिक उपन्यास), लेखक भूतपूर्व 'प्रताप' सह० सम्पादक श्रीयुत सुरेन्द्र शर्मा, प्रकाशक—चाँद प्रेस लिमिटेड, चन्द्रलोक, इलाहाबाद, प्रथम संस्करण, दिसम्बर १९३४, पृ० सं० ३३२।

३. प्रा० स्या०—आ० भा पु० काशी। मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—श्यामा (सचित्र मौलिक उपन्यास), लेखक कृष्ण विहारी प्रसाद सिंह, प्रथम बार १९३५, प्रकाशक—राम विलास सिंह, अध्यक्ष, साहित्य पुस्तकालय, बनारस सिटी, पृ० सं० १३२।

मदारी

सन् १९३५ ई० में ही श्री गोविन्दवल्लभ पन्त लिखित 'मदारी' नामक उपन्यास गंगा पुस्तक माला कार्यालय, लखनऊ से प्रकाशित हुआ। प्रस्तुत पंक्तियों का लेखक इसके प्रथम संस्करण को प्राप्त करने में असमर्थ रहा है। प्रथम संस्करण का प्रकाशन-काल चतुर्थ संस्करण के 'वक्तव्य' से, जिसके अन्त में '८-११-३५' तिथि मुद्रित है, ज्ञात होता है।[1] डॉ० माताप्रसाद गुप्त ने इसका प्रकाशन काल १९३६ ई० दिया है।[2] इस उपन्यास का चतुर्थ संस्करण १९५४ ई० में प्रकाशित हुआ।[3] चतुर्थावृति पर 'दो शब्द' लिखते हुए प्रकाशक का कथन है कि "यह उपन्यास बहुत दिनों से अप्राप्य था। ····ग्राहकों की निरन्तर माँग होने के कारण अब छाप रहे हैं।"[4] इस कथन से प्रस्तुत उपन्यास की लोकप्रियता सिद्ध होती है।

'मदारी' में हिमालय की तलहटी में स्थित एक गाँव में रहने वाले युवक नवाव और युवती तितली के प्रेम का चित्रण किया गया है। नवाव अत्यन्त निर्धन है, पर उसके मन में तितली को पत्नी रूप में पाने की बलवती लालसा है। तितली का पिता आठ सौ रुपयों की माँग करता है। नवाव मदारी, हकीम, वैरा, जादूगर आदि का काम करता है और अन्ततः उसकी कामना पूर्ण होती है।

मदारी में एक जिप्सी कन्या की भी कहानी है जो कहती है 'जिप्सी की कन्या आँखें बन्द कर प्यार और अन्धी होकर नफरत करती है।' जब नवाव उसकी प्रणय-याचना को ठुकराता है तो वह न केवल उस पर चोरी का इलजाम लगाती है वरन् उसके पेट में छुरा भी भोंक देती है।

उपन्यास में पहाड़ियों और मदारियों के जीवन की वास्तविक झाँकी देखने को मिलती है।

हिन्दू विधवा या सती गौरव

सन् १९३५ ई० में ही के० सी० चटर्जी 'प्रेमी' लिखित 'हिन्दू विधवा या सती गौरव' नामक उपन्यास स्वयं लेखक द्वारा, अजमेर से प्रकाशित हुआ।[5] इस उपन्यास में हिन्दू समाज में फैली कुरीतियों तथा स्त्रियों की दयनीय अवस्था का चित्रण किया गया है।

---

१. गोविन्द वल्लभ पन्त, मदारी, चतुर्थ संस्करण १९५४ ई०, वक्तव्य।

२. डा० गुप्त, हि० पु० सा०, पृ० ४३२।

३. प्रा० स्था—वि० रा० भा० प० पु०, पटना। मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—मदारी (मौलिक उपन्यास), लेखक—श्री गोविन्दवल्लभ पन्त, प्रकाशक—श्री दुलारे लाल, अध्यक्ष, गं० पु० मा० कार्यालय, लखनऊ, चतुर्थावृत्ति, सन् १९५४।

४. उपरिवत्, दो शब्द।

५. आ० भा० पु० काशी। मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—हिन्दू विधवा या सती गौरव, रहस्यपूर्ण सचित्र शिक्षाप्रद उपन्यास, ले० तथा प्र०—के० सी० चटर्जी 'प्रेमी', अजमेर, पहला संस्करण १०००, नवम्बर १९३५, पृ० सं० १९६।

प्राणवल्लभा : एक रात

१९३५ ई० में ही शिवाधार शुक्ल तथा देवीदत्त शुक्ल लिखित 'प्राणवल्लभा' नामक उपन्यास राजपूत पब्लिशिंग चौक, बनारस से[1], तथा पुरुषोत्तम दास गौड़ 'कोमल' लिखित 'एक रात' नामक उपन्यास गौड़ पुस्तक भंडार, प्रयाग से[2] प्रकाशित हुआ।

मझली रानी

सन् १९३६ ई० में बाबू रामकृष्ण वर्मा, बी० ए० रचित 'मझली रानी' नामक उपन्यास साहित्य सरोजमाला, दारागंज, प्रयाग से प्रकाशित हुआ।[3]

उर्वशी उर्फ सजायाफ्ता प्रोफेसर

सन् १९३६ ई० में पं० गोपीनाथ मिश्रा लिखित 'उर्वशी उर्फ सजायाफ्ता प्रोफेसर' नामक उपन्यास शान्तिनाथ श्रीनाथ मिश्र द्वारा बरेली से प्रकाशित हुआ।[4] इस उपन्यास में एक ऐसे प्रोफेसर की कहानी प्रस्तुत की गयी है, जो अपनी पत्नी को कुरूप होने तथा पर्दा मानने के कारण त्याग देता है और छल प्रपंच से एक अध्यापिका की सोलहवर्षीया कन्या से विवाह करने का प्रयत्न करता है। विवाह का भेद खुल जाने पर वह कन्या को बलपूर्वक भगा ले जाना चाहता है, पर इसमें सफल नहीं होता और परिणाम स्वरूप उसे जेल की सजा भुगतनी पड़ती है। जेल से छूटने पर वह एक दुर्घटना का शिकार होकर अस्पताल पहुँचाया जाता है, जहाँ उसकी पत्नी नर्स का काम करती है। पति-पत्नी के मिलन से उपन्यास का अन्त होता है।

उपन्यास का स्वर नैतिकतावादी है। सदाचार और विवाहविषयक सनातन हिन्दू मूल्यों की स्थापना इस उपन्यास का लक्ष्य है।

वचन का मोल

सन् १९३६ ई० में ही उषादेवी मित्रा रचित 'वचन का मोल' नामक उपन्यास सरस्वती प्रेस, बनारस से प्रकाशित हुआ।[5] इसका द्वितीय संस्करण १९४२ में और तृतीय संस्करण १९५७ में नेशनल पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली से निकला।[6]

---

१. आ० भा० पु० काशी की पुस्तक-सूची।

२. उपरिवत्।

३. प्रा० स्था०—प० वि० पु०। मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—मझली रानी (मौलिक सामाजिक उपन्यास), लेखक—बाबू रामकृष्ण वर्मा, बी० ए०, प्रकाशक—साहित्य सरोज माला, दारागंज, प्रयाग, प्रथम संस्करण १६००, सम्वत् १९९३ वि०, पृ० सं० २८२।

४. प्रा० स्था०—बि० रा० भा० प० पु० पटना। मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—उर्वशी उर्फ सजायाफ्ता प्रोफेसर, लेखक—पं० गोपीनाथ मिश्रा, प्रकाशक—शांतिनाथ श्रीनाथ मिश्रा, ब्रह्मपुर, बरेली, प्रथम बार २०००, १९३६।

५. डॉ० माता प्रसाद गुप्त, हि० पु० सा०, पृ० ३८८

६. प्रा० स्था—आ० भा० पु० काशी। मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—वचन का मोल, लेखिका—

उपन्यास निराकार पुस्तकालय, काशी से प्रकाशित हुआ। आ० भा० पु० काशी में इस उपन्यास की एक प्रति उपलब्ध है. पर उसके मुखपृष्ठ के नष्ट हो जाने के कारण पुस्तक के सम्बन्ध में कोई सूचना नहीं प्राप्त होती। 'प्रस्तावना' के अन्त में 'दीपावली १९९३' मुद्रित होने से उसका रचनाकाल ज्ञात होता है। शेष सूचनाएं आ० भा० पु० की पुस्तक-सूची से प्राप्त की गयी हैं। इस उपन्यास में पाखंडी साधुओं के ढोंग, विधवाओं की दुर्दशा तथा अछूतों के प्रति समाज के अत्याचार का चित्रण किया गया हैं। वैवाहिक समस्याओं का अंकन भी किया गया है।

प्रतिज्ञापूर्ति

इसी वर्ष रामकृष्ण वर्मा लिखित 'प्रतिज्ञापूर्ति' नामक उपन्यास प्रमोद पुस्तक माला, प्रयाग से प्रकाशित हुआ[1]

नर्तकी

१९३६ ई० में ही श्री व्यथित हृदय कृत 'नर्तकी' नामक उपन्यास 'साहित्य निकेतन', प्रयाग से प्रकाशित हुआ।[2]

समाज की खोपड़ी

सन् १९३६ ई० में ही रमाकान्त त्रिपाठी 'प्रकाश' कृत 'समाज की खोपड़ी' नामक उपन्यास भार्गव पुस्तकालय, बनारस से प्रकाशित हुआ।[3] इस उपन्यास में हिन्दू समाज में फैले अन्धविश्वासों का चित्रण किया गया है।

प्रेम के आँसू

इसी वर्ष श्री विश्वनाथ राय लिखित 'प्रेम के आँसू' नामक उपन्यास चौधरी एंड संस, बनारस सिटी से प्रकाशित हुआ।[4]

---

१. प्रा० स्था०—आ० भा० पु०, काशी। मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—प्रतिज्ञापूर्ति, (मौलिक सामाजिक उपन्यास) लेखक—रामकृष्ण वर्मा, बी० ए०, प्रमोद पुस्तकमाला, कटरा, प्रथम वार, फरवरी १९३६, पृ० सं० १५८।

२. प्रा० स्था०—आ० भा० पु०, काशी; मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—नर्तकी, शिक्षाप्रद सामाजिक उपन्यास, लेखक—श्री व्यथित हृदय, प्रकाशक-साहित्य निकेतन, दारागंज, प्रयाग, प्रथम वार १२००, सन् १९३६ ई०, पृ० सं० १००।

३. प्रा० स्था०—आ० भा० पु० काशी। मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—समाज की खोपड़ी, लेखक—श्री रमाकान्त त्रिपाठी 'प्रकाश', प्रकाशक—भार्गव पुस्तकालय, बनारस, प्रथम संस्करण १९९३ वि० पृ० सं० ४३९।

४. प्रा० स्था०—आ० भा० पु०, काशी। मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—प्रेम के आँसू, लेखक—श्री विश्वनाथ राम, एम० ए०, एल० एल० बी०, वकील, गाजीपुर,-चौधरी एण्ड संस, पुस्तक विक्रेता तथा प्रकाशक, बनारस सिटी, प्रथम संस्करण १९३६, पृष्ठ सं० २१४।

अबलाओं का बल : निष्कलंकिनी

प्रेमचन्द युग में ही (अनुमानतः) आनन्दी प्रसाद श्रीवास्तव कृत 'अबलाओं का बल' नामक उपन्यास विश्व ग्रन्थावली कार्यालय, प्रयाग से[1] तथा महावीर प्रसाद गहमरी रचित 'निष्कलंकिनी' नामक उपन्यास इंडियन प्रेस, प्रयाग से प्रकाशित हुआ।[2] ये दोनों उपन्यास आ० भा० पु० काशी में उपलब्ध हैं पर इनमें से किसी के भी मुखपृष्ठ पर प्रकाशन काल नहीं दिया हुआ है।

सन्तान लालसा उर्फ कच्ची दरगाह की पक्की बात

इसी अवधि में द्वारका प्रसाद लिखित 'सन्तान लालसा उर्फ कच्ची दरगाह की पक्की बात' शीर्षक उपन्यास स्वयं लेखक द्वारा नया गांव, गुलजारबाग से प्रकाशित हुआ।[3] इस पुस्तक के आवरणपृष्ठ पर प्रकाशन-काल नहीं दिया हुआ है। १६ पृष्ठों की इस कहानी में सन्तानेच्छा से दरगाहों में जानेवाली स्त्रियों के साथ पीरों तथा मुसलमान गुंडों के व्यभिचार का अश्लील भाषा में वर्णन किया गया है।

हिन्दू विधवा

प्रेमचन्द युग में ही श्रीयुत् कुन्दनलाल गुप्त लिखित 'हिन्दू विधवा' नामक उपन्यास का द्वितीय संस्करण नारायण दत्त सहगल एंड संस, लाहौर से प्रकाशित हुआ।[4] पुस्तक के मुखपृष्ठ पर प्रकाशन काल न दिये रहने के कारण इस सम्बन्ध में सम्प्रति कुछ कहना कठिन है। चूंकि इस उपन्यास में जालियाँवाले बाग के हत्याकांड की चर्चा है इसलिए इसे प्रेमचन्द युग के अन्तर्गत रखना अधिक युक्तिसंगत जान पड़ा है। इस उपन्यास में बाल विवाह तथा वृद्ध विवाह के दोष दिखाते हुए विधवा विवाह का समर्थन किया गया है।

---

१. प्रा० स्था०—आ० भा० पु० काशी, मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—अबलाओं का बल, एक सामाजिक जासूसी उपन्यास, रचयिता अनेक पुस्तकों के लेखक कविवर आनन्दी प्रसाद श्रीवास्तव, प्रथम बार १०००, पृष्ठ संख्या २६६।

२. प्रा० स्था०—आ० भा० पु० काशी। मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—निष्कलंकिनी, महावीर प्रसाद गहमरी, प्रकाशक—इंडियन प्रेस लिमिटेड, प्रयाग, पृष्ठ संख्या १६०।

३. प्रा० स्था०—आ० भा० पु० काशी। मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—सन्तान लालसा उर्फ कच्ची दर्गाह की पक्की बात, लेखक और प्रकाशक—द्वारका प्रसाद, नयागाँव, गुलजारबाग (पटना), प्रथम बार १०००।

४. प्रा० स्था०—मा० पु० पटना, मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—हिन्दू विधवा, हिन्दू विधवाओं की हृदयविदारक कथा, रचयिता श्रीयुत् कुन्दन लाल गुप्त, प्रकाशक—नारायण दत्त सहगल ऐंड संस, पुस्तक विक्रेता, लुहारी दरवाजा,' लाहौर। दूसरी बार १०००, पृष्ठ संख्या ७७।

प्रस्तुत पंक्तियों का लेखक इस उपन्यास के प्रथम संस्करण को प्राप्त करने में असमर्थ रहा है पर इसके पाँचवें संस्करण के साथ संलग्न प्रथम संस्करण की 'भूमिका' के अन्त में १२-४-३६ तिथि मुद्रित है[१], जिससे प्रथम संस्करण का प्रकाशन काल ज्ञात होता है। 'विराटा की पद्मिनी' का पाँचवा संस्करण १९५१ ई० में गंगा पुस्तकमाला कार्यालय, लखनऊ से प्रकाशित हुआ।[२]

इस उपन्यास में दलीप नगर के राजकुमार कुंजर सिंह और पालर ग्राम की अद्वितीय सुन्दरी पुजारिन कुमुद, जो दुर्गा का अवतार मानी जाती है, के प्रेम का वर्णन है। इन दोनों के प्रेम के बीच कालपी का फौजदार अलीमर्दान आ जाता है। उधर देवी सिंह नाम का ठाकुर कुंजर सिंह के राज्य पर अधिकार कर लेता है। कुंजर सिंह को देवी सिंह और अलीमर्दान दोनों से युद्ध करना पड़ता है। कुंजर सिंह युद्ध में मारा जाता है और कुमुद आत्महत्या कर लेती है। इस कथा की प्रकृति भी रोमानी है। युद्ध और प्रेम यही इस उपन्यास का मेरुदंड है।

फुटकल ऐतिहासिक उपन्यास

वीर बाला

सन् १९२१ ई० में लक्ष्मी सहाय माथुर 'विशारद' कृत 'वीर बाला' नामक उपन्यास साहित्य निकेतन, झालरा पाटन से प्रकाशित हुआ।[३] १६ पृष्ठों का इस ऐतिहासिक उपन्यासिका में चित्तौर की राजकुमारी प्रभावती के देशप्रेम, त्याग तथा वीरता का चित्र प्रस्तुत किया गया है।

शाहजादा और फकीर तथा उमरा की बेटी

सन् १९२२ ई० में राय साहब पं० रघुवर प्रसाद द्विवेदी लिखित 'शाहजादा और फकीर तथा उमरा की बेटी' नामक ऐतिहासिक कथापुस्तक मिश्रबन्धु कार्यालय, दीक्षित-पुरा, जबलपुर से प्रकाशित हुई।[४] इस पुस्तक में दो ऐतिहासिक कथाएँ संगृहीत हैं।

---

१. वृन्दावन लाल वर्मा, विराटा की पद्मिनी, पंचमावृत्ति सं० २००८ वि०, भूमिका।

२. प्रा० स्था०—वि० रा० भा० प० पु०, पटना। मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—विराटा की पद्मिनी लेखक—वृन्दावन लाल वर्मा, प्रकाशक—श्री दुलारे लाल, अध्यक्ष, गंगा पुस्तकमाला कार्यालय, लखनऊ, पंचमावृत्ति, सं० २००८ वि०।

३. प्रा० स्था०—आ० भा० पु० काशी। मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—वीर बाला (एक शिक्षाप्रद ऐतिहासिक आख्यायिका), लेखक-लक्ष्मी सहाय माथुर 'विशारद' प्रकाशक-साहित्य निकेतन १९७८ वि०—पृ० सं० १६, प्रथमावृत्ति १०००—कार्तिक संवत् (राजपूताना), सिटी झालरापाटन

४. प्रा० स्था०—आ० भा० पु० काशी। मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि-ऐतिहासिक कथामाला, प्रथम गुच्छ, शाहजादा और फकीर जिसमें मुगल सम्राट शाहजहाँ के प्रतिपक्षी शहरयार और दविरबख्श के प्रयत्नों का वर्णन है। उमरा की बेटी जिसमें मुगल सम्राट शाहजहाँ के प्रतिपक्षी लोदी खाँ की वीर पुत्री जहाँनिरा की वीरता का वर्णन है, लेखक—राय साहब पं० रघुवर प्रसाद जी द्विवेदी, बी० ए०, मूल्य ।।।, प्रकाशक—स्व०

सुर सुन्दरी

सन् १९२३ ई० में ही मुरलीधर वर्मा कृत 'सुरसुन्दरी' नामक उपन्यास लहरी प्रेस, काशी से प्रकाशित हुआ।[1] प्रस्तुत पंक्तियों का लेखक इस उपन्यास को प्राप्त करने में असमर्थ रहा है।

सुहराव रुस्तम

सन् १९२४ ई० में पं० रामनाथ पांडेय रचित 'सुहराव रुस्तम' नामक उपन्यास रामलाल वर्मा द्वारा कलकत्ता से प्रकाशित हुआ।[2] इस उपन्यास में सुहराव और रुस्तम —पिता पुत्र—के परस्पर युद्ध और सुहराव के मारे जाने का वर्णन किया गया है।

जादूगर

सन् १९२५ ई० में गौरीशंकर शुक्ल 'पथिक' कृत 'जादूगर' नामक ऐतिहासिक उपन्यास श्री रामसिंह वर्मा द्वारा ताजकपुर, उन्नाव से प्रकाशित हुआ।[3]

नरेन्द्र भूषण

सन् १९२५ ई० में ही पं० माता सरन मालवीय कृत 'नरेन्द्र भूषण' नामक उपन्यास वेलवेडियर प्रेस, प्रयाग से प्रकाशित हुआ।[4] इस उपन्यास में बाबर के विरुद्ध तत्कालीन राजाओं और सामन्तों की युद्ध मन्त्रणाओं एवं बुन्देलखंडाधिपति की वीरता और साहस का चित्रण किया गया है।

तुर्क रमणी

१९२५ ई० में ही विश्वंभर नाथ जिज्जा रचित 'तुर्क रमणी' नामक उपन्यास शिवराम दास गुप्त द्वारा बनारस से प्रकाशित हुआ।[5] आ० भा० पु० काशी में इस उपन्यास की एक प्रति है, पर मुखपृष्ठ के नष्ट हो जाने से पुस्तक के सम्बन्ध में कोई सूचना नहीं मिलती। इस उपन्यास में तुर्की के मुस्तफा कमालपाशा की एक प्रेम कहानी का वर्णन किया गया है।

---

१. आ० भा० पु० काशी की पुस्तक सूची।

२. प्र० स्था०-आ० भा० पु० काशी। मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—सुहराव-रुस्तम, वीर-रस-प्रधान सचित्र ईरानी उपाख्यान, लेखक—पण्डित राम नाथ पाण्डेय, सम्पादक पण्डित ईश्वरी प्रसाद शर्मा, प्रकाशक राम लाल वर्म्मा, प्रोप्राइटर "वर्म्मन प्रेस" और 'आर० एल० वर्म्मन एंड को०, ३७१. अपर चीतपुर रोड, कलकत्ता, वैशाख, सं० १९८१ वि०, प्रथम संस्करण २०००।

३. प्रा० स्था०—आ० भा० पु० काशी। मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि-जादूगर (एक ऐतिहासिक चित्र), लेखक—पं० गौरी शंकर शुक्ल 'पथिक', प्रकाशक—रामसिंह वर्म्मा, ताणकपुर, उन्नाव, प्रथम संस्करण १०००, १९२५, पृ० सं० ७७।

४. प्रा० स्था०—आ० भा० पु० काशी; मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—नरेन्द्र भूषण, एक ऐतिहासिक और सचित्र अत्यन्त रोचक मौलिक उपन्यास, लेखक—पण्डित माता सरन मालवीय, ज्ञानपुर, बनारस स्टेट, प्रकाशक—बेलवेडियर प्रेस, प्रयाग, प्रथम बार १९२५, पृ० सं० २३१।

५. डॉ० माताप्रसाद गुप्त, हि० पु० सा०, पृ० ६१५।

सूचनाएँ प्राप्त की गयी हैं। विज्ञापन के अनुसार "यह ऐतिहासिक उपन्यास मुगल-दर्बार रहस्य के आधार पर लिखा गया है। यदि नूरजहाँ के शासन-काल के दाँव-पेच देखना हो, यदि देखना हो कि हिन्दुओं के खिलाफ मुसलमानों के शासन-काल में कैसे-कैसे भीषण षड़यन्त्र रचे जाते थे, यदि मुसलमान बादशाहों की काम पिपासा, उनकी प्रेमलीला और विलासिता का नग्न चित्र देखना हो तो इस महत्त्वपूर्ण ऐतिहासिक उपन्यास को अवश्य पढ़िए।[1]

बंगाल की बुलबुल

सन् १९२८ ई० में जमुनादास मेहरा कृत 'बंगाल की बुलबुल' नामक उपन्यास नारायणदास सहगल एँड संस, लाहौर से प्रकाशित हुआ।[2]

वीर बादल

सन् १९२९ ई० में जगदीश झा विमल द्वारा लिखित 'वीर बादल' नामक ऐतिहासिक उपन्यास उपन्यास-बहार आफिस, काशी से प्रकाशित हुआ।[3] इस उपन्यास में गोरा और बादल को वीरता की कथा वर्णित है।

अमर सिंह राठौर

सन् १९२९ ई० में ही विश्वनाथ सिंह पोखरैल कृत 'अमर सिंह राठौर' नामक ऐतिहासिक उपन्यास चौधरी एँड संस, बनारस से प्रकाशित हुआ।[4]

केन

सन् १९३० ई० में श्री कृष्णानंद गुप्त द्वारा लिखित 'केन' नामक उपन्यास गंगा पुस्तकमाला कार्यालय, लखनऊ से प्रकाशित हुआ।[5] इसका तीसरा संस्करण, उपर्युक्त प्रकाशन संस्था से ही १९४५ ई० में प्रकाशित हुआ।[6]

'केन' में कर्णवती नदी के तट पर स्थित कालिंजर राज्य के एक मुख्य जनपद देवलपुर गाँव के कुर्मी युवक धीरज और अहीर युवती जमुना के प्रेम का चित्रण है।

---

१. चाँद, वर्ष ६, खंड १, फरवरी १९२८, विज्ञापन रोमांचकारी पुस्तक (मुगल दरबार रहस्य उपनाम अमृत और विष)।

२. आ० भा० पु० की पुस्तक सूची।

३. प्रा० स्था०—आ० भा० पु० काशी। मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—वीर बादल, एक पौराणिक शिक्षाप्रद उपाख्यान, लेखक—श्रीयुत जगदीश झा 'विमल' साहित्य सदन, प्रकाशक—शिवराम दास गुप्त, उपन्यास बहार आफिस, काशी, बनारस, प्रथम बार १९२९, पृ० सं० ५६।

४. आ० भा० पु० की पुस्तक सूची।

५. प्रा० स्था०—आ० भा० पु० काशी। मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—केन (ऐतिहासिक उपन्यास), लेखक—श्रीकृष्णानन्द गुप्त, प्रकाशक—गंगा पुस्तकमाला कार्यालय, प्रकाशक और पुस्तक-विक्रेता, लखनऊ, प्रथमावृत्ति सं० १९८७ वि०, सन् १९३० ई०, पृ० सं० १५९।

६. प्रा० स्था०—रा० भा० प० पु०, पटना।

इस उपन्यास का तीसरा संस्करण १९४७ ई० में गंगा पुस्तकमाला कार्यालय से ही प्रकाशित हुआ।[1] प्रस्तुत पंक्तियों का लेखक इसके प्रथम दो संस्करणों को प्राप्त करने में असफल रहा है।

'खवास का ब्याह' में पृथ्वीराज चौहान का अपने चुने हुए शामन्त वीरों के साथ राजकवि चन्द वरदाई के खवास के रूप में कन्नौज जाने, संयोगिता का हरण करने, जयचन्द की विशाल वाहिनी के साथ युद्ध करने और अन्ततः दिल्ली आकर संयोगिता से पृथ्वीराज के विवाह का वर्णन है। इसमें राजपूतों की वीरता, दानशीलता, युद्धप्रियता, हँसते-हँसते प्राणों की आहुति दे डालने, पृथ्वीराज की दिलेरी और बहादुरी आदि का चित्रण किया गया है।

उपन्यास का अधिकांश कथानक युद्धमय होने के कारण भाषा ओज और प्रवाहपूर्ण है। वर्णन और घटनाएँ हू-ब-हू चन्दकृत 'पृथ्वीराज रासो' से मिलती-जुलती हैं, क्योंकि उपन्यास उसी पर आधृत है।

राजपूत रमणी

सन् १९३२ ई० में अम्बलिका देवी रचित 'राजपूत रमणी' नामक उपन्यास ईश्वरी प्रसाद उपाध्याय द्वारा बनारस से प्रकाशित हुआ।[2] प्रस्तुत पंक्तियों का लेखक इस उपन्यास को प्राप्त करने में असमर्थ रहा है।

दिल्ली की शाहजादी

सन् १९३३ ई० में रामप्यारे त्रिपाठी रचित 'दिल्ली की शाहजादी' नामक उपन्यास का द्वितीय संस्करण निराकार पुस्तकालय, बनारस से प्रकाशित हुआ।[3] प्रस्तुत पंक्तियों का लेखक इस उपन्यास के प्रथम संस्करण को प्राप्त करने में असमर्थ रहा है। इसके द्वितीय संस्करण के 'दो शब्द' की निम्नलिखित पंक्तियों से इस उपन्यास की लोकप्रियता सिद्ध होती है—"इस पुस्तक का प्रथम संस्करण देखते-देखते समाप्त हो गया और पुस्तक का मिलना कठिन हो गया। पुस्तक प्रेमियों और मित्रों के आग्रह से उक्त पुस्तक नवीन संशोधन के साथ 'निराकार पुस्तकालय' से पुनः प्रकाशित हुई।" यह उपन्यास औरंगजेब और शिवाजी के संघर्ष तथा शिवाजी और रोशनआरा के तथाकथित प्रेम की घटना पर आधारित है।

---

१. प्रा० स्था०—रा० भा० प० पु०, पटना। मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—खवास का ब्याह, (महाकवि चन्द वरदाई कृत, 'पृथ्वी राज रासो' के आधार पर लिखित उपन्यास), ले० आचार्य चतुरसेन, तृतीयावृत्ति सं० २००४, प्रका०—दुलारे लाल, अध्यक्ष, गं० पु० मा० कार्यालय, लखनऊ।

२. आ० भा० पु० की पुस्तक सूची।

३. प्रा० स्था०—आ० भा० पु० काशी। मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—दिल्ली की शाहजादी, लेखक राम प्यारे त्रिपाठी, 'पोल प्रकाशक', संशोधित और परिवर्धित, प्रकाशक—निराकार पुस्तकालय, बनारस सिटी, द्वितीय संस्करण १०००, १९३३, पृ० सं० ६१।

वीर बादल १२७, अमर सिंह राठौर १२७, केन १२७, बैरागढ़िया राजकुमार १२८, माया-चक्र १२८, खवास का व्याह १२८, राजपूत रमणी १२९, दिल्ली की शाहजादी १२९, प्यासी तलवार १३०, प्रभावती १३०, विस्मृत सम्राट १३०, लखनऊ रहस्य १३१, शरणवत्सल हम्मीर १३१, सम्राट चन्द्रगुप्त १३१

अपराधप्रधान और ज़ासूसी कथाएँ

गोपालराम गहमरी, चाँदी का चक्कर : खूनी की चालाकी : मुहम्मद सरवर की जासूसी १३२, जासूस के जबानी : जासूस की जवाँमर्दी १३२, गाड़ी में लाश १३३, जासूस जगन्नाथ १३३, धुरन्धर जासूस १३३, सुन्दर वेणी १३३, चोर की चालाकी : अपराधी का चालाकी १३४, जासूस की विजय १३४, हम हवालात में और हवालात से रिहाई १३५, खूनी गिरफ्तार १३५, मेम की लाश: घाट पर मुर्दा : उड़नखटोला १३५, डबल जासूस १३६ देवी नहीं दानवी उर्फ सोना बीबी १३६, पिशाच लीला : होली का हरभोंग उर्फ भयानक भंडाफोड़ : चक्करदार खून १३६, गुप्त पुलीस १३७, तीन तहकीकात १३७, मन्नू से राय मुन्ना लाल बहादुर १३७, रहस्य विप्लव १३८, चक्रभेद १३८, गाड़ी में मुर्दा १३८, डकैत कालू राम १३८, चतुर चौकड़ी १३८, कैदी की कोठी १३८, भयंकर भेद १३८, कामरूप का जादू १३८, हंसराज की डायरी १३८, झंडा डाकू १३८

दुर्गाप्रसाद खत्री, माया १३९, लाल पंजा १३९, मृत्युकिरण अथवा रक्तमंडल १३९, काला चोर १४०, सुफेद शैतान १४०

देवबली सिंह, शैतानी माया : शैतानी पंजा : शैतानी फन्दा १४१, डाकगाड़ी १४१, कृष्णवसना सुन्दरी १४२, भयानक बदला १४२, चालाक चोर १४२, डाक्टर साहब १४२, खूनी मामला १४२, मेरी जासूसी १४२, शैतानी चक्कर १४२, भूतों का मकान १४३, नीली छतरी १४३, कैदी की करामात १४३, मायापुरी १४३, कलकत्ता रहस्य १४३, जासूस के घर खून १४३, नराधम १४३, जासूसी कुत्ता १४४, विचित्र डाकू १४४, शोणित चक्र १४४, डाकू की लड़की १४४, चालाक चोर १४४, खूनी नकाबपोश १४४, दिल्ली का चोर १४५, नई दुनिया १४५, खूनी आँख १४५, हवाई डाकू १४५, नकली करोड़पति १४५, टार्ज के साथी १४५, रहमदिल डाकू १४५, आनन्दभवन १४५, नकली करोड़पति १४५, नगद नारायण उर्फ जटिल जासूसी १४५, भीषण वार्ता अर्थात खूनी दास्तान १४५, एक रात में चालीस खून १४६

ऐयारी-तिलस्म प्रधान कथापुस्तकें

महेन्द्रकुमार या मदन रंजनी १४७, कुमारी रत्नगर्भा १४७. कृष्णकान्ता सन्तति १४७, मस्तनाथ १४९, ललित मोहिनी १४९, प्रेमकान्ता १५०, प्रेमकान्ता सन्तति १५०, भुवन मोहिनी १५०, शनिश्चर प्रसाद उर्फ शनिश्चर प्रसाद की जीवनी १५१, अलकापुरी १५१, पद्मकुमारी : शशिप्रभा : आनन्दसुन्दरी अथवा कुहकसुन्दरी १५२, प्राण-वल्लभा १५२

लखनऊ रहस्य

आर्य भाषा पुस्तकालय, काशी में श्री कृष्ण हसरत द्वारा लिखित और रत्नाकर पुस्तकालय, बनारस सिटी से प्रकाशित 'लखनऊ रहस्य' नामक उपन्यास, जिसके मुखपृष्ठ पर उसे 'सचित्र रहस्यमय ऐतिहासिक उपन्यास' कहा गया है, उपलब्ध है।[१] पुस्तक के मुखपृष्ठ पर प्रकाशन काल नहीं दिया हुआ है।

शरणवत्सल हम्मीर

इसी प्रकार राष्ट्र भाषा परिषद् पुस्तकालय, पटना में चौधरी शिवनारायण लाल वर्मा द्वारा लिखित 'शरणवत्सल हम्मीर' नामक ऐतिहासिक उपन्यास उपलब्ध है।[२] पुस्तक के मुखपृष्ठ पर न तो प्रकाशक का नाम दिया हुआ है, न प्रकाशन-काल। मेरा अनुमान है कि उपर्युक्त दोनों उपन्यास १९३६ ई० के पूर्व प्रकाशित हो चुके होंगे।

सम्राट् चन्द्रगुप्त

महावीर प्रसाद गहमरी कृत 'सम्राट् चन्द्रगुप्त' नामक उपन्यास भी इसी युग में उपन्यास बहार आफिस, बनारस से प्रकाशित हुआ था।[३] प्रस्तुत पंक्तियों का लेखक इस उपन्यास को प्राप्त करने में असमर्थ रहा है।

विभाग, पटना विश्वविद्यालय)।

१. प्रा० स्था० आ० भा० पु० काशी। मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—लखनऊ रहस्य, सचित्र रहस्यमय ऐतिहासिक उपन्यास, श्री कृष्ण हसरत द्वारा लिखित, प्रकाशक-रत्नाकर पुस्तकालय, सप्तसागर, बनारस सिटी, प्रथम संस्करण १०००।

२. आ० भा० पु० काशी।

३. आ० भा० पु० की पुस्तक सूची।



गाड़ी में लाश

सितम्बर १९२० से लेकर नवम्बर १९२० तक के अंकों में 'गाड़ी में लाश' नामक उपन्यास प्रकाशित हुआ।[1] इसके कुछ पात्र अँगरेज तथा कुछ भारतीय हैं। सम्भव है, गहमरी जी ने इसे किसी अँगरेजी उपन्यास के आधार पर लिखा हो।

जासूस जगन्नाथ

आर्यभाषा पुस्तकालय में 'जासूस जगन्नाथ' (पूर्वार्द्ध) और 'जासूस जगन्नाथ, दूसरा भाग' नामक उपन्यास उपलब्ध हैं।[2] यद्यपि ये दोनों उपन्यास एक ही जिल्द में बँधे हैं, पर पढ़ने से ज्ञात होता है कि दोनों एक-दूसरे से भिन्न, स्वतन्त्र, उपन्यास हैं। दोनों में यदि कोई समानता है तो केवल इतनी ही कि दोनों में जासूस जगन्नाथ की कारगुजारी दिखायी गयी है। पुस्तक को देखने से यह भी जान पड़ता है कि यह 'जासूस' के ही कतिपय अंकों में निकली होगी पर उन अंकों का पता नहीं चलता। 'जासूस जगन्नाथ' का पूर्वार्द्ध १४६ पृष्ठों में और दूसरा भाग १६१ पृष्ठों में छपा था। इससे अनुमान किया जा सकता है कि दोनों उपन्यास 'जासूस' के लगभग ६ अंकों में छपे होंगे। 'जासूस जगन्नाथ पूर्वार्ध' के आवरण पृष्ठ पर दिसम्बर १९२० मुद्रित है, पर इससे ठीक पता नहीं चलता कि 'जासूस' के किन अंकों में ये उपन्यास प्रकाशित हुए थे।

दिसम्बर १९२० से जून १९२३ तक के जासूस के अंक प्रस्तुत पंक्तियों के लेखक को उपलब्ध नहीं हो सके हैं।

धुरन्धर जासूस

जुलाई १९२३ के 'जासूस' में 'धुरन्धर जासूस' नामक उपन्यास प्रकाशित हुआ।[3]

सुन्दर वेणी

सन् १९२५ ई० के लगभग गहमरी जी का 'सुन्दर वेणी' नामक उपन्यास 'जासूस' के कतिपय अंकों में प्रकाशित हुआ।[4] आर्यभाषा पुस्तकालय में इस उपन्यास का एक

---

१. आर्यभाषा पुस्तकालय में उपलब्ध 'गाड़ी में लाश' के साथ 'जासूस' सितंबर-नवंबर १९२० के तीनों अंक बँधे हुए हैं। पृ० सं० १५७।

२. जासूस जगन्नाथ पूर्व्वार्द्ध (सरकारी जासूस), दिसम्बर १९२०, बाबू गोपाल राम गहमर निवासी सम्पादित, काशी, जार्ज प्रिंटिंग वर्क्स, काशी में मुद्रित, प्रथमावृत्ति, पृ० सं० १४६, दूसरा भाग, पृ० १६१, प्राप्ति स्थान—आर्य भाषा पुस्तकालय।

३. धुरन्धर जासूस, 'जासूस', वर्ष २४, अंक २७६, जुलाई १९२३, पृ० सं० ४८, प्राप्ति स्थान—आ० भा० पु० काशी।

४. सुन्दर वेणी, एक संयोगस्त उपन्यास (जासूस मासिक से उद्धृत) बाबू गोपाल राम गहमर निवासी सम्पादित, मैनेजर पं० आत्मा राम शर्मा द्वारा जार्ज प्रिंटिंग वर्क्स, काल भैरव, काशी में मुद्रित, पृ० सं० १४२, प्राप्ति स्थान— आ० भा० पु० काशी।

हम हवालात में और हवालात से रिहाई

मई सन् १९२८ ई० में गहमरी जी की 'हम हवालात में' और 'हवालात से रिहाई' नामक पुस्तक प्रकाशित हुई।[१] यह एक उपन्यास न होकर दो घटनाओं का संग्रह है। इनमें से 'हम हवालात में' की घटना नवम्बर १९०५ ई० के जासूस में छपी थी।[२] 'हवालात से रिहाई' की घटना भी पहले छप चुकी थी अथवा इस अंक में नयी छपी, इसका पता नहीं चलता।[३]

खूनी गिरफ्तार

जासूस, वर्ष २९, अंक ३४३, नवम्बर १९२८ में 'खूनी गिरफ्तार—१' (पहला भाग) प्रकाशित हुआ। पर इसके कुल कितने खंड, और जासूस के किन अंकों में प्रकाशित हुए, इसका पता नहीं चलता। आर्य भाषा पुस्तकालय की पुस्तकसूची में इस पुस्तक का प्रकाशन-काल १९२९ ई० दिया हुआ है। इससे अनुमान किया जा सकता है कि इस उपन्यास के अन्य खंड १९२९ ई० के 'जासूस' के अंकों में प्रकाशित हुए होंगे। गहमरी जी का 'खूनी गिरफ्तार' नाम का एक उपन्यास जनवरी १९०६ के अन्त में भी प्रकाशित हुआ था, पर उस उपन्यास की कुल पृष्ठ संख्या ३० थी, जबकि प्रस्तुत उपन्यास के एक भाग की ही पृष्ठ संख्या ५६ है।

नवम्बर १९२८ ई० के बाद का कोई भी 'जासूस' का अंक प्रस्तुत पंक्तियों के लेखक को कहीं उपलब्ध नहीं हो सका है :

मेम की लाश : घाट पर मुर्दा : उड़न खटोला

सन् १९२९ ई० में गहमरी जी का 'मेम की लाश' नामक उपन्यास[४] तथा

जबलपुर निवासी पं० सत्य नारायण शुक्ल लिखित 'नटखट जासूस अथवा पंजाबी शेर' नामक उपन्यास प्रकाशित हुआ। जासूस के तीनों अंक और 'नटखट जासूस' का पुस्तक संस्करण आर्य भाषा पुस्तकालय में उपलब्ध है। पुस्तक संस्करण के मुखपृष्ठ पर प्रकाशित सूचना से ही यह ज्ञात होता है कि इसके रचयिता गहमरी जी न होकर पं० सत्यनारायण शुक्ल हैं।

१. हम हवालात में और हवालात से रिहाई, दो ताजे और चुहचुहाते भेद-भरे मामले, बाबू गोपाल राम गहमर निवासी संपादित जासूस से उद्धृत, मई सन् १९२८, पृ० सं० २९ और १३, पहली बार १००० प्रति, प्राप्तिस्थान—चैतन्य पुस्तकालय, गायघाट, पटना सिटी।

२. द्रष्टव्य, हिन्दी उपन्यास कोश, खंड १, पृ० १०५।

३. अंक ३३८-३४१, जून सितम्बर १९२८ में 'खूनी की खोज' नामक उपन्यास प्रकाशित हुआ, जो अनुवाद है। अक्टूबर १९२८ का अंक मुझे प्राप्त नहीं हो सका है।

४. मेम की लाश (जासूसी उपन्यास), लेखक—हिन्दी साहित्य के सुप्रसिद्ध उपन्यासकार और जासूस सम्पादक—श्री गोपाल राम, गहमर निवासी, प्र० एस० एस० मेहता एंड ब्रदर्स, अध्यक्ष, प्राचीन कविमाला कार्यालय, पुस्तक प्रकाशक, विक्रेता और स्टेशनर्स, काशी, सं० १९८६ वि०, पृ० सं० १२० प्राप्ति स्थान—आ० भा० पु० काशी।

होली का हरभोंग उर्फ भयानक भण्डाफोड़[1] नामक उपन्यास प्रकाशित हुए। बाद वाला उपन्यास 'चक्करदार खून' का नामान्तरण मात्र है, यद्यपि गहमरी जी ने स्वयं यह सूचना देने का कष्ट नहीं किया है। 'चक्करदार खून' अगस्त १६१५ से लेकर फरवरी १६१६ तक के 'जासूस' के अंकों में प्रकाशित हुआ था।

गुप्त पुलीस

गहमरी जी ने 'गुप्त पुलीस' नाम का भी एक उपन्यास लिखा था। आर्यभाषा पुस्तकालय (ना० प्र० स०, काशी) में इस उपन्यास की एक प्रति है, किन्तु आरम्भिक पृष्ठों के फटे रहने के कारण प्रकाशक, संस्करण अथवा प्रकाशन काल आदि से सम्बद्ध सूचनाएँ अज्ञात रह जाती हैं।[2]

तीन तहकीकात

गहमरी जी का 'तीन तहकीकात' नामक उपन्यास (या उपन्यासों का संग्रह) भी आर्यभाषा पुस्तकालय में उपलब्ध है, किन्तु पुस्तक में प्रकाशन-काल नहीं दिया हुआ है।[3] इस पुस्तक में तीन उपन्यास—'जासूस की जवाँमर्दी', 'मुर्दे की जाँच' और 'हमारी डायरी'—संगृहीत हैं। आवरणपृष्ठ की सूचना से ज्ञात होता है कि ये तीनों उपन्यास 'जासूस' के विभिन्न अंकों में निकल चुके थे, पर उन अंकों की सूचना नहीं दी हुई है, इन उपन्यासों में 'जासूस की जवाँमर्दी' सितम्बर-अक्तूबर १६१६ ई० में 'जासूस' के अंकों में प्रकाशित हुआ था। शेष दो उपन्यासों का प्रकाशन-काल ज्ञात नहीं होता।

मन्नू से राय मुन्ना लाल बहादुर

गहमरी जी द्वारा लिखित 'मन्नू से राय मुन्ना लाल बहादुर' नामक उपन्यास आर्यभाषा पुस्तकालय, काशी तथा चैतन्य पुस्तकालय, पटना सिटी में उपलब्ध है। किन्तु दोनों में से किसी में भी उसके प्रकाशन काल की सूचना नहीं दी हुई है।[4] आवरण पृष्ठ पर दी गयी सूचना से ज्ञात होता है यह उपन्यास 'जासूस' में प्रकाशित हुआ था। पृष्ठ संख्या देखकर यह अनुमान होता है कि यह जासूस के तीन अंकों में प्रकाशित हुआ होगा।

---

१. होली का हरभोंग उर्फ भयानक भण्डाफोड़, श्री गोपाल राम गहमरी लिखित, जासूस आफिस गहमर या बनारस, सन् १६३८।

२. गुप्त पुलीस, पृ० सं० २२२, प्राप्ति स्थान—आ० भा० पु०, नागरी प्रचारिणी सभा, काशी।

३. तीन तहकीकात (फड़कते हुए तीन उपन्यास), जासूस की जवांमर्दी, मुर्दे की जाँच, और हमारी डायरी, बाबू गोपाल राम गहमर निवासी सम्पादित (जासूस मासिक से उद्धृत) श्री काशी चन्द्रप्रभा प्रेस में मुद्रित, प्रथम बार, जासूस की जवांमर्दी (पृ० सं० ८७) मुर्दे की जाँच (पृ० सं० ८८), हमारी डायरी (पृ० सं० ४६)।

४. मन्नू से राय मुन्ना लाल बहादुर (जासूस का बुद्धि कौशल), जासूस मासिक पुस्तक से उद्धृत, बाबू गोपाल राम गहमर निवासी सम्पादित, काशी चन्द्रप्रभा प्रेस में मुद्रित, पृ० सं० १४८, प्राप्ति स्थान चै० पु०, पटना तथा आ० भा० पु० काशी।

दुर्गा प्रसाद खत्री

प्राक्प्रेमचन्द युग के अपराधप्रधान तथा जासूसी कथा-लेखक के रूप में दुर्गा प्रसाद खत्री की चर्चा हो चुकी है।[1] प्रेमचन्द युग के अपराध-प्रधान कथा-लेखकों में खत्री जी सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण हैं। यहाँ इनके उपन्यासों का संक्षिप्त विवरण प्रस्तुत किया जा रहा है—

माया

डॉ० माताप्रसाद गुप्त के अनुसार सन् १६२० ई० में खत्री जी का 'माया' नामक उपन्यास, स्वयं लेखक द्वारा, बनारस से प्रकाशित हुआ।[2]

लाल पंजा

सन् १९२५ ई० में विवेच्य उपन्यासकार का सर्वाधिक प्रसिद्ध अपराध-प्रधान उपन्यास 'लाल पंजा' लहरी बुक डिपो, काशी से प्रकाशित हुआ।[3] डॉ० माताप्रसाद गुप्त ने 'हिन्दी पुस्तक साहित्य' में इसका उल्लेख नहीं किया है। इस उपन्यास का सन् १९५३ ई० में प्रकाशित एक अन्य संस्करण आर्यभाषा पुस्तकालय, काशी में उपलब्ध है, पर इसके मुखपृष्ठ पर संस्करण संख्या नहीं दी हुई है।[4]

दुर्गाप्रसाद खत्री के अनुसार 'लाल पंजा' का पहला संस्करण १९२५ ई० में, तीसरा संस्करण १९२७ ई० में, सातवाँ संस्करण १९४७ ई० में, आठवाँ संस्करण १९५० ई० में, नवां संस्करण १९५२ ई० में और ११वाँ संस्करण १९६२ ई० में प्रकाशित हुआ।

मृत्युकिरण अथवा रक्तमंडल

सन् १९२६ ई० में दुर्गा प्रसाद खत्री लिखित 'रक्तमंडल' नामक उपन्यास का प्रथम भाग लहरी बुक डिपो, काशी से प्रकाशित हुआ।[5] इस उपन्यास के सातवें संस्करण (सन् १९५४ ई०) के मुखपृष्ठ पर प्रथम संस्करण का प्रकाशन-काल १९२८ ई० दिया

---

१. द्रष्टव्य 'हिन्दी उपन्यास कोश', खंड १

२. डॉ० माताप्रसाद गुप्त, हिन्दी पुस्तक साहित्य, पृ० ४७८।

३. प्रा० स्था०—आ० भा० पु०, काशी। पुस्तक का आवरणपृष्ठ प्रायः नष्ट हो गया है, इस कारण प्रकाशन-काल के अतिरिक्त अन्य सूचनाएँ नहीं मिल पाती। केवल रचना-काल "प्रथम बार १९२५" बच रहा है। शेष सूचनाएँ आ० भा० पु० की पुस्तक-सूची से प्राप्त की गयी हैं।

४. मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—लाल-पंजा, उपन्यास, ले०—श्री दुर्गा प्रसाद खत्री, लहरी बुक डिपो पुस्तक प्रकाशक तथा विक्रेता, काशी, १९५३।

५. प्रा० स्था०—प० वि० पु०, पटना। मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—"उपन्यास कुसुम माला"-संख्या ७, रक्त मंडल, उपन्यास, बा० दुर्गाप्रसाद खत्री लिखित, दुर्गाप्रसाद खत्री, प्रोप्रा० "लहरी बुक डिपो" काशी द्वारा प्रकाशित, प्रथम संस्करण, सन् १९२६ ई०।

संस्करण १९६१ ई० में प्रकाशित हुआ। इन संस्करणों से इस उपन्यास की लोकप्रियता प्रमाणित होती है।

देवबली सिंह

शैतानी माया : शैतानी पंजा : शैतानी फन्दा

सन् १९२४ ई० में देवबली सिंह द्वारा लिखित 'शैतानी माया' नामक अपराध-प्रधान कथा पुस्तक रिखबदास वाहिती द्वारा कलकत्ता से प्रकाशित हुई।[1] इसी वर्ष विवेच्य उपन्यासकार का 'शैतानी पंजा' नामक उपन्यास रिखबदास वाहिती एंड कं०, कलकत्ता से प्रकाशित हुआ।[2] सन् १९२४ ई० में ही विवेच्य उपन्यासकार का 'शैतानी फन्दा' नामक जासूसी उपन्यास उपर्युक्त प्रकाशन संस्था से प्रकाशित हुआ।[3]

डाकगाड़ी

सन् १९२७ ई० में देवबली सिंह का 'डाकगाड़ी' नामक जासूसी उपन्यास उपन्यास वहार आफिस, काशी से प्रकाशित हुआ।[4]

फुटकल अपराध प्रधान तथा जासूसी कथाएँ

इस काल के मौलिक अपराध-प्रधान कथाओं का विवरण प्रस्तुत करना एक नितान्त दुष्कर किंवा असम्भवप्राय कार्य है। इसका एक कारण यह है कि अपराध-प्रधान कथाओं के प्रकाशक इन पुस्तकों में यह बताना आवश्यक नहीं समझते कि ये मौलिक हैं या अनुवाद, और यदि अनुवाद हैं तो उनके मूल लेखक कौन हैं। बहुत सी अनूदित पुस्तकें भी पाठकों से पैसे एंठने के खयाल से मौलिक रूप में ही प्रस्तुत की जाती हैं। दूसरा कारण यह है कि अपराध-प्रधान और जासूसी कथाओं का संग्रह लोग उतनी सावधानी से नहीं करते जितनी सावधानी से साहित्यिक उपन्यासों का। ये पुस्तकें समाचारपत्रों की तरह एक बार पढ़ लिये जाने के बाद रद्दी की टोकरी की वस्तु हो जाती हैं। पुस्तकालयों में भी इनका संग्रह सावधानी से नहीं किया जाता। अतः प्रथम तो हिन्दी की मौलिक अपराध प्रधान कथाओं की ऐसी सूची बना पाना सम्भव नहीं, जिसमें सभी ऐसी पुस्तकें सम्मिलित हों, दूसरे, यदि ऐसी सूची तैयार की भी जाए—जैसा प्रयत्न आगे के पृष्ठों में किया गया

१. प्रा० स्था०—आ० भा० पु० काशी। मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—शैतानी माया, लेखक—देवबली सिंह, प्रकाशक—रिखबदास वाहिती, प्रोप्राइटर—"दुर्गाप्रेस" और आर० डी० वाहिती एण्ड को० नं० ८, चोर बगान, कलकत्ता, प्रथम बार सन १९२४, पृ० सं० १९६।

२. प्रस्तुत पंक्तियों का लेखक इस उपन्यास को प्राप्त करने में असमर्थ रहा है। सूचनाएँ आ० भा० पुस्तक काशी की पुस्तक सूची से ली गयी हैं।

३. आ० भा० पु० की पुस्तक सूची।

४. आ० भा० पु० की पुस्तक सूची।

भूतों का मकान,[1] रामकृष्ण वर्मा, प्र० मोहनलाल वर्मा, दूसरा संस्करण १९२२ ई० ।

नीली छतरी,[2] जाफर उमर, बी० ए०, १९२२ ई० ।

कैदी की करामात,[3] पं० नरोत्तम व्यास, प्र० आर० एल० बर्मन एंड कम्पनी, कलकत्ता, दूसरा संस्करण १९८० वि० ।

मायापुरी,[4] चंद्रशेखर पाठक, प्र०-आर० डी० बाहिती एंड कंपनी, कलकत्ता ६२ ।

कलकत्ता रहस्य

'मतवाला' २१ नवम्बर १९२५ ई० के एक विज्ञापन से ज्ञात होता है कि इसके पूर्व नन्दे एंड कंपनी ६५/५ कालेज स्ट्रीट, कलकत्ता मे 'सचित्र पाक्षिक रहस्यमाला' का प्रकाशन आरम्भ हुआ था जिसकी पहली पुस्तक 'कलकत्ता रहस्य' थी । उक्त विज्ञापन के अनुसार इस उपन्यास में 'यहाँ होने वाली एक से एक वढ़ कर आश्चर्यपूर्ण, रोमांचकारी, करुण और वीभत्स आदि रसों से पूर्ण तथा चित्ताकर्षक सच्ची घटनाओं का बड़ा ही सुन्दर खाका खींचा गया है । कलकत्ता के अच्छे और बुरे, बड़े और छोटे, ऊँचे और नीचे, अमीर और गरीब, सभी प्रकार के आदमियों के चित्र चित्रित किये गये हैं । गूढ़ से गूढ़ रहस्यों का इसमें बड़ी खूबी के साथ भंडाफोड़ किया गया ।'[5]

जासूस के घर खून

सन् १९२६ ई० में चन्द्रशेखर पाठक द्वारा लिखित 'जासूस के घर खून' नामक जासूसी उपन्यास का दूसरा संस्करण आर० एल० बर्मन एंड कंपनी, कलकत्ता मे प्रकाशित हुआ ।[6]

नराधम[7]

मुरारी लाल कपूर, प्र० आर० एल० बर्मन एंड को०, कलकत्ता, चौथा संस्करण १९८३ वि० ।

---

१. प्रा० स्था०—आ० भा० पु० काशी ।

२. आ० भा० पु० की पुस्तक सूची ।

३. आ० भा० पु० की पुस्तक सूची ।

४. प्रभा, वर्ष ४, खंड २, सं० ३, अगस्त १९२३-समीक्षा (मायापुरी) ।

५. मतवाला, २१ नवम्बर १९२५, विज्ञापन (कलकत्ता रहस्य)

६. आ० भा० पु०, काशी, की पुस्तक सूची ।

७. उपरिवत् ।

दिल्ली का चोर,[1] नायक, प्र०-गुल्लू प्रसाद केदार नाथ, कचौड़ी गली, काशी प्रथम संस्करण १९३१ ।

नई दुनिया,[2] गिरीशचंद्र जोशी, प्र० हिन्दी पुस्तक एजेंसी, काशी, प्रथम संस्करण, १९३२ ई० ।

खूनी आँख,[3] श्री कृष्ण हसरत, प्र०-उपन्यास बहार आफिस, काशी, प्रथम संस्करण, १९३२ ।

हवाई डाकू,[4] ले० मथुरा प्रसाद खत्री, प्र० दुर्गा प्रसाद, लहरी बुक डीपो, बनारस सिटी, तृतीय संस्करण १००० प्रति, १९३४ ई० ।

नकली करोड़पति,[5] परमानंद खत्री, प्र०-लहरी बुक डिपो, बनारस, प्रथम संस्करण १९३५ ।

टार्जन के साथी,[6] परमानंद खत्री, प्र० लहरी बुक डिपो, बनारस, प्रथम संस्करण १९३५, द्वितीय संस्करण १९५१ ।

रहमदिल डाकू,[7] विश्व,प्र० चौधरी एंड संस, काशी, प्रथम संस्करण, १९३५,

आनंद भवन,[8] निहाल चन्द वर्मा, प्र०-निहाल चन्द एंड कम्पनी, कलकत्ता, प्रथम संस्करण १९९२ वि० ।

नकली करोड़पति,[9] परमानन्द खत्री, प्र० लहरी बुक डिपो, बनारस, प्रथम संस्करण १९३५ ई०

नगद नारायण उर्फ जटिल जासूसी,[10] बलभद्र सिंह, प्र०-जासूस आफिस बनारस, १९३५ ।

भीषण वार्ता अर्थात खूनी दास्तान,[11] लेखक अज्ञात, प्र०-हिन्दी पुस्तकालय, मथुरा, प्रथम वार १९३६ ।

---

१. आ० भा० पु० काशी की पुस्तक सूची ।

२. प्रा० स्था०—आ० भा० पु० काशी ।

३. आ० भा० पु० काशी की पुस्तक-सूची ।

४. प्रा० स्था०—प० का० पु०, पटना ।

५. उपरिवत् ।

६. आ० भा० पु०, काशी, पुस्तक सूची ।

७. उपरिवत् ।

८. आ० भा० पु० काशी की पुस्तक सूची ।

९. उपरिवत् ।

१०. प्रा० स्था०—सिनहा पुस्तकालय, पटना; मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—नगद नारायण उर्फ जटिल जासूसी, अद्भुत अँगूठी, प्रवाल द्वीप, चीनी सुराही आदि के ग्रन्थकार सिहोर निवासी ठाकुर बलभद्र सिंह, जो० एफ० टी० एस०, प्रणीत, श्री गोपाल राम गहमर निवासी द्वारा परिवर्धित संशोधित और सम्पादित, जासूस मासिक पत्र से उद्धृत, १५-१०-३५ ई०, पृ० सं० ३३७ ।

ऐयारी-तिलस्म प्रधान कथा पुस्तकें

महेन्द्र कुमार या मदनरंजनी

सन् १९१८ ई० में बाबू शंकर दयाल श्रीवास्तव रचित 'महेन्द्र कुमार या मदन रंजनी' नामक ऐयारी-तिलस्मी उपन्यास का तीसरा संस्करण वर्म्मन प्रेस, कलकत्ता से मुद्रित-प्रकाशित हुआ[1]। इस उपन्यास का चतुर्थ संस्करण १९२२ ई० में और पंचम संस्करण १९२९ ई० में निकला।

कुमारी रत्नगर्भा

सन् १९२० ई० में पं० श्यामलाल मेढ़ रचित 'कुमारी रत्नगर्भा' नामक कथा लहरी प्रेस, बनारस से प्रकाशित हुई[2]। यह मुख्यतः प्रेमाख्यान है, पर इसमें तिलस्मी ढंग की गुप्त सुरंगों, कोठरियों, दरवाजों आदि का वर्णन है।

कृष्णकान्ता सन्तति

सन् १९२१-१९२८ ई० की अवधि में श्री गंगा प्रसाद गुप्त कृत 'कृष्णकान्ता सन्तति' नामक उपन्यास १८ भागों में स्वयं लेखक द्वारा गंगा प्रेस, अलीगढ़ से प्रकाशित किया

---

१. प्राप्ति स्थान—आ० भा० पु० काशी। महेन्द्र कुमार या मदन रंजनी, उपन्यास, दूसरा भाग, रामपुर निवासी बाबू शंकर दयाल श्रीवास्तव कृत, राम लाल वर्मा द्वारा ४०।२, अपर चीतपुर रोड, 'वर्म्मन प्रेस', कलकत्ता में मुद्रित तथा प्रकाशित, तीसरी बार २०००, सं० १९७३ वि०।

तीसरे संस्करण का पहला भाग पुस्तकालय में उपलब्ध नहीं है। तीसरे और चौथे भागों के मुख-पृष्ठों की प्रतिलिपि दूसरे भाग के समान। इस संस्करण के पाँचवे और छठे भाग पुस्तकालय में नहीं हैं।

आ० भा० पु० में विवेच्य उपन्यास के केवल छठे भाग का चौथा संस्करण उपलब्ध है, जिसके मुख-पृष्ठ की प्रतिलिपि निम्नलिखित है—'महेन्द्र कुमार या मदन रंजनी, उपन्यास, छठा भाग, रामपुर निवासी बाबू शंकर दयाल श्रीवास्तव कृत, राम लाल वर्म्मा द्वारा ३७१, अपर चीतपुर रोड, 'वर्म्मन प्रेस', कलकत्ता में मुद्रित और प्रकाशित, चतुर्थ वार २०००, सन् १९२२। आ० भा० पु० में विवेच्य उपन्यास के पाँचवें संस्करण के प्रथम और चौथे भाग उपलब्ध हैं। इनके मुखपृष्ठों की प्रतिलिपि निम्नांकित है :—

महेन्द्र कुमार या मदन रंजनी, सचित्र-तिलस्मी उपन्यास, पहला भाग, लेखक—बाबू शंकर दयाल श्रीवास्तव, प्रकाशक—राम लाल वर्मा, प्रोप्राइटर, 'वर्म्मन प्रेस' और 'आर० एल० बर्म्मन एंड को', ३७१, अपर चीतपुर रोड कलकत्ता, चैत्र, सं० १९८१ वि०, पाँचवाँ संस्करण २०००। चौथा भाग—सन् १९२९, शेष उपरिवत्।

२. प्रा० स्था०—आ० भा० पु०, काशी; मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—कुमारी रत्नगर्भा, उपन्यास, काशी निवासी पं० श्याम लाल मेढ़ लिखित, प्रकाशक—बाबू दुर्गा प्रसाद खत्री, पन्ना लाल द्वारा लहरी प्रेस में मुद्रित, बनारस, प्रथम बार २०००, १९२०।

१००० प्रतियाँ मुद्रित हुई थीं, पर दसवें भाग से लेकर चौदहवें भाग तक प्रत्येक की केवल ५०० प्रतियाँ और पन्द्रहवें भाग से लेकर अट्ठाईसवें भाग तक प्रत्येक की केवल २५० प्रतियाँ मुद्रित हुईं। इससे प्रतीत होता है कि धीरे धीरे हिन्दी पाठकों की रुचि तिलस्मी उपन्यासों की तरफ से हटती जा रही थी। प्रेमचन्द युग में लिखित-प्रकाशित ऐयारी-तिलस्मी उपन्यासों की अल्प संख्या को देखकर भी हम इसी निष्कर्ष पर पहुँचते हैं कि इस समय तक आते आते हिन्दी पाठकों की रुचि में उल्लेखनीय गुणात्मक परिवर्तन हो गया था।

मस्तनाथ

कृष्णकान्ता सन्तति, भाग २५ के साथ संलग्न एक विज्ञापन से ज्ञात होता है कि १९२६ ई० के पूर्व बाबू गंगा प्रसाद गुप्त द्वारा लिखित 'मस्तनाथ' नामक उपन्यास डी० पी० कम्पनी, अलीगढ़ सिटी से प्रकाशित हो चुका था। प्रस्तुत पंक्तियों का लेखक इस उपन्यास को प्राप्त करने में असमर्थ रहा है। कृष्णकान्ता सन्तति में उसका निम्नलिखित विज्ञापन प्रकाशित हुआ था।[१]—

मस्तनाथ उपन्यास

"कृष्णकान्ता उपन्यास में, महाराणा विक्रम सिंह के दरबार में जिस माया रूपी मस्तनाथ ऐयार ने अनूठे ढंग से अपने को प्रकट कर चकित कर दिया था। उसके भेद भरे जीवटदार मारके के हालात जानने के लिए किसका दिल बेचैन न हो उठेगा। चक्करदार गहरी चालें और दाव पेंच, भूल भुलैयादार खोहों और तिलिस्मी इमारतें, रहस्यपूर्ण हत्याकांड, दिल लुभा देने वाले दृश्य और फड़का देनेवाली ऐयारियाँ पढ़कर आपका हृदय एक बार ही मुग्ध हो आनन्द की तरंगों में लहरें मारने लगेगा। पता बाबू गंगा प्रसाद गुप्त, डी० पी० कंपनी, अलीगढ़ सिटी।"

ललित मोहिनी

मार्च १९२२ ई० के पूर्व बाबू ललिता प्रसाद द्वारा लिखित 'ललित मोहिनी' नामक तिलस्मी उपन्यास प्रकाशित हो चुका था। प्रस्तुत पंक्तियों का लेखक इस उपन्यास को प्राप्त करने में असमर्थ रहा है। इस उपन्यास का निम्नलिखित 'परिचय' 'सरस्वती' (मार्च १९२२ ई०) में प्रकाशित हुआ था।[2]

ललित मोहिनी

"बाबू ललिता प्रसाद पेंशनर, नं० १६ नारियल गली, लखनऊ ने भेजा है। उपन्यास चार भागों में समाप्त हुआ है। प्रत्येक भाग में लगभग १०० पृष्ठ हैं। ग्रन्थकार

१. कृष्णकान्ता सन्तति, भाग २५ (१९२६ ई०) के साथ संलग्न विज्ञापन।
२. सरस्वती, मार्च १९२२, पुस्तक परिचय—(ललित मोहिनी)

ऐयारी-तिलस्म प्रधान उपन्यास शर्मन एंड कम्पनी, इटावा से प्रकाशित होना शुरू हुआ, जो २९ भागों में प्रकाशित हुआ। आर्यभाषा पुस्तकालय की पुस्तक सूची में इस उपन्यास के २९ भागों में समाप्त होने का उल्लेख है, पर पुस्तकालय में इसके केवल पाँच भाग (६-१०) उपलब्ध हैं जिनके प्रथम संस्करण का प्रकाशन-काल सन् १९२७-१९२९ ई० है।[1]

शनिश्चर प्रसाद उर्फ शनिश्चर प्रसाद की जीवनी

सन् १९३१ ई० में श्री नन्दलाल शर्मा द्वारा रचित 'शनिश्चर प्रसाद उर्फ शनिश्चर प्रसाद की जीवनी' नामक ऐयारी-तिलस्मी उपन्यास प्रकाशित हुआ।[2]

अलकापुरी

आर्यभाषा पुस्तकालय, काशी की पुस्तक-सूची के अनुसार रायगढ़ नरेश राजा चक्रधर सिंह लिखित 'अलकापुरी' नामक तिलिस्मी उपन्यास के प्रथम तीन खंड सन् १९३२ ई० में पं० लक्ष्मण प्रसाद मिश्र द्वारा, साहित्य समिति, रायगढ़ से प्रकाशित हुए। आ० भा० पु० में इस उपन्यास की एक प्रति उपलब्ध है, किन्तु उसके मुखपृष्ठ के फटे रहने के कारण लेखक के नाम के अतिरिक्त और कोई सूचना नहीं प्राप्त होती। अप्रैल १९३५ ई० की 'सरस्वती' में प्रकाशित उक्त उपन्यास की समीक्षा के अनुसार—"अलकापुरी एक तिलस्मी उपन्यास है। इसकी रचना चन्द्रकान्ता के तर्ज पर हुई है। किसी समय इस तरह के उपन्यासों की हिन्दी में धूम थी और इधर इनका आकर्षण घट चला था। परन्तु इस 'अलकापुरी' के पढ़ने से जान पड़ता है, अभी ऐसे उपन्यास पढ़े जाएँगे। क्योंकि 'अलकापुरी' में 'चन्द्रकान्ता' के सभी गुण मौजूद हैं, साथ ही एक यह विशेषता भी है कि उसकी अपेक्षा इसकी भाषा अधिक प्रांजल है। अभी इसके तीन ही भाग निकले हैं और कथानक भी बढ़ता जा रहा है। इससे जान पड़ता है कि यह भी कई भागों में समाप्त होगा"।[3] पता नहीं यह उपन्यास पूरा हुआ या नहीं।

---

१. प्राप्ति स्थान—आ० भा० पु० काशी। मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—भुवन मोहिनी, छठा भाग (मुखपृष्ठ नष्ट हो गया है), पृ० सं० १२२।

भुवन मोहिनी, सातवाँ भाग, लेखक—राधे लाल अग्रवाल, प्रकाशक—पं० प्रभु दयाल शर्मा, मालिक—शर्मन एंड कम्पनी, इटावा, प्रथम बार १०००, सन् १९२७ ई०, संवत् १९८४ वि० पंडित प्रभुदयाल शर्मा के प्रबन्ध से शर्मन प्रेस इटावा में मुद्रित। पृ० सं० १२८।

आठवाँ भाग—सन् १९२८ ई०, संवत् १९८४ वि०, पृ० सं० ११०, शेष सूचनाएँ उपरिवत्।

नवाँ भाग—प्रथम बार ५०००, सन् १९२९ ई०, पृ० सं० ११३ अन्य सूचनाएँ उपरिवत्।

दसवाँ भाग—मुखपृष्ठ नष्ट हो गया है, पृ० सं० ११४।

२. प्राप्ति स्थान—आ० भा० पु० काशी। मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—शनिश्चर प्रसाद उर्फ शनिश्चर प्रसाद की जीवनी, प्रथम भाग, लेखक—श्री नन्दलाल शर्मा काशी निवासी, प्रथम बार १०००, सन् १९३१ ई०, पृ० सं० १३३।

३. सरस्वती, अप्रैल—१९३५, पुस्तक परीक्षा (अलकापुरी)

खंड २

अनूदित उपन्यास

अनूदित उपन्यास

प्रेमचन्द युग में हिन्दीतर भाषाओं से अनूदित प्रमुख सामाजिक उपन्यासों में दामोदर मुखोपाध्याय, प्रभातकुमार मुखोपाध्याय, जलधर सेन, योगेन्द्र चट्टोपाध्याय, शरच्चन्द्र चट्टोपाध्याय, चारुचन्द्र वन्द्योपाध्याय और मेरी कॉरोली के उपन्यास प्रमुख हैं। इनकी सूचना परवर्ती पृष्ठों में दी जा रही है।

दामोदर मुखोपाध्याय

दामोदर मुखोपाध्याय के हिन्दी में अनूदित कुछ उपन्यासों का परिचय 'हिन्दी उपन्यास कोश' के प्रथम खंड में दिया जा चुका है। प्रेमचन्द युग में भी इनके कतिपय उपन्यासों के अनुवाद हुए जिनकी सूचना यहाँ प्रस्तुत है।

नवीना

सन् १९१८ ई० में दामोदर मुखोपाध्याय के 'नवीना' नामक उपन्यास का पं० नरोत्तम व्यास कृत अनुवाद हरिदास एंड को०, कलकत्ता से प्रकाशित हुआ।[1] प्रस्तुत पंक्तियों का लेखक इस अनुवाद को प्राप्त करने में असमर्थ रहा है। उपर्युक्त सूचनाएँ आर्यभाषा पुस्तकालय की पुस्तकसूची तथा 'प्रताप' (५ मई १९१९ ई०) में प्रकाशित 'साहित्य अवलोकन' से प्राप्त की गयी हैं।[2]

सुकुमारी

सन् १९२० ई० के पूर्व 'नवीना' का 'सुकुमारी' शीर्षक एक अन्य अनुवाद यन्त्रस्थ था। प्रस्तुत पंक्तियों का लेखक इस अनुवाद को प्राप्त करने में असमर्थ रहा है। उपर्युक्त सूचना 'निर्धन की कन्या' (१९२० ई०) के अन्तिम पृष्ठ के विज्ञापन से प्राप्त की गयी है।[3]

कार्यक्षेत्र

सन् १९१९ ई० में ही विवेच्य उपन्यासकार के 'कार्यक्षेत्र' शीर्षक उपन्यास का अनुवाद स्वयं अनुवादक द्वारा प्रकाशित किया गया।[4] इस उपन्यास का श्री रामलाल

---

१. सरस्वती, भाग १७, अंक ६, जून १९१६ ई०।

२. 'प्रताप', भाग ६, संख्या २४, ५ मई १९१९ ई०, 'साहित्य अवलोकन' (हरिदास कम्पनी की पुस्तकें, नवीना)

३. निर्धन की कन्या, ले० जगदीश झा विमल, सन् १९२० ई०

४. प्राप्ति स्थान—रा० भा० प० पु०, पटना। मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—कार्य्यक्षेत्र (बँगला कर्मक्षेत्र

भा० पु० की पुस्तकसूची तथा उक्त पुस्तक के 'वक्तव्य' से प्राप्त की गयी हैं। 'वक्तव्य' के नीचे "इन्दौर, दीपावली १९७५ वि०" मुद्रित है, पर आ० भा० पु० की पुस्तकसूची में इसका प्रकाशन-काल १९१९ ई० दिया हुआ है।

दो साहित्यसेवी

विवेच्य उपन्यासकार के किसी उपन्यास का कृष्णगोपाल माथुर कृत 'दो साहित्य-सेवी' शीर्षक अनुवाद १९१९ ई० में हरिदास एंड कम्पनी, कलकत्ता से प्रकाशित हुआ। प्रस्तुत पंक्तियों का लेखक इस अनुवाद को प्राप्त करने में असमर्थ रहा है। उपर्युक्त सूचनाएँ आर्य भाषा पुस्तकालय की पुस्तकसूची से प्राप्त की गयी हैं।

इन्दुमती वा रत्नदीप

सन १९२१ ई० में प्रभात बाबू के 'रत्नद्वीप' नामक उपन्यास का पं० ईश्वरी प्रसाद शर्मा कृत 'इन्दुमती वा रत्नदीप' शीर्षक अनुवाद कलकत्ता से महादेव प्रसाद झुनझुनवाला द्वारा प्रकाशित किया गया। इस उपन्यास की प्रतियाँ आर्य भाषा पुस्तकालय, पटना में उपलब्ध हैं, पर किसी में भी मुखपृष्ठ के न रहने के कारण पुस्तक के सम्बन्ध में कोई सूचना नहीं मिल पाती। उपर्युक्त सूचनाएँ आर्यभाषा पुस्तकालय की पुस्तक सूची से प्राप्त की गयी हैं।

'सरस्वती', नवम्बर १९२१ में प्रकाशित 'रत्नदीप' की समीक्षा से ज्ञात होता है कि यह बँगला उपन्यास के मराठी अनुवाद का हिन्दी अनुवाद है। समीक्षक के शब्दों में, "पं० ईश्वरी प्रसाद शर्मा जी ने अभी हाल में एक मराठी उपन्यास का अनुवाद किया है। उसका नाम है—रत्नदीप। सच पूछो तो यह एक बँगला उपन्यास के मराठी अनुवाद का हिन्दी रूपान्तर है। शर्मा जी ने बँगला से अनुवाद न कर मराठी से अनुवाद का आश्रय क्यों लिया, यह हम नही समझ सके। शर्माजी बँगला ग्रन्थों का अनुवाद करने में तो सिद्ध-हस्त हैं।"[1]

विवेच्य उपन्यास का पं० जनार्दन झा द्वारा प्रस्तुत किया हुआ एक अन्य अनुवाद, 'रत्नद्वीप' शीर्षक से १९२४ ई० में इंडियन प्रेस लिमिटेड, इलाहाबाद से प्रकाशित हुआ।[2]

नवीन संन्यासी

विवेच्य उपन्यासकार के किसी उपन्यास का श्री जनार्दन झा ने 'नवीन संन्यासी' शीर्षक अनुवाद प्रस्तुत किया जो सर्वप्रथम १९२३ ई० में इंडियन प्रेस लिमिटेड, प्रयाग

---

१. सरस्वती, नवम्बर १९२१, रत्नदीप (पुस्तक परिचय)

२. प्रा० स्था०—प०वि० पु०, पटना तथा सिनहा लाइब्रेरी, पटना; मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—रत्नद्वीप, बँगला के लब्धप्रतिष्ठित उपन्यास-लेखक बाबू प्रभातकुमार मुखोपाध्याय की पुस्तक का हिन्दी अनुवाद, अनुवादक, पंडित जनार्दन झा, प्रकाशक—इंडियन प्रेस, लिमिटेड, इलाहाबाद, १९२४।

आयभापा पुस्तकालय में इस अनुवाद की एक प्रति है पर उसके मुखपृष्ठ के न रहने के कारण पुस्तक के सम्बन्ध में कोई सूचना नहीं प्राप्त हो पाती। उपर्युक्त सूचनाएँ आ० भा० पु० की पुस्तक-सूची से प्राप्त की गयी हैं। 'आदर्श रमणी' नामक उपन्यास की भूमिका से ज्ञात होता है कि १९२० ई० के लगभग इस उपन्यास का द्वितीय संस्करण छप रहा था।[1]

आदर्श रमणी

सन् १९२० ई० में विवेच्य उपन्यासकार के किसी उपन्याम का दुलीचंद परवार कृत 'आदर्श रमणी, शीर्पक अनुवाद हिन्दी पुस्तक भंडार, कलकत्ता से प्रकाशित हुआ।[2] 'भूमिका' से ज्ञात होता है कि यह अनुवाद १९११ ई० में ही प्रस्तुत किया जा चुका था पर तुरत प्रकाशित न हो सका।[3]

बड़े घर की बड़ी बात

सन् १९२० ई० में ही जलधर बाबू के किसी बँगला उपन्यास का श्रीकृष्ण हसरत कृत 'बड़े घर की बड़ी बात' शीर्पक अनुवाद उपन्यास बहार ऑफिस, काशी से 'द्वितीय बार' प्रकाशित हुआ।[4] पुस्तक के मुखपृष्ठ पर न तो मूल उपन्यासकार का नाम दिया हुआ है न उपन्यास का। मूल उपन्यासकार के नाम की सूचना 'कुछ वक्तव्य' से प्राप्त होती है।[5] प्रस्तुत पंक्तियों का लेखक इसके प्रथम संस्करण या इसके सम्बन्ध में कोई सूचना प्राप्त करने में असमर्थ रहा है।

आँख के आँसू

सन् १९२५ ई० में जलधर सेन लिखित 'चोखेर जल' नामक बँगला सामाजिक उपन्यास का पं० राम प्रसाद जी पांडेय द्वारा प्रस्तुत किया हुआ 'आँख के आँसू' शीर्षक अनुवाद उपन्यास बहार ऑफिस, बनारस से प्रकाशित हुआ।[6] उपन्यास के 'परिचय' से

---

१. आदर्श रमणी, लेखक—जलधर सेन, अ० दुलीचन्द परवार, प्र० हिन्दी पुस्तक भंडार, कलकत्ता, १९२० ई०, भूमिका।

२. प्राप्ति स्थान—आ० भा० पु० काशी। मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—आदर्श रमणी (गार्हस्थक उपन्यास), मूल लेखक—जलधर सेन, सम्पादक—'भारतवर्ष'। अनुवादक—दुलीचन्द परवार, देवरी (सागर), प्रकाशक—हिन्दी पुस्तक भंडार, ८३, लोअर चीतपुर रोड, कलकत्ता, प्रथमावृत्ति १०००, अप्रैल १९२० ई०, पृ० सं० ८८।

३. उपरिवत्, भूमिका।

४. प्राप्ति स्थान—आ० भा० पु० काशी। मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—बड़े घर की बड़ी बात, बँगला से अनूदित, अनुवादक—श्री कृष्ण हसरत, प्रकाशक—शिवराम दास गुप्त, उपन्यास बहार ऑफिस, काशी, बनारस, द्वितीय बार १०००, अगस्त १९२०, पृ० सं० १५१।

५. उपरिवत्, कुछ वक्तव्य,।

६. प्रा० स्था०—मा० पु०, पटना। मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—आँख के आँसू, एक शिक्षाप्रद सामाजिक

गोरा[1]

रवीन्द्रनाथ ठाकुर के सर्वश्रेठ उपन्यास 'गोरा' का अनुवाद, हिन्दी में सर्वप्रथम १९२२ ई० में इंडियन प्रेस, प्रयाग से 'गौरमोहन' शीर्षक से प्रकाशित हुआ। यह थोड़ा आश्चर्य-जनक प्रतीत हो सकता है कि जहाँ रवीन्द्रनाथ के कलात्मक दृष्टि अपरिपक्व उपन्यासों के हिन्दी में, एकाधिक संस्करण १९२० के पूर्व प्रकाशित हो चुके थे, वहाँ तब तक, 'गोरा' का अनुवाद प्रकाशित करने की तरफ प्रकाशकों का ध्यान नहीं गया था। इसका कारण स्पष्ट है। 'गोरा' लगभग ८०० पृष्ठों का दीर्घकाय उपन्यास है और ईसवी सन् के दूसरे दशक तक हिन्दी पाठक मोटे मोटे सामाजिक उपन्यास पढ़ने के अभ्यस्त नहीं हुए थे। प्रकाशक भी, पाठकों की रुचि को जाने बिना, आर्थिक हानि की आशंका से, दीर्घकाय उपन्यास प्रकाशित नहीं करते थे। पर जब रवीन्द्रनाथ के लघु आकार वाले उपन्यास बहुत लोकप्रिय हुए, तब 'गोरा' का अनुवाद प्रकाशित करने की तरफ भी प्रकाशकों का ध्यान गया, और इसकी खपत के लिए उन्हें चिन्ता भी नहीं करनी पड़ी।

'गौरमोहन' का दूसरा संस्करण १९८६ वि० (१९२९ ई०) मे प्रकाशित हुआ। इसी बीच १९२४ ई० में प्रकाश पुस्तकलय, कानपुर से इस उपन्यास का एक अन्य अनुवाद 'गौरा' शीर्षक से प्रकाशित हुआ। इसके अनुवादकर्त्ता पं० रूपनारायण पांडेय थे। 'सरस्वती' १ नवम्बर १९२४ के 'पुस्तक परिचय' में इसका परिचय प्रकाशित हुआ था। इस अनुवाद के अन्य संस्करणों का पता लेखक को नहीं है। 'गोरा' का एक अन्य अनुवाद देव नारायण द्विवेदी ने किया था, जो सस्ती साहित्य पुस्तक माला कार्यालय, बनारस से प्रकाशित हुआ था। इस अनुवाद के तीन संस्करणों की सूचना मिलती है।[2] 'गोरा' का एक अनुवाद राजेश दीक्षित ने भी प्रस्तुत किया, जिसका 'परिवर्द्धित द्वितीय संस्करण' १९५६ ई० में प्रकाशित हुआ। इस उपन्यास का एक दूसरा अनुवाद सन्मार्ग प्रकाशन, दिल्ली से १९५८ ई० में प्रकाशित हुआ। इसके 'रूपान्तरकार' सुरेन्द्र शर्मा थे। १९५८ ई० के पूर्व आदर्श हिन्दी पुस्तकालय, अहियापुर, प्रयाग से भी इसका एक अनुवाद 'गोरा' शीर्षक से प्रकाशित हो चुका था।[3] अजय प्रेस व प्रकाशन, कल्याणी देवी साउथ, इलाहाबाद से भी 'गोरा' का एक अनुवाद प्रकाशित हुआ जिसके अनुवादक जयकृष्ण शुक्ल है। १९५८ ई० के पूर्व इसके चार संस्करण प्रकाशित हो चुके थे। प्रभात प्रकाशन, चावड़ी बाजार, दिल्ली से भी 'गोरा' का एक अनुवाद, इसी शीर्षक से १९५९ ई० प्रकाशित हुआ था।[4]

---

१. 'गोरा' सर्व प्रथम 'प्रवासी' नामक बँगला पत्रिका में बंगाब्द १३१४-१६ (१९०७-१९०९ ई०) में छपा था। पुस्तक रूप में इसका प्रकाशन बं० १३१६ (ई० सन् १९०९) में हुआ।

२. यह सूचना मुझे आर्यभाषा पुस्तकालय, (का० ना० प्र० स०) की पुस्तक-पंजी से प्राप्त हुई है। पुस्तक के पुस्तकालय से खो जाने के कारण लेखक उसे देखने में समर्थ न हो सका।

३. आदर्श पुस्तकालय, इलाहाबाद की १९५८ ई० की सूची से प्राप्त सूचना।

४. 'अपनी दुनिया', गाँधी ग्रन्थागार, वाराणसी, १९५९ ई० के अन्तिम पृष्ठ का विज्ञापन।

चरित्रहीन

शरच्चन्द्र चट्टोपाध्याय के 'चरित्रहीन' नामक उपन्यास का 'शरत् बाबू के एक मित्र' द्वारा प्रस्तुत अनुवाद हिन्दी पुस्तक एजेंसी, कलकत्ता से जुलाई १९२३ ई० के पूर्व प्रकाशित हो चुका था। न जाने क्यों, शरत् बाबू के इस मित्र ने अनुवाद में अपना नाम प्रकाशित करना उचित नहीं समझा था। प्रस्तुत पंक्तियों का लेखक इस अनुवाद को प्राप्त करने में असमर्थ रहा है। उपर्युक्त सूचनाएं 'प्रभा' (अप्रैल १९२३) में प्रकाशित विवेच्य उपन्यास की समीक्षा से प्राप्त होती हैं।[१] इस समीक्षा की कुछ पंक्तियाँ द्रष्टव्य हैं :

"बहुत शोर सुनते थे पहलू में दिल का—वही चरित्रहीन आज हिन्दी में प्रकट हुआ है। उपन्यास दिल को हिला देने वाला है। मानव-स्वभाव का चित्रण खूबी के साथ किया गया है। इस उपन्यास से यह ज्ञात होता है कि—कल्पना × आदर्श + यथातथ्य × कल्पना = शरत बाबू अतः कल्पना (आदर्श + यथातथ्य) = शरत् बाबू। हँसने की बात नहीं-हमारी धारणा हमें तो बिल्कुल ठीक जँचती है। एक बार यह उपन्यास पढ़िये। आप स्वयं हमारी बात के कायल हो जायेंगे।"[२]

अगस्त १९२३ की 'सरस्वती' में भी 'चरित्रहीन' के इस अनुवाद का 'परिचय' प्रकाशित हुआ था जिसमें पाठकों के रुचि-परिस्कार की दृष्टि से इसकी महत्ता स्वीकार की गयी थी। समीक्षक के अनुसार "ऐसे ग्रन्थों का अनुवाद प्रकाशित कर हिन्दी पुस्तक एजेन्सी ने हिन्दी साहित्य का बड़ा उपकार किया है। हमारा विश्वास है कि ज्ञान की वृद्धि और सुरुचि का प्रचार करने के लिए हमें अन्य भाषाओं के ग्रन्थरत्नों का अनुवाद करना होगा।"[३]

अनूदित होते ही हिन्दी में इस उपन्यास की एक प्रकार से धूम मच गयी। उस समय की प्रायः सभी साहित्यिक पत्रिकाओं में, जिनमें प्रभा, सरस्वती, माधुरी मतवाला आदि प्रमुख हैं, इस उपन्यास की प्रशंसात्मक समीक्षाएं प्रकाशित हुई थीं।[४]

उपर्युक्त अनुवाद का द्वितीय संस्करण १९२७ ई० में हिन्दी पुस्तक एजेन्सी, कलकत्ता से प्रकाशित हुआ।[५] प्रस्तुत पंक्तियों का लेखक इस संस्करण को भी प्राप्त करने में असमर्थ रहा है।

'चरित्रहीन' का हिन्दी पुस्तक एजेन्सी, कलकत्ता से प्रकाशित छठा संस्करण (१९५० ई०) प्रस्तुत पंक्तियों के लेखक के व्यक्तिगत पुस्तकालय में उपलब्ध है।[६] इस प्रति में

---

१. प्रभा, वर्ष ४, खंड २, संख्या १, १ जुलाई १९२३, चरित्रहीन (समीक्षा)।

२. उपरिवत्।

३. सरस्वती, अगस्त, १९२३, पुस्तक परिचय, चरित्रहीन।

४. माधुरी, वर्ष २, खंड१, सं० १, अगस्त १९२३; मतवाला १० मई १९२४।

५. आ० भा० पु० काशी की पुस्तक सूची।

६. मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—चरित्रहीन, मूललेखक—श्री शरत्चन्द्र चट्टोपाध्याय, अनुवादक—

विजया

सन् १९२४ ई० में शरत् बाबू के 'दत्ता' नामक उपन्यास का श्री रूपनारायण पांडेय कविरत्न कृत 'विजया' शीर्षक अनुवाद गंगा पुस्तकमाला कार्यालय, लखनऊ से प्रकाशित हुआ।[1] इस अनुवाद के अन्य संस्करणों का पता प्रस्तुत पंक्तियों के लेखक को नहीं है।

दत्ता

दत्ता का श्री सुन्दरलाल त्रिपाठी और हेमचन्द्र मोदी द्वारा प्रस्तुत किया हुआ एक दूसरा अनुवाद 'शरत् साहित्य' (अठारहवाँ भाग) के अन्तर्गत हिन्दी ग्रन्थ रत्नाकर कार्यालय, बम्बई से जून १९४० ई० में प्रथम बार प्रकाशित हुआ।[2] इसका तीसरा संस्करण १९४७ ई० में उपर्युक्त प्रकाशन संस्था से ही प्रकाशित हुआ।[3] 'दत्ता' का एक अनुवाद, बजरंग बली गुप्त विशारद ने भी प्रस्तुत किया, जिसका तृतीय संस्करण १९५२ ई० में साहित्य सेवक कार्यालय, काशी से प्रकाशित हुआ।

'दत्ता' का एक अन्य अनुवाद, 'विजया' शीर्षक से, १९५८ ई० के पूर्व, सुरेन्द्र एण्ड कंपनी, कटरा, इलाहाबाद से प्रकाशित हुआ था। यह सूचना १९५८ ई० में मुद्रित उपर्युक्त प्रकाशन-संस्था की पुस्तक-सूची से प्राप्त की गयी है।

स्वामी

सन् १९२४ ई० में ही शरत् बाबू के 'स्वामी' नामक उपन्यास का रूपनारायण पांडेय कृत अनुवाद गंगा पुस्तकमाला कार्यालय, लखनऊ से प्रकाशित हुआ।[4]

'स्वामी' का श्री रामचन्द्र वर्मा कृत एक दूसरा अनुवाद १९३६ ई० में 'शरत् साहित्य', भाग २ के अन्तर्गत हिन्दी ग्रन्थ रत्नाकर कार्यालय, बम्बई से प्रकाशित हुआ।[5] इसका चौथा संस्करण १९५० ई० में तथा पाँचवाँ संस्करण १९५३ ई० में प्रकाशित हुआ।

माला कार्यालय, लखनऊ, प्रथमावृत्ति १९८१ वि०, 'वक्तव्य'।

१, प्राप्ति स्थान—आ० भा० पु० काशी, प० वि० पु०, पटना तथा सि० पु० पटना; मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—विजया (उपन्यास), मूल लेखक—श्री शरत्चंद्र चट्टोपाध्याय, अनुवादक रूपनारायण पांडेय कविरत्न (माधुरी संपादक), प्रकाशक—गंगा पुस्तकमाला कार्यालय, २९-३०, अमीनाबाद पार्क, लखनऊ, प्रथमावृत्ति—सं० १९८१ वि०, पृ० सं० २५४।

२. प्रा० स्था०—आ० भा० पु०, काशी। मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—सुलभ साहित्यमाला, अठारहवाँ पुष्प, शरत्-साहित्य(अठारहवाँ भाग), दत्ता; अनुवादकर्त्ता-सुन्दरलाल त्रिपाठी, हेमचन्द्र मोदी, प्रकाशक—हिन्दी ग्रंथ रत्नाकर कार्यालय, बम्बई, पहली बार जून १९४०, पृ० सं० १९७।

३. प्रा० स्था०—प० वि० पु०, पटना।

४. आ० भा० पु० काशी की पुस्तकसूची।

५. उपरिवत्।

'बड़ी दीदी' शीर्षक अनुवाद इंडियन प्रेस, प्रयाग से प्रकाशित हुआ। आर्यभाषा पुस्तकालय, काशी में इस अनुवाद की एक प्रति है, पर मुखपृष्ठ के न रहने के कारण पुस्तक के सम्बन्ध में कोई सूचना नहीं मिल पाती। उपर्युक्त सूचना आ० भा पु० की पुस्तक-सूची से प्राप्त की गयी है। इसका दूसरा संस्करण १९३४ ई० से इंडियन प्रेस, प्रयाग से प्रकाशित हुआ।[1]

ललिता (परिणीता)

सन् १९२५ ई० में ही विवेच्य उपन्यासकार के 'परिणीता' नामक उपन्यास का पं० चन्द्रशेखर पाठक द्वारा प्रस्तुत 'ललिता' शीर्षक अनुवाद प्रथम बार लहरी बुक डिपो, काशी से प्रकाशित हुआ।[2] अनुवाद की भूमिका के नीचे १९२० ई० मुद्रित है जिससे अनुमान होता है कि यह अनुवाद १९२० ई० में ही पूरा हो चुका था।

परिणीता

सन् १९२५ ई० में ही 'परिणीता' का रूपनारायण पांडेय कृत एक दूसरा अनुवाद इंडियन प्रेस, प्रयाग से प्रकाशित हुआ।[3]

जयमाला (परिणीता)

सन् १९२६ ई० में 'परिणीता' का रामधारी प्रसाद 'विशारद' द्वारा प्रस्तुत किया हुआ 'जयमाला' शीर्षक अनुवाद हिन्दी पुस्तक भंडार, लहेरिया सराय से प्रकाशित हुआ।[4] 'परिणीता' का श्री धन्यकुमार जैन द्वारा प्रस्तुत किया हुआ एक अन्य अनुवाद शरत् साहित्य (बारहवाँ भाग) के अन्तर्गत हिन्दी ग्रन्थ रत्नाकर कार्यालय, बम्बई से प्रकाशित हुआ। इसका तीसरा संस्करण १९४९ ई० में तथा पाँचवाँ संस्करण १९५५ ई० में प्रकाशित हुआ।

'परिणीता' का एक दूसरा अनुवाद सुरेन्द्र एंड कम्पनी, कटरा, इलाहाबाद से भी १९५८ ई० के पूर्व प्रकाशित हुआ था।[5]

---

१. प्रा० स्था०—आ० भा० पु० काशी; मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—ललिता, बंगभाषा के सुप्रसिद्ध लेखक बाबू शरच्चन्द्र चट्टोपाध्याय के 'परिणीता' नामक उपन्यास का अनुवाद, अनुवादक—पं० चन्द्रशेखर पाठक, प्रकाशक—दुर्गाप्रसाद खत्री, प्रोप्राइटर—लहरी बुक डिपो, काशी, प्रथम बार १९२५, पृ० सं० १०८।

२. प्रा० स्था०—सिनहा पुस्तकालय पटना; मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—बड़ी दीदी, मूललेखक श्री शरच्चन्द्र चट्टोपाध्याय, अनुवादक—पं० रूपनारायण पांडेय, प्रकाशक इंडियन प्रेस, लिमिटेड, प्रयाग, द्वितीयावृत्ति सं० १९९१ वि०, पृ० सं० १०१।

३. प्रा० स्था०—आ० भा० पु० काशी; मु० पृ० की प्रतिलिपि—शरद् ग्रंथावली—पुस्तक संख्या ३, परिणीता, मूललेखक—श्री शरच्चन्द्र चट्टोपाध्याय, अनुवादक—रूपनारायण पांडेय, प्रकाशक—इंडियन प्रेस लिमिटेड, प्रयाग, प्रथमावृत्ति, संवत् १९८२ वि०, पृ० सं० ११६।

४. आ० भा० पु० की पुस्तकसूची।

५. सुरेन्द्र एंड कम्पनी, कटरा, इलाहाबाद, नया सूचीपत्र १९५८-५९।

मँझली दीदी

सन् १९२६ ई० में ही विवेच्य उपन्यासकार के किसी उपन्यास का रूपनारायण पांडेय कृत 'मँझली दीदी' शीर्षक अनुवाद इंडियन प्रेस, प्रयाग से प्रकाशित हुआ।[1]

मँझली बहन

'मँझली दीदी' का रामचन्द्र वर्मा द्वारा प्रस्तुत किया हुआ एक दूसरा अनुवाद 'मँझली बहन' शीर्षक से १९३८ ई० में 'शरत् साहित्य' (भाग ११) के अन्तर्गत हिन्दी ग्रन्थ रत्नाकर कार्यालय, बम्बई से प्रकाशित हुआ। इसका दूसरा संस्करण १९४२ ई० में चौथा संस्करण १९५१ ई० में तथा पांचवां संस्करण १९५५ ई० में प्रकाशित हुआ।

अरक्षणीया

सन् १९२६ ई० में शरत् बाबू के 'अरक्षणीया' नामक उपन्यास का रूप नारायण पांडेय कृत अनुवाद इंडियन प्रेस, प्रयाग से प्रकाशित हुआ।[2] इस अनुवाद का दूसरा संस्करण भी इंडियन प्रेस के 'सरस्वती सिरीज' के अन्तर्गत प्रकाशित हुआ।[3] इस संस्करण के मुखपृष्ठ पर प्रकाशन काल नहीं दिया हुआ है।

देहाती समाज

सन् १९२७ ई० में शरत् बाबू के किसी उपन्यास का रूपनारायण पांडेय द्वारा प्रस्तुत 'देहाती समाज' शीर्षक अनुवाद इंडियन प्रेस, प्रयाग से प्रकाशित हुआ। आर्यभाषा पुस्तकालय में इस उपन्यास की एक प्रति है पर मुखपृष्ठ के न रहने के कारण पुस्तक के सम्बन्ध में कोई सूचना नहीं प्राप्त होती।

ग्रामीण समाज

सम्भवतः इसी उपन्यास का रामचन्द्र वर्मा द्वारा प्रस्तुत 'ग्रामीण समाज' शीर्षक अनुवाद 'सुलभ साहित्य माला' के उन्नीसवें पुष्प के अन्तर्गत हिन्दी ग्रन्थ रत्नाकर कार्यालय, बम्बई से प्रकाशित हुआ। प्रस्तुत पंक्तियों के लेखक को इसका प्रथम संस्करण उपलब्ध

सं० ५, नवविधान, मूल लेखक—श्री शरच्चन्द्र चट्टोपाध्याय, अनुवादक—रूपनारायण पांडेय, प्रकाशक—इंडियन प्रेस, लिमिटेड, प्रयाग, प्रथम संस्करण १९२६, पृ० सं० ११६।

१. प्रा० स्था०—आ० भा० पु० काशी। मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—मँझली दीदी, मूल लेखक—श्री शरच्चन्द्र चट्टोपाध्याय, अनुवादक-रूपनारायण पांडेय, प्रकाशक—इंडियन प्रेस, लिमिटेड, प्रयाग, प्रथमावृत्ति १९२६।

२. प्रा० स्था०—आ० भा० पु० काशी। मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—अरक्षणीया, मूल लेखक—श्री शरच्चन्द्र चट्टोपाध्याय, अनुवादक—पं० रूपनारायण पांडेय, प्रकाशक—इंडियन प्रेस लिमिटेड, प्रयाग, प्रथम संस्करण सवत् १९८३, पृ० सं० १२१।

३. प्रा० स्था०—आ० भा० पु० काशी। मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—सरस्वती-सिरीज नं० ६५, अरक्षणीया, रूपनारायण पांडेय, प्रकाशक—इंडियन प्रेस लिमिटेड, प्रयाग, पृ० सं० १२७।

सन् १९५१ ई० में विवेच्य उपन्यास का श्री कामता प्रसाद श्रीवास्तव कृत अनुवाद गांधी ग्रन्थागार, सेनपुरा, बनारस से प्रकाशित हुआ। इसका द्वितीय संस्करण भी १९५२ ई० में उपर्युक्त प्रकाशन-संस्था से निकला।[१]

विवेच्य उपन्यास का श्री महेन्द्र कुमार द्वारा प्रस्तुत अनुवाद अजय प्रेस व प्रकाशन, इलाहाबाद से भी प्रकाशित हुआ है।[२] इस अनुवाद के मुखपृष्ठ पर न तो संस्करण-संख्या दी हुई है, न प्रकाशन काल; इस कारण यह बताना कठिन है कि इसके कितने संस्करण उक्त प्रकाशन संस्था से अब तक प्रकाशित हो चुके हैं।

सुरेन्द्र एंड कम्पनी, कटरा, इलाहाबाद से १९५८ ई० के पूर्व विवेच्य उपन्यास का एक अनुवाद प्रकाशित हुआ।[३]

लेनदेन

शरत् बाबू के किसी उपन्यास का 'लेनदेन' शीर्षक अनुवाद १९३० ई० के पूर्व इंडियन प्रेस, प्रयाग से प्रकाशित हो चुका था। प्रस्तुत पंक्तियों का लेखक इस अनुवाद को प्राप्त करने में असमर्थ रहा है। उपर्युक्त सूचना 'सरस्वती' (अक्टूबर १९३०) में प्रकाशित विवेच्य उपन्यास के विज्ञापन से प्राप्त की गयी है।[४]

गृहदाह

शरत् बाबू के 'गृहदाह' नामक उपन्यास का अनुवाद भी इंडियन प्रेस, प्रयाग से १९३३ ई० के पूर्व प्रकाशित हुआ था। प्रस्तुत पंक्तियों का लेखक इस अनुवाद को प्राप्त करने में असमर्थ रहा है। उपर्युक्त सूचनाएँ 'सरस्वती' (जनवरी १९३३) में प्रकाशित विवेच्य अनुवाद के 'परिचय' से प्राप्त की गयी हैं।[५]

शरत् साहित्य : भाग-१

सन् १९३६ ई० में हिन्दी ग्रन्थ रत्नाकर कार्यालय, बम्बई से 'सुलभ साहित्य माला' के अन्तर्गत 'शरत् साहित्य' का प्रकाशन शुरू हुआ। 'शरत् साहित्य' का पहला भाग, जिसमें 'सुमति' (पृ० सं० ४७), 'पथनिर्देश' (पृ० सं० ४०), 'काशीनाथ' (पृ० सं० ३९) और 'अनुपमा का प्रेम' (पृ० सं० २९) नामक लघुउपन्यास संकलित किये गये थे, १९३६ ई०

---

१. प्रा० स्था०—आ० भा० पु० काशी। मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—छुटकारा (सामाजिक उपन्यास), ले० शरच्चन्द्र चट्टोपाध्याय, रूपान्तरकार—कामता प्रसाद श्रीवास्तव, प्रकाशक—श्री गांधी ग्रन्थागार, सेनपुरा, बनारस, प्रथम संस्करण सन् १९५१ ई०, द्वितीय संस्करण सन् १९५२ ई०, पृ० सं० ७१।

२. प्रा० स्था०—मा० पु०, पटना। मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—छुटकारा (सामाजिक उपन्यास), मूल लेखक—शरत् चन्द्र चट्टोपाध्याय, अनुवादक महेन्द्रकुमार वर्मा, प्रकाशक अजय प्रेस व प्रकाशन, १९५३, कल्याणी देवी साउथ, इलाहाबाद, पृ० सं० ८०।

३. सुरेन्द्र एंड कम्पनी, कटरा, इलाहाबाद, नया सूची पत्र १९५८-५९।

४. सरस्वती, भाग ३१, सं० १०, अक्टूबर १९३०।

५. सरस्वती, जनवरी १९३३, पुस्तकपरिचय, गृहदाह।

'श्रीकान्त' का प्रथम पर्व १९३६ ई० में ही प्रकाशित हुआ। इसका पाँचवाँ संस्करण १९४७ ई० में निकला।[1]

शरत् साहित्य : भाग-५

'सुलभ साहित्य माला' के पाँचवें पुष्प के अन्तर्गत 'बाम्हन की बेटी' (पृ० सं० ८५), 'प्रकाश और छाया' (पृ० सं० २१), 'विलासी' (पृ० सं० १६), 'एकादशी वैरागी' (पृ० सं० १५) और 'बालस्मृति' (पृ० सं० ११) संकलित किये गये थे। यह हिन्दी ग्रन्थ रत्नाकर कार्यालय, बम्बई से १९३६ ई० में प्रकाशित हुआ।[2] उपर्युक्त शीर्षकों में पहला उपन्यास, तीन कहानियाँ और अन्तिम रेखाचित्र है। इस भाग का दूसरा संस्करण १९४० ई० में[3], चौथा संस्करण १९५१ ई० में[4] तथा पाँचवाँ संस्करण १९५५ ई० में[5] प्रकाशित हुआ।

शरत् साहित्य : भाग-६

'सुलभ साहित्य माला' के छठे पुष्प के अन्तर्गत श्री हेमचन्द्र मोदी द्वारा अनूदित 'श्रीकान्त' का द्वितीय पर्व, १९३६ ई० में ही, हिन्दी ग्रन्थ रत्नाकर कार्यालय, बम्बई से प्रकाशित हुआ।[6] इसका पाँचवाँ संस्करण १९५० ई० में प्रकाशित हुआ था।[7]

शरत् साहित्य : भाग-७

'सुलभ साहित्य माला' के सप्तम पुष्प के अन्तर्गत श्री धन्यकुमार जैन द्वारा अनूदित 'श्रीकान्त' का तृतीय पर्व १९३६ ई० में ही हिन्दी ग्रन्थ रत्नाकर कार्यालय, बम्बई से प्रकाशित हुआ।[8] इसका चौथा संस्करण १९५० ई० में प्रकाशित हुआ।[9]

---

१. प्रा० स्था०-प० वि० पु०, पटना।

२. आ० भा० पु० काशी की पुस्तकसूची।

३. प्रा० स्था—प० वि० पु० पटना। मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि-सुलभ साहित्य माला, पाँचवाँ पुष्प-शरत् साहित्य, ब्राह्मण की बेटी, प्रकाश और छाया, विलासी, एकादशी वैरागी, बाल्य स्मृति, अनुवादकर्ता धन्यकुमार जैन, प्रकाशक--नाथूराम प्रेमी, हिन्दी ग्रन्थ रत्नाकर कार्यालय, हीराबाग बम्बई-४, दूसरी बार सितम्बर १९४०, पृ० सं० १४८।

४. प्रा० स्था०—आ० भा० पु० काशी।

५. आ० भा० पु० की पुस्तक सूची।

६. उपरिवत्।

७. प्रा० स्था०—आ० भा० पु० काशी। मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—सुलभ साहित्यमाला, छठा पुष्प, श्रीकान्त (द्वितीय पर्व), अनुवादकर्ता-स्वर्गीय हेमचन्द्र मोदी, प्रकाशक—हिन्दी ग्रन्थ रत्नाकर कार्यालय, बम्बई, पाँचवी आवृत्ति, अक्टूबर १९५०, पृ० सं० १५२।

८. आ० भा० पु० काशी की पुस्तक सूची।

९. प्रा० स्था०—आ० भा० पु० की पुस्तक सूची, मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—सुलभ साहित्यमाला सप्तम पुष्प, शरत् साहित्य, श्रीकान्त (तृतीय पर्व), अनुवादकर्ता—धन्यकुमार जैन, प्रकाशक--हिन्दी ग्रन्थ

शरत् साहित्य : भाग-११

'सुलभ साहित्यमाला' के ग्यारहवें पुष्प के अन्तर्गत रामचन्द्र वर्मा द्वारा अनूदित 'शरत् साहित्य' का ग्यारहवाँ भाग, जिसके अन्तर्गत शरत् बाबू के दो उपन्यासों के अनुवाद —'पंडितजी' (पृ० सं० १०५) और, 'मँझली बहन' (पृ० सं० ३३) संकलित किये गये थे, सर्व प्रथम १९३८ ई० में हिन्दी ग्रन्थ रत्नाकर कार्यालय, बम्बई से प्रकाशित हुआ।[1] इसका दूसरा संस्करण १९४२ ई० में,[2] चौथा संस्करण १९५१ ई० में[3] तथा पाँचवाँ संस्करण १९५५ ई० में[4] प्रकाशित हुआ।

शरत् साहित्य : भाग-१२

'सुलभ साहित्य माला' के बारहवें पुष्प के अन्तर्गत 'शरत् साहित्य' का बारहवाँ भाग, जिसमें शरत् बाबू का एक नाटक (रमा) और एक उपन्यास (परिणीता) संकलित किये गये थे, हिन्दी ग्रन्थ रत्नाकर कार्यालय, बम्बई से प्रकाशित हुआ। इस भाग का तीसरा संस्करण १९४९ ई० में[5] तथा पाँचवाँ संस्करण १९५५ ई० में[6] प्रकाशित हुआ।

बाद में श्री रामचन्द्र वर्मा ने 'रमा' को उपन्यास के रूप में प्रस्तुत किया जो सन् १९४१ ई० में 'ग्रामीण समाज' शीर्षक से हिन्दी ग्रन्थ रत्नाकर कार्यालय, बम्बई से प्रकाशित हुआ।[7] 'ग्रामीण समाज' का तीसरा संस्करण दिसम्बर १९४७ में प्रकाशित हुआ।[8]

शरत् साहित्य : भाग-१५

'सुलभ साहित्य माला' के पन्द्रहवें पुष्प के अन्तर्गत श्री रामचन्द्र वर्मा तथा धन्य कुमार जैन द्वारा अनूदित 'शरत् साहित्य' का पन्द्रहवाँ भाग, जिसके अन्तर्गत 'नारी का मूल्य' (निबन्ध), 'अनुराधा' (लघु उपन्यास, पृ० स० ३७), 'महेश' (कहानी, पृ० सं० १३)

---

१. आ० भा० पु० की पुस्तक सूची।

२. प्रा० स्था०—आ० भा० पु० काशी। मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—सुलभ साहित्यमाला, ग्यारहवाँ पुष्प शरत् साहित्य, पंडित जी, मँझली बहन, अनुवादक—रामचंद्र वर्मा, प्र०—हिन्दी ग्रंथ रत्नाकर कार्यालय, बम्बई, दूसरी बार फरवरी, १९४२।

३. आ० भा० पु०, पुस्तकसूची।

४. उपरिवत्।

५. प्रा० स्था०—आ०भा० पु० काशी। मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—सुलभसाहित्य माला-बारहवाँ पुष्प, शरत् साहित्य (बारहवाँ भाग), रमा, परिणीता, अनुवादकर्त्ता-रामचंद्र वर्मा, धन्यकुमार जैन, प्र० हिन्दी ग्रंथ रत्नाकर कार्यालय, बंबई, तीसरी बार अगस्त १९४९।

६. आ० भा० पु० काशी, पुस्तक सूची।

७. प्रा० स्था०—आ० भा० पु० काशी। मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—शरत् साहित्य, ग्रामीण समाज, अनुवादकर्त्ता—रामचन्द्र वर्मा, प्र० नाथूराम प्रेमी, हिन्दी ग्रंथ रत्नाकर कार्यालय, हीराबाग बम्बई ४, पहलीबार, अप्रैल १९४१।

८. प्राप्ति स्थान—आर्यभाषा पुस्तकालय, काशी।

'शेष प्रश्न' का श्री यज्ञदत्त शर्मा द्वारा प्रस्तुत किया हुआ एक दूसरा अनुवाद राजेन्द्र कुमार एंड ब्रदर्स, बलिया से प्रकाशित हुआ, जिसका चौथा संस्करण १९५६ ई० में निकला।[१]

शरत् साहित्य : भाग २२

'सुलभ साहित्यमाला' के बाईसवें पुष्प के अन्तर्गत श्री कमल जोशी द्वारा अनूदित श्रीकान्त का चतुर्थ पर्व, अप्रैल १९४२ ई० में हिन्दी ग्रन्थ रत्नाकर कार्यालय, बम्बई से प्रकाशित हुआ।[२] इसका तीसरा संस्करण सितम्बर १९४९ में निकला।[३]

शरत् साहित्य : भाग २३-२४

'सुलभ साहित्यमाला' के तेईसवें-चौबीसवें पुष्प के अन्तर्गत धन्य कुमार जैन द्वारा अनूदित शरत् बाबू का 'विप्रदास' नामक उपन्यास जनवरी १९४६ ई० में हिन्दी ग्रन्थ रत्नाकर कार्यालय, बम्बई से प्रकाशित हुआ।[४] इसका दूसरा संस्करण फरवरी १९५१ ई० में[५] तथा तीसरा संस्करण १९५५ ई० में[६] निकला।

शरत् साहित्य : भाग २५

'सुलभ साहित्यमाला' के पच्चीसवें पुष्प के अन्तर्गत धन्यकुमार जैन द्वारा अनूदित 'शरत् साहित्य' का पच्चीसवाँ भाग, जिसमें 'षोडशी' नामक नाटक और 'निष्कृति' नामक उपन्यास संकलित किये गये थे, हिन्दी ग्रन्थ रत्नाकर कार्यालय, बम्बई से प्रकाशित हुआ।[७] इस भाग का तीसरा संस्करण सितम्बर १९४६ ई० में[८] प्रकाशित हुआ।

इक्कीसवाँ पुष्प, शरत् साहित्य, शेष प्रश्न, अनुवादकर्त्ता धन्यकुमार जैन, प्र० हिन्दी ग्रन्थ रत्नाकर कार्यालय, बम्बई, तीसरी बार सितम्बर १९४६, पृ० सं० ३२४

१. प्रा० स्था०—प० का० पु०, पटना। मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—शेष प्रश्न, ले० शरत् चन्द्र चटर्जी, रूपान्तरकार—यज्ञदत्त शर्मा, प्रकाशक-राजेन्द्र कुमार एंड ब्रदर्स, बलिया, चतुर्थ बार सन् १९५६ ई०।

२. प्रा० स्था—आ० भा० पु० काशी। मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—सुलभ साहित्य माला, बाईसवाँ पुष्प, शरत् साहित्य, श्रीकान्त (चतुर्थ पर्व) अनुवादकर्त्ता कमल जोशी, प्र० हिन्दी ग्रन्थ रत्नाकर कार्यालय, बम्बई, पहली बार १९४२, पृ० सं० १८३,

३. प्रा० स्था०—आ० भा० पु० काशी।

४. प्रा० स्था०—प० वि० पु०, पटना। मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—सुलभ साहित्य माला, तेईसवाँ-चौबीसवाँ पुष्प, शरत् साहित्य, विप्रदास, अनुवादकर्त्ता—धन्यकुमार जैन, हिन्दी ग्रन्थ रत्नाकर कार्यालय, बम्बई, जनवरी १९४६।

५. प्राप्ति स्थान—आर्यभाषा पुस्तकालय, काशी।

६. आ० भा० पु०, पुस्तक सूची।

७. प्राप्ति स्थान—आ० भा० पु० काशी। मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि-शरत् साहित्य, षोडशी, निष्कृति, अनुवादकर्त्ता—धन्य कुमार जैन, प्र० हिन्दी ग्रन्थ रत्नाकर कार्यालय, हीरा बाग, बम्बई ४, तीसरी बार, सितम्बर १९४६।

८. प्रा० स्था—आ० भा० पु० काशी।

शुभदा

आर्यभाषा पुस्तकालय की पुस्तक-सूची के अनुसार शरत् बाबू के 'शुभदा' नामक उपन्यास का श्री सुमंगल प्रकाश द्वारा प्रस्तुत किया हुआ अनुवाद पुस्तक मन्दिर, कलकत्ता से प्रकाशित हुआ। प्रस्तुत पंक्तियों का लेखक इस अनुवाद को प्राप्त करने में असमर्थ रहा है। आ० भा० पु० की पुस्तक-सूची में इस अनुवाद का प्रकाशन काल नहीं दिया हुआ है।

उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट है कि शरच्चन्द्र के उपन्यासों को हिन्दी पाठकों के बीच लोकप्रियता प्राप्त करने में अधिक संघर्ष नहीं करना पड़ा, यद्यपि संघर्ष के लिए अवकाश काफी था। १९२५ के लगभग प्रेमचन्द के उपन्यास हिन्दी पाठकों के बीच पर्याप्त लोकप्रिय हो चुके थे। ऐसी दशा में किसी साधारण हिन्दीतर उपन्यासकार के लिए, अनूदित होकर, हिन्दी में लोकप्रिय हो जाना आसान नहीं था; पर शरच्चन्द्र के लिए यह दुष्कर नहीं सिद्ध हुआ।

सन् १९२३ ई० से १९३६ ई० के बीच शरच्चन्द्र के प्रायः सभी उपन्यासों के हिन्दी अनुवाद प्रकाशित हो चुके थे। यद्यपि उनके किसी भी उपन्यास का द्वितीय संस्करण १९३६ ई० के पूर्व नहीं निकला पर इससे यह सिद्ध नहीं होता कि १९३६ ई० के पूर्व शरत् बाबू के उपन्यास हिन्दी पाठकों में लोकप्रिय न थे। शरत् बाबू के सभी उपन्यासों का हिन्दी अनुवाद निकल जाना ही हिन्दी पाठकों के बीच उनकी लोकप्रियता का असन्दिग्ध प्रमाण है। १९३६ ई० के पूर्व शरत् के १७ उपन्यासों के हिन्दी अनुवाद प्रकाशित हो चुके थे। १९३६ ई० में ही हिन्दी ग्रन्थ रत्नाकर कार्यालय, बम्बई से सुलभ साहित्यमाला के सात पुष्प, जिनमें केवल शरत् साहित्य प्रकाशित हुआ था, निकले थे। शरत् साहित्य, भाग ३ के निवेदन में उसके प्रकाशक ने लिखा था—

"कम से कम मूल्य में, अच्छे से अच्छा साहित्य साधारण से साधारण स्थिति के पाठकों तक पहुँचाने के उद्देश्य से हम इस 'सुलभ साहित्य माला' का प्रारम्भ कर रहे हैं; आर्थिक मन्दी के इस उत्साह घटानेवाले समय में हमारा यह प्रयत्न एक तरह का साहस, बल्कि दुस्साहस ही है; फिर भी हम इसके द्वारा यह निश्चित कर लेना चाहते हैं कि वास्तव में जन साधारण की वाचनाभिरुचि बढ़ रही है या नहीं और वह केवल पुस्तकों की बहुमूल्यता या दुर्लभता के कारण ही तो नहीं दब रही है?·······यदि हमें निराश होना पड़ा, तो फिर हमने निश्चय किया है कि इसे एक वर्ष के बाद बन्द कर दिया जायगा। ······फिलहाल हम इस माला की केवल दो हजार प्रतियाँ ही छपा रहे हैं। लाभ की आशा तो उस समय की जा सकेगी जब इससे अधिक प्रतियाँ खपने लगेंगी।"[१]

उपर्युक्त पंक्तियों से प्रतीत होता है कि १९३६ ई० के लगभग शरच्चन्द्र के

---

१. शरत् साहित्य, तीसरा भाग, अनुवादकर्त्ता—रामचन्द्र वर्मा, हेमचन्द्र मोदी, धन्यकुमार जैन, प्र० हिन्दी ग्रन्थ रत्नाकर कार्यालय, बम्बई, पहली बार १९३६, 'निवेदन'।

कुसुम' शीर्षक अनुवाद १९२३ ई० में ही हिन्दी ग्रन्थ मन्दिर, चन्दवारा से प्रकाशित हुआ। प्रस्तुत पंक्तियों का लेखक इस उपन्यास को भी प्राप्त करने में असमर्थ रहा है। उपर्युक्त सूचनाएँ आर्यभाषा पुस्तकालय की पुस्तक-सूची से प्राप्त हैं।

विषाक्त प्रेम

सन् १९२३ ई० में ही विवेच्य उपन्यासकार के 'हेर-फेर' नामक उपन्यास का छविनाथ पांडेय कृत 'विषाक्त प्रेम' शीर्षक अनुवाद हिन्दी पुस्तक भवन, कलकत्ता से प्रकाशित हुआ।[1] 'निवेदन' से ज्ञात होता है कि 'हेरफेर' नाम से पुस्तक का विषय स्पष्ट रूप से व्यक्त नहीं होता था इसलिए अनुवादक महोदय ने इसका नाम 'विषाक्त प्रेम' रखना उचित समझा है।[2]

'सरस्वती' के सम्पादक ने 'पुस्तक-परीक्षा' स्तम्भ में इस अनुवाद की आलोचना करते हुए लिखा था, "अनुवादक महोदय ने उपन्यास के नाम परिवर्तन में बड़ी कुशलता प्रदर्शित की है।····खेद यही है कि उपन्यास पढ़ जाने पर हमने उसमें भावों का हेरफेर तो देखा पर किसको अनुवादक ने 'विषाक्त प्रेम' कहा है, वह हमारी समझ में नहीं आया। कथा साधारण है। इसमें ऐसी विशेषता नहीं है जिससे यह हिन्दी में अनुवाद करने योग्य समझा जाय।"[3]

इस उपन्यास में स्वार्थपूर्ण प्रेम से उत्पन्न ईर्ष्या के भयानक कुपरिणामों का चित्रण किया गया है। प्रेमजन्य प्रतिहिंसा का चित्रण ही इस उपन्यास का मुख्य प्रतिपाद्य है।[4]

घरजमाई या दुनिया का नक्शा

सन् १९२५ ई० में विवेच्य उपन्यासकार के किसी उपन्यास का श्री रामनाथ लाल 'सुमन' कृत 'घर जमाई या दुनिया का नक्शा' शीर्षक अनुवाद भार्गव पुस्तकालय, गायघाट, बनारस से प्रकाशित हुआ। आर्यभाषा पुस्तकालय, काशी में इस उपन्यास की एक प्रति उपलब्ध है, पर मुखपृष्ठ के न रहने के कारण पुस्तक के सम्बन्ध में कोई सूचना नहीं मिलती। उपर्युक्त सूचनाएँ आ० भा० पु० की पुस्तक-सूची से प्राप्त की गयी हैं। उपन्यास के 'दो शब्द' के नीचे भी 'काशी अगस्त १९२५ ई०' लिखा हुआ है। इससे इस अनुवाद का रचनाकाल १९२५ ई० सिद्ध होता है।

---

१. प्रा० स्था०—आ० भा० पु० काशी तथा सिनहा पुस्तकालय, पटना। मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—विषाक्त प्रेम (सामाजिक उपन्यास), लेखक—श्री चारुचन्द्र बंद्योपाध्याय, अ०—पं० छविनाथ पांडेय, प्र०—हिन्दी पुस्तक भवन, नं० १८१, हरिसन रोड, कलकत्ता, प्रथम बार २०००, आश्विन १९८०, पृ० सं० २७१।

२. उपरिवत्, भूमिका।

३. सरस्वती, १ नवम्बर १९२३. विषाक्त प्रेम (पुस्तक परीक्षा)

४. उपरिवत्।

पथभ्रान्त पथिक

सन् १९३३ ई० की 'सरस्वती' के कतिपय अंकों में चारुचन्द्र वंद्योपाध्याय के किसी उपन्यास का श्री सुन्दर लाल त्रिपाठी द्वारा प्रस्तुत 'पथभ्रान्त पथिक' शीर्षक अनुवाद क्रमशः प्रकाशित हुआ।[1] यह पता नहीं चलता कि यह चारु बाबू के किस उपन्यास का अनुवाद है। इस अनुवाद का पुस्तक संस्करण बाद में प्रकाशित हुआ या नहीं, इसका पता प्रस्तुत पंक्तियों के लेखक को नहीं है।

मेरी कॉरेली

वर्तमान शताब्दी के तृतीय दशक के उत्तरार्ध में अँगरेजी साहित्य की प्रसिद्ध उपन्यास लेखिका मेरी कॉरेली के एकाधिक उपन्यासों के हिन्दी अनुवाद प्रकाशित हुए। उन्नीसवीं शताब्दी के अन्तिम दशक तथा बीसवीं शताब्दी के प्रथम चरण में मेरी कॉरेली के उपन्यास अँगरेजी पाठकों के बीच अत्यन्त लोकप्रिय हुए थे। इनके 'मास्टर क्रिस्चियन' नामक एक उपन्यास का उन दिनों इतना प्रचार हुआ था जितना पिछले ५०-६० वर्षों के भीतर किसी उपन्यास का नहीं हुआ था। इनके एक दूसरे उपन्यास 'सौरोज ऑफ शैटान' के इस अवधि में ४०-५० संस्करण हो चुके थे और उसकी लाखों प्रतियाँ बिकी थीं। इनके एक दूसरे उपन्यास 'थेल्मा' के पचासों संस्करण लेखिका के जीवन काल में ही निकल चुके थे। इस प्रकार १९२५ ई० के पूर्व मेरी कॉरेली की प्रतिष्ठा अँग्रेजी की सर्वाधिक लोकप्रिय उपन्यासलेखिका के रूप में हो चुकी थी। यही कारण है कि हिन्दी साहित्यकारों का ध्यान इनके उपन्यासों के हिन्दी अनुवाद प्रस्तुत करने की तरफ आकृष्ट हुआ।

शैतान की शैतानी

सर्वप्रथम १९२६ ई० में मेरी कॉरेली के 'सौरोज ऑफ सैटान' नामक उपन्यास का श्री वैद्यनाथ सहाय कृत 'शैतान की शैतानी' शीर्षक अनुवाद हिन्दी पुस्तक एजेन्सी, कलकत्ता से प्रकाशित हुआ। आर्य भाषा पुस्तकालय, काशी में इस उपन्यास की एक प्रति है, पर मुखपृष्ठ के फटे रहने के कारण पुस्तक के सम्बन्ध में कोई सूचना नहीं मिल पाती। उपर्युक्त सूचनाएँ अनुवाद के 'निवेदन' और आर्यभाषा पुस्तकालय की पुस्तकसूची से प्राप्त की गयी हैं।

पृ० ४०३-४०६), एप्रिल १९३० (पृ० ५२३-५२६), मई १९३० (पृ० ६२३-६३०), जून १९३० (पृ० ७६४-७७१)।

१. पथभ्रान्त पथिक, मूललेखक-श्री चारुचन्द्र वंद्योपाध्याय, अनुवादक सुन्दर लाल त्रिपाठी। सरस्वती--जनवरी १९३३ (पृ० सं० १७३-१७६), मार्च १९३३ (पृ० ३७९-३८८), अप्रैल १९३३ (पृ० ५१६-५२१), मई १९३३ (६१३-६१८). जून १९३३ (पृ० ६९६-६९९)।

पाठकों ने उसे हृदय से अपनाया जिससे उत्साहित होकर आज हम उसी प्रतिभाशालिनी महिला के दूसरे प्रसिद्ध उपन्यास 'वैण्डेट्टा' का अनुवाद लेकर उपस्थित हुए हैं।' [१]

कर्मफल

'वेंडेट्टा' का प्रो० वैजनाथ कोटी द्वारा प्रस्तुत किया हुआ 'कर्मफल' शीर्षक एक अन्य अनुवाद गंगा पुस्तकमाला कार्यालय, लखनऊ से १९२८ ई० में प्रकाशित हुआ।[२] इसे अनुवाद न कहकर रूपान्तर कहना ज्यादा उचित होगा। इसमें हिन्दी भाषाभाषियों की रुचि के अनुसार स्थान, वेशभूषा, रीति-नीति तथा पात्रादि को भारतीय कलेवर में प्रस्तुत किया गया है। क्योंकि, अनुवादक के अनुसार, "योरपीय सभ्यता तथा नामादि हिन्दीभाषियों के लिए असुविधाजनक हो जाते।"[३] अनुवाद के अन्त में मौलिक तथा परिवर्तित पात्रों एवं स्थानों की सूची लगा दी गयी है जिससे "घटना के ऐतिहासिक महत्त्व की रक्षा बनी रहे, और साथ ही ऐसे पाठकों को विशेष सुविधा रहे जो मूल तथा अनुवाद दोनों का ही रसास्वादन करना चाहते हों।"[४]

'कर्मफल' की भूमिका में अनुवादक ने हिन्दी में बँगला उपन्यासों के अनुवादों के आधिक्य के कारणों पर प्रकाश डालते हुए लिखा है "हमारे देश में अभी साहित्य की वैसी उन्नति नहीं होने पायी है, जैसी पाश्चात्य देशों में है।..... जिन्हें इस लेखनकला से ही जीवन निर्वाह करना है, उन्हें यह विशेष सुविधाप्रद एवं लाभदायक है कि वे हिन्दी की भगिनी भाषाओं से ही अनुवाद करके थोड़े समय में ही अधिक द्रव्योपार्जन कर लें। यही कारण है कि आज हिन्दी में बंगभाषा के अनुवादों की भरमार दीख रही है, और सुदूरवर्ती भाषाओं से अनुवाद किये हुए ग्रन्थ बहुत ही कम दृष्टिगोचर होते हैं।"[५]

प्रेमपरीक्षा

सन् १९२९ ई० में मेरी कॉरेली के 'दि ट्रेजर ऑफ हेवन' नामक उपन्यास का पशुपाल वर्मा कृत 'प्रेमपरीक्षा' शीर्षक अनुवाद गंगा पुस्तकमाला कार्यालय, बम्बई से प्रकाशित हुआ।[६] इसे भी अनुवाद कहने की अपेक्षा 'रूपान्तर' कहना उचित है। इस

१. प्रतिशोध, ले० मेरी कॉरेली, अनु० बाबूराम मिश्र, प्र० हिन्दी पुस्तक एजेन्सी, कलकत्ता, सं० १९८४, निवेदन।

२. प्रा० स्वा०—आ० भा० पु० काशी तथा सिनहा पुस्तकालय, पटना। मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—कर्मफल अथवा पाप का प्रतिकार, सुप्रसिद्ध उपन्यासलेखिका मेरी कारेली के 'वेंडेट्टा' नामक उपन्यास के आधार पर, लेखक—प्रो० वैजनाथ कोटो (भू० पू० संपादक 'योगी') प्र० गंगा पुस्तकमाला कार्यालय लखनऊ, प्रथम बार संवत् १९८५ वि०, पृ०सं० ३२४।

३. उपरिवत्, प्रस्तावना।

४. उपरिवत्।

५. उपरिवत्।

६. प्रा० स्वा—आ० भा० पु० काशी तथा सिनहा पुस्तकालय, पटना। मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—प्रेमपरीक्षा (सुप्रसिद्ध उपन्यास लेखिका श्रीमती मेरी कॉरेली के The Treasure of Heaven का

फुटकल अनूदित सामाजिक उपन्यास

अभागिनी

सन् १९१८ ई० में बँगला उपन्यासकार भवानीचरण घोष के 'सरमार सुख', नामक उपन्यास का चंडिका प्रसाद मिश्र द्वारा किया हुआ 'अभागिनी' शीर्षक अनुवाद हरिदास एंड कम्पनी, कलकत्ता से प्रकाशित हुआ।[1] 'निवेदन' के अनुसार यह एक 'स्वतन्त्र अनुवाद' है।[2] इस उपन्यास में हिन्दू विधवाओं के सामाजिक बन्धनों, प्रलोभनों तथा कठिनाइयों का वर्णन किया गया है।

विरागिनी

सन् १९१९ ई० में 'तपस्विनी' नामक बँगला उपन्यास का पं० चंडिका प्रसाद मिश्र कृत 'विरागिनी' शीर्षक अनुवाद हरिदास एंड कम्पनी, कलकत्ता से प्रकाशित हुआ।[3] उपन्यास की 'विवृत्ति' से पता चलता है कि यह मूल का अविकल अनुवाद नहीं है।[4] इस उपन्यास में दाम्पत्तिक साम्यवाद का चित्रण किया गया है।

अदृष्ट

इसी वर्ष बँगला उपन्यासकार तारकनाथ गंगोपाध्याय के किसी उपन्यास का पं० रामेश्वर प्रसाद पाण्डेय द्वारा प्रस्तुत किया हुआ 'अदृष्ट' शीर्षक अनुवाद हरिदास एंड कम्पनी, कलकत्ता से प्रकाशित हुआ।[5]

बलिदान

सन् १९१९ ई० में ही दुर्गाप्रसाद खत्री ने 'बलिदान' नामक एक सामाजिक उपन्यास लहरी प्रेस, काशी से प्रकाशित किया था, पर मुखपृष्ठ पर प्रदत्त सूचनाओं से

---

१. प्रा० स्था—आ० भा० पु० काशी। मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—अभागिनी, अनुवादक—चण्डिका प्रसाद मिश्र, प्रकाशक—हरिदास एंड कम्पनी, कलकत्ता, २०१, हरिसन रोड के 'नरसिंह प्रेस' में बाबू राम प्रताप भार्गव द्वारा सन् १९१८ ई०, प्रथम वार १०००, पृ० सं० १८६।

२. उपरिवत्, निवेदन।

३. प्रा० स्था०—आ० भा० पु० काशी। मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—विरागिनी, अनुवादक—पं० चण्डिका प्रसाद मिश्र, प्रकाशक—हरिदास एंड कम्पनी, कलकत्ता, २०१, हरिसन रोड के नरसिंह प्रेस में बाबू रामप्रताप भार्गव द्वारा मुद्रित, सन् १९१९, प्रथम वार १०००।

४. उपरिवत्, विवृत्ति।

५. प्रा० स्था०—आ० भा० पु० काशी। मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—प्रसिद्ध औपन्यासिक श्री तारक नाथ गंगोपाध्याय कृत अदृष्ट (पारिवारिक उपन्यास), अनुवादक—पं० रामेश्वर प्रसाद पांडेय, प्रकाशक—हरिदास एंड कम्पनी, कलकत्ता, २०१, हरिसन रोड के नरसिंह प्रेस में बाबू रामप्रताप भार्गव द्वारा मुद्रित, सन् १९१९, प्रथम वार १०००, पृ० सं० ३४६।

माता

सन् १९१९ ई० में ही ज्ञानचन्द विद्यार्थी लिखित 'माता' नामक उपन्यास राम प्रसाद एंड ब्रदर्स, आगरा से प्रकाशित हुआ।[1] उपन्यास की 'प्रस्तावना' से ज्ञात होता है कि यह अँगरेजी की 'दि ज्वॉय ऑफ वेल डाइंग' नामक पुस्तक के अधार पर रचित है।[2] इस उपन्यास में एक माता के आदर्श चरित्र का चित्रण किया गया है।

नन्दन भवन

सन् १९१९ ई० में ही लक्ष्मीनाथ पाठक लिखित 'नन्दन भवन' नामक उपन्यास स्वयं लेखक द्वारा कलकत्ता से प्रकाशित हुआ।[3] उपन्यास के 'वक्तव्य' से ज्ञात होता है कि यह किसी मराठी पुस्तक के आधार पर रचित है।[4] इस उपन्यास में स्त्रीशिक्षा, प्रेमविवाह आदि का प्रतिपादन किया गया है।

कोहनूर

सन् १९१९ ई० में ही पं० अम्बिका प्रसाद जी चतुर्वेदी रचित 'कोहनूर' नामक उपन्यास का पं० गरीबदास अग्निहोत्री द्वारा प्रस्तुत किया हुआ अनुवाद हरिदास एंड कम्पनी, कलकत्ता, से प्रकाशित हुआ। आर्यभाषा पुस्तकालय में इस उपन्यास की प्रति उपलब्ध है, पर उसमें मुखपृष्ठ न रहने के कारण अन्य सूचनाएँ नहीं मिलतीं। उपर्युक्त सूचनाएँ अनुवाद के 'निवेदन' और आ० भा० पु० की पुस्तक-सूची से प्राप्त की गयी हैं। डा० माता प्रसाद गुप्त ने अपने 'हिन्दी पुस्तक साहित्य' में इसका उल्लेख मौलिक उपन्यास के रूप में किया है।[5] इस उपन्यास में अपराधप्रधान घटनाओं, स्त्रियों को बहकाने तथा भगानेवाली घटनाओं के वर्णन की अधिकता दिखाई पड़ती है। कथा में चुम्बन, आलिंगन तथा कामुकतापूर्ण वर्णनों की प्रधानता है।

जारीना

मई १९१९ ई० में पं० विश्वम्भर नाथ शर्मा 'कौशिक' द्वारा फ्रेंच भाषा से अनूदित 'जारीना' नामक उपन्यास बीसवीं सदी पुस्तकमाला, कानपुर से प्रकाशित हुआ।[6] पुस्तक के मुखपृष्ठ पर न इसे अनुवाद बताया गया है न मूल लेखक और उपन्यास का

---

१. प्रा० स्था०—वि० रा० भा० प० पु०, पटना। मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—माता, लेखक—ज्ञानचन्द विद्यार्थी, प्रकाशक—राय प्रसाद एंड ब्रदर्स, आगरा, शांति प्रेस, आगरा, प्रथमावृत्ति १९१९ ई०।

२. उपरिवत्, प्रस्तावना।

३. प्रा० स्था०—मा० पु० पटना। मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—नन्दन भवन, लेखक और प्रकाशक—लक्ष्मीनाथ पाठक, ५३ नं० मुक्ताराम बाबू स्ट्रीट (चोर बागान), कलकत्ता, प्रथम बार १००० प्रतियाँ, सं० १९७६ वि०।

४. उपरिवत्, वक्तव्य।

५. डॉ० माताप्रसाद गुप्त, हिन्दी पुस्तक साहित्य, पृ० ३७६।

६. प्रा० स्था०—वि० रा० भा० प० पु० पटना। मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—जारीना (रूप की

के साथ दी है कि देख कर दंग रह जाना पड़ता है। डॉ० गीता लाल ने अपने निबन्ध में इन भ्रान्तियों का उल्लेख किया है; साथ ही उन्होंने प्रेमचन्द से सम्बद्ध तिथियों की प्रामाणिक सूचना देने का भी प्रयत्न किया है।

पर डॉ० गीता लाल ने प्रेमचन्द के उपन्यासों की प्रकाशन-तिथियों से सम्बद्ध जो सूचनाएँ दी हैं, वे अधूरी हैं और उनमें कुछ दोषपूर्ण और कुछ शुद्ध होते हुए भी पुष्ट प्रमाण युक्त नहीं हैं।

सेवा सदन

'सेवा सदन' हिन्दी पुस्तक एजेन्सी, कलकत्ता से १९१८ ई० में प्रकाशित हुआ था। इस उपन्यास का प्रथम संस्करण चैतन्य पुस्तकालय, गायघाट, पटना सिटी, में उपलब्ध है,[1] जिसके मुखपृष्ठ पर इसका प्रकाशन-काल 'प्रथम बार, संवत् १९७५' मुद्रित है।

'सेवा सदन' की प्रकाशन तिथि के सम्बन्ध में हिन्दी आलोचकों और शोधकर्ताओं ने असावधानी का खूब परिचय दिया है। हंसराज रहबर के अनुसार 'सेवा सदन (बाजारे हुस्न) शायद १९१४ में' छपा था।[2] श्री ब्रजरत्न दास के अनुसार 'सं० १९७१ के लगभग बाजारे-हुस्न का हिन्दी रूपान्तर सेवा-सदन...निकला।'[3] डॉ० इन्द्रनाथ मदान ने 'सेवासदन' का प्रकाशन-काल १९१४ ई० बताया है।[4] डॉ० राजेश्वर गुरु के अनुसार 'सेवा-सदन' प्रेमचन्द की और सम्भवत: हिन्दी की वह अद्भुत कृति है, जिसने १९१६-१७ में हिन्दी पाठकों का ध्यान अपनी ओर आकृष्ट किया था।'[5] अन्य आलोचकों की बात हम छोड़ भी दें, पर एक शोधकर्ता से, जिसके अध्ययन का विषय प्रेमचन्द और उनके उपन्यास हैं, इस प्रकार के उत्तरदायित्व शून्य कथन की अपेक्षा हम नहीं रखते।

डॉ० श्रीकृष्ण लाल,[6] डॉ० प्रतापनारायण टंडन,[7] डॉ० गीता लाल,[8] तथा

---

१. मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—सेवा-सदन; लेखक—"सप्त सरोज, नवनिधि, शेख सादी आदि के चयिता श्रीयुक्त प्रेमचन्द; प्रकाशक—हिन्दी पुस्तक एजेंसी, १२६ हरिसन रोड, कलकत्ता; प्रथम बार, वत् १९७५; २॥); पृष्ठ संख्या ५१० के लगभग।"

२. हंसराज रहबर, प्रेमचन्द : जीवन और कृतित्व, पृ० ८०।

३. ब्रजरत्न दास, हिन्दी उपन्यास साहित्य, पृ० १८५।

४. डॉ० इन्द्रनाथ मदान, प्रेमचन्द : एक विवेचन, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली, पृ० ४४।

५. डॉ० राजेश्वर गुरु, प्रेमचन्द : एक अध्ययन, पृ० १४०।४७।

६. डॉ० श्रीकृष्ण लाल, आधुनिक हिन्दी साहित्य का विकास, पृ० ३१२।

७. डॉ० प्रतापनारायण टंडन : हिन्दी उपन्यास में शिल्पविधि का विकास, पृ० २८१।

८. डॉ० गीतालाल, प्रेमचन्द के जीवन तथा साहित्य सम्बन्धी तिथियों में भ्रान्तियाँ, साहित्य, जनवरी १९६०।

पुस्तक का। प्रकाशन काल भी नहीं हुआ है। 'निवेदन' में अनुवादक ने बताया है कि "कुछ दिन पूर्व उसने बँगला का कोई उपन्यास पढ़ा था। उसके मन में उसका हिन्दी अनुवाद प्रस्तुत करने की इच्छा उत्पन्न हुई, पर वह पुस्तक न मिली। अतः बाध्य होकर पुस्तक की जो कुछ घटनाएँ, बातें तथा चरित्र आदि मेरे ध्यान में थे उन्हीं के सहारे यह पुस्तक लिखकर हिन्दी पाठकों की सेवा में मैंने अर्पण की है।"[१] 'सरस्वती' (जून १९२० ई०) में इस उपन्यास की समीक्षा प्रकाशित हुई थी[२] जिससे अनुमान किया जा सकता है कि १९२० ई० में अथवा उसके निकट अतीत में यह उपन्यास प्रकाशित हुआ होगा।

प्रेमकान्त

सन् १९२० ई० में अँगरेजी साहित्य के प्रसिद्ध कवि, नाटककार और उपन्यासकार ओलिवर गोल्डस्मिथ के 'विकार ऑफ वेकफील्ड' नामक उपन्यास के आधार पर श्री ऋपीश्वर नाथ भट्ट द्वारा लिखित 'प्रेमकान्त' नामक उपन्यास सुलभ ग्रन्थ प्रचारक मंडल, कलकत्ता से प्रकाशित हुआ।[३] पुस्तक के मुखपृष्ठ पर मूल लेखक, मूल उपन्यास, तथा प्रकाशन-काल सम्बन्धी सूचना नहीं दी हुई है। ये सूचनाएँ अनुवाद की 'भूमिका'से प्राप्त की गयी है। 'भूमिका' के नीचे 'अगस्त ३१-१-२०' मुद्रित है। रूपान्तरकार के अनुसार "मूल पुस्तक में विलायती जन समाज और गृहस्थाश्रम का बड़ा मनोरंजक चित्र खींचा गया है; पर यदि उसका अविकल अनुवाद हिन्दी पाठकों की भेंट किया जाता, तो उनको कुछ भी रोचक न लगता; क्योंकि देश देश के आदर्श, प्रथा तथा रीति-रिवाज जुदा जुदा होते हैं। इसी कारण मैंने 'विकार ऑफ वेकफील्ड' को केवल आधार मानकर प्रस्तुत पुस्तक को लिखा है।"[४]

छिन्नलता वा मुरझाई कली (छिन्न मुकुल)

सन् १९२० ई० में स्वर्णकुमारी देवी के 'छिन्न मुकुल' नामक उपन्यास का 'छिन्नलता वा मुरझाई कली' शीर्षक अवनुाद प्रकाशित हुआ था। प्रस्तुत पंक्तियों का लेखक इस अनुवाद को प्राप्त करने में असमर्थ रहा है। उपर्युक्त सूचनाएँ श्री जगदीश झा विमल लिखित 'निर्धन की कन्या' नामक उपन्यास (१९२० ई०) के अन्तिम पृष्ठ पर मुद्रित विज्ञापन से प्राप्त की गयी हैं। विज्ञापन के अनुसार उस समय यह अनुवाद छप रहा था।[५]

१२, मंडल, हरि सरकार लेन, कलकत्ता, पृ० सं० २६२

१. उपरिवत्, निवेदन।

२. सरस्वती, भाग २१, संख्या ६, जून १९२० ई०, 'भाग्य चक्र' (पुस्तक समीक्षा)

३. प्राप्ति स्थान—आर्यभाषा पुस्तकालय, काशी। मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—प्रेमकान्त, लेखक—ऋपीश्वर नाथ भट्ट, वकील हाईकोर्ट, प्रकाशक—सुलभ ग्रन्थ प्रचारक मंडल, १३, शंकर घोष लेन, शिमला, कलकत्ता, प्रथम बार, पृ० सं० १८६।

४. उपरिवत्, भूमिका।

५ निर्धन की कन्या, ले० जगदीश झा 'विमल', १९२० ई०, छिन्नलता वा मुरझाई कली, (विज्ञापन)

अनुवाद 'टूटी कली' शीर्षक से गृहलक्ष्मी कार्यालय, इलाहाबाद से प्रकाशित हुआ। 'आर्य भाषा पुस्तकालय में इस अनुवाद की एक प्रति उपलब्ध है पर मुखपृष्ठ के न रहने के कारण पुस्तक के सम्बन्ध में कोई सूचना नहीं मिल पाती। उपर्युक्त सूचनाएँ आ० भा० पु० की पुस्तक सूची से प्राप्त की गयी हैं।

इस प्रकार 'छिन्न मुकुल' के कुल मिलाकर चार अनुवाद और कम से कम पाँच संस्करण, जिनकी सूचना ऊपर दी गयी है, लगभग १० वर्षों के अन्तर्गत प्रकाशित हुए थे। इससे सिद्ध होता है कि यह उपन्यास हिन्दी पाठकों के बीच काफी लोकप्रिय हुआ था।

दयावती

१९२० ई० में ही मेजर वामन दास वसु के किसी उपन्यास का श्रीमती गोपाल देवी द्वारा प्रस्तुत किया हुआ, 'दयावती' शीर्षक अनुवाद गृहलक्ष्मी कार्यालय, प्रयाग से प्रकाशित हुआ।[१] इस पुस्तक के भी मुखपृष्ठ पर इसके अनुवाद होने की सूचना नहीं दी हुई है। भूमिका में सूचना दी हुई है कि "दयावती' नामक इस पुस्तक का भी मूल लेखक वही ग्रन्थकार ('लक्ष्मीबहू' के लेखक मेजर वामन दास वसु)[२] है और अनुवादक भी वही गृहलक्ष्मी की सहकारी सम्पादिका श्रीमती गोपाल देवी हैं।"[३]

कर्म्ममार्ग

इसी वर्ष हरिदास हलधर कृत किसी उपन्यास का गोपाल राम द्वारा प्रस्तुत 'कर्म-मार्ग' शीर्षक अनुवाद गहमर, गाजीपुर से अकबाल बहादुर द्वारा प्रकाशित किया गया।[४] 'प्रभा' (नवम्बर १९२०) में प्रकाशित विवेच्य उपन्यास की समीक्षा से ज्ञात होता है कि "इसका हिन्दी अनुवाद 'कर्मपथ' नाम से पहले भी प्रकाशित हो चुका है। यह दूसरा अनुवाद है। एक ही उपन्यास पुस्तक के आगे पीछे दो अनुवाद प्रकाशित होना हिन्दी साहित्य के लिए एक विचित्र बात है। हमारी तुच्छ सम्मति में इसमें कोई विशेषता नहीं कि जिसके कारण एक साथ उसके दो-दो अनुवाद प्रकाशित किए जाएँ। इसमें सन्देह नहीं कि बाबू हरिदास हलधर बँगला के लब्धख्यात लेखक हैं परन्तु हमारा विचार है कि इस उपन्यास के लिखने में वे अपनी कीर्ति स्थिर रखने में सफल नहीं हुए।"[५]

सुखदास

सन् १९२० ई० में ही जार्ज इलियट के 'साइलस माइनर' नामक उपन्यास के

---

१. प्राप्ति स्थान—आर्यभाषा पुस्तकालय, काशी। मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—दयावती, स्त्री पाठ्य अनुपम उपन्यास, श्रीमती गोपाल देवी, प्रकाशक—श्रीयुत पं० सुदर्शनाचार्य, बी०ए०, 'गृहलक्ष्मी' कार्यालय प्रयाग, प्रथम संस्करण १९२०, पृ० सं० ७६।

२. कोष्ठक के भीतर के शब्द मेरे हैं।

३. दयावती, श्रीमती गोपाल देवी, गृहलक्ष्मी कार्यालय, प्रयाग १९२०, भूमिका।

४. प्रभा, वर्ष १, खंड २, संख्या ५, १ नवम्बर १९२०, कर्ममार्ग (पुस्तक समीक्षा)।

५. प्रभा, वर्ष १, खंड २, संख्या ५, नवम्बर १९२०, कर्ममार्ग पुस्तक परिचय)

होमर गाथा

सन् १९२१ ई० में गिरिजा कुमार घोष लिखित 'होमर गाथा' नामक पुस्तक साहित्य भवन लिमिटेड, प्रयाग से प्रकाशित हुई।[1] इस पुस्तक में होमर लिखित प्रसिद्ध महाकाव्यों—इलियड और ओडेसी की संक्षिप्त कथाएं सम्मिलित की गयी हैं।

सरस्वतीचन्द्र

सन् १९२१ ई० में ही गुजराती भाषा के प्रसिद्ध उपन्यासकार गोवर्द्धन राम माधव राम त्रिपाठी के 'सरस्वतीचन्द्र' नामक उपन्यास के प्रथम भाग का पं० गिरिधर शर्मा और पं० दयाशंकर झा द्वारा प्रस्तुत किया हुआ अनुवाद हिन्दी साहित्य सभा, झालरा पाटन शहर से प्रकाशित हुआ।[2] इस उपन्यास का दूसरा भाग हिन्दी में अनूदित हुआ या नहीं, इसका पता प्रस्तुत पंक्तियों में लेखक को नहीं है।

सुरबाला वा देवकी

सन् १९२१ ई० में ही बाबू वैद्यनाथ सहाय द्वारा अनूदित 'सुरबाला देवकी' नामक उपन्यास उपन्यास बहार आफिस, काशी से प्रकाशित हुआ।[3] पुस्तक में मूल उपन्यास अथवा लेखक का नाम नहीं दिया हुआ है।

प्रेम मन्दिर

इसी वर्ष श्री श्रीपति प्रभाकर भसे के किसी उपन्यास का दशरथ बलवन्त द्वारा प्रस्तुत 'प्रेम मन्दिर' शीर्षक अनुवाद साहित्य सागर सीरीज, बरुआ से प्रकाशित हुआ।[4] मुखपृष्ठ पर मूल उपन्यास अथवा लेखक का नाम नहीं दिया हुआ है। 'निवेदन' में

---

१. प्राप्ति स्थान—आर्यभाषा पुस्तकालय, काशी। मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—होमरगाथा, लेखक—गिरिजा कुमार घोष, प्रकाशक—साहित्य भवन लिमिटेड, प्रयाग, पहला संस्करण १५०० प्रतियाँ, फाल्गुन १९७७, पृ० सं० १६०

२. प्राप्ति स्थान—राष्ट्रभाषा परिषद् पुस्तकालय, पटना, मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—सरस्वती चन्द्र, गुजराती के अमर औपन्यासिक गोवर्द्धन राम माधव राम त्रिपाठी के सर्व श्रेष्ठ 'सरस्वती चन्द्र' का हिन्दी अनुवाद, (प्रथम भाग), पूर्वार्द्ध, अनुवादक—श्री पं० गिरिधर शर्मा (नवरत्न) व पं० दयाशंकर जी झा, प्रकाशिका—श्रीराजपूताना हिन्दी साहित्य सभा, झालरा पाटन शहर, प्रथम बार १५००, संवत् १९७८, पृ० सं० २८२।

३. प्रा० स्था०—आ० भा० पु० काशी। मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—सुरबाला वा देवकी, अनुवादक श्रीयुत बा० बैद्यनाथ सहाय, आरा, प्रकाशक उपन्यास बहार आफिस, काशी, बनारस, प्रथम बार पं० राम नसीब द्वारा, चन्द्रप्रभा प्रेस में मुद्रित, मई सन् १९२१, पृ० सं० ४२।

४. प्रा० स्था०—आ० भा० पु० काशी, मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—प्रेम मन्दिर, एक आदर्श समाज के शिक्षापूर्ण चरित्र का बड़ी रोचकता से दिग्दर्शन कराया गया है। लेखक—श्रीयुत दशरथ बलवन्त (यादव), देवकी कलां, सागर, सी० पी०, सन् १९२१ ई०, प्रथमा वृत्त, संपादक और प्रकाशक कुमार महेश्वर वत्स सिंह, सरस्वती साहित्य सागर सीरीज, बरुआ, पो० आ० संदीला, डिस्ट्रिक्ट हरदोई, यू० पी०।

ग्राही और प्रभावशाली शब्दों में किया है कि जिसे पढ़ते ही मन कहीं आनन्द सागर में तैरने लगता है कहीं शोक समुद्र में निमग्न हो जाता है"[१]

सुशीला चरित

सन् १९२२ ई० में बँगला उपन्यासकार श्री मधुसूदन मुखोपाध्याय कृत 'सुशीला उपन्यास' नामक उपन्यास का जनार्दन झा द्वारा प्रस्तुत 'सुशीला चरित' शीर्षक अनुवाद का संशोधित संस्करण इंडियन प्रेस, प्रयाग से प्रकाशित हुआ।[२] प्रस्तुत पंक्तियों का लेखक इसके प्रथम संस्करण या उससे सम्बद्ध कोई सूचना प्राप्त करने में असमर्थ रहा है।

सुरेन्द्र

१९२२ ई० में ही श्री नाथूराम शालिग्राम द्वारा गुजराती 'सच्चा मित्र' से अनूदित 'सुरेन्द्र' नामक उपन्यास नाथूराम शालिग्राम द्वारा शाजापुर, ग्वालियर से प्रकाशित हुआ।[३] पुस्तक के मुखपृष्ठ पर मूल लेखक का नाम नहीं दिया गया है।

अपूर्व आत्मत्याग

सन् १९२१ ई० में अथवा उसके कुछ पूर्व सुरेन्द्र मोहन भट्टाचार्य ने किसी बँगला उपन्यास का श्रीकृष्ण लाल वर्मा द्वारा प्रस्तुत किया गया 'अपूर्व आत्मत्याग' शीर्षक अनुवाद ग्रन्थ भांडार, लेडी हार्डिज रोड, माँटूंगा, बम्बई से प्रकाशित हुआ।[४] यह किस उपन्यास का अनुवाद है, यह नहीं ज्ञात हो पाता।

रानी जयमती

१९२२ ई० में ही श्री शरच्चन्द्र बर के 'रानी जयमती' नामक बँगला उपन्यास का श्री युधिष्ठिर प्रसाद सिंहानिया 'कोविद' तथा श्री गोपाल नेवटिया 'कोविद' कृत अनुवाद श्री स्वदेश सभा, फतेहपुर, जयपुर से प्रकाशित हुआ।[५]

बलिदान

सन् १९२२ ई०में ही फ्रांस के प्रसिद्ध उपन्यासकार विक्टर ह्यूगो के 'नाइन्टीथ्री' नामक

अनुवाद, अनुवादक श्री सूर्य नारायण सिंह, सीखड़, मिर्जापुर, प्रथमवार १०००, विक्रम संवत् १९७८।

१. उपरिवत्, भूमिका।

२. प्रा० स्था—आ० भा० पु० काशी। मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—स्त्री सुशीला चरित, गृहस्थ धर्म की शिक्षा से युक्त स्त्री पाठ्य उपन्यास श्री मधुसूदन मुखोपाध्याय प्रणीत बँगला पुस्तक का हिन्दी अनुवाद, अनुवादक श्री जनार्दन झा, प्रकाशक इंडियन प्रेस, लिमिटेड प्रयाग, १९२२, प्रथम संस्करण।

३. प्रा० स्था०-आ० भा० पु० काशी। मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—सुरेन्द्र (गुजराती के 'सच्चा मित्र' से अनुवादित), अनुवादक श्रीयुत नाथूराम शालिग्राम (गोभुज), शाजापुर, ग्वालियर. प्रकाशक हिन्दी ग्रन्थ भण्डार कार्यालय, बनारस सिटी, प्रथम वार २०००, १९२२।

४. सरस्वती, नवम्बर १९२१, अपूर्व आत्म त्याग (पुस्तक-परीक्षा)।

५. प्राप्ति स्थान—आर्य भाषा पुस्तकालय, मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—'ललित लता' का द्वितीय पुष्प, रानी जयमती, सामाजिक शिक्षाप्रद, उपन्यास, बँगला, के सुप्रसिद्ध लेखक श्री शरच्चन्द्र बर प्रणीत "रानी जय मती" नामक ग्रन्थ का हिन्दी अनुवाद, अनुवादक युधिष्ठिर प्रसाद, सिंहानिया

तारा

सन् १९२३ ई० में रूप नारायण पांडेय द्वारा बँगला के "शैशव सहचरी" नामक उपन्यास के आधार पर लिखित 'तारा' शीर्षक उपन्यास का द्वितीय संस्करण इंडियन प्रेस, प्रयाग से प्रकाशित हुआ।[1] प्रस्तुत पंक्तियों का लेखक इस उपन्यास के प्रथम संस्करण को प्राप्त करने में असमर्थ रहा है। दूसरे संस्करण के 'वक्तव्य' से ज्ञात होता है कि "यह उपन्यास स्वर्गीय रायबहादुर बंकिम चन्द्र चट्टोपाध्याय के छोटे भाई के लिखे "शैशव सहचरी" उपन्यास के अनुकरण पर लिखा गया है। 'शैशव सहचरी' का कुछ प्लाट लेकर अपने ढंग पर यह उपन्यास लिखा गया है; अतएव जो कुछ इसमें दोष रह गये हों उनके लिए मैं ही जिम्मेदार हूँ।"[2]

कमला

सन् १९२३ ई० में ही पं० मणीराम शर्मा द्वारा बँगला से अनूदित 'कमला' नामक उपन्यास का द्वितीय संस्करण ओंकार प्रेस, प्रयाग से प्रकाशित हुआ।[3] प्रस्तुत पंक्तियों का लेखक इस अनुवाद के प्रथम संस्करण को प्राप्त करने में असमर्थ रहा है। दूसरे संस्करण के मुखपृष्ठ पर मूल उपन्यासकार अथवा मूल उपन्यास का नाम नहीं दिया हुआ है।

एम० ए० बना के क्यों मेरी मिट्टी खराब की

सन् १९२३ ई० में छन्नू लाल द्विवेदी द्वारा अनूदित 'एम० ए० बना के क्यों मेरी मिट्टी खराब की' नामक उपन्यास पुस्तक भवन, बनारस से प्रकाशित हुई। आर्य भाषा पुस्तकालय, काशी में इस उपन्यास की एक प्रति उपलब्ध है, पर उसके मुखपृष्ठ के नष्ट हो जाने के कारण अनुवादक के नाम के अतिरिक्त और कोई सूचना नहीं प्राप्त होती। शेष सूचनाएँ आ० भा० पु० की पुस्तक-सूची से प्राप्त की गयी हैं। ३५९ पृष्ठों के उपन्यास में विदेशी शिक्षा प्रणाली के दोष दिखाये गये हैं।

औरतों की दूकान : रागिनी

सन् १९२३ ई० में ही ठाकुरदत्त मिश्र द्वारा अनूदित 'औरतों की दूकान' नामक उपन्यास पुस्तक भवन, बाँकीपुर से तथा वामन मल्हार राव जोशी के किसी उपन्यास का हरिभाऊ उपाध्याय द्वारा प्रस्तुत किया हुआ 'रागिनी' नामक उपन्यास हिन्दी

---

१. प्राप्ति स्थान—आर्यभाषा पुस्तकालय, काशी; मुखपृष्ठ से प्राप्त सूचना—तारा, मनोरंजक, शिक्षाप्रद और सामाजिक उपन्यास, लेखक रूप नारायण पाडेय, प्रकाशक इंडियन प्रेस, लिमिटेड प्रयाग, द्वितीय बार १९२३।

२. उपरिवत्, वक्तव्य।

३. प्राप्ति स्थान-आर्यभाषा पुस्तकायल, काशी मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि-कमला स्त्री, शिक्षा की एक आदर्श पुस्तक, अनुवादक-पं० मणीराम शर्मा, प्र०-पं० विश्वंभर नाथ बाजपेयी, ओंकार प्रेस, प्रयाग, स०-१९२३ ई०, द्वितीय बार, पृ० सं० ३२२।

समाज कंटक या मामा

इसी वर्ष उड़िया उपन्यासकार 'सरस्वती' फकीर मोहन सेनापति के किसी उपन्यास का पांडेय मुरलीधर और पांडेय मुकुटधर शर्मा द्वारा प्रस्तुत 'समाज-कंटक या मामा' नामक उपन्यास रिखवदास वाहिती द्वारा कलकत्ता से प्रकाशित हुआ ।[1]

हृदय श्मशान

सन् १९२४ ई० में ही हेमेन्द्र प्रसाद घोष के 'हृदय श्मशान' शीर्षक बँगला उपन्यास का पं० कात्यायनी दत्त त्रिवेदी द्वारा प्रस्तुत 'हृदय श्मशान' शीर्षक अनुवाद नवल किशोर बुक डिपो, लखनऊ से प्रकाशित हुआ ।[2] 'परिचय' से मूल उपन्यास और उसके लेखक का नाम ज्ञात होता है । इस उपन्यास में एक दम्पति के पारस्परिक सम्बन्धों का स्वाभाविक चित्रण प्रस्तुत किया गया है और यह सिद्ध किया गया है कि पति और पत्नी का शिक्षित होना ही गार्हस्थ्य सुख का प्रधान कारण नहीं है वलिक परस्पर स्नेह होना ही पारिवारिक आनन्द की कुंजी है ।

पाप की छाप

सन् १९२४ ई० में ही पारसनाथ त्रिपाठी ने 'पापेर छाप' नामक बँगला उपन्यास का 'पाप की छाप' शीर्षक से हिन्दी अनुवाद प्रस्तुत किया जो १९२७ ई० में लक्ष्मी पुस्तकालय, बनारस से प्रकाशित हुआ । आ० भा० पु० काशी में इस उपन्यास की एक प्रति है पर उसके मुखपृष्ठ के नष्ट हो जाने से कोई सूचना नहीं मिल पाती । उपन्यास के 'निवेदन' के अन्त में "आषाढ़ शुक्ल ११ सं० १९८१" मुद्रित रहने से इसका अनुवाद-काल ज्ञात होता है । निवेदन से ही मूल उपन्यास का नाम भी मालूम होता है । शेष सूचनाएँ आ० भा० पु० काशी की पुस्तक सूची से प्राप्त की गयी हैं ।

लक्ष्मी

सन् १९२४ ई० में ही विधुभूषण वसु के 'लक्ष्मी मेये' नामक उपन्यास का श्री गिरिजा कुमार घोष द्वारा प्रस्तुत किया हुआ 'लक्ष्मी' शीर्षक अनुवाद गंगा पुस्तक-

---

हजरत गंज, लखनऊ, 'मुद्रक श्री केसरी दास सेठ नवल किशोर प्रेस, लखनऊ, प्रथम बार १०००, सन् १९२४, पृ० सं० ५४ ।

१. प्रा० स्था०—आ० भा० पु० काशी । मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—समाज-कंटक या मामा, सचित्र सामाजिक उपन्यास, लेखक "सरस्वती" फकीर मोहन सेनापति, अनुवादक—पाण्डेय मुरलीधर और पाण्डेय मुकटधर शर्मा, प्रकाशक रिखब दास वाहिती, प्रोप्राइटर—"दुर्गा प्रेस" और आर० डी० वाहिती एण्ड को०, नं०४, चोर बागान, कलकत्ता, प्रथम बार सन् १९२४ ।

२. प्रा० स्था०—आ० भा० पु० काशी । मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि–हृदय-श्मशान (बंग भाषा के एक प्रसिद्ध पारिवारिक उपन्यास का हिन्दी रूपान्तर) रूपान्तरकार--हिन्दी के ख्यातनाम और लब्धप्रतिष्ठ लेखक पं० कात्यायनी दत्त त्रिवेदी, प्रकाशक नवल किशोर बुक डिपो, हजरत गंज, लखनऊ, मुद्रक-श्री केसरी दास सेठ, नवल किशोर प्रेस, लखनऊ, प्रथम बार १०००, सन् १९२४, पृ० सं० ८० ।

संपादक ने लिखा था : 'अनुवादक महाशय की भाषा आच्छी नहीं है......उपन्यास साधारण श्रेणी का है। इसका अनुवाद ही क्यों हुआ ? अनुवादनीय अलौकिकता तो इसमें है नहीं।''[1]

घातक सुधा

सन् १९२५ ई० में बालजक के 'डानजुआन' नामक उपन्यास का श्री रघुपति सहाय द्वारा प्रस्तुत किया हुआ 'घातक सुधा' शीर्षक अनुवाद भार्गव पुस्तकालय, गायघाट, बनारस से प्रकाशित हुआ[2] यह अनुवाद पहले 'स्वदेश' नामक पत्र में क्रमशः प्रकाशित हुआ था।[3]

अमरपुरी

सन् १९२५ ई० में ही सी०एच० हालकेन के प्रसिद्ध उपन्यास 'द एटर्नल सिटी' का पं० श्रीकृष्णदत्त पालीवाल कृत 'अमरपुरी' शीर्षक अनुवाद सैनिक पुस्तक भंडार, आगरा से प्रकाशित हुआ[4]। यह अविकल अनुवाद न होकर स्वतन्त्र अनुवाद है। स्वयं अनुवादक के शब्दों में "आप अनुवाद कहिए या और कुछ। कुछ बातें छोड़ भी दी हैं— थोड़ी सी, पुस्तक बढ़ जाने के डर से और शेष, अनावश्यक समझकर। जैसे पवित्र रोम साम्राज्य का अन्तिम अध्याय पूरा का पूरा छोड़ दिया गया है; क्योंकि उसे छोड़ देने से कुछ हानि नहीं होती। इसी तरह कुछ और अध्याय जोड़ दिए गए हैं। कहीं कहीं पैरा छोड़े गये हैं। कहीं कहीं वर्णन संक्षेप में कर दिया गया है। अगर ऐसा न किया जाता, अगर सब बातें लिखी जातीं तो अस्सी फार्मों में भी शायद ही समाप्त हो पातीं। इस छोड़ाछोड़ी में इस बात का पूरा पूरा ध्यान रखा गया है कि उपन्यास का कथानक और प्रभाव न बिगड़ने पावे।"[5]

उर्वशी

सन् १९२५ ई० में ही महाकवि कालिदास के 'विक्रमोर्वशीय' नामक नाटक के अधार पर कविराज जयगोपाल द्वारा लिखित 'उर्वशी' नामक गद्यकथा शिरोमणि

---

१. प्रभा, अप्रैल १९२५, ऋणपरिशोध (पुस्तक परिचय)

२. प्राप्ति स्थान—चैतन्य पुस्तकालय, गाय घाट, पटना सिटी। मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—घातक सुधा (एच० डी० बालजक के एक आध्यात्मिक फ्रेंच कहानी का सरल- सरस अनुवाद), अनुवादक—श्री रघुपति सहाय, बी० ए०, प्रकाशक भार्गव पुस्तकालय, गायघाट, बनारस १९८२ वै०, प्रथमावृत्ति।

३. उपरिवत्, भूमिका।

४. प्राप्ति स्थान—आर्यभाषा पुस्तकालय, काशी; मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—अमरपुरी, हालकेन के लोकप्रिय उपन्यास 'इटरनैल सिटी' का भाषान्तर, भाषान्तरकार साहित्यरत्न पं श्रीकृष्णदत्त पालीवाल, एम० ए०, एम० ए० सी०, प्रकाशक—सैनिक पुस्तक भंडार, आगरा, प्रथम संस्करण दिसम्बर १९२५।

५. उपरिवत्, 'अनुवाद के सम्बन्ध में'।

उपन्यास हिन्दी पुस्तक एजेंसी, कलकत्ता से प्रकाशित हुआ,[1] पुस्तक में मूल उपन्यास अथवा उसके लेखक की सूचना नहीं दी गयी है।

प्रिया

१९२६ ई० में ही बँगला उपन्यासकार देवेन्द्र प्रसाद घोष के किसी उपन्यास का पं० रामशंकर त्रिपाठी द्वारा प्रस्तुत 'प्रिया' शीर्षक अनुवाद हिन्दी पुस्तक एजेंसी, कलकत्ता से प्रकाशित हुआ।[2] मुखपृष्ठ पर मूल उपन्यास का नाम नहीं बताया गया है।

नारी जीवन या सर्वस्व समर्पण

१९२६ ई० में ही बँगला के किसी उपन्यास का ईश्वरी प्रसाद शर्मा द्वारा प्रस्तुत किया हुआ 'नारी जीवन या सर्वस्व समर्पण' नामक अनुवाद हिन्दी पुस्तक एजेंसी, कलकत्ता से प्रकाशित हुआ।[3] प्रस्तुत पंक्तियों का लेखक इस उपन्यास को प्राप्त करने में असमर्थ रहा है।

मित्र

सन् १९२६ ई० में अखौरी गंगा प्रसाद सिंह 'विशारद' द्वारा अनूदित 'मित्र' शीर्षक उपन्यास लहरी बुक डिपो, काशी से प्रकाशित हुआ।[4] पुस्तक के मुखपृष्ठ पर न तो मूल उपन्यासकार का नाम दिया हुआ है, न मूल उपन्यास का, न यही सूचना दी हुई है कि यह किस भाषा से अनूदित है।

सर्वस्व समर्पण

सन् १९२६ ई० में अथवा उसके कुछ पूर्व बँगला उपन्यास-लेखिका श्रीमती निरुपमा देवी के 'दीदी' नामक बँगला उपन्यास का 'सर्वस्व समर्पण' शीर्षक हिन्दी अनुवाद प्रकाशित हुआ। प्रस्तुत पंक्तियों का लेखक इस अनुवाद को प्राप्त करने में असमर्थ रहा है। उपर्युक्त सूचनाएँ मेरी कॉरिली लिखित 'शैतान की शैतानी' (सारोज ऑफ सैटान का हिन्दी रूपान्तर) के साथ संलग्न विज्ञापन से प्राप्त की गयी हैं।[5] इस उपन्यास में

---

१. प्रा० स्था०—आ० भा० पु० काशी; मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—मौत का नजारा, अनुवादक श्री जगमोहन 'विकसित', सम्पादक पण्डित रमेशचन्द्र त्रिपाठी, प्रकाशक हिन्दी पुस्तक एजेन्सी, १२६, हरिसन, रोड, कलकत्ता, प्रथमवार १९८३।

२. प्रा० स्था०—आ० भा० पु० काशी। मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—प्रिया, सचित्र उच्च कोटि का उपन्यास, लेखक हेमेन्द्र प्रसाद घोष, अनुवादक पं० रामशंकर त्रिपाठी, प्रकाशक हिन्दी पुस्तक एजेन्सी २०३, हरिसन रोड, कलकत्ता, प्रथम बार १९८३, पृ० सं० २७०।

३. आ० भा० पु० काशी की पुस्तकसूची।

४. प्राप्ति स्थान—आर्यभाषा पुस्तकालय, काशी; मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—मित्र, अनुवादक—अखौरी गंगा प्रसाद सिंह 'विशारद', प्रकाशक दुर्गा प्रसाद खत्री, प्रोप्राइटर लहरी बुक डिपो, काशी द्वारा प्रकाशित, प्रथम बार २३००, १९२६ ई०, पृ० सं० ६७।

५. मेरी कॉरिली, शैतान की शैतानी, १९२६, विज्ञापन।

नामक दो कथाएँ एक ही पुस्तक के रूप में 'विप विवाह तथा राय साहब' शीर्षक से लहरी बुक डिपो, काशी से प्रकाशित हुईं।[1]

मूल्यवान मोती

सन् १९२७ ई० में, अथवा उसके कुछ पूर्व किसी गुजराती उपन्यास का 'मूल्यवान मोती' शीर्षक हिन्दी अनुवाद जैन पुस्तक प्रकाशक कार्यालय, व्यावर, राजपूताना से प्रकाशित हुआ। प्रस्तुत पंक्तियों का लेखक इस उपन्यास को प्राप्त करने में असमर्थ रहा है। उपर्युक्त सूचनाएँ 'चाँद' (फरवरी १९२७) में प्रकाशित विवेच्य उपन्यास की समीक्षा से प्राप्त की गयी हैं। समीक्षक के अनुसार, 'संप्रति जिन अनुवादित पुस्तकों से हिन्दीभापा का समुज्ज्वल मस्तक अवनत हो रहा है उन पुस्तकों में से एक पुस्तक यह भी है। उपन्यास के ढंग पर लिखी हुई यह एक बेकाम कहानी है। गुजराती से अनुवाद की गई है। हिन्दी और गुजराती की ऐसी खिचड़ी पकी है कि हिन्दी के दाने कच्चे और गुजराती के पके हुए साफ मालूम पड़ते हैं।'[2]

विलासिनी

१९२७ ई० में ही अखौरी गंगा प्रसाद सिंह 'विशारद' द्वारा अनूदित 'विलासिनी' नामक पुस्तक लहरी बुक डिपो, काशी से प्रकाशित हुई।[3] इसके मूल लेखक कौन हैं, तथा यह किस भापा का अनुवाद है, इसकी सूचना पुस्तक के मुखपृष्ठ पर नहीं दी हुई है। इस पुस्तक में तीन लम्बी कहानियाँ—विलासिनी (पृ० १-२९), ममता (पृ० ३०-५१) और मित्र (पृ० ५२-८२) संगृहीत हैं। पुस्तक के प्रत्येक पृष्ठ के शीर्ष पर 'उपन्यास' शब्द मुद्रित है, इस कारण इसकी चर्चा उपन्यास के अन्तर्गत की जा रही है।

अनोखा

सन् १९२७ ई० में ही विक्टर ह्यूगो के 'दि लाफिंग मैन' नामक उपन्यास का ठाकुर लक्ष्मण सिंह द्वारा प्रस्तुत 'अनोखा' शीर्षक अनुवाद सस्ता साहित्य मंडल, अजमेर से प्रकाशित हुआ।[4] यह स्वतन्त्र ही नहीं, बल्कि संक्षिप्त अनुवाद भी है।[5] अनुवादक की

---

१. प्रा० स्था०—आ० भा० पु० काशी। मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—विप विवाह तथा राय साहब, लेखक—दुर्गा प्रसाद खत्री, प्रोप्राइटर—लहरी बुक डिपो, काशी द्वारा प्रकाशित, प्रथम बार १०००, १९२६ ई०।

२. चाँद, फरवरी १९२७, साहित्य संसार (मूल्यवान मोती)

३. प्राप्ति स्थान—आर्यभापा पुस्तकालय, काशी; मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि-विलासिनी, अनुवादक—अखौरी गंगा प्रसाद सिंह 'विशारद', दुर्गा प्रसाद खत्री, प्रोप्राइटर, लहरी बुक डिपो काशी, द्वारा प्रकाशित, प्रथम बार १०००, १९२७।

४. प्रा० स्था०—आ० भा० पु० काशी तथा सिनहा पुस्तकालय, पटना। मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—अनोखा (विक्टर ह्यूगो के प्रसिद्ध उपन्यास 'दि लाफिंग मैन' का हिन्दी अनुवाद), अनुवादक-डॉ० लक्ष्मण सिंह, बी० ए०, एल० एल० बी०, प्रकाशक सस्ता साहित्य मंडल, अजमेर, प्रथम बार १९२७, पृ० सं० ४६६

५. उपरिवत्, प्रस्तावना।

बँगला उपन्यास का श्रीयुक्त रामचन्द्र वर्मा कृत 'विधाता का विधान' शीर्षक अनुवाद हिन्दी ग्रन्थ रत्नाकर कार्यालय, बम्बई से प्रकाशित हुआ।[1] इस उपन्यास में, मुख्य रूप से, कात्यायनी नामक लड़की के मानसिक द्वन्द्व का चित्रण करने का प्रयत्न किया गया है। कात्यायनी के पिता पं० ज्योतिरत्न का संकल्प है कि वे उसका विवाह उसी पुरुष से करेंगे, जिसके ग्रहों का कात्यायनी के ग्रहों से मेल हो सके। पिता के इस संकल्प के कारण कात्यायनी के हृदय में उत्पन्न प्रेम और पितृआज्ञा-पालन का संघर्ष ही उपन्यास का मुख्य चित्रणीय विषय है।

घरेलू घटना

जासूस के जून १९२५ से लेकर फरवरी १९२८ तक के ९ अंकों में गहमरी जी का 'घरेलू घटना' नामक कथा प्रकाशित हुई।[2] उपन्यास के अन्तिम पृष्ठ की पादटिप्पणी में लिखा हुआ है—"घरेलू घटना (वंग भाषा के आधार पर) करुण, वीर, हास्य, श्रृंगार, रुद्र आदि से भरा अपूर्व उपन्यास" पर यह किस उपन्यास के आधार पर रचित है, इसका पता नहीं चलता।

मिलन मन्दिर

सन् १९२८ ई० में ही सुरेन्द्र मोहन भट्टाचार्य कृत 'मिलन मन्दिर' का देवनारायण द्विवेदी द्वारा किया हुआ 'अविकल अनुवाद' हिन्दी पुस्तकालय, बुलानाला, बनारस से प्रकाशित हुआ।[3] यह पारिवारिक जीवन पर आधृत उपन्यास है।

दौलत का नशा

सन् १९२९ ई० में ही, अथवा कुछ पूर्व, श्रीयुत 'विश्व' द्वारा बँगला से अनूदित 'दौलत का नशा' नामक उपन्यास उपन्यास बहार आफिस, काशी से प्रकाशित हुआ। प्रस्तुत पंक्तियों का लेखक इस उपन्यास को प्राप्त करने में असमर्थ रहा है। उपर्युक्त सूचनाएँ 'मतवाला' (फरवरी १९२९) में प्रकाशित विवेच्य उपन्यास के 'परिचय' से प्राप्त की गयी हैं।[4]

---

१. प्रा० स्था०—आ० भा० पु० काशी। मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—विधाता का विधान, सुप्रसिद्ध वंग लेखिका श्रीमती निरुपमा देवी के 'विधि लिपि' नामक उपन्यास का अनुवाद, अनुवादकर्ता—श्रीयुत बाबू रामचन्द्र वर्मा, प्रकाशक—हिन्दी ग्रंथ रत्नाकर कार्यालय, बम्बई, द्वितीय श्रावण, वि० सं० १९८५, अगस्त १९२८, पृ० सं० ३९९।

२. घरेलू घटना जून १९२७-फरवरी १९२८, पृ० सं० ४००, प्राप्ति स्थान—आर्यभाषा पुस्तकालय, ना० प्र० स० काशी।

३. प्रा० स्था०—प० का० पु०; मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि–मिलन मन्दिर (गार्हस्थ जीवन की समस्याओं को हल करनेवाला, सामाजिक स्त्रियोपयोगी अनूठा उपन्यास), सुरेन्द्र मोहन भट्टाचार्य की बँगला पुस्तक का अनुवाद, अनुवादक—देवनारायण द्विवेदी, प्रकाशक—शंकर सिंह, हिन्दी पुस्तकालय, बुलानाला, बनारस, प्रथमवार २०००, सं० १९८५, द्वितीय बार २०००, सं० १९९०, तृतीय बार सं० २००६।

४. मतवाला, २ फरवरी १९२९, दौलत का नशा (पुस्तक परिचय)।

का विज्ञापन निकला तो उपन्यास कम से कम उससे एक दो महीने पूर्व तो अवश्य ही प्रकाशित हो गया होगा। फिर डॉ० माताप्रसाद गुप्त ने भी बंगाल के गजट में १९१९ ई० में प्रकाशित प्रथम त्रैमासिक पुस्तक-सूची के आधार पर 'सेवा सदन' की प्रकाशन-तिथि '१५-१२-१८' दी है।[1]

२ जून १९१८ को श्री दयाराम निगम के नाम लिखे अपने पत्र में प्रेमचन्द ने लिखा था, "अपने हिन्दी नाविल को प्रेस में देना है"[2] फिर अपने २३ सितम्बर १९१८ के पत्र में प्रेमचन्द ने निगम साहब को सूचित किया, "बाज़ारे हुस्न के मुताल्लिक भी गुफ्तगू हो रही है। इसका हिन्दी एडीशन दस फ़ार्म छप चुका है।"[3] डॉ० माताप्रसाद गुप्त ने अपने निबन्ध में 'सेवा सदन' की प्रकाशन-तिथि १५ दिसम्बर १९१८ ई० दी है। इससे सिद्ध होता है कि 'सेवा सदन' २ जून १९१८ ई० और १५ दिसम्बर १९१८ ई० के बीच की अवधि में कभी प्रकाशित हुआ।

तात्पर्य यह कि सं० १९७५ वि० को हम १९१९ ई० में नहीं ला सकते—१९१९ के मध्य तक तो किसी प्रकार नहीं। अत: 'प्रेमचन्द : कलम का सिपाही' में प्रदत्त सूचना भ्रामक है।

'प्रेमचन्द : कलम का सिपाही' (चिट्ठी पत्री १-२) में संकलित प्रेमचन्द के पत्रों से 'सेवा सदन' के सम्बन्ध में कतिपय नवीन और महत्त्वपूर्ण सूचनाएँ प्राप्त होती हैं। दयानरायन निगम के नाम लिखे गये प्रेमचन्द के पत्रों के अवलोकन से ज्ञात होता है कि यह उपन्यास सर्वप्रथम उर्दू में 'बाजारे हुस्न' के नाम से १९१७ ई० में, प्राय: जनवरी और अगस्त के बीच, लिखा गया था।"[4] अमृत राय जी का यह निष्कर्ष कि दयानरायन

---

१. डॉ० माताप्रसाद गुप्त, प्रेमचन्द की कृतियों की प्रकाशन-तिथियाँ, साहित्य, अप्रैल १९६०।

२. अमृत राय, प्रेमचन्द : कलम का सिपाही, चिट्ठी-पत्री १, पृ० ७०।

३. वही. पृ० ७४।

४. २४ जनवरी १९१७ को प्रेमचन्द ने निगम साहब को लिखा था—"...मैं आज कल एक किस्सा लिखते लिखते नाविल लिख चला। कोई सौ सफे तक पहुँच चुका है। इसी वजह से छोटा किस्सा न लिख सका। अब इस नाविल में ऐसा जी लग गया है कि दूसरा काम करने को जी ही नहीं चाहता।...किस्सा दिलचस्प है और मुझे ऐसा खयाल होता है कि अब की बार नाविल नवीसी में भी कामयाब हो सकूँगा।"—प्रेमचन्द : कलम का सिपाही, चिट्ठी-पत्री १, पृ० ५७। ४ मार्च को प्रेमचन्द ने इलाहाबाद से निगम साहब को सूचित किया—"...आज-कल अपना नाविल लिखने में महव हूँ।" फिर १२ मार्च को उन्होंने लिखा—"...नाविल गालिबन एक माह में पूरा होगा और उम्मीद करता हूँ कि मई में उसे आपके मुआइने के लिए हाजिर कर सकूँगा।" २३ मार्च को उन्होंने पुनः लिखा—"...मेरा नाविल चल रहा है। अब जरा इत्मीनान हो जाए तो खत्म करूँ। तूल हो रहा है। चाहता हूँ कि जल्द अंजाम की तरफ चलूँ।" अन्ततः ८ अगस्त को उन्होंने निगम साहब को लिखा—"...अपना नाविल खत्म कर रहा हूँ। उसे पहले हिन्दी में तर्जुमा कराने का कस्द है। उर्दू में तो पब्लिशर अनका हैं।" (पत्रों के उद्धरण 'प्रेमचन्द : कलम का सिपाही', चिट्ठी-पत्री १ से दिये गये हैं।)

का स्पष्ट पता नहीं चलता कि इसके अनुवादक कौन हैं। इस उपन्यास में पाश्चात्य पद्धति की शिक्षा, सभ्यता और सुधार के दुष्परिणामों का चित्रण किया गया है।

कर्ममार्ग

सन् १९३० में उर्दू उपन्यासकार मौलाना नजीर अहमद के 'तोवतुन्नसमूह' नामक उपन्यास का दुर्गा विनायक प्रसाद द्वारा प्रस्तुत 'कर्ममार्ग' शीर्षक अनुवाद गंगा पुस्तकमाला कार्यालय, लखनऊ से प्रकाशित हुआ।[1] यह मूल का अविकल अनुवाद न होकर स्वतन्त्र अनुवाद है।[2] इस उपन्यास में एक धर्मच्युत परिवार के सुधार की कथा वर्णित है।

पाप की ओर

इसी वर्ष जापानी उपन्यासकार जून इचिरो टानी साकी के 'ओ-सूमा-कोरेशी' नामक उपन्यास का प्रताप नारायण श्रीवास्तव द्वारा प्रस्तुत 'पाप की ओर' नामक उपन्यास गंगा पुस्तकमाला कार्यालय, लखनऊ से प्रकाशित हुआ।[3]

समाधि

१९३० ई० में ही लार्ड लिटन लिखित 'लास्ट डेज आव पाम्पियाई' का गणेश पांडेय द्वारा प्रस्तुत 'समाधि' शीर्षक अनुवाद साहित्य मन्दिर, दारागंज, प्रयाग से प्रकाशित हुआ।[4] इस उपन्यास की कथावस्तु प्राचीन रोम के प्रसिद्ध नगर पाम्पियाई की ध्वंसलीला पर आवृत है।

लीला

सन् १९३० ई० में श्रीमती चारुशीला मित्र के बँगला उपन्यास 'हिन्दू नारी'

एस० एस० मेहता एण्ड ब्रदर्स, पुस्तक प्रकाशक, विक्रेता और स्टेशनर्स काशी, सं० १९८६ वि० पृ० सं० ३३३।

१. प्रा० स्था०—आ० भा० पु० काशी तथा सिनहा पुस्तकालय, पटना। मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—कर्म मार्ग (उपन्यास) लेखक स्व० मौलाना नजीर अहमद, अनुवादक दुर्गा विनायक प्रसाद एम० ए०, एल० एल० बी०, प्रकाशक गंगा पुस्तकमाला कार्यालय, प्रकाशक और विक्रेता, लखनऊ, प्रथमावृति सं० १९८७ वि०, पृ० सं० ३२०।

२. उपरिवत्, परिचय।

३. प्रा० स्था०—आ० भा० पु० काशी। मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि-पाप की ओर, लेखक (जापानी भाषा के सुलेखक जून इचिरो टानी साकी के 'ओ-सूया-कोरेशी' नामक श्रेष्ठ उपन्यास का अनुवाद) अनुवादक प्रताप नारायण श्रीवास्तव, बी ए०, प्रकाशक गंगा पुस्तक माला कार्यालय, प्रकाशक और विक्रेता, लखनऊ, प्रथमावृत्ति सं० १९८७ वि०।

४. प्रा० स्था०—सिनहा पुस्तकालय, पटना; मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—समाधि (संसार के सर्वश्रेष्ठ बारह उपन्यासों में से एक—लार्ड लिटन के "लास्ट डेज आव पम्पिआई"—का मर्म्मानुवाद) अनुवादक श्रीयुत पं० गणेश पांडेय, 'प्रकाशक साहित्य मन्दिर, दारागंज, प्रयाग, प्रथम संस्करण सं० १९८७ वि०, पृ० सं० २२६।

ठाकुर राजबहादुर सिंह द्वारा प्रस्तुत 'देहाती सुन्दरी' नामक अनुवाद साहित्य मंडल, दिल्ली से प्रकाशित हुआ।[1] इस उपन्यास में 'मर्यका' नामक 'देहाती सुन्दरी' के प्रेम का वर्णन है।

लक्ष्मी

इसी वर्ष बाबू जगमोहन 'विकसित' द्वारा अनूदित 'लक्ष्मी' नामक उपन्यास दी पोपुलर ट्रेडिंग कम्पनी, कलकत्ता से प्रकाशित हुआ।[2] पुस्तक से इस बात का पता नहीं चलता कि यह किस भाषा के किस उपन्यास का अनुवाद है।

विवाह मन्दिर

सन् १९३१ ई० में ही बँगला उपन्यासकार नारायणचन्द्र भट्टाचार्य के 'बिये-बाड़ी' नामक उपन्यास का प्रभावती भटनागर द्वारा प्रस्तुत 'विवाह मन्दिर' नामक अनुवाद चाँद कार्यालय, इलाहाबाद से प्रकाशित हुआ।[3]

पेरिस का कुबड़ा

इसी वर्ष दुर्गादत्त सिंह द्वारा अनूदित 'पेरिस का कुबड़ा' नामक उपन्यास पुस्तक मन्दिर, काशी से प्रकाशित हुआ।[4] पुस्तक के मुखपृष्ठ पर न तो मूल उपन्यास का नाम दिया हुआ है न उसके लेखक का और न प्रकाशन काल ही दिया हुआ है। 'सम्पादकीय वक्तव्य' के अन्त में 'विजया दशमी १९८८' मुद्रित है जिससे इसके प्रकाशन काल का अनुमान होता है।

यौवन की आँधी

सन् १९३१ ई० में ही रूसी उपन्यासकार तुर्गनेव के किसी उपन्यास का राज्य-बहादुर सिंह द्वारा प्रस्तुत 'यौवन की आँधी' शीर्षक अनुवाद साहित्य मंडल, दिल्ली से

---

१. प्रा० स्था—आ० भा० पु० काशी तथा सिनहा लाइब्रेरी, पटना। मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—देहाती सुन्दरी (महात्मा टॉलस्टॉय की दि कोस्साक्स नामक रचना का अनुवाद), अनुवादक—ठाकुर राजबहादुर सिंह, साहित्य मण्डल, दिल्ली, प्रथम बार १९३१। (पृष्ठ भाग) प्रकाशक—ऋषभ चरण जैन, मालिक साहित्य मण्डल, बाजार सीताराम, दिल्ली, पृ० सं० २६६।

२. प्रा० स्था०—आ० भा० पु० काशी। मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—लक्ष्मी (ऊँचे दर्जे का सामाजिक उपन्यास) अनुवादक—श्रीयुत बाबू जगमोहन 'विकसित', प्रकाशक—दी पोपुलर ट्रेडिंग कम्पनी, १४/१ ए०, शम्भू चटर्जी स्ट्रीट, कलकत्ता, प्रथम संस्करण सं० १९८८।

३. प्रा० स्था०—आ० भा० पु० काशी। मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—विवाह मन्दिर, श्रीयुत नारायण चन्द्र भट्टाचार्य के 'बिये-बाड़ी' नामक बँगला उपन्यास का हिन्दी संस्करण, अनुवादिका—प्रभावती भटनागर, प्रकाशक—'चाँद' कार्यालय, चन्द्रलोक, इलाहाबाद, नवम्बर १९३१, प्रथम संस्करण २०००, पृ० सं० २३२।

४. प्रा० स्था०—आ० भा० पु० काशी। मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—पेरिस का कुबड़ा, अनुवादक—दुर्गादत्त सिंह, बी० ए०, एल० एल० बी०, प्रकाशक—पुस्तक मन्दिर, काशी, प्रथम संस्करण, पृ० सं० ४७४।

नामक उपन्यास का प्रफुल्लचन्द्र ओझा मुक्त ने अनुवाद प्रस्तुत किया, जो वर्त्तमान साहित्य मंडल, दिल्ली से प्रकाशित हुआ ।[1] पुस्तक के मुखपृष्ठ पर प्रकाशन काल नहीं दिया हुआ है, पर भूमिका (पूर्वाभास) के अन्त में '१०-१२-३२' तिथि मुद्रित है । 'पूर्वाभास' के अनुसार यह अविकल न होकर स्वतन्त्र अनुवाद है । इस उपन्यास का अनुवाद इसके पहले भी हो चुका था । (द्रष्टव्य हिन्दी उपन्यास कोश, खंड १, पृ० ३१९)।

बेचारी माँ

सन् १९३३ ई० में इटली की प्रसिद्ध उपन्यास लेखिका ग्र जिया डेलेडा की 'दि मदर' नामक पुस्तक का श्री राधाविनोद गोस्वामी कृत 'बेचारी माँ' शीर्षक अनुवाद साहित्य सेवक कार्यालय, जालिपा देवी, बनारस सिटी से प्रकाशित हुआ ।[2] इस अनुवाद की भूमिका में छविनाथ पांडेय ने तत्कालीन हिन्दी पाठकों की रुचि पर प्रकाश डालते हुए लिखा है,—'सम्भव है साधारण जनता को पुस्तक रुचिकर न प्रतीत हो और व्यवसाय की दृष्टि से प्रकाशक को पुस्तक की खपत में आशाजनक सफलता न मिले, पर इससे अनुवादक तथा प्रकाशक को निराश नहीं होना चाहिए । हिन्दी के पाठकों की रुचि बिगड़ी हुई है । कला की परख उनमें नहीं है । वे उपन्यास में लम्बी-चौड़ी कहानी खोजते हैं, सेंसेशनल (Sensetional) घटना खोजते हैं, नायक और नायिका तथा अन्य प्रधान पात्रों के चरित्र में भयानक उथल पुथल देखना चाहते हैं, घटनावली में आकाश पाताल एक कर डालना चाहते हैं; और उनकी रुचि के अनुनायक लेखक तथा अनुवादक अधिकतर इसी तरह पुस्तकों को लिखते आए हैं । इधर कुछ वर्षों से हिन्दी के एकाध प्रकाशकों ने कला की दृष्टि से पुस्तकें प्रकाशित करने का यत्न किया था, पर उन्हें यथेष्ठ सफलता नहीं मिल सकी और वे उदासीन से होते जा रहे हैं । यह उचित नहीं है । इसके लिए अध्यवसाय की जरूरत है । बिना इसके उपन्यास में कला का दर्शन नहीं हो सकता ।''[3]

अन्ना

सन् १९३३ ई० में ही जगत् प्रसिद्ध उपन्यासकार लिओ काउंट टालसटाय के

---

१. प्राप्ति स्थान—प० का० पु०, पटना । मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—दीप निर्वाण (बंगाल की प्रसिद्ध लेखिका—श्रीमती स्वर्णकुमारी देवी का एक उत्कृष्ट ऐतिहासिक उपन्यास), अनुवादक—श्री प्रफुल्लचन्द्र ओझा 'मुक्त', मिलने का पता—वर्तमान साहित्य मंडल, ७१, कूंचा हरजसमल, बाजार सीताराम, दिल्ली, पहली बार २००० ।

२. प्राप्ति स्थान—राष्ट्रभाषा परिषद् पुस्तकालय, पटना तथा प० वि० पु० पटना । मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—बेचारी माँ, लेखिका—ग्रे जिया डेलेडा (नोबुल पुरस्कार प्राप्त, सन् १९२७), सम्पादक—पं० विश्वनाथ प्रसाद मिश्र, अनुवादक—श्री राधाविनोद गोस्वामी, अनन्त चतुर्दशी, प्रथम संस्करण, प्रकाशक—साहित्य सेवक कार्यालय, जालिपा देवी, बनारस सिटी । भूमिका के नीचे 'गणेश चतुर्थी १९९०' अंकित है ।

३. बेचारी माँ, लेखिका—ग्रे जिया डेलेडा, अनु० श्री राधा विनोद गोस्वामी, प्र०—साहित्य सेवक कार्यालय, बनारस सिटी, भूमिका ।

रहा है। तृतीय संस्करण के 'कुछ शब्द' के अन्त में '२२-४-३३' मुद्रित रहने से इनका रचना-काल ज्ञात होता है।

जीवन धारा

इसी वर्ष बँगला उपन्यासकार श्री प्रियनाथ मुखोपाध्याय के 'असया' नामक सामाजिक उपन्यास का श्री जगमोहन विकसित द्वारा प्रस्तुत 'जीवन धारा' नामक अनुवाद साहित्य मन्दिर दारागंज, प्रयाग से प्रकाशित हुआ।[1] इस उपन्यास में पातिव्रत्य, धर्म-पालन, सदाचरण आदि का महत्त्व दर्शाया गया है।

जीवन पथ

सन् १९३३ ई० में बँगला उपन्यासकार असमंज मुखोपाध्याय के 'पथेर स्मृति' नामक उपन्यास का श्री प्रफुल्ल चन्द्र ओझा 'मुक्त' द्वारा प्रस्तुत 'जीवन पथ' नामक उपन्यास उत्थान ग्रन्थमाला कार्यालय, दिल्ली से प्रकाशित हुआ।[2] 'परिचय' से पता चलता है कि यह मूल ग्रन्थ का अविकल अनुवाद नहीं है।

संघर्ष : पिता और पुत्र

सन् १९३३ ई० में ही तुर्गनेव कृत किसी उपन्यास का कृष्ण वल्लभ द्विवेदी द्वारा प्रस्तुत 'संघर्ष' शीर्षक अनुवाद आदर्श ग्रन्थमाला, दारागंज, प्रयाग से और तुर्गनेव के ही किसी दूसरे उपन्यास का राजबहादुर सिंह द्वारा प्रस्तुत 'पिता और पुत्र' शीर्षक अनुवाद नवयुग साहित्य मन्दिर, दिल्ली से प्रकाशित हुआ।[3] प्रस्तुत पंक्तियों का लेखक इन अनुवादों को प्राप्त करने में असमर्थ रहा है।

फूलवाली

सन् १९३३ ई० में ही सुरेन्द्र मोहन भट्टाचार्य रचित किसी बँगला उपन्यास का

साहित्य रत्न, अनुवादक—श्री गंगापति सिंह, बी० ए०, (भूतपूर्व प्रो०—कलकत्ता यूनिवर्सिटी), संवत् २००२, (पृष्ठ भाग की सूचना), प्रकाशक—गोपालचन्द्र गुप्त, व्यवस्थापक—साहित्य सेवक कार्यालय, जालिपा देवी, बनारस, तृतीय संस्करण, पृ० सं० ११६।

१. प्रा० स्या—आ० भा० पु० काशी। मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—जीवन धारा (सरल, सामाजिक उपन्यास) भाषान्तरकार श्री जगमोहन 'विकसित', प्रकाशक साहित्य मंदिर दारागंज, प्रयाग, प्रथम बार १९३३, पृ० सं० १३२।

२. प्रा० स्या०—आ० भा० पु० काशी। मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—जीवन पथ, 'पथेर स्मृति' नामक एक अत्यन्त मर्मस्पर्शी, प्राणप्रद और सजीव जीवन चित्र का सरल-सरस छायानुवाद, अनुवादक श्री प्रफुल्लचन्द्र ओझा 'मुक्त', प्रकाशक—उत्थान ग्रन्थमाला कार्यालय, बाजार सीताराम, दिल्ली, पहली बार २०००, १९३३ई०।

३. आ० भा० पु० की पुस्तक सूची।

श्री जगदीश नारायण कृत 'वैर का बदला' शीर्षक अनुवाद युगान्तर प्रकाशन समिति, पटना से प्रकाशित हुआ। आर्यभाषा पुस्तकालय, काशी में इस उपन्यास की एक प्रति उपलब्ध है, किन्तु मुखपृष्ठ के नष्ट हो जाने के कारण पुस्तक के सम्बन्ध में कोई सूचना नहीं मिलती। उपर्युक्त सूचनाएँ आ० भा० पु० की पुस्तकसूची से ली गयी हैं।

भूली हुई याद

सन् १९३५ ई० में कृष्ण कुमार मुखोपाध्याय लिखित किसी उपन्यास का 'भूली हुई याद' शीर्षक अनुवाद लहरी बुक डिपो, बनारस से प्रकाशित हुआ।[1] पुस्तक के मुखपृष्ठ पर मूल उपन्यास या अनुवादक का नाम नहीं दिया हुआ है।

पूर्णिमा

सन् १९३६ ई० में गुजराती के लब्धप्रतिष्ठ उपन्यासकार श्री रमणलाल वसन्तलाल देसाई, एम० ए० के 'पूर्णिमा' नामक उपन्यास का पुरुषोत्तम लाल दवे 'ऋषि' कृत अनुवाद पुस्तक मन्दिर, काशी से प्रकाशित हुआ।[2] इस अनुवाद का तीसरा संस्करण जो १९४५ ई० में प्रकाशित हुआ था, बिहार राष्ट्रभाषा परिषद् पुस्तकालय, पटना में उपलब्ध है। अनुवाद की 'प्रस्तावना' के नीचे 'काशी २६ मई १९३६' मुद्रित है जिससे इसका रचना-काल १९३६ ई० ज्ञात होता है। इस उपन्यास में एक वेश्या के जीवन की विभीषिकाओं तथा अविनाश नामक युवक के साथ उसके प्रेम और तज्जन्य कठिनाइयों का वर्णन किया गया है।

अज्ञात दिशा की ओर

सन् १९३६ ई० में 'सरस्वती' के कतिपय अंकों में श्रीयुत सौरीन्द्र मोहन मुकर्जी के किसी बँगला उपन्यास का पं० ठाकुरदत्त मिश्र कृत 'अज्ञात दिशा की ओर' शीर्षक अनुवाद धारावाहिक रूप में प्रकाशित हुआ।[3] इस अनुवाद का पुस्तक संस्करण प्रस्तुत पंक्तियों के लेखक के देखने में नहीं आया है।

---

१. प्रा० स्था—आ० भा० पु० काशी, मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—भूली हुई याद, रहस्यपूर्ण उपन्यास, श्रीकृष्णकुमार मुखोपाध्याय लिखित, लहरी बुक डिपो, बनारस सिटी, १९३५, प्रथम संस्करण, १००० प्रति, पृ० सं० १८६।

२. प्राप्ति स्थान—राष्ट्रभाषा परिषद, पुस्तकालय, पटना; मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—पूर्णिमा, मूललेखक श्री रमणलाल वसंतलाल देसाई, एम० ए०, अनुवादक—पुरुषोत्तम लाल दवे, 'ऋषि', प्रकाशक—पुस्तक मन्दिर, काशी, तृतीय सं० १९४५ ई०।

३. अज्ञात दिशा की ओर, अनुवादक—पं० ठाकुर दत्त मिश्र—सरस्वती, अप्रैल १९३६ (पृ० ३९७—४०२), मई १९३६ (पृ० ४८८-४९२), जून १९३६ (पृ० ५८१—५८७), जुलाई १९३६ (पृ० ४८—५६), अगस्त १९३६ (पृ० १५१—१६१), सितम्बर १९३६ (पृ० २६६—२७७), अक्टूबर १९३६ (पृ० ३७८—३८.), नवंबर १९३६ (पृ० ४८०—४८५)।

ऐतिहासिक उपन्यास

अलेक्जांडर ड्यूमा

मोतियों का खजाना

सन् १९१४ ई० में दुर्गा प्रसाद खत्री ने 'ड्यूमा' के प्रसिद्ध उपन्यास 'दी कौंट ऑफ़ मौंट क्रिस्टो" का अनुवाद 'मोतियों का खजाना' शीर्षक से प्रकाशित करना शुरू किया। इसका पहला हिस्सा बाबू चुन्नी लाल खत्री द्वारा अनूदित होकर १९१४ ई० में प्रकाशित हुआ।[1] इसके चौथे से लेकर १४ वें हिस्से तक का अनुवाद स्वयं दुर्गाप्रसाद खत्री ने प्रस्तुत किया।[2] दुर्गाप्रसाद खत्री द्वारा अनूदित 'मोतियों का खजाना' के चौथे, पाँचवें और छठे हिस्से १९१८ ई० में, सातवें, आठवें और नवें हिस्से १९१९ ई० में, दसवें और ग्यारहवें हिस्से १९२० ई० में तथा तेरहवें और चौदहवें हिस्से १९२१ ई० में प्रकाशित हुए।[3]

इस अनुवाद के प्रथम संस्करण की केवल १००० प्रतियाँ मुद्रित हुई थीं, तथा इसका दूसरा संस्करण नहीं निकला, यह इस उपन्यास के अधिक लोकप्रिय न होने का प्रमाण है।

जोसेफ वाल्सेमो

ड्यूमा के 'जोसेफ वाल्सेमो' नामक उपन्यास का शशिशेखर गुप्त कृत अनुवाद

---

१. प्राप्ति-स्थान—आर्य भाषा पुस्तकालय, काशी; मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि--मोतियों का खजाना पहिला हिस्सा, बाबू दुर्गा प्रसाद खत्री द्वारा प्रकाशित, १९१४।

२. आर्य भाषा पुस्तकालय, काशी में इसके दूसरे और तीसरे हिस्से उपलब्ध नहीं हैं, इस कारण उनके संबंध में कोई सूचना देना संभव नहीं है।

३. प्राप्ति स्थान—आ० भा० पु० काशी; दूसरे हिस्से के मुखष्ठ की प्रतिलिपि--मोतियों का खजाना, चौथा हिस्सा, बाबू दुर्गा प्रसाद खत्री द्वारा अनुवादित और प्रकाशित, लहरी प्रेस, बनारस सिटी, प्रथम बार १०००, १९१८। पाँचवें हिस्से के मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—फ्रान्सीसी औपन्यासिक अलेक्जेन्डर ड्यूमस कृत प्रसिद्ध उपन्यास 'दी कौण्ट आफ़ मोण्ट क्रिस्टो' का अविकल अनुवाद। बाबू दुर्गा प्रसाद खत्री द्वारा अनुवादित और प्रकाशित, प्रथम बार १९१८ ई०।

छठा हिस्सा, अन्य सूचनाएँ उपरिवत्-प्रथम बार १०००, १९१८ ई०।

सातवाँ हिस्सा—उपरिवत्—प्रथम बार १०००, १९१९ ई०।

आठवाँ हिस्सा—उपरिवत्,

नौंवा हिस्सा-उपरिवत्,

दसवाँ हिस्सा—उपरिवत्, प्रथम बार १९२० ई०।

ग्यारहवाँ हिस्सा—उपरिवत्, प्रथम बार १९२० ई०।

बारहवाँ हिस्सा—उपरिवत्, प्रथम बार १९२१ (प्राप्ति स्थान मा० पु० पटना)

तेरहवाँ हिस्सा—उपरिवत्, प्रथम बार १९२१

चौदहवाँ हिस्सा—उपरिवत्,

पंक्तियों का लेखक इस संस्करण को प्राप्त करने में असमर्थ रहा है। उपर्युक्त सूचनाएँ आर्यभाषा पुस्तकालय काशी की पुस्तकसूची से प्राप्त की गयी हैं।

विवेच्य अनुवाद का द्वितीय संस्करण १९५३ ई० में हिन्दी साहित्य मंडल, बाजार सीताराम, दिल्ली से प्रकाशित हुआ।[1] इसकी भूमिका से ज्ञात होता है कि अनुवाद अविकल न होकर स्वतन्त्र है।[2]

दि ब्लैक टूलिप

सन् १९३२ ई० में ड्यूमा के 'दि ब्लैक टूलिप' नामक उपन्यास का ऋषभचरण जैन कृत अनुवाद गंगा पुस्तकमाला कार्यालय, लखनऊ से प्रकाशित हुआ। प्रस्तुत पंक्तियों का लेखक इस अनुवाद को प्राप्त करने में असमर्थ रहा है। उपर्युक्त सूचनाएँ आर्यभाषा पुस्तकालय, काशी की पुस्तकसूची से प्राप्त की गयी हैं।

बादशाह की बेटी

सन् १९३३ ई० में अलेक्जांडर ड्यूमा के किसी उपन्यास का (शीर्षक नहीं ज्ञात हो पाता) ऋषभचरण जैन कृत अनुवाद 'बादशाह की बेटी' शीर्षक से हिन्दी साहित्य मंडल, दिल्ली से प्रकाशित हुआ। आर्यभाषा पुस्तकालय,काशी में इस अनुवाद की जो प्रति है, उसके मुखपृष्ठ के न रहने के कारण कोई सूचना नहीं मिल पाती। उपर्युक्त सूचनाएँ उक्त पुस्तकालय की पुस्तकसूची से प्राप्त की गयी हैं।

काला फूल

सन् १९३५ ई० में ड्यूमा के किसी उपन्यास का सिद्ध गोपाल काव्यतीर्थ कृत अनुवाद 'काला फूल' शीर्षक से, हिन्दी ग्रन्थ रत्नाकर कार्यालय, बंबई से प्रकाशित हुआ। प्रस्तुत पंक्तियों का लेखक इस अनुवाद को प्राप्त करने में असमर्थ रहा है। उपर्युक्त सूचनाएँ आर्यभाषा पुस्तकालय, काशी की पुस्तकसूची से प्राप्त की गयी हैं।

शिवव्रत लाल वर्मन

शिवव्रत लाल वर्मन ने उर्दू में अनेक मिथ्यैतिहासिक तथा घटनाप्रधान उपन्यासों की रचना की थी, जिनके हिन्दी अनुवाद वर्तमान शताब्दी के तीसरे दशक में हिन्दी पाठकों में काफी लोकप्रिय हुए थे।

शाही डाकू

सर्वप्रथम विवेच्य उपन्यासकार के 'शाही डाकू' नामक उर्दू उपन्यास का कवि-

---

१. प्राप्तिस्थान—आ० भा० पु० काशी; मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—कंठहार (अलेक्जांडर ड्यूमा के प्रसिद्ध उपन्यास 'दि क्वीन्स नेकलेस' का सरल अनुवाद) अनुवादक-श्री ऋषभ चरण जैन, प्रकाशक हिन्दी साहित्य मंडल, बाजार सीताराम, दिल्ली, दूसरी बार २२००, १९५३।

२. उपरिवत्, भूमिका।

पाती। उपर्युक्त सूचनाएँ आर्यभाषा पुस्तकालय की पुस्तकसूची से प्राप्त की गयी हैं।

इस उपन्यास में असम प्रदेश की एक रानी का वर्णन है, जो जादू-विद्या में प्रवीण है। उपन्यास में उसके जादू के अनेक करिश्मे वर्णित किये गये हैं। उपन्यास अपरिष्कृत रुचि के पाठकों को ध्यान में रखकर लिखा गया है।

जया

बाबू शिवव्रत लाल वर्मन का 'जया अथात् राजपूतनी का विवाह' नामक उपन्यास (आवरण पृष्ठ की सूचना से लगता है, जैसे वह मौलिक उपन्यास हो) लाजपत राय एंड सन्स, बुकसेलर्स, लाहौर से १९२९ ई० में तीसरी बार प्रकाशित हुआ।[1] इसके प्रथम और द्वितीय संस्करण प्रस्तुत पंक्तियों के लेखक को प्राप्त नहीं हो सके हैं।

शाही चोर

विवेच्य उपन्यासकार के 'शाही चोर' नामक उपन्यास का अनुवाद नारायण दत्त सहगल एंड सन्ज, लाहौर से १९२३ ई० में दूसरी बार प्रकाशित हुआ।[2] इस उपन्यास के प्रथम संस्करण को प्राप्त करने में प्रस्तुत पंक्तियों का लेखक असफल रहा है इस कारण उसके प्रकाशन काल आदि के सम्बन्ध में कोई सूचना दे पाना कठिन है।

'भूमिका' से ज्ञात होता है कि यह उपन्यास सर्वप्रथम उर्दू में, लेखक द्वारा सम्पादित रिसाला में प्रकाशित हुआ था। तत्पश्चात् पाठकों के आग्रहवश इसे पुस्तकाकार प्रकाशित किया गया। 'पाठकों ने इसे पसन्द किया और बहुत से भद्र पुरुषों ने इसे आर्यभाषा में प्रकाशित करने की प्रेरणा दी। उनकी आज्ञा को शिरोधार्य कर भाषा-प्रेमियों के चित्तविनोद के लिए प्रथम बार आपकी भेंट किया जाता है, आशा है मनोरंजन से शून्य न होगा।"[3] इस उद्धरण से इस उपन्यास की लोकप्रियता भी प्रमाणित होती है।

मानवती

विवेच्य उपन्यासकार के किसी उर्दू उपन्यास का 'मानवती अर्थात् चित्तौड़ का शाका' शीर्षक अनुवाद रामदित्तामल एंड सन्ज, लुहारीगेट, लाहौर से १९२५ ई० में, दूसरी

---

१. प्राप्ति स्थान—आर्यभाषा पुस्तकालय, काशी। मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—भारत की शूर-वीर स्त्रियों के कारनामे, जया अर्थात् राजपूतनी का विवाह, राजपूतों की वीरता और मुसलमानों के अत्याचार का दृश्य, लेखक—बाबू शिवव्रत लाल वर्मन, प्रकाशक—लाजपत राय एंड सन्स, बुकसेलर्स, लाहौर, तीसरी बार २०००, १९२९, पृ० सं० ९६

२. प्राप्ति स्थान—आर्यभाषा पुस्तकालय, काशी। मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—शाही चोर, एक ऐतिहासिक और शिक्षाप्रद उपन्यास, लेखक—शिवव्रत लाल वर्मन, प्रकाशक—नारायण दत्त सहगल एंड सन्ज, लाहौर, दूसरी बार १०००, सं० १९८०, पृ० सं० २९

३. उपरिवत्, भूमिका।

'पतिभक्ति' (१९३१) के साथ संलग्न विज्ञापन से ज्ञात होता है कि 'शाही भिखारी' में एक राजकुमार और एक राजकुमारी का वर्णन है जो राजाओं के घर में जन्म लेकर भी दैवदुर्विपाकवश भिक्षावृत्ति ग्रहण करने को वाध्य होते हैं, पर अन्ततः ईश्वर की कृपावश उनके सुदिन लौटते हैं और उन्हें राजसिंहासन प्राप्त होता है।

उपर्युक्त तथ्यों से शिवव्रत लाल वर्मन के उपन्यासों की हिन्दी के पाठकों के वीच लोकप्रियता सिद्ध होती है। इनके कई अनूदित उपन्यासों के एकाधिक संस्करणों का प्रकाशित होना यह सिद्ध करता है ये उपन्यास हिन्दी पाठकों के वीच काफी लोकप्रिय हुए थे।

हरिसाधन मुखोपाध्याय

लाल चिट्ठी

सन् १९२० ई० में हरिसाधन वावू के 'लाल चिट्ठी' नामक उपन्यास का 'एक हिन्दी सेवी, कृत अनुवाद उपन्यास वहार आफिस, काशी से प्रकाशित हुआ।[1] यह एक मिथ्यैतिहासिक उपन्यास है।

मेहरुन्निसा

सन् १९२७ ई० में हरिसाधन मुखोपाध्याय के 'मेहरुन्निसा' नामक उपन्यास का श्री मंगल प्रसाद विश्वकर्मा विशारद कृत अनुवाद चाँद कार्यालय, इलाहावाद से प्रकाशित हुआ।[2] इस का दूसरा संस्करण, उपर्युक्त प्रकाशन संस्था से ही, १९२९ ई० में प्रकाशित हुआ।[3]

कंकणचोर

हरिसाधन वावू के 'कंकणचोर' नामक उपन्यास का श्री कृष्ण हसरत कृत अनुवाद उपन्यास वहार आफिस, काशी से प्रकाशित हुआ। प्रस्तुत पंक्तियों का लेखक इस अनुवाद को प्राप्त करने में असमर्थ रहा है। उपर्युक्त सूचनाएँ आर्यभाषा पुस्तकालय की पुस्तक-सूची से प्राप्त की गयी हैं। प्रकाशन-काल का पता नहीं चल पाता।

---

१. प्राप्ति स्थान—आर्यभाषा पुस्तकालय, काशी : मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—लाल चिट्ठी, अनुवादक एक हिन्दी सेवी, प्र० शिवराम दास गुप्त, उपन्यास वहार आफिस, काशी, वनारस, प्रथम वार नवम्बर १९२० ई०।

२. प्राप्ति स्थान—माहेश्वरी पुस्तकालय, महेन्द्रू, पटना : मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—मेहरुन्निसा (श्रीयुक्त हरिसाधन मुखोपाध्याय लिखित एक ऐतिहासिक उपन्यास), अनुवादक श्रीयुत मंगल प्रसाद विश्वकर्मा विशारद, प्रकाशक 'चाँद' कार्यालय, इलाहावाद, प्रथम वार २०००, जनवरी १९२७, पृ० सं० ७३।

३. प्राप्ति स्थान—विहार राष्ट्रभाषा परिषद् पुस्तकालय, पटना। विशेष सूचना—दूसरी वार २०००, नवम्बर १९२९।

'हेमचन्द्र' नामक उपन्यास का 'एक साहित्य सेवी' द्वारा किया हुआ अनुवाद उपन्यास बहार ऑफिस, काशी से १९२० ई० में, प्रथम बार, प्रकाशित हुआ। प्रस्तुत पंक्तियों का लेखक इस पुस्तक को प्राप्त करने में असमर्थ रहा है। इस उपन्यास के अन्य अनुवादों या संस्करणों का पता भी प्रस्तुत पंक्तियों के लेखक को नहीं है।

राखालदास वन्द्योपाध्याय

करुणा

राखालदास वन्द्योपाध्याय के ऐतिहासिक उपन्यासों के अनुवाद प्रस्तुत करने की तरफ हिन्दी साहित्यकारों का ध्यान १९२० ई० के लगभग आकृष्ट हुआ। सर्वप्रथम १९२१ ई० में राखाल बाबू के 'करुणा' नामक प्रसिद्ध ऐतिहासिक उपन्यास का बाबू रामचन्द्र वर्मा द्वारा प्रस्तुत किया हुआ अनुवाद नागरी प्रचारिणी सभा, काशी से प्रकाशित हुआ।[२] आर्यभाषा पुस्तकालय, काशी में इस संस्करण की जो प्रति है, उसका मुखपृष्ठ नहीं है, इस कारण इसके अनुवादक तथा प्रकाशन-काल आदि से सम्बद्ध सूचनाएँ नहीं प्राप्त होतीं। उपर्युक्त सूचनाएँ 'ग्रन्थ की भूमिका', 'निवेदन' तथा पुस्तकालय की पुस्तक-सूची से प्राप्त की गयी हैं।

विवेच्य अनुवाद का दूसरा संस्करण १९४६ ई० (२००३ वि०) में नागरी प्रचारिणी सभा, काशी से प्रकाशित हुआ। प्रस्तुत पंक्तियों का लेखक इस संस्करण को प्राप्त करने में असमर्थ रहा है। एतद्सम्बन्धी सूचनाएँ आर्यभाषा पुस्तकालय की पुस्तक-सूची से प्राप्त की गयी हैं।

शशांक

राखाल बाबू के 'शशांक' नामक ऐतिहासिक उपन्यास का पं० रामचन्द्र शुक्ल कृत अनुवाद भी १९२२ ई० में ही नागरी प्रचारिणी सभा से प्रकाशित हुआ।[३] आर्यभाषा पुस्तकालय, काशी में इस उपन्यास की जो प्रति है, उसका मुखपृष्ठ गायब है, इस कारण अनुवादक, प्रकाशक अथवा प्रकाशन-काल का पता नहीं चलता। उपर्युक्त सूचनाएँ अनुवाद की 'भूमिका' तथा उक्त पुस्तकालय की पुस्तक-सूची से प्राप्त की गयी हैं।

विवेच्य ग्रन्थ की 'भूमिका' से ज्ञात होता है कि अनुवादक ने इसके अन्तिम अंश के अनुवाद में स्वतन्त्रता बरती है। मूल उपन्यास की कुछ अन्तिम घटनाएँ अनुवाद में बिलकुल बदल डाली गयी हैं। इस प्रकार का परिवर्तन यद्यपि उचित नहीं होता, पर हिन्दी में तो इसकी परम्परा ही थी। रामचन्द्र शुक्ल ने इस परम्परा का पालन मात्र किया है।

---

२. प्राप्ति स्थान—आर्यभाषा पुस्तकालय, ना० प्र० स० काशी, पृ० सं० ६०० से ऊपर।

३. प्राप्ति स्थान, आर्यभाषा पुस्तकालय, पृ० सं० ४६४ से ऊपर।

'सेवा सदन' के अब तक अनेक संस्करण प्रकाशित हो चुके हैं। मुख्यत: इसके तीन प्रकाशन-संस्थाओं—हिन्दी पुस्तक एजेंसी, कलकत्ता एवं काशी, सरस्वती प्रेस, वाराणसी एवं इलाहाबाद, और हंस प्रकाशन, इलाहाबाद—से प्रकाशित संस्करण उपलब्ध होते हैं। हिन्दी पुस्तक एजेंसी, ज्ञानवापी, काशी, से 'सेवा सदन' का दूसरा संस्करण १९२१ ई० (सं० १९७८ वि०) में, आठवाँ संस्करण १९३६ ई० (१९९३ वि०) में,[१] बारहवाँ संस्करण १९४५ ई० (सं० २००२ वि०) में[२] और सत्रहवाँ संस्करण १९५३ ई० में (सं० २०१० वि०)[३] प्रकाशित हुआ। पटना कॉलेज पुस्तकालय में हिन्दी पुस्तक एजेंसी, वाराणसी से प्रकाशित 'सेवा सदन' की एक प्रति है, जिसमें संस्करण-संख्या तथा प्रकाशन-काल नहीं दिया हुआ है। अत: हिन्दी पुस्तक एजेंसी से सत्रहवें संस्करण के बाद 'सेवा सदन' के और कितने संस्करण प्रकाशित हुए, यह बताना कठिन है। 'सेवा सदन' के सरस्वती प्रेस, वाराणसी से प्रकाशित दो और संस्करण मेरे देखने में आये हैं,[४] जिनमें से प्रथम में प्रकाशन-तिथि और संस्करण-संख्या नहीं दी हुई है। दूसरे में प्रकाशन-तिथि दिसम्बर १९६० दी हुई है,पर संस्करण-संख्या का पता नहीं चलता। जुलाई १९६२ में भी सरस्वती प्रेस, वाराणसी से 'सेवा सदन' का एक 'वर्तमान संस्करण' प्रकाशित हुआ।[५] 'सेवा सदन' के हंस प्रकाशन, इलाहाबाद, से प्रकाशित दो और संस्करण मिलते है, पर दोनों में से किसी में भी प्रकाशन-काल अथवा संस्करण-संख्या नहीं दी हुई है। संस्करण अजिल्द है और प्रेम प्रेस, कटरा, प्रयाग, से मुद्रित है।[६] दूसरा संस्करण भार्गव प्रेस, १ बाई का बाग, इलाहाबाद से मुद्रित है और सजिल्द है।[७] इस प्रकार सरस्वती प्रेस वाराणसी, और हंस प्रकाशन, इलाहाबाद से 'सेवा सदन' के कुल कितने संस्करण प्रकाशित हुए हैं, यह बता पाना नितान्त कठिन है। फिर भी इससे यह तो सिद्ध हो है कि १९१८ ई० से लेकर आजतक 'सेवा सदन' के २३ से अधिक संस्करण अवश्य प्रकाशित हो चुके हैं, और यह इस उपन्यास की लोकप्रियता का असन्दिग्ध प्रमाण है।

वरदान

प्रेमचन्द का 'वरदान' नामक उपन्यास, जो वस्तुत: उनके १९१२ ई० में प्रकाशित उर्दू उपन्यास 'जलवए-ईसार' का हिन्दी रूपान्तर है, सर्वप्रथम अप्रैल १९२१ ई० के निकट पूर्व में प्रकाशित हुआ। प्रस्तुत पंक्तियों का लेखक इस उपन्यास के प्रथम संस्करण को

---

१. आ० भा० पु० की पुस्तक-सूची।
२. प्राप्ति-स्थान—प० का० पु०, पटना।
३. चै० पु०, पटना की पुस्तक-सूची।
४. प्रा० स्था०—आ० भा० पु०, काशी।
५. प्रा० स्था०—दिल्ली पुस्तक सदन, पटना।
६. प्रा० स्था०—प० का० पु०, पटना।
७. प्रा० स्था०—मेरा निजी पुस्तकालय।

गये। इस तथ्य को 'असीम' की भूमिका में डॉ० श्रीकृष्ण लाल ने भी स्वीकार किया है। डॉ० लाल के अनुसार राखाल बाबू के उपन्यासों के हिन्दी में लोकप्रिय न हो पाने का कारण यह है कि 'राखाल बाबू उस युग में पैदा हुए जब ऐतिहासिक उपन्यासों का युग बीत चुका था और सामाजिक उपन्यासों का युग चल पड़ा था और एक से एक अच्छे सामाजिक उपन्यास लिखे जाने लगे थे। बँगला में रवीन्द्रनाथ ठाकुर और शरच्चन्द्र चटर्जी तथा हिन्दी में प्रेमचन्द के उपन्यासों की धूम मच गयी थी।"

हरिनारायण आप्टे

स्वर्गीय हरिनारायण आप्टे मराठी के उपन्यासकारों में शीर्षस्थ माने जाते हैं। वर्तमान शताब्दी के तीसरे दशक में हिन्दी साहित्यकारों का ध्यान इनके ऐतिहासिक उपन्यासों की तरफ आकृष्ट हुआ और इनके अधिकांश ऐतिहासिक उपन्यासों के अनुवाद हिन्दी में प्रस्तुत किये गये।

सूर्यग्रहण

सर्वप्रथम श्रीयुत रामचन्द्र वर्मा ने इनके 'सूर्यग्रहण' नामक उपन्यास का अनुवाद प्रस्तुत किया, जो १९२२ ई० में मनमोहन पुस्तकालय, काशी से प्रकाशित हुआ।[1] ग्रन्थ के अनुवादक द्वारा लिखित 'निवेदन' से ज्ञात होता है कि उक्त उपन्यास को पूरा करने के पूर्व ही आप्टे महोदय का देहान्त हो गया। अनुवादक ने अन्य स्थलों का छायानुवाद तो किया ही है, उपन्यास को अपनी तरफ से पूर्ण करने का भी प्रयास किया है। 'सूर्यग्रहण' के द्वितीय संस्करण का पता प्रस्तुत पंक्तियों के लेखक को नहीं है।

इस उपन्यास में शिवाजी के स्वदेश प्रेम, औरंगजेब की राजनैतिक चालों, समर्थ गुरु रामदास के आध्यात्मिक ज्ञान तथा महाराज जयसिंह, दिलेर खाँ आदि की नीति-कुशलता और चतुरता आदि का वर्णन किया गया है।

वज्राघात

आप्टे साहब के 'वज्राघात' नामक उपन्यास का लक्ष्मीधर वाजपेयी कृत, अनुवाद, प्रथम बार, १९२३ ई० में, शिवनारायण मिश्र, प्रताप पुस्तकालय, कानपुर द्वारा प्रकाशित किया गया। प्रस्तुत पंक्तियों का लेखक इस अनुवाद को प्राप्त करने में असमर्थ रहा है। उपर्युक्त सूचनाएँ आर्यभाषा पुस्तकालय की पुस्तकसूची से प्राप्त की गयी हैं। 'माधुरी' के जून १९२३ के अंक में इस अनुवाद की एक समीक्षा प्रकाशित हुई थी[2]

---

१. प्राप्तिस्थान—बिहार राष्ट्रभाषा परिषद् पुस्तकालय, पटना; मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—सूर्य्यग्रहण, ले० स्व० श्रीयुत हरिनारायण आप्टे के मराठी ग्रन्थ का अनुवाद, अनु० हिन्दी के चिरपरिचित श्रीयुत रामचन्द्र वर्मा, प्र० मनमोहन पुस्तकालय, काशी, प्रथमावृत्ति—रथयात्रा १९७९।

२. माधुरी, वर्ष, खंड २, सं० ५, जून १९२३, पुस्तक समीक्षा (वज्राघात),

फरवरी १९२५ के अंक में इस अनुवाद का विज्ञापन निकला था। इससे इसका प्रकाशन-काल १९२५ ई० का आरम्भ अथवा १९२४ ई० का अन्त अनुमित होता है।

रूपनगर की राजकुमारी

आप्टे साहब के किसी उपन्यास का श्री जगन्नाथ शर्मा 'अग्निहोत्री' कृत 'रूपनगर की राजकुमारी' शीर्षक अनुवाद हिन्दी साहित्य कार्यालय, दरभंगा से १९२८ ई० में प्रकाशित हुआ। प्रस्तुत पंक्तियों का लेखक इस उपन्यास को प्राप्त करने में असमर्थ रहा है। उपर्युक्त सूचनाएँ आर्यभाषा पुस्तकालय की पुस्तकसूची से प्राप्त की गयी हैं।

महाराष्ट्र प्रभात

सन् १९४७ ई० में विवेच्य उपन्यासकार के 'महाराष्ट्र प्रभात' नामक उपन्यास का एक अनुवाद श्री गाँधी ग्रथागार, सेनपुरा, बनारस से प्रकाशित हुआ। आर्यभाषा पुस्तकालय काशी में इस अनुवाद की एक प्रति है। पुस्तक में अनुवादक का नाम नही दिया हुआ है।

राष्ट्रपतन अथवा भारतीय स्वाधीनता की सन्ध्या

हरिनारायण आप्टे के किसी उपन्यास का ठाकुर राजबहादुर सिंह ने 'राष्ट्रपतन अथवा भारतीय स्वाधीनता की सन्ध्या' नामक अनुवाद प्रस्तुत किया था जो राजपाल एण्ड सन्ज, नई सड़क, दिल्ली से प्रकाशित हुआ। इस अनुवाद की एक प्रति बिहार राष्ट्रभाषा परिषद पुस्तकालय, पटना में उपलब्ध है। पुस्तक में प्रकाशन-तिथि नहीं दी हुई है।

हरिनारायण आपटे के ऐतिहासिक उपन्यास हिन्दी पाठकों के बीच यथोचित लोकप्रिय न हो सके। इनके किसी भी उपन्यास के अनुवाद का दूसरा संस्करण हिन्दी में प्रकाशित नहीं हुआ। आधुनिक हिन्दी पाठकों में भी इनके उपन्यासों की लोकप्रियता नगण्य है।

ख्वाजा हसन निजामी

ख्वाजा हसन निजामी उर्दू के एक प्रसिद्ध ऐतिहासिक उपन्यासकार हैं। इनके दो ऐतिहासिक उपन्यासों—'बेगमात के आँसू' और 'बहादुर शाह का मुकदमा'—के अनुवाद प्रेमचन्द युग में हुए थे।

बेगमात के आँसू

सर्वप्रथम निजामी साहब के 'बेगमात के आँसू' नामक उपन्यास का उमरावसिंह कारुणिक कृत अनुवाद 'मुगलों के अन्तिम दिन' शीर्षक से ज्ञान प्रकाश मन्दिर माछरा, मेरठ से १९२२ ई० में प्रकाशित हुआ।[१] 'बेगमात के आँसू' का श्री राम शर्मा द्वारा प्रस्तुत

---

१. प्राप्ति स्थान—आर्यभाषा पुस्तकालय, काशी: मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—मुगलों के अन्तिम दिन, अर्थात् उर्दू के प्रसिद्ध लेखक मुसव्विरे फितरत श्रीयुत ख्वाजा हसन निजामी के अन्तिम मुगल राजकुमार

चंडीचरण सेन

दीवान गंगा गोविन्द सिंह

सन् १९२६ ई० में चंडी चरण सेन के 'दीवान गंगा गोविन्द सिंह' नामक ऐतिहासिक उपन्यास का डॉ० वीरेन्द्रनाथ दास कृत अनुवाद 'चंडीचरण ग्रन्थावली' (द्वितीय खंड) के अन्तर्गत 'सस्ती साहित्य पुस्तकमाला कार्यालय, बनारस सिटी से प्रकाशित हुआ।[1] इस उपन्यास में वारेन हेस्टिंग्स के समय में इस्ट इंडिया कम्पनी द्वारा भारत पर किये गये अत्याचारों का वर्णन है।

'चंडीचरण ग्रन्थावली' के अन्य खंडों का पता प्रस्तुत पंक्तियों के लेखक को नहीं है।

वीर बाला

सन् १९२९ ई० में चंडी बाबू के 'झांसी की रानी' नामक उपन्यास का श्री गणेश पांडेय कृत अनुवाद 'वीर बाला' शीर्षक से, चाँद कार्यालय, इलाहाबाद से प्रकाशित हुआ।[2] इस उपन्यास में झांसी की रानी लक्ष्मीबाई के वीरतापूर्ण ज्वलन्त आत्मत्याग की कहानी वर्णित है।

फुटकल उपन्यास

नसीरुद्दीन हैदर

सन् १९२० ई० में 'नसीरुद्दीन हैदर' नामक अनूदित ऐतिहासिक उपन्यास श्री नटवर चक्रवर्ती द्वारा कलकत्ता से प्रकाशित हुआ।[3] इस पुस्तक में मूल उपन्यास, उसके लेखक या अनुवादक किसी का भी नाम नहीं प्रकाशित किया गया है।

शिवाजी का दाहिना हाथ

सन् १९२० ई० में श्रीयुत प्रभाकर श्रीपतमसे द्वारा लिखित 'शिवाजी-चा उजवा

---

१. प्राप्ति स्थान—आर्यभाषा पुस्तकालय, काशी। मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—चंडीचरण ग्रन्थावली (द्वितीय खंड), अर्थात् दीवान गंगा गोविन्द सिंह का अविकल अनुवाद, अनुवादक—डॉ० वीरेन्द्रनाथ दास, प्रकाशक—सस्ती साहित्य पुस्तकमाला कार्यालय, बनारस सिटी, प्रथमावृत्ति फाल्गुन सं० १९८३ वि०, पृ० सं० २३२।

२. प्राप्ति स्थान—आर्यभाषा पुस्तकालय, काशी; मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि-वीर बाला, बँगला के अमर लेखक श्री चण्डीचरण सेन महोदय के सुप्रसिद्ध ऐतिहासिक उपन्यास का अनुवाद, अनुवादक—श्री० गणेश पांडेय, प्र० 'चाँद' कार्यालय, इलाहाबाद, जून १९२९, प्रथम संस्करण २०००, पृ०सं० ६१७।

३. प्रा० स्था०—आ० भा० पु० काशी। मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—नसीरुद्दीन हैदर, हिन्दी भाषानुवाद, ३८/२, भवानी चरण दत्त स्ट्रीट, हिन्दी वंगवासी इलेक्टरी मशीन प्रेस में श्री नटवर चक्रवर्ती द्वारा मुद्रित और प्रकाशित, संवत् १९६७, सन् १९२० ई०।

राजपूत बाला

सन् १९२२ ई० में श्रीयुत प्रमथनाथ चट्टोपाध्याय कृत 'राजपूतेर मेये' नामक ऐतिहासक उपन्यास का पं० धर्मानन्द कृत 'राजपूत बाला, शीर्षक अनुवाद स्वयं लेखक द्वारा नैनीताल से प्रकाशित किया गया ।[1]

भगिनीद्वय याने मरूभूमि में जलविन्दु

सन १९२४ ई० में मराठी उपन्यासकार यशवन्त सूर्या जी देशाई के 'रूमेला-जुमेला' नामक ऐतिहासिक उपन्यास का पं० उदयचन्द कृत 'भगिनीद्वय याने मरूभूमि में जल विन्दु' शीर्षक अनुवाद शंकर नरहर जोशी, चित्रशाला स्टीम प्रेस, पूना से प्रकाशित हुआ ।[2]

शीला देवी

सन् १९२४ ई० में बँगला उपन्यासकार नलिनीरंजन चौधरी के 'शीला देवी' नामक ऐतिहासिक उपन्यास का हरिदत्त पाण्डेय द्वारा प्रस्तुत हिन्दी अनुवाद, उपर्युक्त शीर्षक से ही 'सरस्वती' के कतिपय अंकों में प्रकाशित हुआ ।[3] १९२५ ई० में यह अनुवाद इंडियन प्रेस, प्रयाग से पुस्तकाकार प्रकाशित हुआ । आ० भा० पु० काशी में इस उपन्यास की एक प्रति है किन्तु उसके मुखपृष्ठ के नष्ट हो जाने के कारण पुस्तक के सम्बन्ध में कोई सूचना नहीं मिलती । 'निवेदन' के अन्त में अक्षय तृतीया सं० १९८२" मुद्रित रहने से इसके अनुवाद-काल का पता चलता है । आ० भा० पु० की पुस्तक सूची में श्री लल्ली प्रसाद पांडेय को अनुवादक बताया गया है, जबकि 'सरस्वती' के उपर्युक्त अंकों में श्री हरिदत्त पांडेय को अनुवादक कहा गया है । यह समझ में न आने वाली बात है। आ० भा० पु० में उपलब्ध प्रति के 'निवेदन' के अन्त में भी 'लल्ली प्रसाद पांडेय' ही मुद्रित है । 'निवेदन' के अनुसार "महास्थान राजकुमारी शीला देवी की स्मृति-रक्षा के

---

१. प्राप्ति स्थान—आर्यभाषा पुस्तकालय, काशी। मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—राजपूत बाला, श्रीयुत् प्रमथनाथ चट्टोपाध्याय प्रणीत राजपूतेर मेये नामक बँगला पुस्तक का हिन्दी अनुवाद, अनुवादक—पं० धर्मानन्द, भूतपूर्व 'समन्वय' सम्पादक, प्रकाशन—पं० धर्मानन्द मजेड़ा, नैनीताल, प्रथम संस्करण १९२२, पृ० सं० १६६ ।

२. प्राप्ति स्थान—राष्ट्रभाषा परिषद् पुस्तकालय, पटना। मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—भगिनी-द्वय याने मरूभूमि में जल विन्दु, ले०—यशवन्त सूर्याजी देसाई, हिन्दी अनु०—पं० उदयचन्द (हिन्दी चित्रमय जगत्, सम्पादक, पूना), प्रकाशक-मुद्रक—शंकर नरहर जोशी, चित्रशाला स्टीम प्रेस, १०२६, सदाशिव सेठ, पूना शहर, १९८०, प्रथमावृत्ति १०००, १९२४ ई० ।

३. शीला देवी, अ० श्रीयुत् हरिदत्त पांडेय—सरस्वती; जनवरी १९२४ (पृ० ८९); फरवरी १९२४ (पृ० २१०-२२०); मार्च १९२४ (पृ० ३२३ ३३१); एप्रिल १९२४ (पृ० ४३४-४४१); मई १९२४ (पृ० ५४६-५४९); जून १९२४ (पृ० ६६७-६७२); जुलाई १९२४ (पृ० ७९७-८०३); सितम्बर १९२४ (पृ० १०२७-१०३८); अक्तूबर १९२४ (पृ० ११३४-११४६); नवम्बर १९२४ (पृ० १२२९-१२३७); दिसम्बर (पृ० १३४५-१३५८) ।

आफिस, काशी से प्रकाशित हुआ।[1] 'भूमिका' से ज्ञात होता है कि यह बंकिमचन्द्र चट्टोपाध्याय के 'सीताराम' नामक ऐतिहासिक उपन्यास का उपसंहार है। बंकिम बाबू ने मुसलमानों द्वारा महाराज सीताराम की राजधानी पर अधिकार जमाने और महाराज सीताराम के स्त्री-पुत्र सहित प्राण लेकर भाग जाने का वर्णन करके अपना उपन्यास समाप्त कर दिया है। इस उपन्यास में इसके बाद की घटनाओं का वर्णन है। इसके बाद सीताराम ने किस प्रकार जीवन व्यतीत किया, कि वे किस प्रकार कार्यानुष्ठान में प्रवृत्त हुए, इसका इस उपन्यास में वर्णन है। 'भूमिका' से यह भी पता चलता है कि यह अविकल अनुवाद नहीं है।[2]

राजकुमार कुणाल

सन् १९२७ ई० में ही महामहोपाध्याय पं० हरप्रसाद जी शास्त्री के किसी उपन्यास का पं० लक्ष्मीधर वाजपेयी कृत 'राजकुमार कुणाल' शीर्षक अनुवाद खड्गविलास प्रेस, बाँकीपुर से प्रकाशित हुआ।[3] इस उपन्यास में राजकुमार कुणाल के तिष्यरक्षिता द्वारा अन्धे बनाये जाने की कथा वर्णित है।

जन्मभूमि

सन् १९२८ ई० में किसी उपन्यास का **'जन्मभूमि'** शीर्षक हिन्दी अनुवाद, तीन भागों में, उपन्यास बहार ऑफिस, काशी से प्रकाशित हुआ। प्रथम भाग के अनुवादक बाबू श्रीकृष्ण हसरत, द्वितीय भाग के अनुवादक मौलवी मजहर हुसेन और तृतीय भाग के अनुवादक श्रीयुत् विश्व हैं। पुस्तक में कहीं भी मूल पुस्तक अथवा उसके रचयिता की सूचना नहीं दी हुई है। प्रकाशन-काल की सूचना केवल तीसरे भाग के मुखपृष्ठ पर दी गयी है।[4] पुस्तक को पढ़ने से अनुमान होता है कि यह किसी अँगरेजी उपन्यास का अनुवाद है, क्योंकि इस उपन्यास के पात्र अँगरेज हैं।

राजपूत नन्दिनी

सन् १९२८ ई० में श्री प्रवासीलाल वर्मा मालवीय द्वारा 'वीरांगना' नामक किसी

---

१. प्रा० स्या०-आ० भा०पु० काशी। मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—श्री सीताराम उपन्यास का उपसंहार भाग, लेखक श्रीयुत बा० नन्दकिशोर लाल जी, समस्तीपुर (दरभंगा), प्रकाशक-उपन्यास बहार आफिस, काशी, बनारस, प्रथम बार १९२७ ई०, पृ० सं० १७३+२।

२. उपरिवत्, भूमिका।

३. प्रा० स्या०—सिनहा पुस्तकालय, पटना; मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—राजकुमार कुणाल, महामहोपाध्याय पंडित हरप्रसादजी शास्त्री के एक ऐतिहासिक उपन्यास का अनुवाद, अनुवादक पंडित लक्ष्मीधर बाजपेयी, प्रकाशक खड्गविलास प्रेस, बाँकीपुर, १९२७ ई०, प्रथम आवृत्ति, पृ० सं० २५२।

४. प्रा० स्या०—आ०भा० पु० काशी। मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—जन्मभूमि, एक ऐतिहासिक शिक्षाप्रद उपन्यास, अनुवादक—श्रीयुत 'विश्व', प्रकाशक—उपन्यास बहार आफिस काशी, बनारस, प्रथम बार, सन् १९२८ ई०, तीसरा भाग।

है। इस उपन्यास में प्राचीन भारतीय वैज्ञानिक भास्कराचार्य की अद्भुत वैज्ञानिक शक्तियों तथा लीलावती के प्रति, जो कदाचित् उनकी पत्नी थी, उनकी मोहासक्ति का वर्णन किया गया है।

वीर पत्नी

१९३१ ई० में नारायण भट्टाचार्य कृत किसी बँगला ऐतिहासिक उपन्यास का शान्तिनारायण द्वारा प्रस्तुत 'वीर पत्नी' शीर्षक अनुवाद नारायण दत्त सहगल एंड सन्ज, लाहौर से प्रकाशित हुआ।[1] प्रस्तुत पंक्तियों का लेखक इस उपन्यास को प्राप्त करने में असमर्थ रहा है।

मानसिंह या कमला देवी : शाणी सुलसा

सम्भवतः प्रेमचन्द युग में ही पं० हरिमोहन मुखोपाध्याय के किसी उपन्यास का पं० ईश्वरी प्रसाद शर्मा द्वारा प्रस्तुत किया हुआ 'मानसिंह या कमलादेवी' नामक अनुवाद हरिदास एंड कम्पनी, कलकत्ता से प्रकाशित हुआ। इसी अवधि में मुनिराज विद्या जिन द्वारा गुजराती से अनूदित 'शाणी सुलसा' नामक ऐतिहासिक उपन्यास भी प्रकाशित हुआ।

राजपूत नन्दिनी

सन् १९३१ ई० में बँगला उपन्यासकार श्री प्रमथनाथ चट्टोपाध्याय कृत 'राजपूत नन्दिनी' नामक ऐतिहासिक उपन्यास का श्री रामाशीष सिंह कृत अनुवाद कमलिनी साहित्य मन्दिर, कलकत्ता से प्रकाशित हुआ।[2]

विदुषी खन्ना

बँगला उपन्यासकार श्री हाराणचन्द्र रक्षित कृत किसी उपन्यास का श्रीयुत 'विश्व' कृत 'विदुषी खन्ना' शीर्षक अनुवाद, उपन्यास बहार आफिस, काशी से प्रकाशित हुआ।[3] पुस्तक के मुखपृष्ठ पर न तो मूल पुस्तक का नाम दिया हुआ है न प्रकाशन-काल ही। अतएव इन सूचनाओं का पता लगा पाना कठिन है।

हुगली का इमामबाड़ा

सन् १९३६ ई० में स्वर्णकुमारी देवी के 'हुगलीर इमामबाड़ी' का मुरारीदास

के एक उपन्यास का हिन्दी रूपान्तर) रूपान्तरकार—पं० कात्यायनी दत्त त्रिवेदी, प्रकाशक—इंडियन प्रेस, लिमिटेड, प्रयाग, १९३०, प्रथमावृत्ति, पृ० सं० ८५।

१. आ० भा० पु० काशी की पुस्तकसूची।

२. प्राप्ति स्थान—आर्यभाषा पुस्तकालय, काशी; मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—साहित्य सम्राट बंकिम चन्द्र चट्टोपाध्याय के भ्रातुष्पुत्र श्री प्रमथनाथ चट्टोपाध्याय लिखित 'राजपूत नन्दिनी', हृदयग्राही ऐतिहासिक उपन्यास, प्रथम संस्करण १९८८ वि०, अनुवादक—श्री रामाशीष सिंह, प्रकाशक—श्री गोष्ठ बिहारी दत्त, श्री शरच्चन्द्र पाल, कमलिनी साहित्य मन्दिर, ११४, अहीरी टोला स्ट्रीट, कलकत्ता, पृ० सं० ९८।

३. आ० भा० पु० की पुस्तकसूची।

वैज्ञानिक उपन्यास

हिन्दी पाठकों में वैज्ञानिक कथाओं के समुचित रूप से लोकप्रिय न होने के बावजूद प्रेमचन्द युग में कुछ वैज्ञानिक कथापुस्तकों के अनुवाद प्रस्तुत किये गये।

वेलून विहार

सन् १९१८ ई० में फ्रेंच लेखक जूल्स वर्न की किसी वैज्ञानिक कथा का शिव सहाय चतुर्वेदी द्वारा प्रस्तुत 'वेलून विहार' शीर्षक 'रूपान्तर' हरिदास एंड कम्पनी, कलकत्ता से प्रकाशित हुआ।[1] इस कथा में तीन अँगरेज उड़ाकों के वेलून द्वारा अफ्रीका-भ्रमण का वृत्तान्त वर्णित किया गया है।

भूगर्भ की सैर

सन् १९१९ ई० में जूल्स वर्न के 'ए जर्नी इन्टू दि इन्टेरियर ऑव अर्थ' के आधार पर 'एक हिन्दी सेवक' द्वारा रचित 'भूगर्भ की सैर' नामक वैज्ञानिक कथापुस्तक कलकत्ता से प्रकाशित हुई।[2]

विमान विध्वंसक

सन् १९२३ ई० में अथवा उसके कुछ पूर्व किसी 'विलियम' लिखित 'जेपलिन डिष्ट्रायर' नामक वैज्ञानिक उपन्यास का किसी 'उन्मत्त' द्वारा प्रस्तुत 'विमान विध्वंसक' शीर्षक अनुवाद नाथ-क्षत्री-ब्रह्मचर्याश्रम, काशी से प्रकाशित हुआ। प्रस्तुत पंक्तियों का लेखक इस पुस्तक को प्राप्त करने में असमर्थ रहा है। उपर्युक्त सूचनाएँ 'सरस्वती', भाग २३, अंक १ (जनवरी १९२३ ई०) में प्रकाशित विवेच्य उपन्यास की समीक्षा से प्राप्त की गयी हैं। उक्त समीक्षा के अनुसार "यह एक वैज्ञानिक उपन्यास है।....इस पुस्तक में विशेषकर यह दिखलाया गया है कि किस प्रकार लड़ाई के नूतन यन्त्रों का आविष्कार करके थोड़े काल में युद्ध में सफलता प्राप्त हुई है और किस प्रकार जेपलिन का नाश करने वाला यन्त्र शीघ्र तैयार किया गया है।"[3]

---

१. प्रा० स्था०—आ० भा० पु० काशी; मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—वेलून विहार, अर्थात तीन अँगरेज उड़ाकों का वेलून द्वारा अफ्रिका-भ्रमण का वैज्ञानिक विनोदपूर्ण वृत्तान्त, लेखक शिवसहाय चतुर्वेदी, प्रकाशक हरिदास एंड कंपनी, कलकत्ता, २०१, हरिसन रोड के "नरसिंह प्रेस" में बाबू रामप्रताप भार्गव द्वारा मुद्रित, सन् १९१८, पहली बार १०००, पृ० सं० २२१ (लगभग)।

२. प्रा० स्था०—आ० भा० पु० काशी। मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि-भूगर्भ की सैर, हिन्दी नावेल; पहली दूसरी पुस्तक सितंबर ओर अक्टोबर—१९१९, 'भीषण पाप', पैशाचिक काण्ड, सागर साम्राज्य; 'यूरोपीय युद्ध का मूल कारण' आदि शताधिक हिन्दी पुस्तकों के लेखक एक हिन्दी सेवक द्वारा लिखित, कलकत्ता सन् १९१९ ई०।

३. सरस्वती, भाग २४, अंक १, जनवरी १९२३।

अपराधप्रधान उपन्यास

प्रेमचन्द युग में मौलिक अपराध प्रधान उपन्यासों का प्रायः अभाव ही दीख पड़ता है, पर अनूदित उपन्यासों की संख्या में पूर्ववर्ती युग की अपेक्षा वृद्धि दिखायी पड़ती है। अन्तर यही दीख पड़ता है कि प्राक् प्रेमचन्द युग में हिन्दी लेखक बँगला अपराध प्रधान उपन्यासों के, जो स्वयं अँगरेजी उपन्यासों के अनुवाद या रूपान्तर होते थे, अनुवाद हिन्दी में प्रस्तुत करते थे, जबकि प्रेमचन्द युग में अपराधप्रधान उपन्यासों के सीधे अँगरेजी से अनुवाद या रूपान्तर प्रस्तुत किये गये। इस युग में सेक्सटन ब्लेक सिरीज के अधिकांश जासूसी उपन्यास हिन्दी में अनूदित हुए। थोड़े बहुत अन्य अनुवाद भी सामने आये। प्रस्तुत परिच्छेद में इन अनूदित उपन्यासों का विवरण प्रस्तुत किया गया है।

विचित्र जासूस अथवा जर्मनी का दाँव-पेच

सन् १९१९ ई० में एडगर वैलेस लिखित 'दि स्टोरी ऑफ ए फेटल पीस' नामक जासूसी उपन्यास का गंगा हरी खानवलकर कृत 'विचित्र जासूस अथवा जर्मनी का दाँवपेच' नामक अनुवाद हिन्दी पुस्तक एजेन्सी, कलकत्ता से प्रकाशित हुआ। इस उपन्यास का एक संस्करण १९३४ ई० में प्रकाशित हुआ।[1] प्रस्तुत पंक्तियों का लेखक इस उपन्यास के प्रथम संस्करण को प्राप्त करने में असमर्थ रहा है। इसकी प्रस्तावना के अन्त में 'अप्रैल सन् १९१९ ई०' तिथि मुद्रित है, जिससे इसके प्रथम संस्करण का प्रकाशन-काल ज्ञात होता है।

'प्रस्तावना' से ज्ञात होता है कि यह एक मराठी अनुवाद का हिन्दी अनुवाद है।

जर्मन कोयल

सन् १९२० ई० में रामानन्द दूबे द्वारा अँगरेजी से अनूदित 'जर्मन कोयल' नामक जासूसी उपन्यास कन्हैया लाल, बुकसेलर, द्वारा पटना सिटी से प्रकाशित हुआ।[2] यद्यपि पुस्तक में इसके अनुवाद होने की सूचना नहीं दी हुई है पर कथा के पात्रों तथा स्थानों के नाम इंगलैंडीय होने से इसके अनुवाद होने को दृढ़ निश्चय हो जाता है।

जर्मन षड्यन्त्र

सन् १९२० ई० में चन्द्रशेखर पाठक द्वारा प्रस्तुत किया हुआ ब्लैक सिरीज के

---

१. प्रा० स्था—प० वि० पु०, पटना। मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—विचित्र जासूस अथवा जर्मनी का दांवपेच (एक अद्भुत जासूसी उपन्यास) अनुवादक—गंगाधर हरी खानवलकर, प्रकाशक—वैजनाथ केडिया, हिन्दी पुस्तक एजेन्सी २०३, हरिसन रोड, कलकत्ता, (संस्करण का स्थान फटा हुआ है) संवत् १९९१।

२. प्रा० स्था०—आ० भा० पु० काशी। मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—जर्मन कोयल, लेखक—रामानन्द दूबे, प्रकाशक—कन्हैया लाल बुकसेलर्स, चौक, पटना सिटी, बी० एल० पावगी द्वारा हितचिन्तक प्रेस, रामघाट, बनारस सिटी में मुद्रित, प्रथम बार, सन् १९२० ई०, पृ० सं० ८६।

सुन्दरी डाकू या हीरे की खान

सन् १९२१ ई० में पंडित ईश्वरी प्रसाद शर्मा द्वारा अनूदित 'सुन्दरी डाकू या हीरे की खान' नामक उपन्यास रामलाल वर्मा द्वारा, कलकत्ता में प्रकाशित हुआ।[1] पुस्तक के मुखपृष्ठ पर मूल उपन्यासकार या मूल उपन्यास की सूचना नहीं दी हुई है। 'भूमिका' से ज्ञात होता है कि इसके पूर्व ईश्वरी प्रसाद शर्मा ने 'गुलाब में कांटा' और 'डाकू की रानी या हवाई जहाज' नामक जासूसी उपन्यासों के अनुवाद प्रस्तुत किये थे।

कार्तिकेय चरण मुखोपाध्याय द्वारा ब्लैक सिरीज से अनूदित उपन्यास :

रणभूमि का रिपोर्टर, ले० रावर्ट ब्लेक, अ० कार्तिकेय चरण मुखोपाध्याय, प्र० रामलाल वर्मा, कलकत्ता, प्रथम संस्करण १९७६ वि०।[1]

जर्मन जासूस, ले० रावर्ट ब्लेक, अ० पं० कार्तिकेय चरण मुखोपाध्याय, प्र० आर० एल० वर्मन एंड को, कलकत्ता, भाद्रपद, सं० १९७९ वि०, प्रथम सं० २००० प्रति, पृ० सं० १४९।[2]

सुन्दर अमेलिया, ले० रावर्ट ब्लेक, अ० कार्तिकेय चरण मुखोपाध्याय, प्र० वर्मन प्रेस, कलकत्ता, प्रथम संस्करण १९८०, वि०।[3]

टर्की का कैदी, ले० रावर्ट ब्लेक, अ० कार्तिकेय चरण मुखोपाध्याय, प्र० वर्मन प्रेस, कलकत्ता, प्रथम संस्करण १९८० वि०।[4]

चीना सुन्दरी या विद्रोही सरदार, अ० पं० कार्तिकेय चरण मुखोपाध्याय, प्र० रामलाल वर्मा, प्रोप्राइटर 'वर्मन प्रेस' और 'आर० एल० वर्मन एंड को' ३७१, अपर चितपुर रोड, कलकत्ता, पौष सं० १९८० वि०, प्रथम सं० २०००।[5]

रामनाथ पांडेय द्वारा अनूदित 'ब्लेक सिरिज' के उपन्यास—

धनकुबेर या अर्थ पिशाच, अ० रामनाथ पाण्डेय, प्र० आर० एल० वर्मन एंड को०, कलकत्ता, प्रथम संस्करण १९८० वि०।[6]

बोलसेविक रहस्य या खून का प्यासा अनुवादक रामनाथ पाण्डेय प्र० वर्मन प्रेस, कलकत्ता, प्रथम संस्करण १९८८ वि०।[7]

---

१. प्रा० स्था०—आ० भा० पु०, काशी। मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—सुन्दरी डाकू या हीरे की खान, सचित्र जासूसी उपन्यास, अनुवादक—पंडित ईश्वरी प्रसाद शर्मा, प्र०—रामलाल वर्मा, प्रोप्राइटर 'वर्मन प्रेस' और 'आर० एल० वर्मन एंड कों०, कलकत्ता, संवत् १९७८ वि०, प्रथम संस्करण [illegible], पृ० सं० १०४।

१. आ० भा० पु०, पुस्तकसूची।

२. प्रा० स्था०—आ० भा० पु० काशी।

३. आ० भा० पु०, पुस्तकसूची।

४. आ० भा० पु०, पुस्तकसूची।

५. प्राप्ति स्थान—हि० सा० स० पु०, प्रयाग।

६. आ० भा० पु० की पुस्तकसूची।

७. तदेव।

आफत की पुड़िया, ले० प्रद्युम्न कृष्ण कौल, प्र० हिन्दी पुस्तक एजेन्सी, कलकत्ता, प्रथम संस्करण १९८२ वि० ।[1]

खूनी सरपंच, ले० पं० प्रद्युम्न कृष्ण कौल, प्र० रामलाल वर्म्मा, प्रोप्राइटर 'वर्म्मन एंड को०, कलकत्ता, प्रथम संस्करण १९८२ वि० ।

विचित्र बूढ़ा

सन् १९२५ ई० में पं० गुलजारी लाल चतुर्वेदी द्वारा अनूदित 'विचित्र बूढ़ा' नामक अपराध प्रधान उपन्यास हिन्दी पुस्तक एजेन्सी, १२६, हरिसन रोड, कलकत्ता से प्रकाशित हुआ ।[2] यह किसी अँगरेजी उपन्यास का अनुवाद प्रतीत होता है । सन् १९३५ ई० में इस उपन्यास का द्वितीय संस्करण 'जासूसों का गुरु घंटाल उर्फ विचित्र बूढ़ा' शीर्षक से हिन्दी पुस्तक एजेन्सी से ही प्रकाशित हुआ ।[3]

आत्म हत्या या खून, अ० प्रद्युम्न कृष्ण कौल, प्र० रामलाल वर्म्मा, प्रोप्राइटर "वर्म्मन प्रेस" और "आर० एल० वर्म्मन एंड को०" कलकत्ता, कातिक सं० १९८३ वि० प्रथम संस्करण २००० ।[4]

भूत लीला—शेष सूचनाएँ उपरिवत् ।[5]

जेल रहस्य

सन् १९२७ ई० में कार्तिकेयचरण मुखोपाध्याय द्वारा अनूदित 'ब्लेक सिरीज' का 'जेल रहस्य' नामक उपन्यास रामलाल वर्म्मा, प्रोप्राइटर "वर्म्मन प्रेस" और "आर० एल० वर्म्मन एंड को०" कलकत्ता से प्रकाशित हुआ ।[6]

काला साँप

प्राक् प्रेमचन्द युग में बँगला के प्रसिद्ध अपराधप्रधान उपन्यासों के लेखक बाबू पाँचकौड़ी के उपन्यास हिन्दी में अनूदित होकर बहुत लोकप्रिय हुए थे । प्रेमचन्द युग में भी इनके दो-एक उपन्यासों के अनुवाद प्रस्तुत किये गये । सन् १९२६ ई० में दे साहब के किसी उपन्यास का श्री रामलाल वर्मा द्वारा प्रस्तुत किया हुआ 'काला साँप' शीर्षक अनुवाद का दूसरा संस्करण आर० एल० वर्म्मन एंड कम्पनी, कलकत्ता से प्रकाशित हुआ ।[7]

---

१. आ० भा० पु० काशी की पुस्तकसूची ।

२. आ० भा० पु० काशी, पुस्तक सूची ।

३. प्रा० स्था०—आ० भा० पु० काशी ।

४. प्रा० स्था०—आ० भा० पु० काशी ।

५. उपरिवत् ।

६. आ० भा० पु० काशी, पुस्तकसूची ।

७. प्रा० स्था०—आ० भा० पु०, काशी । मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—काला साँप, एक विचित्र घटनापूर्ण उपन्यास, अनुवादक श्री राम लाल वर्मा, प्रकाशक रामलाल वर्म्मा, प्रोप्राइटर "वर्म्मन प्रेस" और "आर० एल० वर्म्मन ए० को०", कलकत्ता, श्रावण, सं० १९८३ वि० द्वितीय संस्करण २००० ।

उपर्युक्त आलोचकों में से किसी ने भी अपने मत के समर्थन में कोई प्रमाण नहीं दिया है, न उन्होंने प्रकाशन-संस्था या प्रकाशक का नाम बताया है। ऐसी स्थिति में इन मतों का मूल्य कितना है, यह बताना अनावश्यक है।

प्रेमचन्द के अन्य उपन्यासों की तरह तो नहीं, पर 'वरदान' को भी हिन्दी पाठकों में पर्याप्त लोकप्रियता प्राप्त हुई। जनवरी १९४५ ई० में इस उपन्यास का 'प्रथम संस्करण' (?) और दिसम्बर १९४५ ई० में द्वितीय संस्करण सरस्वती प्रेस, वाराणसी, से प्रकाशित हुआ।[1] हिन्दुस्तानी पब्लिशिंग हाउस, वाराणसी से 'वरदान' का तृतीय संस्करण १९५० ई० में[2] और हंस प्रकाशन, इलाहाबाद, से इसका पाँचवाँ संस्करण मार्च १९५६ ई० में प्रकाशित हुआ।[3] इसका एक संस्करण सरस्वती प्रेस, इलाहाबाद से प्रकाशित हुआ है, जिसमें प्रकाशन काल अथवा संस्करण संख्या कुछ भी नहीं दिया हुआ है। यह भार्गव प्रेस, १ बाई का बाग, इलाहाबाद, से मुद्रित है तथा इसकी पृष्ठसंख्या १३४ है।[4] इस से यह सिद्ध होता है कि प्रेमचन्द के जीवन काल में 'वरदान' हिन्दी पाठकों में बिलकुल ही लोकप्रिय न हो पाया था। बाद में इसकी लोकप्रियता कुछ बढ़ी जिसका कारण प्रेमचन्द का उपन्यासकार के रूप में लोकप्रिय होना है।

प्रेमाश्रम

'वरदान' के बाद प्रेमचन्द का 'प्रेमाश्रम' नामक उपन्यास १९२२ ई० में हिन्दी पुस्तक एजेंसी, कलकत्ता से प्रकाशित हुआ। प्रस्तुत पंक्तियों का लेखक इस उपन्यास के प्रथम संस्करण को प्राप्त करने में असमर्थ रहा है। हिन्दी पुस्तक एजेंसी, कलकत्ता से १९४५ ई० में प्रकाशित 'प्रेमाश्रम' के आठवें संस्करण में रामदास गौड़ लिखित 'अनुवचन' संलग्न है। प्रस्तुत पंक्तियों के लेखक को 'प्रेमाश्रम' का इससे पूर्व का कोई संस्करण नहीं प्राप्त हो सका है। इसके अन्त में 'कल्पवास, होली १९०९' मुद्रित है। सामान्यतः विक्रम संवत् में सत्तावन घटाने पर ईसवी सन् प्राप्त होता है, पर १ जनवरी से लेकर चैत्र की अमावस्या के बीच में ईस्वी सन् जानने के लिए विक्रम संवत् से छप्पन वर्ष घटाना होता है। १ जनवरी को नया ईसवी सन् आरम्भ हो जाता है, जब कि नया विक्रम संवत् १ शुक्ल चैत्र को आरम्भ होता है। इस हिसाब से 'होली १९७९' का अर्थ है मार्च १९२३। इसी आधार पर डॉ० गीता लाल ने 'प्रेमाश्रम' का प्रकाशन-काल १९२३

---

१. प्रा० स्था०—ज० पु०, चुन्नी। मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—वरदान (मौलिक उपन्यास); लेखक—प्रेमचन्द; सरस्वती प्रेस, बनारस; प्रथम संस्करण १०००, जनवरी १९४५; द्वितीय संस्करण १०००, दिसम्बर १९४५।

२. प्रा० स्था—प० का० पु०, पटना।

३. प्रा० स्था०—प० वि० पु० पटना।

४. प्रा० स्था०—राजकमल प्रकाशन, पटना।

भेद भरा खून, सूचनाएँ उपरिवत् ।[1]

पैशाचिक प्रतिहिंसा—शेष सूचनाएँ उपरिवत् ।[2]

प्याले की चोरी—शेष सूचनाएँ उपरिवत् ।[3]

फाँसी का तख्ता, ले० मि० ब्लैक, अ० रामाशीष सिंह, प्र० हिन्दी पुस्तक एजेन्सी, कलकत्ता, प्रथम संस्करण १९३३ ई० ।[4]

नकली नेता, अ०, रामाशीष सिंह, प्र० हिन्दी पुस्तक एजेन्सी, कलकत्ता, प्रथम संस्करण १९९० वि० ।[5]

अद्भुत जाल--- अ० पं० जगन्नाथ शर्मा अग्निहोत्री, प्र० लक्ष्मी पुस्तकालय, बनारस, प्रथम संस्करण १९३४ ई० ।[6]

चक्करदार चोरी--सूचनाएँ, उपरिवत् ।[7]

छिपा दुश्मन--सूचनाएँ उपरिवत् ।[8]

विचारक डाकू—सूचनाएँ उपरिवत् ।[9]

भयानक षड्यंत्र—सूचनाएँ उपरिवत् ।[10]

खूनी डाक्टर--सूचनाएँ उपरिवत् ।[11]

चालाक जौहरी—सूचनाएँ उपरिवत् ।[12]

जबरदस्त ठग—सूचनाएँ उपरिवत् ।[13]

बंबई में ब्लैक—सूचनाएँ उपरिवत् ।[14]

महाजनी का मजा, अ० श्री चन्द्रभाल त्रिपाठी, प्र० हिन्दी पुस्तक ऐजेन्सी, प्रथम संस्करण १९३४ ई० ।[15]

---

१. उपरिवत् ।
२. उपरिवत् ।
३. प्रा० स्था०—आ० भा० पु० काशी ।
४. प्रा० स्था०—प० वि० पु०, पटना ।
५. आ० भा० पु० की पुस्तक सूची ।
६. प्रा० स्था०-आ० भा० पु० काशी ।
७. उपरिवत् ।
८. उपरिवत् ।
९. उपरिवत ।
१०. उपरिवत् ।
११. उपरिवत् ।
१२. उपरिवत् ।
१३. उपरिवत ।
१४. उपरिवत् ।
१५. प्रा० स्था० प० वि० पु०, पटना ।

निरपराध खूनी —सूचनाएँ उपरिवत् ।[१]

नरपिशाच--सूचनाएँ उपरिवत् ।[२]

चमत्कार—अ० देवनारायण द्विवेदी, प्र० भार्गव पुस्तकालय, गायघाट, काशी, प्रथम संस्करण १९३६ ई० ।[३]

सुन्दरी की शत्रुता, अ० देवनारायण द्विवेदी, शेष सूचनाएँ उपरिवत् ।[४]

ढोंगी, शेष सूचनाएँ उपरिवत् ।[५]

शैतानी शरारत, अ० कार्तिकेय चरण मुखोपाध्याय, प्र० हिंदी पुस्तक एजेन्सी, बनारस, प्रथम संस्करण, १९३६ ई० ।[६]

खूनियों का जत्था, शेष सूचनाएँ उपरिवत् ।[७]

किस्मत का चक्कर, अ० बाबू परमानन्द खत्री, एम० ए०, प्र० लक्ष्मी पुस्तकालय, गायघाट, बनारस, प्रथम संस्करण १९३६ ई० ।[८]

भीषण नरहत्या, शेष सूचनाएँ उपरिवत् ।[९]

किस्मत की करामात, अ० गिरीशचन्द्र जोशी, प्र० हिन्दी पुस्तक एजेन्सी, बनारस, प्रथम संस्करण १९३६ ई० ।[१०]

खूनी खजाना, सूचनाएँ उपरिवत् ।[११]

जमघट, अ० देवनागरी द्विवेदी, प्र० भा० वि० पुस्तकालय, गायघाट, बनारस, प्रथम संस्करण १९३६ ई० ।[१२]

---

१. प्रा० स्था०—आ० भा० पु० काशी ।

२. उपरिवत् ।

३. उपरिवत् ।

४. उपरिवत् ।

५. उपरिवत् ।

६. उपरिवत् ।

७. उपरिवत् ।

८. उपरिवत् ।

९. उपरिवत् ।

१०. उपरिवत् ।

११. उपरिवत् ।

१२. उपरिवत् ।

चिन्ता, ले० बाबू नवजादिक लाल श्रीवास्तव, प्र० रामलाल वर्मा, प्रोप्राइटर, वर्मन प्रेस और आर० एल० वर्मन एंड को०, ३७१, अपर चितपुर रोड, कलकत्ता, द्वितीय संस्करण १९२२ ई०।[1] पुस्तक की 'भूमिका' के अन्त में '१५ सितम्बर १९२० ई०' तिथि मुद्रित है, जिससे इसके प्रथम संस्करण का प्रकाशन-काल १९२० ई० अनुमित होता है।

विशाखा की कथा, लेखक और प्रकाशक बाबू छोटेलाल, बनारस, प्रथम बार सन् १९२० ई०।[2]

सीता, ले० पं० ईश्वरी प्रसाद शर्मा, प्र० रामलाल वर्मा, आर० एल० वर्मन एंड को०, कलकत्ता, प्रथम संस्करण १९२० ई०।[3]

सती सामर्थ्य, ले० भगवान दीन पाठक, प्र० शिवराम दास गुप्त, उपन्यास बहार ऑफिस, काशी, प्रथम संस्करण १९२० ई०।[4]

द्रौपदी, ले० भागमल शर्मा, प्र० मन्त्री, श्री आत्मानन्द जैन ट्रैक्ट सोसाइटी, अम्बाल शहर, प्रथम संस्करण १९२० ई०।[5]

देवी द्रौपदी, ले० रामचरित उपाध्याय, प्र० गंगा पुस्तक माला कार्यालय, लखनऊ, प्रथम संस्करण १९२० ई०।[6]

अनन्तमती, ले० कृष्णलाल वर्मा, प्र० ग्रन्थ भंडार, लेडी हार्डिंज रोड, माटूँगा, बम्बई, भाद्र १९७७ वि०, सितम्बर १९२० ई०, प्रथम संस्करण।[7]

सती महिमा, ले० हसरत, प्र० उपन्यास बहार ऑफिस काशी, बनारस।[8] मुखपृष्ठ पर प्रकाशन काल नहीं दिया हुआ है, पर आर्यभाषा पुस्तकालय में इस पुस्तक की प्रवेश तिथि '२३-३ २१' दी हुई है। 'वक्तव्य' से पता चलता है कि यह कथा बँगला पुस्तक 'हर पार्वती' पर आधृत है।[9]

लवकुश, ले० पं० नरोत्तम व्यास, प्र० निहालचन्द एंड कम्पनी, नं०१, नारायण प्रसाद बाबू लेन, कलकत्ता, द्वितीय संस्करण १९२३ ई०।[10] पुस्तक की 'भूमिका' के अन्त मे 'संवत् १९७८' तिथि मुद्रित है, जिससे ज्ञात होता है कि इसका प्रथम संस्करण

१. प्रा० स्था०—वि० रा० भा० प० पु०, पटना।
२. प्राप्ति स्थान—आ० भा० पु०, काशी।
३. आ० भा० पु० की पुस्तक सूची।
४. प्रा० स्था०—आ० भा० पु०, काशी।
५. उपरिवत्।
६. प्रा० स्था०—आ० भा० पु० काशी।
७. उपरिवत्।
८. प्रा० स्था०—आ० भा० पु० काशी।
९. उपरिवत्।
१०. लवकुश, पं० नरोत्तम व्यास, द्वितीय संस्करण सं० १९७८, भूमिका।

शकुन्तला

सन् १९२१ ई० में पं० ईश्वरी प्रसाद शर्मा लिखित 'शकुन्तला' नामक पौराणिक आख्यान रामलाल वर्म्मा द्वारा कलकत्ता से प्रकाशित हुआ। प्रस्तुत पंक्तियों का लेखक इस कथा के प्रथम संस्करण को प्राप्त करने में असमर्थ रहा है। इसका द्वितीय संस्करण १९२२ ई० में उपर्युक्त प्रकाशन-संस्था से ही प्रकाशित हुआ।[1] द्वितीय संस्करण के साथ संलग्न प्रथम संस्करण की भूमिका के अन्त में '२५-१-१९२१' तिथि अंकित है जिससे इसके प्रथम संस्करण की प्रकाशन-तिथि ज्ञात होती है। एक ही वर्ष में इसके द्वितीय संस्करण के प्रकाशित होने से यह भी प्रमाणित होता है कि यह पुस्तक पाठकों के बीच लोकप्रिय हुई। इसके प्रकाशकीय वक्तव्य से ज्ञात होता है कि १९२२ ई० के पूर्व उक्त प्रकाशन-संस्था से 'सावित्री सत्यवान', 'नल दमयन्ती', 'सीता', 'चिन्ता', 'सती पार्वती', 'सती वेहुला', 'हरिश्चन्द्र शैव्या', 'महासती मद्रालसा' और 'सुकन्या' आदि ९ पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी थीं और इन सभी पुस्तकों के दो दो, तीन तीन संस्करण साल दो साल के अन्दर ही छप चुके थे।[2]

वीर अर्जुन, ले० विद्यावाचस्पति पं० गणेशदत्त शर्मा गौड़, सम्पादक और प्रकाशक रामलाल वर्मा, प्रोप्राइटर 'वर्मन प्रेस' और 'आर०एल० वर्मन एंड को०', ३७१, अपर चितपुर रोड, कलकत्ता, प्रथम संस्करण, मार्गशीर्ष सं० १९८१ वि० (१९२५ ई०)[3]

सती देवी, ले० श्रीकृष्ण हसरत, प्र० वाबू काशी प्रसाद भार्गव, भार्गव बुक डिपो, वनारस १९२५ ई०।[4]

वीर वाल पंचरत्न, ले० विमल झा, प्र० उपन्यास वहार आफिस, काशी, प्रथम संस्करण १९२५ ई०।[5]

सुदर्शन शशिकला, ले० गुरुगोविन्द श्रीवास्तव, प्र० वाबू वालमुकुन्द जी साह डूंडलोद निवासी, प्रथम संस्करण १९२५ ई०।[6] मुखपृष्ठ पर प्रकाशन तिथि नहीं है पर 'भूमिका' के अन्त में '१५-२-२५ ई०' तिथि मुद्रित है।

सावित्री, ले० श्रीमती शिवकुमारी देवी, प्र० हिन्दी पुस्तक भंडार, लहेरियासराय, प्रथम संस्करण, देवोत्थान १९८२ (१९२५ ई०), द्वितीय संस्करण १९८५ (१९२८ ई०)[7]

---

१. प्रा० स्था०—प० का० पु०। मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—शकुन्तला, अपूर्व शिक्षाप्रद, सचित्र पौराणिक उपाख्यान, लेखक—पंडित ईश्वरी प्रसाद शर्मा, प्रकाशक—रामलाल वर्मा, प्रोप्राइटर—'वर्मन प्रेस' और आर० एल० वर्म्मन एण्ड को० ३७१, अपर चितपुर रोड, कलकत्ता, कार्तिक, सं० १९७९, द्वितीय संस्करण ३००० प्रति

२. उपरिवत्, प्रकाशकीय वक्तव्य।

३. प्रा० स्था०—आ० भा० पु० काशी।

४. प्रा० स्था०—मा० पु०, पटना।

५. आ० भा० पु० की पुस्तक-सूची।

६. प्रा० स्था०—आ० भा० पु०, काशी।

७. उपरिवत्।

आश्रम हारिणी, ले० वामन मल्हार राव जोशी, अनु० सीताराम विष्णु पन्त सरवटे, प्रकाशक सस्ता साहित्य मण्डल, अजमेर, प्रथम बार १९१८ ।[1]

सती सावित्री, ले० अध्यापक हरिहर प्रसाद द्विवेदी 'श्री हरि', प्र० गंगा पुस्तकमाला कार्यालय, लखनऊ, संवत् १९८६ (१९२९ ई० ।)[2]

देवी शकुन्तला, ले० हरिहर प्रसाद द्विवेदी, प्र० गंगा पुस्तकमाला कार्यालय, लखनऊ, प्रथम संस्करण १९२९ ई० ।[3]

देवी सीता, ले० जहूरबख्श, अ० कृष्णा कुमारी, प्र० गंगा पुस्तकमाला कार्यालय, लखनऊ, प्रथम संस्करण १९२९ ई० ।[4]

हनुमच्चरित्र, ले० विद्यावाचस्पति पं० गणेशदत्त शर्मा गौड़ (इन्द्र), प्र० पं० रामानुग्रह शर्मा व्यास, धर्मोपदेशक, राम कार्यालय, पो० लंका, बनारस सिटी, प्रथम संस्करण १९३० ई० ।[5]

भक्त नारी, सं० हनुमान प्रसाद पोद्दार : प्र० घनश्याम दास जालान, गीता प्रेस, गोरखपुर, प्रथम सं० १९३० ई०, द्वि० सं० १९३१ ई०, तृतीय सं० १९३३ ई०, चतुर्थ सं० १९३४ ई०, पंचम सं० १९३६ ई०, षष्ठ सं० १९३९ई० ।[6] इस पुस्तक का प्रत्येक संस्करण पाँच हजार प्रतियों का था अर्थात् केवल ९ वर्षों में इस पुस्तक की तीस हजार प्रतियाँ छपीं !

भक्त प्रहलाद, सं० हनुमान प्रसाद पोद्दार, प्र० घनश्याम दास जालान, गीता प्रेस, गोरखपुर, प्रथम सं० १९३० ई०, द्वितीय संस्करण १९३१ ई०, तृतीय सं० १९३३ ई०, चतुर्थ संस्करण १९३४ ई०, पंचम सं० १९३७ ई० ।[7] इस पुस्तक के सभी संस्करण पाँच पाँच हजार के थे अर्थात् केवल सात वर्षों में इस पुस्तक की पचीस हजार प्रतियाँ मुद्रित हुईं !

सती सुलोचना, ले० पं० तारिणी प्रसाद शर्मा, प्र० एस० आर० बेरी एंड को०, कलकत्ता, दूसरा सं० १९३० ई० ।[8]

श्रीपाल, ले० श्री कन्हैया लाल जैन, प्र० आत्मानन्द जैन सभा, अम्बाला, १९३० ।[9]

अनागिनी, ले०—पं० नरोत्तम व्यास, प्र० द पपुलर ट्रेडिंग कंपनी, कलकत्ता, प्रथम संस्करण १९३१ ई० ।[10]

---

१. प्रा० स्था०—आ० भा० पु० काशी ।
२. प्रा० स्था०—आ० भा० पु० काशी ।
३. प्रा० स्था०—आ० भा० पु० काशी ।
४. प्रा० स्था०—आ० भा० पु० काशी ।
५. प्रा० स्था०—आ० भा० पु० काशी ।
६. छठे संस्करण के मुखपृष्ठ से प्राप्त सूचना । प्रा० स्था०—मा० पु०, पटना ।
७. पाँचवे संस्करण के मुखपृष्ठ से प्राप्त सूचना, प्रा० स्था०—मा० पु०, पटना ।
८. प्रा० स्था०—आ० भा० पु० काशी ।
९. उपरिवत् ।
१०. प्रा० स्था०—आ० भा० पु० काशी ।

राम राज्य, ले० प्रभाशंकर दलपतराम जी पट्टणी, कुमारी शकुन्तला देवी, प्र०—जयन्ती लाल मोरारजी मेहता, नदियाड, प्रथम संस्करण १९३५।[1]

उपनिषदों के चौदह रत्न, ले०—हनुमान प्रसाद पोद्दार, प्र० गीता प्रेस, गोरखपुर, प्रथम संस्करण १९३५ ई०।[2]

पौराणिक महापुरुष, ले०—बा० केदार नाथ गुप्त, एम० ए०, प्र०-छात्र हितकारी पुस्तक माला, दारागंज, प्रयाग, प्रथम संस्करण, मार्च १९३६ ई०।[3]

भक्ति चिन्तामणि, ले० रामस्वरूप दास, प्र०—अखिल भारतीय पंडित परिषद्, अयोध्या, प्रथम, संस्करण १९३६ ई०।[4]

व्यास, ले०—विट्ठल शर्मा चतुर्वेदी, प्र० मालवीय हीरक जयन्ती, विद्या ग्रन्थमाला, काशी, १९३६ ई०।[5]

वीर परशुराम, ले०—श्री वेणीराम त्रिपाठी श्रीमाली प्र०—भार्गव पुस्तकालय, काशी, प्रथम संस्करण १९३६ ई०।[5]

हनुमान जी की जीवनी, ले० व्रजरत्न दास, प्र० हिन्दी साहित्य कुटीर, बनारस, प्रकाशन काल ज्ञात नहीं हो सका है।[6]

पतिव्रता गान्धारी, ले० श्री युक्त जगदीश झा 'विमल', प्र०-शिवराम दास गुप्त, उपन्यास बहार आफिस, काशी, बनारस। प्रकाशन काल ज्ञात नहीं हो सका है।[7] इसका प्र० का० १९२० और १९३० के बीच होना चाहिए।

सती सीता, ले० 'विमल', प्र० उपन्यास बहार आफिस, काशी, बनारस, प्रथम संस्करण।[8] मुखपृष्ठ पर प्रकाशन तिथि नहीं दी हुई है पर इसका प्र० का० १९३६ ई० के पूर्व होना चाहिए।

सावित्री सत्यवान, ले० जगदीश झा 'विमल', प्र० हिन्दी पुस्तक एजेन्सी, ज्ञानवापी, बनारस, चतुर्थ बार १९५० ई०।[9] प्रस्तुत पंक्तियों का लेखक इसके प्रथम संस्करण को प्राप्त करने में असमर्थ रहा है। अनुमानतः प्रथम सं० (५२५०) १९३३ ई०, द्वितीय सं० (५०००) १९३५ ई, तृतीय सं० (३०००) १९३९ ई०।[10] छह वर्षों में इस कथा की १३२५० प्रतियाँ मुद्रित हुईं।

---

१. प्रा० स्था०—आ० भा० पु०, काशी।
२. उपरिवत्।
३. प्रा० स्था०—आ० भा० पु० काशी।
४. प्रा० स्था०—आ० भा० पु० काशी।
५. उपरिवत्।
६. उपरिवत्।
७. प्रा० स्था०—आ० भा० पु०, पटना।
८. प्रा० स्था०—आ० भा० पु०, काशी।
९. प्रा० स्था०—वि० रा० भा० प० पु, पटना।
१०. प्रा०स्था०—मा०थ० पटना। सूचनाएँ तृतीय संस्करण के मुखपृष्ठ से प्राप्त की गयी हैं।

हो गयी। कलकत्ते के प्रसिद्ध पुस्तक-प्रकाशक श्री रामलाल वर्मा, जिनकी अध्यक्षता में 'वर्म्मन प्रेस' और 'आर० एल० वर्म्मन ऐंड को०' नामक संस्थाएँ प्रकाशन का कार्य करती थीं, मुख्यतः दो ही प्रकार की पुस्तकें प्रकाशित करते थे—जासूसी उपन्यास और पौराणिक कथाएँ। कारण स्पष्ट है। हिन्दी पाठकों के बीच इसी प्रकार की पुस्तकें उस समय ज्यादा लोकप्रिय हो रही थीं। उपर्युक्त प्रकाशन-संस्थाओं से 'रमणी रत्नमाला', 'आदर्श ग्रन्थमाला,' 'पुराण ग्रन्थमाला', आदि पुस्तक-मालाएँ प्रकाशित हुई थीं, जिनके अन्तर्गत, १९२२ ई० के पूर्व प्रायः १०० पुस्तकें निकल चुकी थीं। प्रकाशक के शब्दों में "जिस समय हमने इन मालाओं को प्रकाशित करना आरम्भ किया था, उस समय स्वप्न में भी यह आशा न थी, कि हिन्दीभाषी जनता हमारी इन ग्रन्थ-मालाओं का इतना आदर करेगी! किन्तु अब देखते हैं कि हमारे यहाँ से निकलने वाली प्रत्येक पुस्तक-माला की किसी न किसी पुस्तक का साल में एक दो संस्करण हुआ ही करता है।......हमारी इन ग्रन्थ-मालाओं के कितने ही ग्रन्थ अनेक कन्या पाठशालाओं और राष्ट्रीय सरकारी स्कूलों में पढ़ाये और पारितोषिक में दिये जाते हैं।"[1] इस प्रकाशकीय निवेदन से ही ज्ञात होता है कि 'रमणी रत्न माला' की पौराणिक कथाएँ हिन्दी पाठकों में खूब लोकप्रिय हुई थीं। प्रकाशक के शब्दों में, "हमने जब 'रमणी रत्नमाला' का पहला रत्न 'सावित्री सत्यवान' प्रकाशित किया, तब सुधी समाज में उसका यथेष्ट आदर होते देख, हमारा उत्साह दूना-चौगुना बढ़ गया। उसी उत्साह से प्रेरित होकर हमने इस सिरीज में 'नल दमयन्ती', 'सीता', 'शकुन्तला', 'चिन्ता', 'सती पार्वती', 'सती बेहुला', 'हरिश्चन्द्र-शैव्या', 'महासती मदालसा' और 'सुकन्या' नामक एक से एक बढ़कर १० ग्रन्थ निकाल डाले। ....हमारी इस 'रमणी रत्नमाला' सीरीज में निकले हुए 'सावित्री सत्यवान', 'नल दमयन्ती', 'सीता', 'चिन्ता' आदि प्रायः सभी ग्रन्थों के साल दो साल के अन्दर ही, दो-दो, तीन-तीन संस्करण छप चुके हैं।'[2] इस कथन की प्रामाणिकता उक्त प्रकाशन-संस्था से प्रकाशित पुस्तकों की संस्करण संख्या तथा मुद्रित प्रतियों की संख्या से सिद्ध होती है। इसका एक अन्य प्रमाण श्री नवजादिक लाल श्रीवास्तव रचित 'चिन्ता' नामक पौराणिक कथा के द्वितीय संस्करण में प्रकाशित श्री रामलाल वर्मा की स्वीकारोक्ति है, जो दीर्घ होते हुए भी प्रस्तुत प्रसंग में उद्धर्तव्य है।

"बड़े हर्ष के साथ कहना पड़ता है कि कृपालु हिन्दी पाठकों की कृपा से हमारे यहाँ से निकलने वाली सुप्रसिद्ध 'रमणी रत्नमाला' से अब तक निकले 'सावित्री सत्यवान', 'नल-दमयन्ती', 'सीता', 'शकुन्तला', और 'चिन्ता', आदि प्रायः सभी रत्नों के केवल दो साल के अन्दर ही दो-दो, तीन-तीन संस्करण होकर हाथोहाथ बिक गये। हमारे व्यवसायी भी

---

१. शकुन्तला, ले० पं० ईश्वरी प्रसाद शर्मा, प्रकाशक—रामलाल वर्मा, प्रोप्राइटर 'वर्म्मन प्रेस' और 'आर० एल० वर्म्मन एंड को०, ३०१. अपर चीतपुर रोड, कलकत्ता, कार्तिक सं० १९७९ वि०, द्वितीय संस्करण, प्रकाशकीय निवेदन।

२. उपरिवत्।

'ग्रन्थ मालाओं' के अन्तर्गत पौराणिक कथापुस्तकों का प्रकाशन आरम्भ किया। कलकत्ते की आर० डी० वाहिती एंड को० के यहाँ से 'महिला मणि माला', एस० आर० वेरी एंड कम्पनी के यहाँ से 'आदर्श रमणी रत्नमाला' तथा हिन्दी पुस्तक एजेन्सी के यहाँ से 'सती रत्नमाला' के अन्तर्गत पचासों पौराणिक कथापुस्तकें और उनके एकाधिक संस्करण प्रकाशित हुए। कलकत्ते के वाहर की प्रकाशन-संस्थाओं में नेशनल प्रेस, प्रयाग, उपन्यास बहार आफिस, काशी, साहित्य उद्यान कार्यालय, अजमेर, गंगा पुस्तकमाला कार्यालय, लखनऊ तथा गीता प्रेस, गोरखपुर पौराणिक कथापुस्तकों के प्रकाशन की दृष्टि से विशेष महत्त्वपूर्ण हैं। नेशनल प्रेस, प्रयाग से 'बालकोपयोगी पुस्तकमाला', उपन्यास बहार आफिस, काशी से 'रत्नमाला', साहित्य उद्यान कार्यालय, अजमेर से 'साहित्य उद्यान ग्रन्थ माला', गंगा पुस्तकमाला कार्यालय, लखनऊ से 'महिला माला' तथा गीता प्रेस, गोरखपुर से 'भागवत-रत्नमाला', 'भक्त चरित्र माला' और 'आदर्श चरितमाला' के अन्तर्गत शताधिक पौराणिक कथाएँ प्रकाशित हुईं। इस युग के आरम्भ में आर० एल० वर्मन एंड कं० कलकत्ता से प्रकाशित पौराणिक कथापुस्तकें पाठकों में बहुत लोकप्रिय हुई थीं पर इस युग के प्राय: अन्त में गीता प्रेस, गोरखपुर से प्रकाशित पुस्तकों की लोकप्रियता के समक्ष अन्य सभी संस्थाओं को हार माननी पड़ी और आज हिन्दी पुस्तक-पण्य में, जहाँ तक धार्मिक पुस्तकों का प्रश्न है, गीता प्रेस की पुस्तकों का ही एकाधिपत्य है। गीता प्रेस से प्रकाशित पौराणिक कथापुस्तकों के सस्ते और नेत्र-रंजक संस्करण आज भी हिन्दू जनता के एक बड़े समुदाय की रुचि-तृप्ति के एकमात्र साधन बने हुए हैं।



हिन्दी कथा साहित्य

तिथिक्रम

मौलिक उपन्यास (सामान्य)

रचना वर्ष	पुस्तक का नाम	लेखक	पृ० सं०
१९१८	भारत रहस्य	—	६५
	विचित्र वारांगना	शिवनारायण लाल वर्मा	६५
	सुकुमारी (द्वि० सं०)	मणिराम शर्मा	६५
	सुघड़ चमेली	रामजीदास भार्गव	६५
	सेवा सदन	प्रेमचन्द	२
१९१९	आदर्श महिला	जनार्दन झा	६६
	नकली और असली धर्मात्मा	सूरजभानु	६६
	नाटकचक्र अथवा कोट का बटन	फूलचन्द अग्रवाल	६७
	भयानक तूफान	लाला जयगोपाल	६७
	भीषण नारी हत्या	बनारसी प्रसाद वर्मा	६७
	मेम और साहब	रुक्मिणी देवी	६६
	विचित्र परिवर्तन	सेवक	६६
	श्यामा	शिवदास गुप्त	६६
१९२०	अनुचरी या सहचरी	मदनमोहन लाल दीक्षित	६८
	आराम नन्दन	ललितविजय जी महाराज	६९
	उड़नखटोला या मायाजाल	कालीचरण कविराज	६८
	कल्याणी	मन्नन द्विवेदी गजपुरी	६८
	निर्धन की कन्या	जगदीश झा विमल	३१
	नेटाली हिन्दू	भवानी दयाल	६८
	पतित पति वा भंयकर भूल	रूपनारायण शर्मा	६७
	प्रेमा	श्रीकृष्ण मिश्र	६७
	प्रोफेसर भोंदू	दुर्गा प्रसाद खत्री	२७
	बलिदान	अखौरी कृष्णप्रकाश सिंह	६८
	भारत प्रेमी	भगवत प्रसाद शुक्ल	६७
	महाशय भड़ाम सिंह शर्मा	जी० पी० श्रीवास्तव	३४
	विचित्र समाज सेवक	चन्द्रशेखर पाठक	२९
१९२१	आदर्श दम्पत्ति	जगदीश झा विमल	३२
	आदर्श लीला	चन्द्रशेखर पाठक	२९

रचना वर्ष	पुस्तक का नाम	लेखक	पृ० सं०
१९४३	चरित्र चित्रण	कन्हैया लाल गुप्त	७६
	जीवन	प्रभुदत्त शर्मा	७६
	भारती	चन्द्रशेखर पाठक	३०
	मायापुरी	,,	३०
	मायावती	वेनी प्रसाद मेहरा	७६
	शैल कुमारी	रामकिशोर मालवीय	७५
	सरला	गौरीशंकर शुक्ल	७६
	सुमति	रत्नवती देवी शर्मा	७५
	सूरजमुखी	ज्योतिषी हरदेव प्रसाद मुदर्रिस	७४
	मीघे पंडित	ठाकुर प्रसिद्ध नारायण सिंह	७५
१९२४	अपूर्व ब्रह्मचारी	विन्ध्येश्वरी दत्त शुक्ल	८०
	उमा सुन्दरी	शैलकुमारी देवी	८०
	उषा और अरुण	भानु	७६
	खुशीराम और लज्जावती	गुरांदित्ता खन्ना	७९
	चन्द्रभवन	रामगोपाल मिश्र	७७
	पाप का अन्त	कुंवर ब्रजेन्द्र सिंह क्षत्रिय	७८
	पुष्पकुमारी	टीकाराम सदाशिव तिवारी	८०
	प्रेम	मथुरा प्रसाद खत्री	७९
	भविष्य	,, ,,	७९
	भाई भाई	नित्यानन्द देव	७९
	माया	रामगोपाल मिश्र	७७
	रूप का बाजार	दुर्गा प्रसाद खत्री	२८
	रूप सुन्दरी	गणेशदत्त शर्मा गौण 'इन्द्र'	७८
	लीलावती	जगदीश झा विमल	३३
	व्यभिचार	चतुरसेन शास्त्री	२५
	शान्तिनिकेतन	मुंशी नवजादिक लाल श्रीवास्तव	७८
	शीलमणि	टीकाराम तिवारी	७७
	सखाराम	मदारी लाल गुप्त	३७
	सत्यानन्द	ठाकुर कल्याण सिंह शेखावत	७९
	सेवाश्रम	सूर्यानन्द वर्मा 'आनन्द'	८१
	स्वर्गीय जीवन	मनमोहन कौशल 'विशारद'	७७
१९२५	आशा पर पानी	जगदीश झा विमल	३३

लिखा :"...मेरा दूसरा नाविल 'नाकाम' अनकरीम इस्तलाम है।...यह नाविल भी हिन्दी में छपेगा। उर्दू में इसका हश्र क्या होगा, मालूम नहीं।[1] ३ जनवरी १९२१ को प्रेमचन्द ने निगम साहब को सूचित किया : "नाविल की हिन्दी कर रहा हूँ।"[2] १६ फरवरी १९२२ को कानपुर से प्रेमचन्द ने इम्तयाज अली 'ताज' को लिखा : "मेरा हिन्दी नाविल खत्म हो गया। अब उर्दू काम जल्द होगा।"[3] फिर ३१ मई १९२२ को उन्होंने निगम साहब को लिखा : मेरा नया नाविल भी शाया हो गया। बड़े अच्छे रिव्यू हो रहे हैं।' इससे स्पष्ट है कि 'प्रेमाश्रम' पहले उर्दू में लिखा गया था और प्रेमचन्द ने इसके दो नाम सोचे थे—पहले 'नेकनाम' और फिर 'नाकाम'। उर्दू में प्रकाशकों के अभाव के कारण यह पहले हिन्दी में ही 'प्रेमाश्रम' नाम से ३१ मई १९२२ के कुछ पहले प्रकाशित हुआ। इसके हिन्दीकरण का समय जनवरी १९२१ से फरवरी १९२२ (लगभग) माना जा सकता है।

'प्रेमाश्रम' के रचना-काल और प्रकाशन-तिथि के सम्बन्ध में भी आलोचकों ने मनमानी सूचनाएँ दी हैं। हंसराज रहबर के अनुसार 'यह उपन्यास सन् १९१९ में लिखा गया।'[4] डॉ० राजेश्वर गुरु के अनुसार "१९२१-२२ के सत्याग्रह में लगानबन्दी की बात करने का विचार बहुत बाद में जरूर सोचा गया था। प्रेमचन्द का 'प्रेमाश्रम' इसके पहले लिखा जा चुका था।"[5] डॉ० श्रीकृष्ण लाल तथा डॉ० प्रतापनारायण टंडन 'प्रेमाश्रम' का प्रकाशन-काल १९२१ ई० मानते है।[6] 'प्रेमाश्रम' के सरस्वती प्रेस, वाराणसी से प्रकाशित हाल के एक संस्करण में (प्रकाशन-काल पुस्तक में नहीं दिया है) इसका रचना-काल १९१८-१९ बताया गया है। यह उल्लेखनीय है कि उपर्युक्त आलोचकों में से किसी ने भी अपने कथन के लिए कोई प्रमाण नहीं दिया है।

'प्रेमचन्द : कलम का सिपाही' नामक ग्रन्थ में अमृत राय ने 'प्रेमाश्रम' का प्रकाशन-काल १९२१ का 'पूर्वार्ध' बताया है,[7] पर हम देख चुके हैं कि यह सूचना भ्रान्तिपूर्ण है। अमृत राय की सूचना सम्भवतः अनुमानित है, जो प्रेमचन्द के ३जनवरी १९२१ के पत्र पर आधारित है, जिसमें प्रेमचन्द ने लिखा था, "नाविल की हिन्दी कर रहा हूँ।"

---

१. अमृत राय, प्रेमचन्द, चिट्ठी-पत्री १, पृ० ६५।
२. उपरिवत्, पृ० १०६।
३. उपरिवत्, चिट्ठी पत्री २, पृ० १३५।
४. हंसराज रहबर, प्रेमचन्द : जीवन और कृतित्व, पृ० २२५।
५. डॉ० राजेश्वर गुरु, प्रेमचन्द : एक अध्ययन, पृ० १५५।
६. डॉ० श्रीकृष्ण लाल, आधुनिक हिन्दी-साहित्य का विकास, पृ० ३१३; डॉ० प्रतापनारायण टंडन, हिन्दी-उपन्यास में कथा-शिल्प का विकास, पृ० २८२।
७. अमृत राय, प्रेमचन्द : कलम का सिपाही, पृ० ६५४।

रचना वर्ष	पुस्तक का नाम	लेखक	पृ० सं०
१९२७	दिल्ली का दलाल	बेचन शर्मा 'उग्र'	४०
	निर्मला	प्रेमचन्द	१६
	निर्मला वा अनमेल विवाह	केदारनाथ सेठ	८७
	प्रत्यागत	वृन्दावन लाल वर्मा	४६
	प्रेम का मूल्य	परिपूर्णानन्द वर्मा	८८
	प्रेम परीक्षा	ठाकुर श्रीनाथ सिंह	८८
	मीठी चुटकी	त्रिमूर्त्ति	८९
	रंगीला भक्तराज	दिनेश	८६
	लक्ष्मी बहू	देवबली सिंह	८७
	विलासिनी	अखौरी गंगा प्रसाद सिंह 'विशारद'	८७
	वेश्या रहस्य	गंगा प्रसाद गुप्त	८६
	संगम	वृन्दावन लाल वर्मा	४६
	लगन	,, ,,	४६
	हृदय की प्यास	चतुरसेन शास्त्री	२६
१९२८	अन्तरंग अथवा लक्ष्मी केशव	सत्यदेव नारायण साही	९२
	अनाथ पत्नी	भगवती प्रसाद वाजपेयी	४२
	आधुनिक चक्र	विश्वनाथ सिंह शर्मा	९२
	अपराधी	यदुनन्दन प्रसाद	६२
	करमा देवी	प्रवासी लाल वर्मा	९२
	कुंडलीचक्र	वृन्दावन लाल वर्मा	४७
	गुरुदर्शन	व्रजकृष्ण गुर्टू	९०
	बिन्नो देवी अर्थात् शुद्धि की देवी	वंशीधर पाठक	९३
	बुधुआ की बेटी	बेचन शर्मा उग्र	४०
	परदे का चाँद	एम० एल० सोजतिया 'प्रभात किरण'	५२
	पैसे का साथी	ऋषभ चरण जैन	४८
	प्रियतम की रंगभूमि उर्फ कॉलेज गर्ल	एम० एल० सोजतिया 'प्रभात किरण'	५२
	प्रेम की भेंट	वृन्दावन लाल वर्मा	४७
	मंच	राजेश्वर प्रसाद सिंह	९४
	मनोरमा	चंडी प्रसाद 'हृदयेश'	९०
	महिला मंडल	बैजनाथ केडिया	९४
	विचित्र संन्यासी	द्वारका प्रसाद मौर्य	९४

रचना वर्ष	पुस्तक का नाम	लेखक	पृ० सं०
१९३०	पतझड़	प्रफुल्लचन्द्र ओझा 'मुक्त'	४५
	परख	जैनेन्द्र कुमार	५६
	पाप और पुण्य	प्रफुल्लचन्द्र ओझा 'मुक्त'	४४
	पाप का पराभव	रामशंकर द्विवेदी	१०१
	पुनर्मिलन	रामानन्द शर्मा 'प्रेमयोगी'	१०१
	प्रेम की पीड़ा	गिरिजा दत्त शुक्ल 'गिरीश'	४१
	बड़े बाबू	विजय वर्मा	९७
	बहूरानी	शम्भूदयाल सक्सेना	१००
	बुरकेवाली	ऋषभचरण जैन	४९
	भाई	,, ,,	५०
	भ्रमित पथिक	सद्गुरुशरण अवस्थी	९९
	महाकाल	श्रीकृष्ण मिश्र	१००
	मालिका	जनार्दन प्रसाद झा	१००
	मृत्युंजय	गुलाबरत्न बाजपेयी 'गुलाब'	१००
	विधवा की आत्मकथा	प्रियंवदा देवी	१०१
	शर्मीला घूँघट	एम० एल० सोजतिया	५३
	शराबी	बेचन शर्मा 'उग्र'	४०
	सत्याग्रह	ऋषभचरण जैन	४९
	सिनेमा का शैतान	एम० एल० सोजतिया	५३
	स्पर्धा	जैनेन्द्र कुमार	५७
	स्वप्नों के चित्र	रामनरेश त्रिपाठी	१००
१९३१	अंजली	तेजरानी पाठक	१०२
	अप्सरा	सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला'	६२
	आदर्श संन्यासी	रामानन्द द्विवेदी	१०२
	इन्दौर का रहस्य	एम० एल० सोजतिया	५४
	कोतवाल की करामात	वृन्दावन लाल वर्मा	४५
	क्रान्ति की लपट	आर० ए० सिंह	१०३
	गबन	प्रेमचन्द	१९
	जेलयात्रा	प्रफुल्लचन्द्र ओझा 'मुक्त'	४५
	पाप की पहेली	गिरिजादत्त शुक्ल 'गिरीश'	४२
	बाईसवीं सदी	राहुल सांकृत्यायन	१०३
	भाग्य	ऋषभचरण जैन	५०

रचना वर्ष	पुस्तक का नाम	लेखक	पृ० सं०
१९३२	अंधकार	केशव कुमार ठाकुर	१०७
	अबला की आत्मकथा	चन्द्रशेखर पाठक	३०
	अमर अभिलाषा	चतुरसेन शास्त्री	२७
	अलका	सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला'	६२
	अश्रुकण	पुरुषोत्तम दास गौड़ कोमल	१०८
	गोद	सियारामशरण गुप्त	१०९
	जगतमाया	हरस्वरूप जी गुप्ता	१०७
	त्यागी युवक	विश्वनाथ सिंह शर्मा	१०६
	दो विधवाएँ	शंकरशरण प्रसाद सिंह	११०
	नैना	शिवशेखर द्विवेदी	१०६
	प्रायश्चित्त	नित्यानन्द पंत	१०९
	प्रेम परिणाम	विश्वम्भर नाथ जिज्जा	११०
	मकरंद	आनन्दि प्रसाद श्रीवास्तव	१०८
	मधुकरी	ऋषभचरण जैन	५१
	मधुवन	ज्योतिर्मयी ठाकुर	१०७
	मनसा	शिवमौलि मिश्र	१०९
	राख में अंगार याने स्त्री रहस्य	एम० एल० सोजतिया	५५
	रूपवती	अखौरी वासुदेवनारायणसिंह	१०८
	विधवा के पत्र	चन्द्रशेखर शास्त्री	१०८
	वेश्या का हृदय	धनीराम प्रेम	११०
	सम्पादिका :	वेनी प्रसाद वाजपेयी	११०
	साहसी राजपूत	द्वारका प्रसाद 'मौर्य'	१०७
	हत्यारे का ब्याह	कन्हैयालाल	१०८
	हृदय की ज्वाला	व्यथित हृदय	१०९
१९३४	अंतिम आकांक्षा	सियारामशरण गुप्त	१११
	उलझन	श्रीनाथ सिंह	११२
	कन्या बलिदान	चन्द्रनाथ योगी	१११
	कपटी	रूपनारायण पांडेय	११२
	कुमार सुन्दर	रामजय श्री पाण्डेय	११२
	चित्रलेखा	भगवतीचरण वर्मा	६३
	ज्योतिर्मयी	अनूपलाल मंडल	५६
	तितली	जयशंकर प्रसाद	६०

रचना वर्ष	पुस्तक का नाम	लेखक	पृ० सं०
१९३६	केसर	जगदीश झा विमल	३४
	गरीब का धन	राजनारायण चतुर्वेदी 'आजाद'	११८
	गोदान	प्रेमचन्द	२३
	जय यात्रा	मन्मथनाथ नाथ गुप्त	१२०
	तीन वर्ष	भगवतीचरण वर्मा	६४
	दिल्ली का कलंक	ऋषभचरण जैन	५१
	नर्तकी	व्यथित हृदय	११९
	निरुपमा	सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला'	६३
	पतिता की साधना	भगवती प्रसाद 'वाजपेयी'	४४
	प्रतिज्ञापूर्ति	रामकृष्ण वर्मा	११९
	प्रेम के आंसू	विश्वनाथ राय	११९
	वचन का मोल	उषादेवी मित्रा	११७
	बुरादाफरोश	ऋषभचरण जैन	५१
	मंगलसूत्र	प्रेमचन्द	२४
	मझली रानी	रामकृष्ण वर्मा	११७
	मन्दिर दीप	ऋषभचरण जैन	५१
	मेरा देश	धनीराम प्रेम	१२०
	विधाता की लीला	देवकीनन्दन खत्री (सं०)	२८
	समाज का पाप	बनारसी प्रसाद	११८
	समाज की खोपड़ी	रमाकान्त त्रिपाठी 'प्रकाश'	११९
	सुशीला	सोमनाथ पंडित	१२०
	स्वामी चौखटानन्द	जी० पी० श्रीवास्तव	३६
	हृदय की ताप	कुटुम प्यारी देवी सक्सेना	१२०
	अबलाओं का बल	आनन्दी प्रसाद श्रीवास्तव	१२१
	उपन्यास कुसुम	दुर्गा प्रसाद खत्री	२८
	क्या वह वेश्या हो गयी ?	जगदीश झा विमल	३४
	निष्कलंकिनी	महावीर प्रसाद गहमरी	१२१
	मातृ मन्दिर	जगदीश झा विमल	३४
	मृग मरीचिका	अखौरी गंगा प्रसाद सिंह	५२
	सन्तान लालसा उर्फ कच्ची दरगाह की पक्की बात	द्वारका प्रसाद	१२१
	समझ का फेर	दुर्गा प्रसाद खत्री	२९
	हिन्दू विधवा	कुन्दनलाल जैन	१२१

ऐयारी-तिलिस्म प्रधान कथाएँ

रचना वर्ष	पुस्तक का नाम	लेखक	पृ० सं०
१९१८	महेंद्र कुमार या मदन रंजनी	शंकरदयाल श्रीवास्तव	१४७
१९२०	कुमारी रत्नगर्भा	श्यामलाल मेढ़	१४६
१९२०-२४	प्रेमकान्ता सन्तति	शम्भु प्रसाद उपाध्याय	१५०
१९२१	कृष्णकान्ता सन्तति (१८ भाग)	श्याम लाल मेढ़	१४७
१९२२	ललित मोहिनी	ललिता प्रसाद	१४९
१९२५ २६	प्रेमकान्ता सन्तति	शम्भु प्रसाद उपाध्याय	१५०
१९२६	मस्तनाथ	गंगा प्रसाद गुप्त	१४९
१९२७-२९	भुवन मोहिनी	राधेलाल अग्रवाल	१५०
१९३१	अलकापुरी	चक्रधर सिंह	१५१
	शनिश्चर प्रसाद	नन्दलाल शर्मा	१५१
१९३५	प्राणवल्लभा	शिवाधार शुक्ल	१५२
	आनन्द सुन्दरी अथवा कुहक सुन्दरी		१५२
	पद्म कुमारी		१५२
	शशिप्रभा		१५२

अपराध प्रधान तथा जासूसी कथापुस्तकें

१९१८	कृष्णवसना सुन्दरी	चन्द्रशेखर पाठक	१४२
	खूनी की चलाकी	गोपालराम गहमरी	१३२
	चाँदी का चक्कर	गोपाल राम गहमरी	१३२
	चालाक चोर	नरोत्तम व्यास	१४२
	भयानक बदला	चन्द्रशेखर पाठक	१४२
	मुहम्मद सरवर की जासूसी	गोपाल राम गहमरी	१३२
१९१९	खूनी मामला	विट्ठलदास कोठारी	१४२
	जासूस की जवाँमर्दी	गोपाल राम गहमरी	१३२
	जासूस के जवानी	,,	१३२
	डाक्टर साहब	नरोत्तम व्यास	१४२
	तिन तहकीकात	गोपाल राम गहमरी	१३७
१९२०	गाड़ी में लाश	,,	१३३
	जासूस जगन्नाथ	,,	१३३

रचना वर्ष	पुस्तक का नाम	लेखक	पृ० सं०
१९२२	सुशीला चरित	मधुसूदन मुखोपाध्याय	१६७
१९२३	आलोकलता	चारुचन्द्र वंद्योपाध्याय	१८०
	कमला	— —	१९९
	घर और बाहर	रवीन्द्रनाथ ठाकुर	१६२
	चरित्रहीन	शरच्चन्द्र चट्टोपाध्याय	१६३
	तारा (शैशव-सहचरी)	— —	१९६
	नवीन संन्यासी	प्रभात कुमार मुखोपाध्याय	१५७
	बहता हुआ फूल	चारुचन्द्र वंद्योपाध्याय	१८२
	बनवीर	दामोदर मुखोपाध्याय	१५६
	विवाह कुसुम	चारुचन्द्र वंद्योपाध्याय	१८०
	विषाक्त प्रेम	,, ,,	१८१
	सुहासिनी (लक्ष्मी बहू)	— —	१९८
१९२४	अपना और पराया	हेमेन्द्र प्रसाद घोष	२००
	पतिव्रता विपुला	प्रभात कुमार मुखोपाध्याय	१५८
	प्रेम	अश्विनी कुमार दत्त	२००
	विराज बहू	शरच्चन्द्र चट्टोपाध्याय	१६४
	लक्ष्मी	विधुभूषण वसु	२०२
	विजया	शरच्चन्द्र चट्टोपाध्याय	१६५
	शैलबाला	— —	२००
	स्वामी	शरच्चन्द्र चट्टोपाध्याय	१६५
	हृदय श्मशान	हेमेन्द्रनाथ प्रसाद घोष	२०१
१९२५	अधखिली कली	स्वर्ण कुमारी देवी	११२
	आँख के आँसू	जलधर सेन	१५९
	ग्रह का फेर या शनि की दृष्टि	योगेन्द्रनाथ चौधरी	२०६
	घरजमाई या दुनिया का नक्शा	चारुचन्द्र वंद्योपाध्याय	१८१
	चन्द्रनाथ	शरच्चन्द्र चट्टोपाध्याय	१६६
	देवदास	,, ,,	१६६
	पंडित जी	,, ,,	१६८
	परिणीता	,, ,,	१६७
	बड़ी दीदी	,, ,,	१६६
	बिजली	— —	२०४
	ललिता	शरच्चन्द्र चट्टोपाध्याय	१६७

रचना-वर्ष	पुस्तक का नाम	लेखक	पृ० सं०
१९३३	जीवन धारा	प्रियनाथ मुखोपाध्याय	२१७
	जीवन पथ	असमंज मुखोपाध्याय	२१७
	पथभ्रान्त पथिक	चारुचन्द्र वंद्योपाध्याय	१८३
	फूल वाली	सुरेन्द्र मोहन भट्टाचार्य	२१७
१९३४	दो धारा	दिलीप कुमार राय	२१८
१९३५	भूली हुई याद	कृष्ण कुमार मुखोपाध्याय	२१९
१९३६	चार अध्याय	रवीन्द्रनाथ ठाकुर	१६२
	वैकुंठ का दानपत्र	शरच्चन्द्र चट्टोपाध्याय	१६८
	शरत् साहित्य :भाग-१	,, ,,	१७१
	शरत् साहित्य : भाग-२	,, ,,	१७२
	शरत् साहित्य : भाग-३	,, ,,	१७२
	शरत् साहित्य : भाग-४	,, ,,	१७२
	शरत् साहित्य : भाग-५	,, ,,	१७३
	शरत् साहित्य : भाग-६	,, ,,	१७३
	शरत् साहित्य : भाग-७	,, ,,	१७३
१९३७	शरत् साहित्य : भाग-८	,, ,,	१७४
१९३८	कर्मपथ	हरिदास हलधर	१९०
	मंझली बहन	शरच्चन्द्र चट्टोपाध्याय	१६९
	शरत् साहित्य : भाग-९	,, ,,	१७४
१९३८	शरत् साहित्य : भाग-१०	,, ,,	१७४
	शरत् साहित्य : भाग-११	,, ,,	१७५
	शरत् साहित्य : भाग-१२	,, ,,	१७५
१९३९	शरत् साहित्य : भाग-१५	,, ,,	१७५
१९४०	ग्रामीण समाज	,, ,,	१६९
	दत्ता	,, ,,	१६५
	शरत् साहित्य : भाग १६-१७	,, ,,	१७६
	शरत् साहित्य : भाग-१८	,, ,,	१७६
	शरत् साहित्य : भाग २०-२१	,, ,,	१७६
१९४२	शरत् साहित्य : भाग २२	,, ,,	१७७
१९४६	शरत् साहित्य : भाग २३-२४	,, ,,	१७७
	शरत् साहित्य : भाग-२५	,, ,,	१७७
१९५३	शरत् साहित्य साहित्य : भाग २६	,, ,,	१७८

रचना वर्ष	पुस्तक का नाम	लेखक	पृ० सं०
१९३६	मानसिंह या कमलादेवी	हरिमोहन मुखोपाध्याय	२४१
	विदुषी खन्ना	हाराणचन्द्र रक्षित	२४०

(उर्दू, सामान्य)

१९२१	बिछड़ी हुई दुलहिन	रतननाथ सरसार	१९४
१९२४	सुशीला कुमारी	महम्मदी बेगम	२००
१९३०	कर्ममार्ग	मौलाना नजीर अहमद	२११

(उर्दू, ऐतिहासिक)

१९१९	शाही डाकू	शिवव्रत लाल वर्मन	२२३
	शाही पतिपरायण	,,	२२४
१९२१	शाही जादूगरनी	,,	२२४
१९२२	बेगमात के आँसू	ख्वाजा हसन निजामी	२३३
१९२३	शाही चोर	शिवव्रत लाल वर्मन	२२५
१९२५	मानव्रती	,,	२२५
१९२८	शाहवार मोती	,,	२२६
	शाही लकड़हारा	,,	२२६
१९२९	जया अर्थात् राजपूतनी का विवाह	,,	२२५
	शाही भिखारी	,,	२२६
१९३४	बहादुर शाह का मुकदमा	ख्वाजा हसन निजामी	२३४

(गुजराती, सामान्य)

१९२१	सरस्वती चन्द्र (प्रथम भाग)	गोवर्धन राम माधव राम त्रिपाठी	१९५
१९२२	सुरेन्द्र	— —	१९७
१९२७	मूल्यवान मोती	— —	२०७
१९२८	शाणी सुलसा	मुनिराज विद्याजिन	२४१
१९२९	उषा और अरुण	भानु प्रसाद मणिराम व्यास	२१०
	बैरिस्टर की बीबी या बी० ए० की बर्बादी	गोपाल जी कल्याण जी देलवालकर	२१०

(अँगरेजी, सामान्य)

रचना वर्ष	पुस्तक का नाम	लेखक	पृ० सं०
१९१९	माता	— —	१८९
	हाजी बाबा	जेम्स मोरियर	१९०
१९२०	प्रेमकान्त	ओलिवर गोल्डस्मिथ	१९१
	सुखदास	जार्ज इलियट	१९३
१९२१	होमरगाथा	— —	१९५
१९२५	अमरपुरी	सी० एच० हालकेन	२०३
१९२६	शैतान की शैतानी	मेरी कॉरेली	१८३
१९२७	प्रतिशोध	,, ,,	१८४
१९२८	कर्मफल	,, ,,	१८५
	जन्मभूमि	— —	२३९
१९२९	प्रेम परीक्षा	मेरी कॉरेली	१८५
१९३०	समाधि	लार्ड लिटन	२११
१९३२	जीवन मरण	फिलिप्स ओपेनहम	२१४
१९३४	गरीब के दिन	क्यूर हामसन	२१८
	रानी की अंगूठी	राइडर हैगर्ड	२१८
१९३६	प्रेमिका	मेरी कॉरेली	१८४

(अँगरेजी, जासूसी)

रचना वर्ष	पुस्तक का नाम	लेखक	पृ० सं०
१९१९	विचित्र जासूस	एडगर वैलेस	२४५
१९२०	जर्मन कोयल	—	२४५
	जर्मन षड्यन्त्र	ब्लेक सीरीज	२४५
१९२१	क्लर्क का भाग्य	—	२४६
	विकट जासूस	कानन डायल	२४६
	सुन्दरी डाकू या हीरे की खान	—	२४७
	गुलाब में काँटा	—	२४७
	टापू की रानी या हवाई जहाज	—	२४७
१९२२	जर्मन जासूस	ब्लेक सीरीज	२४७
	रणभूमि का रिपोर्टर	,,	२४७
१९२३	चीना सुन्दरी या विद्रोही सरदार	,,	२४७
	टर्की का कैदी	,,	२४७
	[illegible] या अर्थ पिशाच	,,	२४७

रचना वर्ष	पुस्तक का नाम	लेखक	पृ० सं०
	महाजनी का मज़ा	ब्लेक सीरीज	२५१
	विचारक डाकू	,,	२५१
१९३५	अनोखा चालाक	,,	२५२
	खूनी वरिस्टर	,,	२५२
	खूनी मराठा	,,	२५२
	चक्कदार	,,	२५२
	छिपा हुआ भेद	,,	२५१
	मोटर में हत्या	,,	२५१
	मौत घर	,,	२५२
	डाकुओं के करश्मे	,,	२५२
	नरपिशाच	,,	२५२
	निरपराध खूनी	,,	२५२
	रहस्यमय रजिस्टर	,,	२५२
	रहस्यमयी हत्याएँ	,,	२५२
	राबर्ट ब्लेक का फन्दा	,,	२५२
	लुटेरा बौना	,,	२५२
	शैतानी चक्कर	,,	२५२
	संकट में सुन्दरी	,,	२५२
	सुन्दरी का साहस	,,	२५२
१९३६	किस्मत का चक्कर	,,	२५३
	किस्मत की करामात	,,	२५३
	खूनी खजाना	,,	२५३
	खूनियों का जत्था	,,	२५३
	चमत्कार	,,	२५३
	जमघट	,,	२५३
	ढोंगी	,,	२५३
	भीषण नरहत्या	,,	२५३
	शैतानी शरारत	,,	२५३
	सुन्दरी की शत्रुता	,,	२५३
		(फ्रेंच)	
१९१९	वलिदान	— —	१८७,
	जारीना	—	१८६

संस्करण में प्रथम संस्करण का 'सम्पादक का वक्तव्य' दिया हुआ है, जिसके अन्त में 'वसन्त पंचमी सं० १९८१' मुद्रित है ।[१] इससे 'रंगभूमि' का प्रकाशन-काल १९२५ ई० ही सिद्ध होता है ।

'रंगभूमि' की रचना के सम्बन्ध में 'चौगाने हस्ती' के द्वितीय खंड की भूमिका में प्रेमचन्द ने लिखा है, 'अगर्चे 'रंगभूमि' पहले उर्दू ही में लिखी गयी थी मगर उसका उर्दू एडीशन हिन्दी एडीशन हो जाने के तीसरे साल शाया हो रहा है । हिन्दी एडीशन तैयार करते वक्त उर्दू मसविदे में इतनी तरतीम हो गयी कि वह इस हालत में प्रेस के काबिल न था । इसके अलावा कई अबवाब हिन्दी में और बढ़ा दिये गये । उन्हें दुबारा मसविदे में शामिल करना जरूरी था । इसलिए सारा उर्दू मसविदा हिन्दी मसविदे के मुताबिक करके दुबारा लिखना पड़ा ।"[२] प्रेमचन्द के एक पत्र से तो स्पष्ट ज्ञात होता है कि उर्दू उपन्यास ('चौगाने-हस्ती') हिन्दी 'रंगभूमि' का हजरत मेहर द्वारा प्रस्तुत अनुवाद मात्र है । अनुमानतः सन् १९२५ ई० के अगस्त महीने के प्रथम सप्ताह में प्रेमचन्द ने दयानरायन निगम को लिखा था : "...हजरत मेहर ने "रंगभूमि' का उर्दू तर्जुमा कर दिया, मगर मुआवजा हिन्दी सफहात पर ।।) फी सफा माँगते हैं, यानी कुल ४६५) । मुझे कुल किताब के ६००) मिल जाएँगे तो मैं समझूँगा मैंने तीर मारा । आप ४६५) खुद माँग रहे हैं ।"[३] इससे स्पष्ट है कि उर्दू 'चौगाने हस्ती' हिन्दी 'रंगभूमि' का अनुवाद है, न कि हिन्दी 'रंगभूमि' किसी उर्दू उपन्यास का । 'चौगाने हस्ती' की भूमिका से भी यही सिद्ध होता है कि 'रंगभूमि' का मसविदा पहले उर्दू में तैयार किया गया था, पर पूरा उपन्यास अपने अन्तिम रूप में हिन्दी में ही लिखा गया । इसका कारण कदाचित् यह है कि अब तक उर्दू में प्रेमचन्द की शैली मँज गयी थी और उस भाषा में वे धारा प्रवाह लिख सकते थे, जब कि हिन्दी लिखने के अभी वे अभ्यस्त नहीं हुए थे ।

अमृत राय ने लिखा है, "**मूल उर्दू पांडुलिपि का लेखन-काल १ अक्टूबर १९२२ से १ अप्रैल १९२४ तक है जो कि पांडुलिपि पर ही अंकित है । इसी पांडुलिपि पर मुंशी जी के अपने अक्षरों में ही यह भी टँका हुआ है:** "Hindi finished dated August 12, 1924. "[४] यह सूचना थोड़ी उलझन में डालने वाली है । १७ फरवरी १९२३ को प्रेमचन्द ने निगम साहब को लिखा था: " **मैं अजहद-नादिम हूँ कि 'जमाना' के लिए अरसे से कुछ न लिख सका । .. हिन्दी रिसालों में लिखने के बाइस वक्त ही नहीं**

---

१. रंगभूमि, ग्यारहवीं बार, १९४६, प्रा० स्था—रा० भा० प० पु०, पटना ।
२. अमृत राय, प्रेमचन्द : कलम का सिपाही, पृ० ३७९ पर उद्धृत ।
३. उपरिवत्, चिट्ठी पत्री १, पृ० १५५-५६ ।
४. अमृत राय, प्रेमचन्द : कलम का सिपाही, पृ० ६५५ ।

(जापानी)

रचना वर्ष	पुस्तक का नाम	लेखक	पृ०सं०
१९३०	पाप की ओर	जून इचिरो टानी साकी	२११

(फुटकल)

रचना वर्ष	पुस्तक का नाम	लेखक	पृ०सं०
१९२५	उर्वशी	कालिदास	२०३
१९१९	कोहनूर		१८९
१९२०	नसीरुदीन हैदर	— —	२३५
१९२१	दु:खिनी	— —	१९६
	भिखारिणी	— —	१९६
	सुरबाला वा देवकी	— —	१९५
१९२३	एम० ए० बना के क्यों मेरी मिट्टी खराब की।	— —	१९९
१९३३	औरतों की दूकान	— —	१९९
१९२५	उपन्यास सागर	— —	२०२
१९२५	बंगाली बाबू तथा चम्पा	— —	२०४
	मौत का नजारा	— —	२०४
	गरीब की लड़की	— —	२०४
	नारी जीवन या सर्वस्व समर्पण	— —	२०५
	मित्र	— —	२०५
	विषम विवाह तथा राय साहब	— —	२०६
१९२७	विलासिनी	— —	२०७
१९३१	पेरिस का कुबड़ा	— —	२१३
	लक्ष्मी	— —	२१३
	विधिविधान	— —	२१२
१९३२	संदिग्ध संसार	— —	२१४
१९३६	निर्मला	चतुर्भुज माणकेश्वर भट्ट	२२०
१९३६	दौलत का नशा	— —	२२०

(वैज्ञानिक उपन्यास)

रचना वर्ष	पुस्तक का नाम	लेखक	पृ०सं०
१९१८	बेलून विहार	जूल्सवर्न	२४३
१९१९	भूगर्भ की सैर	" "	२४३
१९२३	विमान विध्वंसक (जेपलीन डिस्ट्रायर)	— —	२४३
१९३४	वे मौत से खेले थे	ए० एस० नील	२४८

रचना वर्ष	पुस्तक का नाम	लेखक	पृ० सं०
१९२६	महासती अनुसूया	जगदीश झा विमल	२५८
	महासती वृन्दा	रामकृष्ण शर्मा	२५८
१९२७	देवी पार्वती	जहूरवख्श	२५८
	पाशुपत प्राप्ति	विष्णु नरहर ललित	२५८
	युधिष्ठिर	शशिभूषण वसु	२५८
	सती सुलक्षणा	जगदीश झा 'विमल'	२५८
	सुभद्रा	कार्तिकेयचरण मुखोपाध्याय	२५८
१९२८	आश्रय हारिणी	वामन मल्हारराव जोशी	२५६
	वाल आख्योपन्यास	— —	२५८
	सती उषा	शिवयत्न सिंह	२५८
	श्री रामचरित्र	चिन्तामणि विनायक वैद्य	२५८
१९२६	देवी शकुन्तला	हरिहर प्रसाद द्विवेदी	२५९
	देवी सीता	जहूरवख्श	१९२६
	सती सावित्री	हरिहर प्रसाद द्विवेदी	२५९
१९३०	पतिव्रता गान्धारी	जगदीश झा विमल	२६१
	भक्त नारी	हनुमान प्रसाद पोद्दार	२५९
	भक्त प्रह्लाद	,, ,,	२५९
	श्रीपाल	कन्हैया लाल जैन	२५९
	सती सुलोचना	तारिणी प्रसाद शर्मा	२५९
	हनुमच्चरित्र	गणेशदत्त शर्मा गौड़	२५९
१९३१	अभागिनी	नरोत्तम व्यास	२५९
	देवर्षि नारद	इन्द्रनारायण द्विवेदी	२६०
	भक्त पंचरत्न	हनुमान प्रसाद पोद्दार	२६०
१९३२	पंच सती	देवीदत्त शुक्ल	२६०
	भगवतरत्न प्रह्लाद	द्वारिका प्रसाद शर्मा	२६०
	रामायणीय कथा कानन	रामनाथ पांडेय	२६०
	शैव्या हरिश्चन्द्र	कार्तिकेय चरण मुखोपाध्याय	२६०
	सावित्री सत्यवान	,, ,,	२९०
१९३३	आदर्श भक्त	हनुमान प्रसाद पोद्दार	२६१
	धार्मिक चरित्र	ज्वाला प्रसाद सिंह	२६१
	भक्त ध्रुव	हर्षवर्द्धन शुक्ल	२६२
	भक्त प्रहलाद	प्रबोधचन्द्र मिश्र	२६२

लेखकानुक्रमणिका

(मौलिक उपन्यास)

अनूदित उपन्यास

धार्मिक कथाएँ

ग्रन्थानुक्रमणिका

ई० बताते हैं।[1] रामदीन गुप्त के अनुसार "यह सन् २० तथा ३० के बीच की कृति है।"[2] डॉ० इन्द्रनाथ मदान ने 'रंगभूमि' का प्रकाशन-काल १९२४ ई० बताया है।[3] हंसराज रहबर के मत से "प्रेमचन्द ने यह उपन्यास सन् २७-२८ में लिखा था।"[4] भारतीय प्रकाशनालय, इलाहाबाद, से प्रकाशित 'रंगभूमि' के एक संस्करण में इसका रचना काल १९२६-२७ ई० मुद्रित है।[5] १९६१ ई० में सरस्वती प्रेस, वाराणसी से प्रकाशित 'रंगभूमि' के वर्तमान (?) संस्करण में इसके प्रथम संस्करण का प्रकाशन-काल १९२७ ई० और इसका रचना-काल १९२५-२७ ई० बताया गया है।[6] डॉ० प्रतापनारायण टंडन ने 'रंगभूमि' का प्रकाशन-काल १९२२ ई० बताया है।[7]

'रंगभूमि' के प्रकाशित होते ही 'प्रभा', 'सरस्वती' आदि पत्रिकाओं में इसकी प्रशंसात्मक और विरोधात्मक आलोचनाओं की धूम मच गयी। यह इस बात का प्रमाण है कि हिन्दी पाठकों के रुचि-निर्देशकों और आलोचकों का ध्यान आकृष्ट करने में यह उपन्यास सफल हुआ था।

गंगा पुस्तकमाला कार्यालय, लखनऊ से 'रंगभूमि' का छठा संस्करण १९४३ ई० (सं० २००० वि०) में,[8] ग्यारहवाँ संस्करण १९४६ ई० में,[9] तेरहवाँ संस्करण १९५८ ई० में[10] तथा चौदहवाँ संस्करण १९६१ ई० (सं० २०१८ वि०) में[11] प्रकाशित हुआ। 'रंगभूमि' के कुछ संस्करण अन्य प्रकाशन-संस्थाओं से भी प्रकाशित हुए हैं। भारतीय प्रकाशनालय, इलाहाबाद से इसका एक संस्करण प्रकाशित है, जिसमें प्रकाशन-काल अथवा संस्करण-संख्या नहीं दी हुई है।[12] 'रंगभूमि' का सरस्वती प्रेस से १९६१ ई० में प्रकाशित 'वर्तमान संस्करण' भी देखने में आया है।[13] बादवाले संस्करण प्रेमचन्द के उत्तराधिकारियों द्वारा संचालित प्रकाशन-संस्थाओं से प्रकाशित हुए हैं, पर यह नहीं ज्ञात होता कि उनके कुल कितने संस्करण प्रकाशित हुए हैं। फिर भी इतना तो स्पष्ट ही है कि

---

१. डॉ० श्रीकृष्ण लाल, आधुनिक हिन्दी साहित्य का विकास, पृ० ३१२।
२. रामदीन गुप्त, प्रेमचन्द और गाँधीवाद, पृ० १८७।
३. डॉ० इन्द्रनाथ मदान, प्रेमचन्द : एक विवेचना, परिशिष्ट ३।
४. हंसराज रहबर, प्रेमचन्द : जीवन और कृतित्व, पृ० २३७।
५. इस संस्करण में न तो प्रकाशन काल दिया हुआ है न संस्करण संख्या। पुस्तक राष्ट्रभाषा परिषद् पुस्तकालय, पटना, में उपलब्ध है।
६. रंगभूमि, सरस्वती प्रेस, वर्तमान संस्करण १९६१ ई०।
७. डॉ० प्रतापनारायण टंडन, हिन्दी उपन्यास में कथा शिल्प का विकास, पृ० २८४।
८. प्रा० स्था०—आ० भा० पु० काशी।
९. प्रा० स्था०—रा० भा० प० पु०, पटना।
१०. प्रा० स्था०—आ० भा० पु०, काशी।
११. प्रा० स्था०—वि० बु० से०, पटना।
१२. प्रा० स्था०—प० का० पु०, पटना।
१३. प्रा० स्था०—वि० बु० से०, पटना।



'कायाकल्प' के प्रकाशित होने का उल्लेख है।[१] इन प्रमाणों से 'कायाकल्प' की प्रकाशन-तिथि १९२६ ई० निर्विवाद है।

'कायाकल्प' के रचना-काल के सम्बन्ध में भी बहुत भ्रम फैलाया गया है। डॉ० श्री कृष्ण लाल ने इसका प्रकाशन-काल १९२४ ई० बतलाया है।[२] डॉ० प्रतापनारायण टंडन भी इसका प्रकाशन-काल १९२४ ई० ही मानते हैं।[३] डॉ० इन्द्रनाथ मदान के अनुसार 'कायाकल्प' का प्रकाशन-काल १९२८ ई० है।[४] डॉ० राजेश्वर गुरु इसका प्रकाशन-काल १९२८ ई० मानते हैं।[५] सरस्वती प्रेस से प्रकाशित 'कायाकल्प' के संस्करणों में इसका रचना-काल १९२९ ई० दिया हुआ है। इन परस्पर-विरोधी सूचनाओं के मूल में अनध्याय और लापरवाही का कितना हाथ है, यह बतलाने की जरूरत नहीं।

सरस्वती प्रेस, वाराणसी से 'कायाकल्प' का सातवाँ संस्करण दिसम्बर १९४५ ई० में[६] और नवाँ संस्करण १९५३ ई० में[७] प्रकाशित हुआ। इस उपन्यास का नवाँ संस्करण अमृत राय द्वारा हिन्दुस्तानी पब्लिशिंग हाउस, इलाहाबाद से प्रकाशित हुआ।[८] १९६१ ई० में 'कायाकल्प' का एक 'वर्तमान संस्करण' सरस्वती प्रेस, इलाहाबाद से प्रकाशित हुआ है। इससे स्पष्ट है कि 'कायाकल्प' प्रेमचन्द के अन्य उपन्यासों की तरह लोकप्रिय न हो सका।

'कायाकल्प' में प्रेमचन्द ने सामाजिक, साम्प्रदायिक और राजनैतिक समस्याओं को उठाकर उनका समाधान प्रस्तुत करने का प्रयास किया है। जनता और जमीन्दार का संघर्ष हमें इस उपन्यास में भी देखने को मिलता है। मजदूर किसानों की दुर्दशा और उन पर होनेवाले विभिन्न अत्याचारों का इसमें यथार्थ चित्रण किया गया है। साथ ही इसकी कथावस्तु में अलौकिक घटनाओं का अद्भुत समावेश है। उपन्यासकार ने इसमें अध्यात्म और पुनर्जन्म विषयक धारणाएँ भी व्यक्त की हैं।

निर्मला

प्रेमचन्द का 'निर्मला' नामक उपन्यास सर्वप्रथम 'चाँद' के नवम्बर १९२५ से नवम्बर १९२६ तक के अंकों में प्रकाशित हुआ था।[९] जनवरी १९२७ के 'चाँद' की

---

१. अमृतराय, प्रेमचन्द : कलम का सिपाही, पृ० ६५५, चिट्ठी पत्री १, पृ० १६२।
२. डॉ० श्रीकृष्ण लाल, आधुनिक हिन्दी साहित्य का विकास, पृ० ३१२।
३. डॉ० प्रतापनारायण टंडन, हिन्दी उपन्यास में कथा शिल्प का विकास, पृ० २८४।
४. डॉ० इन्द्रनाथ मदान, प्रेमचन्द : एक विवेचना, परिशिष्ट ३।
५. डॉ० राजेश्वर गुरु, प्रेमचन्द : एक अध्ययन, पृ० १९४।
६. प्रा० स्था—ज० पु० चुन्नी।
७. प्रा० स्था०—आ० भा० पु०, काशी।
८. प्रा० स्था०—प० का० पु०, पटना।
९. अमृत राय, प्रेमचन्द : कलम का सिपाही, पृ० ६५५।

गया।"[१] सरस्वती प्रेस, वाराणसी से 'निर्मला' का छठा संस्करण १९४४ ई० में,[२] आठवाँ संस्करण नवम्बर १९५० ई० में[३] तथा ग्यारहवाँ संस्करण १९५५ ई० में[४] प्रकाशित हुआ। हिन्दुस्तानी पब्लिशिंग हाउस, इलाहाबाद से 'निर्मला' का नवाँ संस्करण १९५१ में[५] तथा हंस प्रकाशन, इलाहाबाद से इसका दसवाँ संस्करण जनवरी १९६१ ई० में[६] और ११वाँ संस्करण सितम्बर १९६१ में प्रकाशित हुआ। इस संस्करण की पाँच हजार प्रतियाँ छपी।[७] 'निर्मला' का सरस्वती प्रेस, इलाहाबाद से प्रकाशित एक और संस्करण भी प्रस्तुत पंक्तियों के लेखक को प्राप्त हुआ है, जिसमें न तो प्रकाशन-काल दिया हुआ है न संस्करण-संख्या। इस संस्करण के भूमिका तथा परिचय-लेखक विद्यानिवास मिश्र, मुद्रक बालकृष्ण शास्त्री, ज्योतिष प्रकाश प्रेस, वाराणसी तथा पृष्ठ-सं० २०७ है। पुस्तक अखबारी कागज पर छपी है।[८] इस प्रकार 'निर्मला' के अब तक कितने संस्करण प्रकाशित हुए हैं, इसका पता तो नहीं चलता, पर १९६१ के पूर्व इसके कम से कम १३ संस्करण अवश्य प्रकाशित हुए थे, यह स्पष्ट है। 'निर्मला' की लोकप्रियता का यह असन्दिग्ध प्रमाण है।

'निर्मला' में प्रेमचन्द ने बेमेल विवाह—वृद्ध या प्रौढ़ व्यक्ति से किशोरी का विवाह—को चित्रणीय विषय के रूप में लिया है और इसके कारणों तथा इससे उत्पन्न पारिवारिक समस्याओं का—जिनमें आर्थिक, नैतिक और मनोवैज्ञानिक सभी प्रकार की समस्याएँ हैं—यथार्थ तथा प्रभावकारी चित्रण किया है। निर्मला उपन्यास की प्रमुख पात्र है।

प्रतिज्ञा

प्रेमचन्द का 'प्रतिज्ञा' नामक उपन्यास सर्वप्रथम 'चाँद' मासिक पत्र के जनवरी १९२७ से नवम्बर १९२७ तक के अंकों में धारावाहिक रूप से प्रकाशित हुआ।[९] पुस्तक

---

१. अमृत राय, प्रेमचन्द; कलम का सिपाही, पृ० ३६०।
२. आ० भा० पु०, काशी की पुस्तक-सूची।
३. प्रा०-स्था०—प० का० पु०, पटना।
४. प्रा०-स्था०—आ० भा० पु०, काशी।
५. आ० भा० पु०, काशी की पुस्तक-सूची।
६. प्रा०-स्था०—मेरा निजी पुस्तकालय।
७. प्रा०-स्था०—दिल्ली पुस्तक सदन, पटना।
८. प्रा०-स्था०—रा०प्र०मं०, पटना।
९. चाँद, जनवरी १९२७ (परिच्छेद १-२), फरवरी १९२७ (परि० ३,४), मार्च २७ (परि० ५,६), अप्रैल २७ (परि० ७,८), जुलाई २७ (परि० १०), अगस्त २७ (परि० ११), सितम्बर २७ (परि० १२), नवम्बर २७ (परि० १४,१५)। डॉ० गीता लाल के अनुसार 'प्रतिज्ञा' उपन्यास चाँद के २७-२८ के अंकों में प्रकाशित हुआ था। १९२८ के जनवरी से जून तक के अंको में मैं देख चुका हूँ। उनमें 'प्रतिज्ञा' के परिच्छेद नहीं छपे हैं। शेष अंक प्रस्तुत पंक्तियों के लेखक को उपलब्ध नहीं हो सके हैं। श्री अमृत राय

में उपलब्ध है।[1] प्रेमचन्द द्वारा १७ दिसम्बर १९३० को जैनेन्द्रकुमार के नाम लिखित पत्र से ज्ञात होता है कि १७ दिसम्बर १९३० तक 'गबन' के तीन सौ पृष्ठ छप चुके थे और एक सौ पृष्ठ छपने को बाकी थे। इससे 'गबन' का रचना-काल १९२८-३० के बीच में अनुमित होता है।[2] प्रेमचन्द के आलोचकों ने इस उपन्यास की प्रकाशन-तिथि के सम्बन्ध में भ्रामक सूचनाएँ प्रायः नहीं दी हैं; अपवादस्वरूप डॉ० इन्द्रनाथ मदान ने इसका काल (पता नहीं, कौन सा काल) १९३० ई० दिया है।[3] डॉ० राजेश्वर गुरु ने इसकी प्रकाशन-तिथि नहीं दी है।[4] डॉ० गीता लाल ने भी अपने कथन के समर्थन में कोई प्रमाण नहीं दिया है।[5]

रामदीन गुप्त ने डॉ० रामरतन भटनागर आदि कतिपय आलोचकों के साक्ष्य पर बताया है कि "प्रेमचन्द का 'गबन' सन् १९०४ के आसपास इंडियन प्रेस से प्रकाशित उनके 'कृष्णा' नामक उर्दू उपन्यास का ही परिवर्धित एवं संशोधित संस्करण है।"[6] 'जमाना' नामक उर्दू पत्र के अक्तूबर १९०७ के अंक में प्रकाशित 'किशना' की समीक्षा से इस कथन के उत्तरांश की पुष्टि होती है। हिन्दुस्तानी पब्लिशिंग हाउस, इलाहाबाद से 'गबन' का तीसरा संस्करण १९५० ई० में प्रकाशित हुआ।[7] यहीं से प्रकाशित 'गबन' का एक और संस्करण मुझे देखने को मिला है,[8] पर उसमें न तो संस्करण-संख्या दी हुई है, न प्रकाशन-काल। इसका मुद्रक अग्रवाल प्रेस, इलाहाबाद, तथा पृ० सं० ३३३ है।

हंस प्रकाशन, इलाहाबाद से भी प्रकाशित 'गबन' का एक संस्करण मुझे प्राप्त हुआ है, जिसमें न तो प्रकाशन-काल दिया हुआ है, न संस्करण-संख्या।[9] यह अग्रवाल प्रेस, इलाहाबाद से मुद्रित है तथा इसकी पृ० सं० ४१७ है। हंस प्रकाशन, इलाहाबाद से जून १९६१ में प्रकाशित एक संस्करण इधर हाल में मेरे देखने में आया है, जिसे अठाईसवाँ संस्करण (दस हजार प्रतियों का) बताया गया है।[10] यदि यह मुद्रण की भूल नहीं है तो 'गबन' की लोकप्रियता स्वयंसिद्ध है। 'गबन' का एक संक्षिप्त संस्करण

---

१. मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—गबन, लेखक भारत विख्यात उपन्यास सम्राट् श्री प्रेमचन्द जी, प्रकाशक सरस्वती प्रेस, बनारस सिटी, प्रथम संस्करण मार्च १९३१, मूल्य ३), पृ० सं० ४३९।
२. अमृत राय, प्रेमचन्द : कलम का सिपाही, चिट्ठी पत्री २, पृ० १३।
३. डॉ० इन्द्रनाथ मदान, प्रेमचन्द ; एक विवेचना, परिशिष्ट ३।
४. डॉ० राजेश्वर गुरु, प्रेमचन्द : एक अध्ययन।
५. डॉ० गीता लाल, प्रेमचन्द की जीवन तथा साहित्य सम्बन्धी तिथियों में भ्रांतियाँ, साहित्य, जनवरी, १९६०।
६. रामदीन गुप्त, प्रेमचन्द और गान्धीवाद, पृ० २२७।
७. प्रा० स्था०–ज० पु० चुन्नी।
८. प्रा० स्था०–आ० भा० पु० काशी।
९. प्रा० स्था०–प० का० पु०, पटना।
१०. प्रा० स्था०–दिल्ली पुस्तक सदन, पटना।

प्रेमचन्द के २८ फरवरी १९२९ के एक पत्र से, जो दयानरायन निगम को लिखा गया था, ज्ञात होता है कि इस समय तक 'कर्मभूमि' का लिखना आरम्भ हो गया था। उन्होंने लिखा था : "दूसरी किताबों के मुताल्लिक मैं यही कहूँगा कि आप खुद ही कर लें।...अगर इसे करता हूँ तो मेरा पर्दए-मजाज रह जाता है। सुबह को करता हूँ तो 'कर्मभूमि' में हर्ज होता है।"[1] पर अमृत राय के अनुसार "पाण्डुलिपि के उपलब्ध अंश के आधार पर इसका लेखन १६ अप्रैल १९३१ को आरम्भ हुआ।"[2] यह सूचना सन्दिग्ध जान पड़ती है।

'कर्मभूमि' के प्रकाशन-काल के सम्बन्ध में सौभाग्यवश हिन्दी के आलोचकों और शोधकर्ताओं ने मनमानी नहीं बरती है।

'कर्मभूमि' का छठा संस्करण १९४६ ई० में और सातवाँ संस्करण १९४८ ई० में सरस्वती प्रेस, वाराणसी से प्रकाशित हुआ। 'कर्मभूमि' के दो और विभिन्न संस्करण मेरे देखने में आये हैं, जिनमें से किसी में भी प्रकाशन-काल या संस्करण-संख्या नहीं दी हुई है। इनमें से एक हिन्दुस्तानी पब्लिशिंग हाउस, इलाहाबाद से प्रकाशित और अग्रवाल प्रेस, इलाहाबाद से मुद्रित है।[3] दूसरा संस्करण हंस प्रकाशन, इलाहाबाद से प्रकाशित तथा सम्मेलन मुद्रणालय, इलाहाबाद से मुद्रित है। इसका पृ० सं० ४११ और मूल्य छह रुपये है।[4] हंस प्रकाशन, इलाहाबाद से 'कर्मभूमि' का नवाँ संस्करण मार्च १९६१ ई० में प्रकाशित हुआ।[5] हंस प्रकाशन से जनवरी १९६२ में प्रकाशित 'कर्मभूमि' का एक और संस्करण मेरे देखने में आया है, जिसे चतुर्थ संस्करण (४०००का) बताया गया है।[6] पर यह सूचना बिलकुल हास्यास्पद है। एक ही प्रकाशक द्वारा किसी पुस्तक का नवाँ संस्करण मार्च १९६१ ई० में निकले और उसका चौथा संस्करण जनवरी १९६२ में, यह विनोद नहीं तो और क्या है?

इस प्रकार यह बताना नितान्त कठिन है कि 'कर्मभूमि' के अब तक कितने संस्करण प्रकाशित हो चुके हैं, फिर भी उपर्युक्त सूचनाओं से इसकी लोकप्रियता तो सिद्ध है ही।

'कर्मभूमि' में प्रेमचन्द ने किसी एक समस्या को प्रधान न बनाकर तत्कालीन जीवन के अनेक पक्षों को प्रस्तुत करने का प्रयास किया है। मुख्य चित्रणीय विषय

---

१. अमृतराय, प्रेमचन्द : चिट्ठी पत्री १, पृ० १७१।
२. उपरिवत्, कलम का सिपाही, पृ० ६५५।
३. प्रा० स्था०–आ० भा० पु० काशी।
४. प्रा० स्था०–हिन्दी विभागीय पुस्तकालय, पटना विश्वविद्यालय।
५. प्रा० स्था०– मानस पुस्तक विक्रेता, पटना।
६. प्रा० स्था०– हि० पु० ए०, पटना।

'गोदान' प्रेमचन्द का ही नहीं, हिन्दी का भी मूर्धन्य उपन्यास है। इसमें भारतीय समाज, विशेषकर कृषक समाज में व्याप्त शोषणचक्र का अभूतपूर्व चित्रण है। ग्रामीण कृषक समाज का ऐसा यथार्थ और मार्मिक चित्रण किसी अन्य भारतीय उपन्यास में तो नहीं ही मिलता, विश्व उपन्यास साहित्य में भी वह दुर्लभ ही है। होरी उपन्यास का प्रमुख पात्र है, जिसे केन्द्र में रखकर सम्पूर्ण कृषक समाज की भाग्यगाथा प्रस्तुत की गयी है।

मंगलसूत्र

प्रेमचन्द का अन्तिम उपन्यास, जिसे वे पूरा नहीं कर सके, 'मंगलसूत्र' है। अमृत राय के अनुसार यह सर्वप्रथम १९४८ ई० में प्रकाशित हुआ। इसका प्रथम संस्करण हिन्दुस्तानी पब्लिशिंग हाउस, वाराणसी से प्रकाशित हुआ, पर उसमें प्रकाशन-काल नहीं दिया है।[१]

आचार्य चतुरसेन शास्त्री

हृदय की परख

सर्वप्रथम आचार्य चतुरसेन शास्त्री का 'हृदय की परख' नामक उपन्यास दिसम्बर १९१७ ई० में हिन्दी ग्रन्थ रत्नाकर कार्यालय, बम्बई से प्रकाशित हुआ।[२] डॉ० माता प्रसाद गुप्त ने 'हिन्दी पुस्तक साहित्य' में इसका प्रकाशन-काल १९१८ ई० बताया है, जो भ्रामक है।[३] यह उपन्यास हिन्दी पाठकों के बीच इतना लोकप्रिय हुआ कि १९५५ ई० तक इसके दस संस्करण प्रकाशित हो गये।[४] प्रेमचन्द के उपन्यासों तथा हिन्दी के अन्य एक-दो गिने चुने उपन्यासों को छोड़ कर और कोई सामाजिक उपन्यास इतना लोकप्रिय न हो सका। इसका दूसरा संस्करण गंगा पुस्तकालय कार्यालय, लखनऊ से १९२९ ई० में[५] तथा सातवाँ संस्करण १९५१ ई० में[६] प्रकाशित हुआ। इससे सिद्ध होता है कि शुरू में यह उपन्यास हिन्दी पाठकों में उतना लोकप्रिय न हो सका था, पर गंगा पुस्तक-

---

१. प्रा० स्था०—आ० भा० पु० काशी; मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—मंगल सूत्र, ले० प्रेमचन्द, प्र० हिन्दुस्तानी पब्लिशिंग हाउस, बनारस, प्रथम संस्करण ३०००।

२. प्राप्ति स्थान—बि० रा० भा० प० पु०, पटना। मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—हृदय की परख (एक स्वतन्त्र और सचित्र उपन्यास), ले० आचार्य चतुरसेन शास्त्री आयुर्वेदाचार्य, चित्रकार—श्रीयुत् रविशंकर महाशंकर रावल, गोल्ड मेडलिस्ट, प्रकाशक—हिन्दी ग्रन्थ रत्नाकर कार्यालय, बम्बई, मार्गशीर्ष १९७४, दिसम्बर १९१७, प्रथमावृत्ति।

३. डॉ० माताप्रसाद गुप्त, हिन्दी पुस्तक साहित्य, पृ० ४३६।

४. हृदय की परख का गंगा पुस्तकमाला कार्यालय, लखनऊ से १९५५ ई० में प्रकाशित दसवाँ संस्करण राष्ट्रभाषा परिषद् पुस्तकालय, पटना में उपलब्ध है।

५. पुस्तकसूची, आर्यभाषा पुस्तकालय, काशी।

६. प्राप्ति स्थान—प० का० पु०, पटना।

हृदय की प्यास

सन् १९२७ ई० में शास्त्री जी का 'हृदय की प्यास' नामक उपन्यास गंगा पुस्तक-माला कार्यालय, लखनऊ से प्रकाशित हुआ।[1] डॉ० शुभकार कपूर ने इसका प्रकाशनकाल १९३१ई० (प्र० गंगा पुस्तकमाला कार्यालय, लखनऊ)[2] तथा डॉ० माताप्रसाद गुप्त ने १९३२ ई० दिया है।[3] ये दोनों ही मत भ्रामक हैं, क्योंकि प्रथम संस्करण पर स्पष्टत: सं० १९८४ वि० मुद्रित है जो न १९३१ ई० हो सकता है न १९३२ ई०। डॉ० गुप्त की बात यदि हम छोड़ भी दें तो डॉ० कपूर से, जिन्होंने आचार्य चतुरसेन शास्त्री पर शोध-प्रबन्ध लिखा है, ऐसी भूल की आशा नहीं करते।

'हृदय की प्यास' का आठवाँ संस्करण गंगा पुस्तकमाला कार्यालय, लखनऊ से १९५४ ई० में प्रकाशित हुआ।[4] यह तथ्य इस उपन्यास की लोकप्रियता का परिचायक है। इस उपन्यास के 'चतुर्थावृत्ति के निवेदन' से, जो उपर्युक्त अष्टमावृत्ति के साथ संलग्न है, इसकी लोकप्रियता के तथ्य पर और भी प्रकाश पड़ता है। प्रकाशक के शब्दों में, "बड़े हर्ष की बात है, इस उपन्यास के पहले तीन संस्करणों की हजारों प्रतियाँ कुछ ही वर्षों में बिक गईं। माँग की अधिकता के कारण यह अब फिर छप कर निकल रहा है।"[5]।

'हृदय की प्यास' का प्रमुख उद्देश्य भारतीय आदर्श के अनुरूप पति-पत्नी के सम्बन्ध का चित्रण है। पातिव्रत्य, सच्चरित्रता आदि का प्रतिपादन ही उपन्यास का विषय है। कहीं कहीं प्रणय-क्रीड़ाओं का नग्न वर्णन है, जिसका लक्ष्य पाठकों को आकृष्ट करना जान पड़ता है। घरेलू वातावरण का बढ़िया चित्रण उपन्यास में हुआ है। हृदय के भीतर चलने वाले सद्वृत्तियों और कुवृत्तियों के संघर्ष का चित्रण पूरे उपन्यास में है। कुल मिलाकर उपन्यास चरित्र प्रधान है। प्रवीण, सुखदा, भगवती और 'बहू' उपन्यास के प्रमुख पात्र हैं।

---

१. प्रा० स्था०—सिनहा पुस्तकालय, पटना; मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—हृदय की प्यास (गार्हस्थ्य-उपन्यास), ले० आयुर्वेदाचार्य श्री चतुरसेन शास्त्री, प्रकाशक गंगा पुस्तकमाला कार्यालय, प्रकाशक और विक्रेता, लखनऊ, प्रथमावृत्ति सं० १९८४ वि०, मूल्य सजिल्द २), सादी १॥),पृ० सं० १९६।

२. डॉ० शुभकार कपूर, आचार्य चतुरसेन का कथा साहित्य, विवेक प्रकाशन, लखनऊ, १९६५, पृ० ९२।

३. डॉ० माताप्रसाद गुप्त, हिन्दी पुस्तक साहित्य, पृ० ४३६।

४. यह संस्करण मेरे व्यक्तिगत पुस्तकालय में उपलब्ध है।

५. हृदय की प्यास, ले० चतुरसेन शास्त्री, प्र० गंगा पुस्तकमाला कार्यालय, लखनऊ, अष्टमावृत्ति २०११ वि०, चतुर्थावृत्ति के निवेदन से।

रूप का बाजार

सन् १९२४ ई० में विवेच्य उपन्यासकार के 'रूप का बाजार' नामक उपन्यास का द्वितीय संस्करण लहरी प्रेस, काशी से प्रकाशित हुआ। प्रस्तुत पंक्तियों का लेखक इस उपन्यास के प्रथम संस्करण को प्राप्त करने में असमर्थ रहा है। इस उपन्यास में पतिसेवा तथा लोभ न करने का उपदेश दिया गया है।

विधाता की लीला तथा विलासिनी और गवाही

सन् १९२६ ई० में विवेच्य उपन्यासकार द्वारा सम्पादित 'विधाता की लीला तथा विलासिनी और गवाही' नामक कथासंग्रह लहरी बुक डिपो, काशी से प्रकाशित हुआ। इसमें 'गवाही' नामक 'गल्प' दुर्गा प्रसाद खत्री लिखित है।[1] इस पुस्तक के प्रत्येक पृष्ठ के ऊपर, कोने में, 'उपन्यास' शब्द अंकित है।

कलंक कालिमा

सन् १९३२ ई० में दुर्गाप्रसाद खत्री लिखित 'कलंक कालिमा' नामक उपन्यास लहरी प्रेस बनारस से प्रकाशित हुआ[2] इस उपन्यास का एक अन्य संस्करण १९५३ ई० में प्रकाशित हुआ, पर उसके मुखपृष्ठ पर संस्करण-संख्या नहीं दी हुई है। श्री दुर्गा प्रसाद खत्री के अनुसार 'कलंक कालिमा' का पहला संस्करण १९३२ ई० में, दूसरा संस्करण १९३८ ई० में और तीसरा संस्करण १९५३ ई० में प्रकाशित हुआ।[3]

इस उपन्यास में वासनायुक्त यथार्थ प्रेम का चित्रण हुआ है। उपन्यास का केन्द्रीय विषय यही है; यों विधवा-विवाह का प्रतिपादन एवं हिन्दू परिवारों के दकियानूसी विचारों—जैसे गौने के पूर्व पति-पत्नी का अपने घर के अतिरिक्त कहीं और मिलना उचित नहीं माना जाता—का विरोध भी किया गया है। विधवा-विवाह और विवाहित विधवा द्वारा अपने पति के अलावा अन्य व्यक्ति से प्रेम और वासनातृप्ति करने का चित्रण करके भी उपन्यासकार ने अपने को प्रायः तटस्थ रखा है। दुर्गा प्रसाद खत्री द्वारा ऐसे उपन्यास की रचना एक आश्चर्य की ही बात है।

उपन्यास कुसुम

दुर्गा प्रसाद खत्री का 'उपन्यास कुसुम' नामक एक उपन्यास भी लहरी प्रेस, बनारस से प्रकाशित हुआ था। आर्य भाषा पुस्तकालय, काशी में इस उपन्यास की एक

---

१. प्रा० स्था०—आ० भा० पु० काशी। मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि-"रेलवे सीरीज"—अंक २० विधाता की लीला तथा विलासिनी और गवाही, दुर्गा प्रसाद खत्री, प्रोप्राइटर लहरी बुक डिपो—काशी, द्वारा प्रकाशित, प्रथमवार १०००, १९२६, गल्प सूची—विधाता की लीला—ले० मथुरा प्रसाद खत्री (पृ० २८), गवाही-ले० दुर्गा प्रसाद खत्री (पृ० १५)।

२. प्रा० स्था०—सिनहा पुस्तकालय, पटना; मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—कलंक-कालिमा, रोचक सामाजिक उपन्यास, ले० दुर्गाप्रसाद खत्री, प्र० लहरी बुक डिपो, बनारस सिटी, १९३२ ई०, मूल्य १॥), पृ० सं० २०८।

३. व्यक्तिगत मुलाकात।

भारती

सन् १९२३ ई० में पाठकजी द्वारा लिखित 'भारती' नामक उपन्यास एस० आर० बेरी एंड कम्पनी, कलकत्ता से प्रकाशित हुआ।[1] इसका दूसरा संस्करण १९३४ई० में निकला।[2] देशहित, समाजसेवा, नारी जागरण, राष्ट्रीय चेतना आदि को विषय बनाकर लिखा जानेवाला यह कदाचित् प्रथम उपन्यास है। ग्रामीणों की गरीबी, अशिक्षा और मूर्खता का ऐसा विश्वसनीय चित्रण इस काल के अन्य किसी उपन्यास में शायद ही मिले। सामाजिक और नैतिक समस्याओं के स्थान पर एक राजनैतिक समस्या को उपन्यास का विषय बनाने का यह प्रथम प्रयास जान पड़ता है।

मायापुरी

'सरस्वती', सितम्बर १९२३ ई० में प्रकाशित 'पुस्तक परिचय' से ज्ञात होता है कि इसके पूर्व चन्द्रशेखर पाठक लिखित 'मायापुरी' नामक उपन्यास आर० डी० बाहिती एंड को० कलकत्ता से प्रकाशित हुआ।[3] सन् १९२४ ई० में इस उपन्यास का दूसरा संस्करण आर० डी० बाहिती एंड को०, कलकत्ता से प्रकाशित हुआ।[4] इस उपन्यास में रूपक शैली में संसार रूपी मायाचक्र का वर्णन तथा पाठकों को उससे बचने का उपदेश दिया गया है। उपन्यासकार के शब्दों में "इस संसार-रूपी मायापुरी में अनेकानेक उपद्रव और पापकर्म की वेगवती सरिता बहा करती है। अतः इससे अपनी रक्षा कर आत्मानन्द के दरबार में निरपराधी प्रमाणित होने के लिए संयम रूपी मित्र, बुद्धि रूपी पिस्तौल, कर्मपटुता रूपी क्लोरोफार्म और त्याग, क्षमा, संतोष प्रभृति सिपाहियों का सहारा लेना परमावश्यक है।" इस उपन्यास के कुछ पात्र कामरूप सिंह 'काम' अमर्ष सिंह 'क्रोध', गर्व सिंह 'मद' इत्यादि हैं तो दूसरी ओर संयम सिंह, परोपकार सिंह, सन्तोष इत्यादि हैं और नायक जीवानन्द 'मनुष्य विशेष' हैं।

अबला की आत्मकथा

आर्य भाषा पुस्तकालय की पुस्तक सूची के अनुसार चन्द्रशेखर पाठककृत 'अबला की आत्मकथा' नामक उपन्यास १९३३ ई० में आदर्श हिन्दी पुस्तकालय, कलकत्ता से प्रकाशित हुआ था। प्रस्तुत पंक्तियों का लेखक इस उपन्यास को प्राप्त करने में असमर्थ रहा है।

---

१. प्राप्ति स्थान—आ० भा० पु० काशी। मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—भारती, ले० पंडित चंद्रशेखर पाठक, प्रकाशक एस० आर० बेरी एंड कम्पनी, २०२, हरिसन रोड, कलकत्ता, प्रथम संस्करण १०००, संवत् १९८०, पृ० सं० ३६२।
२. द्वितीय संस्करण सं० १९९१ वि०, प्राप्ति स्थान—आर्य भाषा पुस्तकालय, काशी।
३. सरस्वती, सितम्बर १९२३, पुस्तक परिचय।
४. प्राप्ति स्थान—आ० भा० पु० काशी। मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—मायापुरी (सचित्र शिक्षाप्रद

निर्धन की कन्या का दूसरा संस्करण सम्भवत: १९२२ ई० में प्रकाशित हुआ।[1]

खरा सोना

सन् १९२१ ई० में विमलजी का 'खरा सोना' नामक उपन्यास बड़तल्ला स्ट्रीट, कलकत्ता से महादेव प्रसाद झूंझनू वाला द्वारा प्रकाशित किया गया।[2] इस उपन्यास में तत्कालीन समस्याओं जैसे किसानों पर जमीन्दारों के अत्याचार, मिलमालिकों और मजदूरों का संघर्ष तथा मजदूर हड़ताल, अँगरेजों के विरुद्ध भारतीयों के संघर्ष आदि का चित्रण किया गया है। उपन्यासकार राष्ट्रीय विचारों और भावनाओं के चित्रण का प्रयास तो अवश्य करता है, पर अँगरेज सरकार के भय से खुलकर उन विचारों का प्रतिपादन नहीं कर पाता। पर जमीन्दारों के अत्याचार और मजदूरों की हड़ताल का चित्रण वह करता है। मजदूरों और मिलमालिकों में सुलह करा दी गयी है।

आदर्श दम्पति

१९२१ ई० में ही 'विमल' जी का 'आदर्श दम्पति' नामक उपन्यास उपन्यास बहार आफिस, काशी से प्रकाशित हुआ।[3] प्रस्तुत पंक्तियों का लेखक इस उपन्यास को प्राप्त करने में असमर्थ रहा है।

जीवन ज्योति

१९२२ ई० में विवेच्य उपन्यासकार का 'जीवन ज्योति' नामक उपन्यास भारत पुस्तक भंडार, बड़तल्ला स्ट्रीट, कलकत्ता से प्रकाशित हुआ। आर्य भाषा पुस्तकालय, काशी में इस उपन्यास की एक प्रति है किन्तु उसके मुखपृष्ठ के न रहने के कारण पुस्तक के सम्बन्ध में कोई सूचना नहीं मिलती। उपर्युक्त सूचनाएँ आर्य भाषा पुस्तकालय की पुस्तक-सूची तथा 'सरस्वती' (जनवरी १९२३ ई०) में प्रकाशित विवेच्य उपन्यास की समीक्षा से प्राप्त की गयी हैं।[4] आ० भा० पु० में उपलब्ध प्रति की भूमिका से भी इसका रचना-काल १९२२ ई० प्रमाणित होता है। इस उपन्यास में भी सामयिक समस्याओं का चित्रण है। इसमें एक युवक और युवती के अपने अभिभावकों की अनुमति लिए बिना विवाह कर लेने की कहानी है। युवती अपने माता पिता की सम्मति न होने पर भी असहयोगी पति के साथ विवाह कर लेती है।

---

१. आ० भा० पु० की पुस्तक-सूची।

२. प्राप्ति स्थान—आ० भा० पु० काशी, मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—खरा सोना, ले० जगदीश झा 'विमल', सन् १९२१, प्रथमावृत्ति २०००, प्र०—महादेव प्रसाद झूंझनूवाला, ३१ बड़तल्ला स्ट्रीट, कलकत्ता, पृ० सं० १५१।

३. आ० भा० पु० की पुस्तक सूची।

४. सरस्वती, भाग २४, संख्या १ (जनवरी १९२४ ई०), जीवन ज्योति (पुस्तक समीक्षा)।

लक्ष्य है। विधवा-विवाह तथा वृद्ध-विवाह की बुराइयाँ दिखाकर उनकी आलोचना की गयी है। देश-सेवा का व्रत धारण करने का उपदेश भी दिया गया है।

केसर

सन् १९३६ ई० में 'विमल' जी द्वारा लिखित 'केसर' नामक उपन्यास साहित्य सौन्दर्य भवन, बनारस सिटी से प्रकाशित हुआ।[1] 'केसर' में सामाजिक कुरीतियों के कुपरिणाम चित्रित किये गये हैं।

क्या वह वेश्या हो गयी ?

विवेच्य उपन्यासकार का 'क्या वह वेश्या हो गयी ?' नामक उपन्यास साहित्य सौन्दर्य भवन, काशी से प्रकाशित हुआ।[2] पुस्तक के मुखपृष्ठ पर प्रकाशन-काल सम्बन्धी सूचना नहीं दी हुई है। सामाजिक दोषों और बुराइयों का चित्रण इस उपन्यास का भी लक्ष्य है।

मातृ मन्दिर

विवेच्य उपन्यासकार का 'मातृमन्दिर' नामक उपन्यास भी छात्र हितकारी पुस्तकमाला, प्रयाग से प्रकाशित हुआ था। प्रस्तुत पंक्तियों के लेखक को यह पुस्तक प्राप्त नहीं हो सकी है। उपर्युक्त सूचनाएँ आर्यभाषा पुस्तकालय की पुस्तक-सूची से प्राप्त की गयी हैं। पुस्तक-सूची से प्रकाशन काल का पता नहीं चलता।

जी० पी० श्रीवास्तव

महाशय भड़ाम सिंह शर्मा

जी० पी० श्रीवास्तव का प्रथम उपन्यास 'महाशय भड़ाम सिंह शर्मा' सर्वप्रथम, १९२० ई० में सरस्वती सदन, इन्दौर से द्वारका प्रसाद सेवक द्वारा प्रकाशित किया गया।[3] 'आवश्यक निवेदन' में उपन्यासकार ने इस ग्रन्थ के प्रकाशन का इतिहास प्रस्तुत करते हुए लिखा है—"मैंने इसे १९१५-१९१६ में लिखा और लगभग दो साल तक लगातार इन्दौर के 'नवजीवन' में क्रमशः प्रकाशित होता रहा। उसके बाद इसमें का 'बेदुम का लेख' लखनऊ के 'कैनिंग कॉलेज मैगजीन', काशी की 'गल्प माला' और

---

१. प्राप्ति स्थान—आ० भा० पु० काशी। मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि-केसर (मौलिक तथा सामाजिक उपन्यास), ले०-श्री जगदीश झा 'विमल', प्र० शिवपूजन सिंह (बिहारी), साहित्य सौन्दर्य भवन, बनारस सिटी, सन् १९३६ ई०, प्रथमवार, पृ० सं० १३७।

२. प्राप्ति स्थान—आ० भा० पु० काशी। मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि-क्या वह वेश्या हो गयी, ले० श्री जगदीश झा 'विमल', प्र० शिवपूजन सिंह (विहारी), साहित्य सौन्दर्य भवन, बंगाली टोला, दशाश्वमेध, बनारस सिटी, प्रथम बार, पृ० सं० १८०।

३ महाशय भड़ामसिंह शर्मा, ले० श्रीयुत जी० पी० श्रीवास्तव, प्र० हिन्दी पुस्तक एजेंसी १९९५ वि०, आवश्यक निवेदन।

बीच में हिन्दू-जाति के पतन पर क्षोभ व्यक्त किया गया है तथा दहेज प्रथा, अपव्यय, हिन्दू-मुस्लिम एकता, स्त्री शिक्षा आदि समस्याओं का चित्रण किया गया है, पर इसे 'समस्या उपन्यास' कहने में कोई विशेष तुक नहीं है। उपन्यास का शिल्प विशिष्टता लिये हुए हैं।

गंगा जमुनी

डॉ० माताप्रसाद गुप्त के अनुसार सन् १९२७ ई० में विवेच्य उपन्यासकार का 'गंगा जमुनी' नामक उपन्यास हिन्दी पुस्तक एजेंसी, कलकत्ता से प्रकाशित हुआ।[1] सिनहा पुस्तकालय, पटना में इस उपन्यास का १९३२ ई० में हिन्दी पुस्तक एजेंसी से ही प्रकाशित दूसरा संस्करण उपलब्ध है। इस उपन्यास में एक सस्ते किस्म की प्रेम कहानी है जिसमें कुछ उपदेश की बातें जड़ दी गयी है।

लतखोरी लाल

सन् १९३१ ई० में विवेच्य उपन्यासकार द्वारा लिखित 'लतखोरी लाल' नामक उपन्यास फाइन आर्ट प्रिंटिंग काटेज, इलाहाबाद से प्रकाशित हुआ।[2] आर्य भाषा पुस्तकालय में इस उपन्यास की एक प्रति है पर उसके मुखपृष्ठ के न रहने से पुस्तक के सम्बन्ध में कोई सूचना नहीं प्राप्त होती।

विलायती उल्लू

सन् १९३२ ई० में विवेच्य उपन्यासकार द्वारा लिखित 'विलायती उल्लू' नामक उपन्यास हिन्दी पुस्तक एजेंसी, कलकत्ता से प्रकाशित हुआ।[3] प्रस्तुत पंक्तियों का लेखक इस उपन्यास के प्रथम संस्करण को प्राप्त करने में असमर्थ रहा है। इसका छठा संस्करण १९५१ ई० में प्रकाशित हुआ।[4] छठे संस्करण के साथ संलग्न 'निवेदन' के अन्त में 'जनवरी १९३२' तिथि मुद्रित है जिससे इसके प्रथम संस्करण के प्रकाशन-काल का अनुमान होता है।

स्वामी चौखटानन्द

सन् १९३६ ई० में विवेच्य उपन्यासकार द्वारा लिखित 'स्वामी चौखटानन्द' नामक उपन्यास फाइन आर्ट प्रिंटिंग काटेज, इलाहाबाद से प्रकाशित हुआ।[5] इस उपन्यास में समाज के ढोंगी महात्माओं का उपहास किया गया हैं।

---

१. डॉ० माताप्रसाद गुप्त, हिन्दी पुस्तक साहित्य, पृ० सं० ४१६।
२. उपरिवत्।
३. डॉ० माताप्रसाद गुप्त, हिन्दी पुस्तक साहित्य, पृ० सं० ४१६।
४. प्रा० स्था०—वि० रा० भा० प० पु०, पटना। मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि-विलायती उल्लू (हास्यपूर्ण उपन्यास) ले०-जी० पी० श्रीवास्तव, प्रकाशक-हिन्दी पुस्तक एजेंसी, ज्ञानवापी, बनारस, छठा संस्करण १९५१।
५. डॉ० माताप्रसाद गुप्त, हि० पु० सा०, पृ० सं० ४१६।

पड़ते हैं। उपन्यास के अन्त में मानिक नामक पात्र की अतुल सम्पत्ति से 'मानिक मन्दिर' की स्थापना की जाती है, जिसका उद्देश्य समाज की कुरीतियों—'बाल विवाह, वृद्ध-विवाह, निरक्षरता, वेश्यावृत्ति आदि—को दूर करना है।

बेचन शर्मा उग्र

बेचन शर्मा उग्र प्रेमचन्द युग के एक ऐसे विशिष्ट उपन्यासकार हैं, जो सामाजिक कुरीतियों के नग्न और साहसपूर्ण चित्रण के कारण अपने युग के पाठकों के प्रियपात्र और आलोचकों के कोपभाजन बन गये थे। 'विशाल भारत' के सम्पादक पं० बनारसी दास चतुर्वेदी ने तो 'उग्र' के उपन्यासों के विरुद्ध 'घासलेटी' आन्दोलन ही चला दिया था। अनेक आलोचकों ने उग्र के उपन्यासों को अश्लील और नग्न सिद्ध करते हुए उन्हें पाठकों के लिए अहितकर बताया था। पर यह आन्दोलन हिन्दी पाठकों के बीच 'उग्र' की लोकप्रियता कम न कर सका। इसके विपरीत, जैसा कि स्वाभाविक है, इन आलोचनाओं के कारण 'उग्र' हिन्दी पाठकों में और भी लोकप्रिय हो गये।

कलकत्ता रहस्य

सम्भवत: उग्र जी का प्रथम उपन्यास 'कलकत्ता रहस्य' है, जो नवम्बर १९२५ ई० के पूर्व नन्दे एंड कंपनी ६५/५ कालेज स्ट्रीट, कलकत्ता से प्रकाशित हो चुका था। २१ नवम्बर १९२५ के 'मतवाला' में विवेच्य उपन्यास का निम्नलिखित परिचय प्रकाशित हुआ था—"कलकत्ता रहस्य : 'सचित्र पाक्षिक रहस्य-माला' की—यह पहली पुस्तक है। यहाँ होने वाली एक से एक बढ़कर आश्चर्यपूर्ण, रोमांचकारी, करुण और वीभत्स आदि रसों से पूर्ण तथा चित्ताकर्षक सच्ची घटनाओं का बड़ा ही सुन्दर खाका खींचा गया है। कलकत्ता के अच्छे और बुरे, बड़े और छोटे, ऊँचे और नीचे, अमीर और गरीब सभी प्रकार के आदमियों के चित्र चित्रित किये गये हैं। गूढ़ से गूढ़ रहस्यों का इसमें बड़ी खूबी के साथ भंडाफोड़ किया गया है। आबाल वृद्ध-वनिता--सभी इसके पाठ से लाभ उठा सकते हैं—इसमें तनिक भी सन्देह नहीं। पुस्तक हाथोंहाथ बिक रही है।.........इसमें सुन्दर सुन्दर चित्र भी दिये गये हैं।··आवश्यक सूचना—रहस्यमाला में प्रत्येक अमावस्या और पूर्णिमा को एक-एक सचित्र पुस्तक प्रकाशित होती है। पुस्तकों में कोई छोटी कोई मोटी होगी परन्तु स्थायी ग्राहकों को वर्ष में पूरे ढाई हजार पृष्ठ अवश्य मिलेंगे।" इस परिचय से लेखक का पता नहीं चलता; पर सन् १९२५ ई० में प्रकाशित 'कढ़ी में कोयला' को, जो उग्र लिखित है, 'कलकत्ता रहस्य का माले मस्त मारवाड़ी खंड' कहा गया है, जिससे सिद्ध होता है कि 'कलकत्ता रहस्य' के लेखक उग्र जी ही थे। 'कढ़ी में कोयला' १९५५ ई० में उग्र प्रकाशन, दिल्ली और गऊ घाट (मिर्जापुर) से प्रकाशित हुआ।[1]

१, प्रा० स्था०, प० वि० पु०, पटना; मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि-कढ़ी में कोयला, उग्र लिखित

दिल्ली का दलाल

सन् १९२७ ई० में ही उग्र लिखित 'दिल्ली का दलाल' कलकत्ता से नवजादिक लाल श्रीवास्तव द्वारा प्रकाशित किया गया।[1] इस उपन्यास में हिन्दू कन्याओं और युवतियों का क्रय-विक्रय करने वाली संस्थाओं के हथकंडों का वर्णन है। भले घर की भोली युवतियाँ और बालिकाएँ किस प्रकार भुलावे में डालकर उड़ाई और सतायी जाती हैं, इसका विस्तृत और नग्न चित्र उपन्यास में किया गया है। नारी जाति की दुर्गति का ऐसा वीभत्स वर्णन अन्यत्र नहीं मिल सकता।

बुधुवा की बेटी

सन् १९२८ ई० में उग्रजी का 'बुधुआ की बेटी' नामक उपन्यास कलकत्ता से महादेव प्रसाद सेठ द्वारा प्रकाशित किया गया।[2] इस उपन्यास के प्रथम संस्करण की एक प्रति सिनहा पुस्तकालय, पटना में उपलब्ध है, पर मुखपृष्ठ पर प्रकाशन-काल मुद्रित नहीं है।[3] 'मतवाला' ११ अगस्त १९२८ में इस उपन्यास का निम्नलिखित विज्ञापन निकला था—"बुधुआ की बेटी : अद्‌भुत रस का, सामाजिक उथल पुथल का, अछूतों के उद्धार की ओर ध्यान दिलाने वाला, परम मौलिक उपन्यास अनेक चित्रों के साथ छप कर तैयार है, धड़ाधड़ बिक रहा है और उपन्यास प्रेमियों की अँगुलियों पर नाच रहा है।" सिनहा पुस्तकालय में उपलब्ध प्रति में भी अनेक चित्र हैं। इस उपन्यास के अन्य संस्करणों का पता प्रस्तुत पंक्तियों के लेखक को नहीं है। १९५५ ई० में इसका दूसरा संस्करण 'मनुष्यानन्द' शीर्षक से उग्र प्रकाशक, गऊघाट, मिर्जापुर से प्रकाशित हुआ।[4]

इस उपन्यास के केन्द्र में अछूतोद्धार की समस्या है। भंगियों के जीवन का ऐसा यथार्थ वर्णन इसके पहले किसी उपन्यास में नहीं हुआ था। हिन्दू समाज की अनेक कुरीतियों का चित्रण भी उपन्यास में हुआ है। उपन्यासकार की दृष्टि सुधारवादी है।

शराबी

सन् १९३० ई० में उग्रजी द्वारा लिखित 'शराबी' नामक उपन्यास बनारस से

---

१. हिन्दी पुस्तक साहित्य, पृ० ५२४।

२. डॉ० माताप्रसाद गुप्त, हिन्दी पुस्तक साहित्य, पृ० ५२४।

३. मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—बुधुआ की (बेटी अछूतोद्धार विषयक रोमांचकारी उपन्यास) लेखक पांडेय बेचन शर्मा उग्र', प्रकाशक (महादेव प्रसाद सेठ) बीसवीसदी पुस्तकालय, ३६, शंकर घोष लेन, कलकत्ता, मूल्य तीन रुपये, सर्वाधिकार सुरक्षित, प्रथम संस्करण, मुद्रक महादेव प्रसाद सेठ, बालकृष्ण प्रेस, कलकत्ता, पृ० सं० ३७९।

४. प्राप्तिस्थान—आर्यभाषा पुस्तकालय, काशी; मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—मनुष्यानन्द, ले० पांडेय बेचन शर्मा उग्र, उग्र प्रकाशन, गऊघाट, मिर्जापुर, द्वितीय संस्करण, १९५५ ई०।

बाबू साहब

विवेच्य उपन्यासकार के 'बाबू साहब' नामक उपन्यास का द्वितीय संस्करण १९३२ ई० में लेखक मंडल, दारागंज, प्रयाग से प्रकाशित हुआ।[१] इसके 'निवेदन' के अन्त में 'अगस्त, १९३२' तिथि मुद्रित है, पर 'निवेदन' से इस बात का बिलकुल ही कोई संकेत नहीं मिलता कि यह द्वितीय संस्करण है। बल्कि 'निवेदन' से इसके प्रथम संस्करण होने का भ्रम होता है।

इस उपन्यास का केन्द्रीय विषय देश सेवा और पारिवारिक कर्त्तव्य के बीच संघर्ष का चित्रण है। साथ ही पारस्परिक प्रेम के आधार पर अन्तर्जातीय विवाह का समर्थन और कन्या की इच्छा के विरुद्ध उसका विवाह कुल मर्यादा और धन सम्पत्ति के आधार पर किसी अयोग्य व्यक्ति से करने का विरोध भी किया गया है। उपन्यासकार का दृष्टि सुधारवादी है। चरित्र-चित्रण की दृष्टि से 'बाबू साहब' विशेष उल्लेखनीय हैं।

पाप की पहेली

'गिरीश' जी का 'पाप की पहेली' नामक उपन्यास जून १९३१ ई० के पूर्व लेखक मंडल, दारागंज, प्रयाग से प्रकाशित हो चुका था। प्रस्तुत पंक्तियों का लेखक इस उपन्यास को प्राप्त करने में असमर्थ रहा है। उपर्युक्त सूचनाएँ सरस्वती (जून १९३१) में प्रकाशित विवेच्य उपन्यास की समीक्षा से प्राप्त की गयी है।[२] उक्त समीक्षा के अनुसार उपन्याकार मनुष्य की जघन्य मनोवृत्तियों को अंकित करने में सफल हुआ है।

भगवती प्रसाद वाजपेयी

प्रेमपथ

भगवती प्रसाद वाजपेयी ने प्रेमचन्द युग में ही उपन्यास लिखना शुरू किया था और १९३६ ई० तक सात उपन्यासों की रचना की थी। इनका पहला उपन्यास 'प्रेम पथ' है जो १९२६ ई० में हिन्दी पुस्तक भंडार, लहेरियासराय से प्रकाशित हुआ था।[३] आर्यभाषा पुस्तकालय, काशी में इस उपन्यास की एक प्रति है, पर पुस्तक के मुखपृष्ठ के नष्ट हो जाने के कारण कोई सूचना नहीं प्राप्त होती।

अनाथ पत्नी

वाजपेयी जी का दूसरा उपन्यास 'अनाथ पत्नी' नवम्बर १९२८ ई० में चाँद कार्यालय, इलाहाबाद से प्रकाशित हुआ।[४]

---

१. प्रा० स्था०—सिनहा पुस्तकालय, मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—बाबू साहब, लेखक पं० गिरिजादत्त शुक्ल बी० ए० 'गिरीश', १९३२, द्वितीय संस्करण, प्रकाशक—लेखक मंडल, दारागंज प्रयाग, मूल्य २।), पृ० सं० ४००

२. सरस्वती, भाग ३२, संख्या ६, जून १९३१, पाप की पहेली (पुस्तक समीक्षा)।

३. आ० भा० पु० की पुस्तक सूची।

४. प्रा० स्था०—सिनहा पुस्तकालय, मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—अनाथ पत्नी, (क्रान्तिकारी

प्रेम निर्वाह

डॉ० माताप्रसाद गुप्त के अनुसार सन् १९३४ ई० में वाजपेयी जी द्वारा लिखित 'प्रेमनिर्वाह' नामक उपन्यास वर्मन साहित्य निकेतन, बाँकीपुर से प्रकाशित हुआ।[1] डॉ० गुप्त ने प्रकाशन-काल के आगे प्रश्नवाचक चिह्न (?) लगाया है, जिससे प्रतीत होता है कि वे भी इसकी प्रामाणिकता के सम्बन्ध में आश्वस्त नहीं। प्रस्तुत पंक्तियों का लेखक इस उपन्यास को प्राप्त करने में असमर्थ रहा है।

लालिमा

डॉ० माताप्रसाद गुप्त के अनुसार सन् १९३४ ई० में ही भगवती प्रसाद वाजपेयी लिखित 'लालिमा' नामक उपन्यास इलाहाबाद से प्रकाशित हुआ।[2] प्रस्तुत पंक्तियों का लेखक इस उपन्यास को प्राप्त करने में असमर्थ रहा है।

पतिता की साधना

सन् १९३६ ई० में वाजपेयी जी द्वारा रचित 'पतिता की साधना' नामक उपन्यास छात्रहितकारी पुस्तकमाला कार्यालय, दारागंज, प्रयाग से प्रकाशित हुआ।[3]

प्रफुल्लचन्द्र ओझा 'मुक्त'

संन्यासिनी

प्रेमचन्द युग के प्रमुख उपन्यासकारों में प्रफुल्लचन्द्र ओझा 'मुक्त' भी एक हैं। इनका पहला उपन्यास 'संन्यासिनी' १९२६ ई० में ओझा बन्धु आश्रम, पटना से प्रकाशित हुआ था।[4]

पाप और पुण्य

मुक्त जी का दूसरा उपन्यास 'पाप और पुण्य' प्रथम बार नवम्बर १९३० ई० में ओझा बन्धु आश्रम, इलाहाबाद से प्रकाशित हुआ।[5]

---

१. डॉ० माताप्रसाद गुप्त, हि० पु० सा०, पृ० ६२९।

२. हि० पु० सा०, पृ० २३९।

३. प्रा० स्था०—प० वि० पु०, पटना; मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—पतिता की साधना (मौलिक सामाजिक उपन्यास) लेखक—यशस्वी कहानीकार और उपन्यास लेखक—पंडित भगवती प्रसाद वाजपेयी; विक्रेता छात्र हितकारी पुस्तकमाला कार्यालय, दारागंज, प्रयाग. प्रथम संस्करण १९९३ वि०।

४. प्रा० स्था०—आ० भा० पु० काशी। मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—संन्यासिनी, लेखक प्रफुल्लचन्द्र ओझा, 'मुक्त' प्रकाशक ओझा बन्धु आश्रम, पटना, प्रथम बार ५०० सं० १९८३, पृ० सं० १२५।

५. प्रा० स्था०—आ० भा० पु० काशी। मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—पाप और पुण्य (पत्रों के रूप में एक मौलिक सामाजिक उपन्यास) बेलपत्र, कल्लोल, पतझड़, संन्यासिनी, प्रतिभा के पत्र, तपस्विनी, भूल आदि अनेक ग्रन्थों के प्रणेता श्री प्रफुल्लचन्द्र ओझा मुक्त लिखित, ओझा बन्धु

यह एक अपराध प्रधान कथा है। प्रकारान्तर से पुलिस विभाग में फैले भ्रष्टाचार का चित्रण भी है। साहित्य की दृष्टि से इसका महत्त्व नगण्य है। वस्तुतः इसे 'उपन्यास' की संज्ञा भी नहीं दी जा सकती।

लगन

वर्माजी का पहला सामाजिक उपन्यास 'लगन' है, जो सन् १९२७ ई० में (१९ या २० जून से २८ या २९ जून तक) लिखा गया,[१] और १९२८ ई० में अयोध्या प्रसाद शर्मा द्वारा स्वाधीन प्रेस, झाँसी से प्रकाशित हुआ।[२] इस उपन्यास का तीसरा संस्करण (गंगा पुस्तकमाला कार्यालय, लखनऊ से)[३] १९४३ ई० में, चौथा संस्करण १९४५ ई० में[४] और छठा संस्करण १९५३ ई० में प्रकाशित हुआ।

संगम

वर्मा जी के दूसरे उपन्यास 'संगम' की रचना भी १९२७ ई० में ही हुई थी।[५] प्रस्तुत पंक्तियों का लेखक इस उपन्यास के प्रथम संस्करण को प्राप्त करने में असमर्थ रहा है। डॉ० माताप्रसाद गुप्त ने इसका प्रकाशन-काल १९३९ ई० दिया है, जो गलत है।[६] १९२९ ई० में 'संगम' का द्वितीय संस्करण गंगा पुस्तकमाला कार्यालय, लखनऊ से प्रकाशित हुआ था।[७]

प्रत्यागत

वर्मा जी का 'प्रत्यागत' नामक उपन्यास सन् १९२७ ई० में प्रकाशित हुआ।[८] प्रस्तुत पंक्तियों के लेखक को इस उपन्यास के सम्बन्ध में अब तक कोई प्रामाणिक सूचना नहीं प्राप्त हो सकी है।

---

१. शशिभूषण सिंहल, उपन्यासकार वृन्दावनलाल वर्मा, पृ० २९८।
२. प्रा० स्था०—आ० भा० पु० काशी। मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—लगन, लेखक—वृन्दावन लाल वर्मा, एडवोकेट, प्रकाशक—अयोध्या प्रसाद शर्मा, प्रथमावृत्ति १९८५, स्वाधीन प्रेस, झाँसी, पृ० सं० ११५।
३. प्रा० स्था०—चै० पु०, पटना सिटी।
४. प्रा० स्था०—बि० रा० भा० प० पु०, पटना।
५. डॉ० शशिभूषण सिंहल, उपन्यासकार वृन्दावन लाल वर्मा, परिशिष्ट-२।
६. डॉ० माताप्रसाद गुप्त, हि० पु० सा०, पृ० ६१९।
७. प्रा० स्था०—प० वि० पु०, पटना। मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—संगम (सामाजिक उपन्यास), लेखक—वृन्दावन लाल वर्मा बी० ए०, एल्० एल्० बी० (विराटा की पद्मिनी, लगन, कुंडली चक्र, प्रत्यागत, गढ़कुंडार, प्रेम की भेंट, हृदय की हिलोर, कोतवाल की करामात आदि के रचयिता) मिलने का पता—गंगा ग्रन्थागार ३०, अमीनाबाद पार्क, लखनऊ, द्वितीयावृत्ति सं० १९८६ वि०, प्र०—गंगा पुस्तकमाला कार्यालय, लखनऊ।
८. आ० भा० पु० की पुस्तकसूची।

पैसे का साथी

सर्वप्रथम सन् १९२८ ई० में ऋषभचरण जैन का 'पैसे का साथी' नामक उपन्यास हिन्दी पुस्तक कार्यालय, दिल्ली से प्रकाशित हुआ।[1] उपन्यास की भूमिका से ज्ञात होता है कि इसकी रचना के समय उपन्यासकार की अवस्था केवल सत्रह-अठारह वर्ष की थी। इस उपन्यास में मुख्य रूप से यह दिखाया गया है कि बुरे साथियों की संगति में पड़कर पढ़े लिखे बुद्धिमान् युवक भी कितना शीघ्र पतन के गढ़े में गिर जाते हैं।

वेश्यापुत्र

सन् १९२९ ई० में ऋषभचरण का 'वेश्यापुत्र' नामक उपन्यास हिन्दी पुस्तक कार्यालय, दिल्ली से प्रकाशित हुआ।[2] इस उपन्यास का मुख्य उद्देश्य हिन्दू समाज में फैली बुराइयों तथा युवक युवतियों के विवाहपूर्व प्रेम का चित्रण करना है।

मास्टर साहब

सन् १९२९ ई० में ही विवेच्य उपन्यासकार द्वारा लिखित 'मास्टर साहब' नामक उपन्यास हिन्दी पुस्तक कार्यालय, दिल्ली से प्रकाशित हुआ।[3]

इस उपन्यास को चरित्र प्रधान कहा जा सकता है। मुख्य पात्रों—मुरारी, हेतराम, वसन्ती, सुमित्रा आदि—के मनोभावों, अन्तर्द्वन्द्वों और व्यवहारों का चित्रण ही उपन्यासकार का प्रमुख उद्देश्य है। प्रकारान्तर से विधवा-विवाह का चित्रण भी लेखक का लक्ष्य जान पड़ता है।

शिल्प की दृष्टि से इसमें एक नवीनता यह है कि कथा कई अवलोकन-बिन्दुओं से प्रस्तुत की गयी है। कुछ दूर तक कथा का विकास पत्र शैली में भी होता है। नाटकीय शिल्प का प्रयोग भी उपन्यासकार ने किया है। यों कुल मिलाकर उपन्यास को उच्च कोटि का नहीं कहा जा सकता, पर नयी दिशा में बढ़ने की आकांक्षा इसमें अवश्य दीख पड़ती है

---

१. प्राप्ति स्थान—आ० भा० पु० काशी। मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—(सचित्र) पैसे का साथी (उपन्यास), लेखक—श्रीयुक्त ऋषभचरण, प्रकाशक—हिन्दी पुस्तक कार्यालय, कूचा पाती राम, दिल्ली, प्रथम संस्करण सन् १९२८ ई०।

२. प्राप्तिस्थान—आ० भा० पु० काशी। मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—वेश्यापुत्र, लेखक—श्रीयुत ऋषभचरण, प्र० हिन्दी पुस्तक कार्यालय, कूचा पातीराम, देहली, पहलीबार १९२९ ई०।

३. प्रा० स्था०—प० वि० पु०। मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—मास्टर साहब (मौलिक उपन्यास) लेखक श्रीयुत ऋषभचरण, प्रकाशक—हिन्दी पुस्तक कार्यालय—कूचा पाती राम, देहली, पहली बार १९२९ ई०, पृ० सं० २४८।

कार्यालय, कूचा पातीराम, देहली से प्रकाशित हुआ।[१] इस उपन्यास के साथ 'चला हंस की चाल', 'दिलारा', 'मोम का पत्थर', 'कड़वा प्यार' आदि कहानियाँ भी संगृहीत हैं। वैसे प्रकाशक ने 'बुरकेवाली' को भी 'कहानी' की ही संज्ञा दी है, पर इसे उपन्यास कहना ही ठीक है। इसकी पृष्ठ संख्या भी ९४ है।

सच्चा प्रेम बाधाओं और विपदाओं के बीच भी अन्त में विजयी होता है, यही उपन्यास का केन्द्रीय प्रतिपाद्य है।

गदर

डॉ० माताप्रसाद गुप्त के अनुसार सन् १९३० में ही विवेच्य लेखक का 'गदर' नामक उपन्यास जंगीदा ब्राह्मण प्रेस, दिल्ली से प्रकाशित हुआ।[२]

भाई

सन् १९३० ई० में ही विवेच्य उपन्यासकार द्वारा लिखित 'भाई' नामक उपन्यास गंगा पुस्तकमाला कार्यालय, लखनऊ से प्रकाशित हुआ। आर्य भाषा पुस्तकालय, काशी में इस उपन्यास की एक प्रति उपलब्ध है, पर उसके मुखपृष्ठ के न रहने के कारण पुस्तक के सम्बन्ध में कोई सूचना नहीं प्राप्त होती। उपर्युक्त सूचना आर्य भाषा पुस्तकालय की पुस्तक-सूची से प्राप्त की गयी है। 'हिन्दी पुस्तक साहित्य' में इस उपन्यास का प्रकाशन-काल १९३१ ई० दिया हुआ है।[३]

रहस्यमयी

मार्च १९३१ ई० में विवेच्य उपन्यासकार द्वारा लिखित 'रहस्यमयी' नामक उपन्यास चाँद कार्यालय, चन्द्रलोक, इलाहाबाद से प्रकाशित हुआ।[४]

भाग्य

सन् १९३१ ई० में ऋषभचरण जैन द्वारा लिखित 'भाग्य' नामक उपन्यास गंगा पुस्तकमाला कार्यालय, लखनऊ से प्रकाशित हुआ।[५] इसका दूसरा संस्करण

---

१. प्रा० स्था० सिनहा पुस्तकालय, पटना; मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि–बुरकेवाली, (मौलिक, तथ्यपूर्ण), ले० श्रीयुत् ऋषभचरण, प्रकाशक, हिन्दी पुस्तक कार्यालय, कूचा पाती राम, देहली, पहली बार, सन् १९३० ई०, पृ० सं० १५७, मूल्य सवा रुपया।

२. हि० पु० सा०, पृ० सं० ३८८।

३. उपरिवत्।

४. प्राप्तिस्थान—राष्ट्रभाषा परिषद् पुस्तकालय, पटना। मुखपृष्ठ को प्रतिलिपि—रहस्यमयी (रहस्यपूर्ण, मौलिक सामाजिक उपन्यास) ले०—श्री ऋषभचरण जी जैन, प्र०—चाँद कार्यालय, चन्द्रलोक, इलाहाबाद, मार्च १९३१, प्रथम संस्करण २०००।

५. प्रा० स्था०—सिनहा पुस्तकालय पटना; मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—भाग्य (सामाजिक उपन्यास) लेखक ऋषभचरण जैन (रचयिता भाई, कैदी, मास्टर साहब, वेश्यापुत्र, बुरकेवाली, दिल्ली का

एम० एल० सोज़तिया 'प्रभात किरण'

परदे का चाँद

सन् १९२८ ई० में एम० एल० सोजतिया 'प्रभात किरण' द्वारा लिखित 'परदे का चाँद' नामक उपन्यास एम० एल० सोजतिया एँड कम्पनी, इन्दौर सिटी से प्रकाशित हुआ।[१] इस उपन्यास में भारतीय स्त्री समाज से परदा प्रथा को दूर कर शिक्षा-प्रसार का समर्थन किया गया है, पर अँगरेजी शिक्षा को, जिसमें स्त्रियों को पूर्ण स्वतन्त्रता दी जाती है, भारतीय स्त्रियों के लिए अनुचित वताया गया है।

प्रियतम की रंगभूमि उर्फ कॉलेज गर्ल

सन् १९२८ ई० में ही 'प्रभात किरण' द्वारा लिखित 'प्रियतम की रंगभूमि उर्फ कॉलेज गर्ल', नामक उपन्यास एम० एल० सोजतिया एँड को०, इन्दौर से प्रकाशित हुआ।[२]

अवलाओं के आँसू

सन् १९२९ ई० में 'प्रभात किरण' का 'अवलाओं के आँसू' नामक उपन्यास सोजतिया एँड कम्पनी, इन्दौर से प्रकाशित हुआ।[३] इस उपन्यास में व्यभिचार और अपराधप्रधान घटनाओं की प्रधानता है। इस उपन्यास का दूसरा संस्करण १९३२ ई० में उपर्युक्त प्रकाशन संस्था से ही प्रकाशित हुआ।[४]

औरतों के गुलाम

सन् १९२९ ई० में ही 'प्रभात किरण' द्वारा लिखित 'औरतों के गुलाम' नामक

---

१. प्राप्तिस्थान—आ० भा० पु० काशी। मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—द्वितीय अंक दो आना माला, मिड नाइट मुन, परदे का चाँद, 'स्त्री समाज में स्वतंत्रता की हलचल मचाने वाला मौलिक उपन्यास, लेखक—श्रीयुत 'प्रभात किरण', प्रकाशक—एम० एल० सोजतिया एंड कंपनी, इंदौर सिटी, १ अक्टोवर सन् १९२८, प्रथम बार ४०००, पृ० सं० ४५।

२. प्रा० स्था०—आ० भा० पु० काशी। मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—एक आना माला, प्रियतम की रंगभूमि उर्फ कॉलेज गर्ल, "सामाजिक युग में युगान्तर पैदा करने वाला क्रान्तिकारी उपन्यास" लेखक—श्रीयुत 'प्रभात किरण', १ सितंवर १९२८ प्रकाशक — एम० एम० सोजतिया एंड को०, इन्दौर सिटी, प्रथम वार ४०००, पृ० सं० ५०।

३. प्राप्तिस्थान—आ० भा० पु० काशी। मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—दो आना माला, पाँचवा, छठवाँ, डवल अंक, व्लेजिंग टीयर्स, अवलाओं के आँसू, "पराधीन, भोली अवलाओं के रक्तपान से उन्मत्त होकर तांडव करने वाले, राक्षस समाज को काली करतूतें, लेखक, प्रियतम की रंगभूमि, परदे का चाँद, लखनऊ को शाहजादी और वलिदान की चिनगारियाँ सरीखी क्रान्तिकारी मौलिक पुस्तकों के प्रणेता, एम० एम० सोजतिया 'प्रभात किण, जनवरी और फ़रवरी १९२९, प्रकाशक एम० एम० सोजतिया एंड कंपनी "दो आना माला' ऑफिस, इन्दौर सिटी।

४. प्राप्तिस्थान - माहेश्वर सार्वजनिक पुस्तकालय, पटना।

नामक उपन्यास एस०एम० सोजतिया एंड कम्पनी इंदौर से प्रकाशित हुआ।[१] इस उपन्यास में सिनेमा की बुराइयाँ दिखाते हुए व्यभिचार पूर्ण घटनाओं का वर्णन किया गया है।

इन्दौर का रहस्य

सन् १९३१ ई० में 'प्रभात किरण' द्वारा लिखित 'इन्दौर रहस्य' नामक उपन्यास के प्रथम तीन भाग एम० एम० सोजतिया एंड कम्पनी, इंदौर से प्रकाशित हुए।[२] इस उपन्यास के चौथे, पाँचवें, छठे और सातवें भाग उपर्युक्त प्रकाशन संस्था से ही १९३२ ई० में प्रकाशित हुए।[३] यह उपन्यास लंदन रहस्य, रंग महल रहस्य और वारांगना रहस्य आदि की नकल पर लिखा गया है। इसमें खून-खराबी, मारपीट, व्यभिचार आदि से सम्बद्ध अपराध-प्रधान घटनाओं की प्रधानता है।

बलिदान की चिनगारियाँ

सन् १९३२ ई० में विवेच्य उपन्यासकार द्वारा लिखित 'बलिदान की चिनगारियाँ' नामक उपन्यास का द्वितीय संस्करण एम० एम० सोजतिया एंड कम्पनी, इंदौर से प्रकाशित हुआ।[४] इसका पहला संस्करण सम्भवतः १९२८ ई० में प्रकाशित हो चुका था, क्योंकि जनवरी-फरवरी १९२९ ई० में प्रकाशित 'अबलाओं के आँसू' के मुखपृष्ठ पर इसके लेखक को 'बलिदान की चिनगारियाँ' का भी लेखक बताया गया है।[५]

---

१. प्राप्तिस्थान—आ० भा० पु० काशी। मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—दो आना माला तेरहवाँ अंक, विशेषांक- सिनेमा का शैतान, यह क्रांतिकारी उपन्यास, सिनेमा की अश्लील फिल्मों से भ्रष्ट होते हुए हिंदू समाज के लिए 'अलार्म बेल' याने खतरे का घंटा है। लेखक श्रीयुत एम० एल० सोजतिया 'प्रभातकिरण', १ जून सन् १९३० ई०, प्र०—एम० एम० सोजतिया एंड कंपनी, दो आना माला आफिस, इंदौर, पृ०सं० ५६।

२. प्राप्ति स्थान—आ० भा० पु० काशी। मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—दो आना माला, १८ वाँ अंक, प्रथम खंड, मिस्ट्रिज आफ इन्दौर, इन्दौर रहस्य, हिन्दू समाज में, नवीन क्रान्ति का नव बिगुल, बजाने वाला, यह अनोखा उपन्यास—गुप्त रहस्यों का रंग महल है—यौवन के उन्माद का प्रकम्पन है—प्रत्येक नई घटना क्लोरोफार्म की शीशी है। लेखक—नूतन क्रान्ति के उपासक—एम० एल० सोजतिया—"प्रभात किरण", १ फरवरी सन् १९३१, प्रकाशक—एम० एम० सोजतिया एंड कम्पनी, दो आना माला ऑफिस, इन्दौर, पहली वार। (दूसरे और तीसरे भागों के पृष्ठों की प्रतिलिपियाँ उपरिवत्।

३. चौथे से लेकर सातवें भागों की सूचनाएँ भी उपरिवत् हैं, केवल रचना काल १९३२ दिया हुआ है।

४. प्राप्तिस्थान—मा० पु०, पटना। मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—दो आना माला—मासिक चौथा अंक, सैक्रिफाइस फॉर मदरलैंड, बलिदान की चिनगारियाँ, एक रसियन कहानी—जिसे पढ़कर आपका हृदय मातृभूमि के स्वाभिमान से फूल उठेगा। लेखक एम० एल० सोजतिया 'प्रभात किरण', सन् १९३२, एम० एम० सोजतिया एंड कम्पनी दो आना माला ऑफिस, बड़ा सराफा, इन्दौर सिटी, दूसरी वार २०००, पृ० सं० २९।

५. द्रष्टव्य, पृष्ठ ५२।

साकी

सन् १९३२ ई० में मंडलजी द्वारा लिखित 'साकी' नामक उपन्यास युगान्तर साहित्य मन्दिर, अयोध्या गंज बाजार, पूर्णिया से प्रकाशित हुआ।[१]

रूपरेखा

सन् १९३४ ई० में विवेच्य उपन्यासकार द्वारा लिखित 'रूपरेखा' नामक उपन्यास, युगान्तर साहित्य मन्दिर, भागलपुर से प्रकाशित हुआ।[२] यह उपन्यास भी पत्र-शैली में लिखा गया है। उपन्यास के 'दो शब्द' से ज्ञात होता है कि " 'रूपरेखा' के अधिक अंश 'गंगा' में क्रमशः छपे थे। पाठकों ने इसे पसन्द किया—मुझे भी यह उपन्यास पसन्द आया। उपन्यास पत्र-रूप में है। इसमें अनन्य देशानुराग की उमंग है।"[३]

ज्योतिर्मयी

सन् १९३४ ई० में ही विवेच्य उपन्यासकार द्वारा लिखित 'ज्योतिर्मयी' नामक उपन्यास, वाणी मन्दिर छपरा से प्रकाशित हुआ।[४] प्रस्तुत पंक्तियों का लेखक इस उपन्यास को प्राप्त करने में असमर्थ रहा है।

जैनेन्द्र कुमार

जैनेन्द्र कुमार की गणना, यद्यपि, सामान्यतः प्रेमचन्दोत्तर युग के उपन्यासकारों में होती है, पर उपन्यास लेखन का आरम्भ उन्होंने प्रेमचन्द-युग में ही किया था और उन्हें प्रेमचन्द का स्नेह और संरक्षण भी सर्वाधिक प्राप्त हुआ था। जैनेन्द्र और प्रेमचन्द के पत्रों को[५] देखने से यह स्पष्ट हो जाता है कि जैनेन्द्र को, जो प्रेमचन्द द्वारा निर्मित औपन्यासिक मार्ग से एक सर्वथा भिन्न पथ की ओर उन्मुख थे, अपने युग के सबसे बड़े उपन्यासकार का प्रोत्साहन पूरी मात्रा में प्राप्त था।

परख

जैनेन्द्र कुमार का प्रथम उपन्यास 'परख' १९३० ई० के प्रारम्भ में प्रकाशित हुआ था। पटना कॉलेज पुस्तकालय में 'परख' का प्रथम संस्करण उपलब्ध है, पर उसके मुखपृष्ठ के नष्ट हो जाने के कारण पुस्तक के प्रकाशन-काल आदि के विषय में

१. प्राप्तिस्थान—आ० भा० पु०, काशी; मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—साकी, ले० श्री अनूप लाल मंडल, साहित्य रत्न, प्र० युगांतर साहित्य मन्दिर, अयोध्या गंज, बाजार पूर्णियाँ, सं० १९८९, प्र० संस्करण १५०० प्रतियाँ, पृ० सं० १३८।

२. प्राप्तिस्थान—आ० भा० पु० काशी, मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—रूपरेखा (पत्र उपन्यास) श्री अनूपलाल मंडल, सासित्य रत्न, प्र० युगांतर साहित्य मंदिर, भागलपुर, प्रथम बार सं० १९९१।

३. रूपरेखा, दो शब्द (ले० रामगोविंद त्रिवेदी, गंगा संपादक)

४. आ० भा० पु० की पुस्तकसूची।

५. अमृत राय, प्रेमचंद : चिटठीपत्री २।

देश प्रेम और व्यक्तिगत मित्रता तथा प्रणय के बीच संघर्ष का बहुत ही सुन्दर चित्रण उपन्यास में हुआ है ।

'परख' के तीसरे से लेकर छठे संस्करण के साथ यह उपन्यास भी 'परख-स्पर्धा' शीर्षक से प्रकाशित हुआ था। किंतु बाद में 'परख' के संस्करण अलग ही प्रकाशित होने लगे ।

तपोभूमि

सन् १९३२ में जैनेन्द्र कुमार और ऋषभचरण जैन द्वारा सम्मिलित रूप से लिखित 'तपोभूमि' नामक उपन्यास साहित्य मंडल, बाजार सीताराम, दिल्ली से प्रकाशित हुआ।[1] डॉ० माताप्रसाद गुप्त ने एक स्थान पर इसका प्रकाशन-काल १९३२ ई०[2] और दूसरे स्थान पर १९३६ ई०[3] दिया है, जो भ्रमोत्पादक है। प्रस्तुत पंक्तियों का लेखक इस पुस्तक को प्राप्त करने में असमर्थ रहा है ।

सुनीता

सन् १९३५ ई० में जैनेन्द्र कुमार का 'सुनीता' नामक उपन्यास साहित्य मंडल, बाजार सीताराम, दिल्ली से प्रकाशित हुआ। 'सुनीता' का प्रथम संस्करण पटना कॉलेज पुस्तकालय, पटना में उपलब्ध है, पर इसके मुखपृष्ठ पर प्रकाशन-काल नहीं दिया हुआ है।[4] पुस्तक के साथ संलग्न लेखक की 'प्रस्तावना' के अन्त में "१६।६।३५" तिथि मुद्रित है। डॉ० माताप्रसाद गुप्त ने इसका प्रकाशन-काल १९३६ ई० और मुद्रक का नाम 'रूप वाणी प्रिंटिंग हाउस' दिया है ।

'सुनीता' का चौथा संस्करण सितम्बर १९४९ ई० में प्रकाशित हुआ। जैनेन्द्र के प्रेमचन्द युगीन उपन्यासों के विभिन्न संस्करणों के कालान्तराल को देखते हुए यह कहना अयुक्तिसंगत नहीं कि जैनेन्द्र को प्रेमचन्द युग में साहित्य के आलोचकों की प्रशंसा चाहे जितनी मिली हो, पाठकों का प्रेम नहीं मिला। 'परख' और 'स्पर्धा' १९३० ई० में ही प्रकाशित हुए पर उनका दूसरा संस्करण ११ वर्ष बाद १९४१ ई० में निकला। 'तपोभूमि' का दूसरा संस्करण कुछ दिन हुए निकला है। 'सुनीता' के तीन संस्करण (अधिक से अधिक चार हजार प्रतियाँ) १४ वर्षों में बिक पायीं, जबकि इन उपन्यासों के पक्ष में एक बात यह भी है कि ये प्रेमचन्द के उपन्यासों की तरह दीर्घकाय नहीं है ।

---

१. आ० भा० पु० काशी की पुस्तक-सूची ।
२. उपरिवत्, पृ० २३८।
३. उपरिवत्, पृ ४५७ ।
४. मुखपृषठ की प्रतिलिपि – सुनीता (मौलिक उपन्यास), लेखक–जैनेन्द्र कुमार, प्रकाशक—साहित्य मंडल, बाजार सीताराम, दिल्ली, मूल्य तीन रुपया।

१९२० ई० नहीं हो सकता। 'हंस' के नवम्बर १९३० के अंक में प्रेमचन्द ने 'कंकाल' की समीक्षा की थी, जिसमें उन्होंने लिखा था : "इस उपन्यास को निकले चार-पाँच महीने हो गये।"[१] इससे सिद्ध होता है कि 'कंकाल' का प्रकाशन-काल १९३० ई० ही है, १९२० ई० नहीं। श्री ब्रजरत्न दास के अनुसार भी 'कंकाल' का प्रकाशन काल सं० १९८६ वि० है।[२] डॉ० प्रताप नारायण टंडन ने 'कंकाल' का प्रकाशन-काल १९२९ ई० दिया है।[३] डॉ० माताप्रसाद गुप्त ने भी यही तिथि दी है।[४] लगता है, मुद्रण की भूल के कारण १९८६ वि० १९७६ वि० हो गया है।

कंकाल का द्वितीय संस्करण १९३८ ई० (सं० १९९५ वि०) में,[५] तृतीय संस्करण १९४० ई० (सं० १९९७ वि०) में[६] और चतुर्थ संस्करण १९४४ ई० (सं २००१ वि०) में[७] प्रकाशित हुआ। संस्करणों के अन्तराल को देखते हुए इस उपन्यास को लोकप्रिय माना जा सकता है।

'कंकाल' में समाज को अनावृत करके उसकी नग्न वास्तविकता को देखने-दिखाने का प्रयास लक्षित होता है। प्रयाग, काशी, हरद्वार, मथुरा और वृन्दावन जैसे तीर्थ-स्थलों में धर्म के नाम पर होनेवाले मिथ्याडम्बरों और दुराचारों का यथार्थवादी अंकन किया गया है। स्त्री के प्रति पुरुष के मिथ्या परम्परावादी दृष्टिकोण पर प्रसाद ने मार्मिक व्यंग्य किया है। 'कंकाल' में तारा और घंटी समाज के उत्पीड़न की शिकार हैं; वस्तुतः कंकाल की सभी स्त्रियाँ पुरुषों द्वारा किसी न किसी रूप में छली जाती हैं और इन्हें छलने वाले व्यक्ति समाज के तथाकथित भद्र पुरुष हैं। इस प्रकार प्रसादजी ने इस उपन्यास में समाज के दलित, शोषित और पीड़ित अंग का चित्रण किया है।

तितली

जयशंकर प्रसाद का दूसरा उपन्यास 'तितली' १९३४ ई० में प्रकाशित हुआ। प्रस्तुत पंक्तियों का लेखक इसके प्रथम संस्करण को प्राप्त करने में असमर्थ रहा है, पर द्वितीय संस्करण के प्रकाशकीय वक्तव्य के अन्त में "चैत्र'९१" मुद्रित है, जिसका अर्थ १९३४ ई० भी हो सकता है और १९३५ ई० भी। डॉ० माताप्रसाद गुप्त के अनुसार 'तितली' रामकृष्ण दास द्वारा बनारस से १९३४ ई० में प्रकाशित हुई।[८] डॉ० प्रताप

१, अमृत राय, प्रेमचंद, विविध प्रसंग ३, पृ० ३३५।
२. ब्रजरत्न दास, हिन्दी उपन्यास साहित्य, पृ० २२९।
३. डॉ० प्रताप नारायण टंडन, हिन्दी उपन्यास में कथाशिल्प का विकास, पृ० २९३।
४. डॉ० माताप्रसाद गुप्त, हि० पु० सा०, पृ० ४५३।
५. प्रा० स्था०—प० का० पु० पटना।
६. प्रा० स्था०—मेरा निजी पुस्तकालय।
७. प्रा० स्था०—प० का० पु०, पटना।
८, डॉ० माताप्रसाद गुप्त, हि० पु० सा०, पृ० ४५३।

अप्सरा

निराला का प्रथम उपन्यास 'अप्सरा' है, जो १९३१ ई० में गंगा पुस्तकमाला कार्यालय, लखनऊ से प्रकाशित हुआ।[१] 'अप्सरा' का तीसरा संस्करण १९४४ ई० में,[२] चौथा संस्करण १९४६ ई० में,[३] तथा पाँचवाँ संस्करण १९४९ ई० में प्रकाशित हुआ।[४]

'अप्सरा' में निराला ने एक अभिजात वर्गीय कुलीन युवक तथा एक वेश्यापुत्री के परस्पर प्रेम और विवाह का चित्रण किया है। वेश्यापुत्री के हृदय में भी अपना घर-परिवार बसाने की कामना होती है और अवसर मिलने पर वह किसी कुलवधू की तरह जीवन व्यतीत कर सकती है, इसी बात का चित्रण उपन्यास में किया गया है। 'स्थान-स्थान पर पुलिस कर्मचारियों की धाँधली, पुराने नरेशों की विलासप्रियता, ग्रामीण समाज की सबलता-दुर्बलता' आदि का भी चित्रण हुआ है।

अलका

'निराला' का दूसरा उपन्यास 'अलका' १९३३ ई० में गंगा पुस्तकमाला कार्यालय, लखनऊ से प्रकाशित हुआ।[५] इसका दूसरा संस्करण १९३६ ई० में,[६] चौथा संस्करण १९४४ ई० में,[७] तथा पाँचवाँ संस्करण १९४६ ई० में प्रकाशित हुआ।[८]

'अलका' में रायबरेली के एक गाँव के किसानों पर जमीन्दार और पुलिस के अत्याचारों का अत्यन्त यथार्थ और मार्मिक वर्णन किया गया है। किसानों और मजदूरों में उद्बुद्ध होती हुई राजनीतिक चेतना की झलक भी निराला ने इस उपन्यास में प्रस्तुत की है। जमीन्दारों के षड्यन्त्र तथा किसानों की अशिक्षा, मूर्खता, कायरता और दब्बूपन के कारण किस प्रकार किसान मजदूर आन्दोलन सफल नहीं हो पाता, इसका भी

---

१. प्रा० स्था०—सिनहा पुस्तकालय, पटना। मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—अप्सरा (सामाजिक उपन्यास), लेखक—श्री सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला' (परिमल प्रणेता), प्रकाशक—गंगा पुस्तकमाला कार्यालय, प्रकाशक और पुस्तक विक्रेता, लखनऊ, प्रथमावृत्ति, सजिल्द, १॥), सं० १९८८ वि०, पृ० सं० १८७।

२. दूसरे संस्करण का प्रकाशन-काल तीसरे और पाँचवें संस्करण के मुखपृष्ठ पर दिया हुआ है। प्रकाशक-श्री दुलारे लाल भार्गव, अध्यक्ष, गंगा पुस्तकमाला कार्यालय, लखनऊ।

३. प्रा० स्था०—सिनहा पुस्तकालय, पटना।

४. प्रा० स्था०—बि० रा० भा० प० पु०, पटना।

५. प्रा० स्था०—प० वि० पु०, पटना। मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—अलका (सामाजिक उपन्यास) लेखक श्री सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला' (परिमल, अप्सरा आदि के प्रणेता) मिलने का पता गंगा-ग्रन्थागार-३६, लाटूश रोड, लखनऊ, प्रथमावृत्ति सं० १९९० वि०, पृ० संख्या २२०।

६. प्रा० स्था०–प० का० पु०, पटना।

७. अलका के पाँचवें संस्करण से प्राप्त सूचना।

८. प्रा० स्था०—वि० रा० भा० प० पु०, पटना।

संस्करण १९५६ ई० में[१] प्रकाशित हुआ। चौदहवें संस्करण के फ्लैप पर छपी सूचना के अनुसार १९५६ ई० तक इस उपन्यास की एक लाख प्रतियाँ पाठकों तक पहुँच चुकी थीं।

'चित्रलेखा' समस्याप्रधान उपन्यास है। इसकी मूलभूत समस्या यह है कि 'पाप क्या है और उसकी स्थिति कहाँ है ?' इस समस्या के समाधान की खोज में महाप्रभु रत्नाम्बर के दो शिष्य श्वेतांक और विशालदेव आश्रम से निकल कर संसार में प्रविष्ट होते हैं। श्वेतांक-मगध के धनी सामन्त बीजगुप्त और विशालदेव योगी कुमारगिरि के साथ रहने लगता है। बीजगुप्त भोगी है और कुमारगिरि योगी, पर बीजगुप्त भोग-विलास का जीवन व्यतीत करके भी उससे ऊपर रहता है और एक महान् त्यागी और संयमी के रूप में उभरता है जब कि कुमारगिरि इन्द्रिय दमन और संयम के मार्ग पर चलकर भी अन्त में स्खलित होता है। एक दृष्टि से बीजगुप्त महान् है, दूसरी दृष्टि से कुमारगिरि। महाप्रभु रत्नाम्बर इस समस्या का समाधान करते हैं कि : 'संसार में पाप कुछ भी नहीं है, वह केवल मनुष्य के दृष्टिकोण की विषमता का दूसरा नाम है।'

इस उपन्यास में समस्या ही समस्या है, जीवन की धड़कन बहुत कम है। कुछ लोगों ने ऐतिहासिक पृष्ठभूमि के कारण इसे ऐतिहासिक उपन्यास माना है, पर चित्रलेखा को नैतिक समस्या प्रधान उपन्यास कहना ही उचित है। ऐतिहासिक वातावरण मूल विषय के प्रतिपादन में कोई उल्लेखनीय योग नहीं देता, वह उपन्यास का अंग नहीं जान पड़ता।

तीन वर्ष

प्रेमचन्द युग में लिखित वर्मा जी का दूसरा उपन्यास 'तीन वर्ष' है, जो १९३६ ई० में भारती भंडार, लीडर प्रेस, प्रयाग से प्रकाशित हुआ। इसका तीसरा संस्करण १९४४ ई० में भारती भंडार से प्रकाशित हुआ।[2]

'तीन वर्ष' का मूल प्रतिपाद्य यह समस्या है कि 'क्या प्रेम की परिणति विवाह में आवश्यक है ?' 'उपन्यास का नायक रमेश और नायिका प्रभा एक दूसरे से प्रेम करते हैं, पर दोनों के प्रेम सम्बन्धी दृष्टिकोण में बहुत अन्तर है। रमेश विवाह को प्रेम की परिणति मानता है, जबकि प्रभा प्रेम को यौवन की उन्मुक्त लालसा और भोगविलास के पर्याय के रूप में देखती है। उपन्यास के अन्य पात्र अजित और सरोज भी इस समस्या के पक्ष या विपक्ष में हैं। अन्त में लेखक प्रेम के आत्मिक पहलू को स्वीकार करने पर बल देता है।

---

१. मेरा निजी पुस्तकालय।
२. आ० भा० पु० की पुस्तकी सूची।

आदर्श महिला

सन् १९१९ ई० में जनार्दन झा द्वारा लिखित 'आदर्श महिला' नामक उपन्यास का द्वितीय संस्करण इंडियन प्रेस लि०, प्रयाग से प्रकाशित हुआ ।[1]

श्यामा

२९ दिसम्बर १९१९ ई० के पूर्व श्री शिवदास गुप्त रचित 'श्यामा' नामक उपन्यास साहित्य सुमन कार्यालय, बरहज, गोरखपुर से प्रकाशित हुआ ।[2] 'प्रताप' (२९ दिसम्बर १९१९ ई०) में प्रकाशित समीक्षा के अनुसार 'इस पुस्तक के लेखक हिन्दी के अच्छे कवि और लेखक हैं । उपन्यास में उन्होंने एक अत्यन्त रोचक तथा शिक्षाप्रद सामाजिक जीवन का चित्र खींचा है । बीच में, सुन्दर कविताओं का रसास्वादन होता जाता है ।[3] डॉ० माता प्रसाद गुप्त ने इसका प्रकाशन-काल १९२० ई० दिया है, जो भ्रामक है ।[4]

विचित्र परिवर्तन

सन् १९१९ ई० में श्री 'सेवक' द्वारा लिखित 'विचित्र परिवर्तन' नामक उपन्यास नागरी साहित्य भूषण भंडार, कारूगंज से प्रकाशित हुआ ।[5] इस उपन्यास में तत्कालीन सामाजिक तथा राजनैतिक परिस्थितियों का चित्रण किया गया है ।

नकली और असली धर्मात्मा

सन् १९१९ ई०में ही बाबू सूरजभानु लिखित 'नकली और असली धर्मात्मा' नामक उपन्यास इटावा से प्रकाशित हुआ ।[6] इस उपन्यास में एक जैन मतावलम्बी परिवार का चित्र प्रस्तुत कर नकली और असली धर्मात्मा का अन्तर दिखाया गया है ।

मेम और साहब

इसी वर्ष श्रीमती रुक्मिणी देवी रचित 'मेम और साहब' नामक उपन्यास लहरी प्रेस, काशी से प्रकाशित हुआ ।[7]

---

१. आ० भा० पु०, काशी की पुस्तक सूची ।

२. प्रताप, २९ दिसम्बर १९१९, पुस्तक परिचय ।

३. उपरिवत् ।

४. डॉ० माताप्रसाद गुप्त, हि० पु० सा०, पृ० ६३७ ।

५. प्रा० स्था०—बि० रा० भा० प० पु०, पटना; मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—विचित्र परिवर्तन (एक राष्ट्रीय उपन्यास, लेखक सेवक, प्रथम संस्करण १९१९, प्रकाशक नागरी साहित्य भूषण भंडार, कारूगंज ।

६. प्रा० स्था०—आ० भा० पु० काशी; मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि–नकली और असली धर्मात्मा, लेखक बाबू सूरजभानु, वकील, देववन्द, प्रकाशक चन्द्रसेन जैन वैद्य, इटावा, सन् १९१९ ई०, पृ० सं १९९ ।

७. प्रा० स्था०—आ० भा० पु० काशी; मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—मेम और साहब, उपन्यास, श्रीमती रुक्मिणी देवी विरचित, प्रकाशक बाबू दुर्गाप्रसाद खत्री, प्रथम बार १९१९, पं० पन्ना लाल राय द्वारा काशी लहरी प्रेस में मुद्रित, पृ० सं० ३३ ।

स्वयं लेखक द्वारा लालूचक, भागलपुर से प्रकाशित हुआ।[१] प्रताप (३-५-१९२०) में प्रकाशित 'परिचय' के अनुसार इस उपन्यास में लेखक ने एक सुशिक्षित कुटुम्ब के जीवन का बड़ा सुन्दर चित्र खींचा है।[२]

बलिदान

सन् ११२० ई० में अखौरी कृष्णप्रकाश सिंह द्वारा लिखित 'बलिदान' नामक उपन्यास हिन्दी ग्रन्थ भण्डार कार्यालय, बनारस सिटी से प्रकाशित हुआ।[३]

नेटाली हिन्दू

सन् १९२० ई० में ही श्रीयुत भवानी दयाल लिखित 'नेटाली हिन्दू' नामक उपन्यास सरस्वती सदन, इन्दौर से प्रकाशित हुआ।[४] इस उपन्यास में नेटाल में रहने वाले हिन्दुओं की समस्या पर प्रकाश डाला गया है।

उड़नखटोला या मायाजाल

सन् १९२० ई० में ही पं० कालीचरण कविराज द्वारा लिखित 'उड़नखटोला या मायाजाल' नाम उपन्यास स्वयंलेखक द्वारा प्रकाशित हुआ।[५]

अनुचरी या सहचरी

इसी वर्ष पं० मदनमोहन लाल दीक्षित द्वारा लिखित 'अनुचरी या सहचरी' नामक उपन्यास पं० रामजीलाल शर्मा द्वारा हिंदी प्रेस, प्रयाग से प्रकाशित हुआ।[६]

कल्याणी

सन् १९२० ई० में ही पं० मन्नन द्विवेदी गजपुरी ने 'कल्याणी' नामक उपन्यास

---

१. प्रताप, ३-५-१९२०, 'साहित्य परिचय'।

२. उपरिवत्।

३. प्रा० स्था०—आ० भा० पु० काशी; मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—बलिदान, लेखक श्रीयुत अखौरी कृष्णप्रकाश सिंह। प्रकाशक हिन्दी ग्रन्थ भंडार कार्यालय, बनारस सिटी, प्रथम वार १९७७ वि० पृ० सं० ३१

४. प्रा० स्था०—मा० पु० पटना। मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—नेटाली हिन्दू, लेखक श्रीयुत भवानी दयाल (दरबन—नेटाल, दक्षिण अफ्रिका), प्रकाशक सरस्वती सदन, इन्दौर (मध्य भारत), प्रथमावृत्ति मार्च १९२० ई०, पृ० सं० १५२।

५. प्रा० स्था०—वि रा० भा० प० पु० पटना, मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—उड़नखटोला या मायाजाल, लेखक और प्रकाशक पं० श्रीकालीचरण कविराज, सूरजगढ़ निवासी, प्रथम बार, सं० १९७७ वि०, पृ० सं० ३९।

६. प्रा० स्था०—आ० भा० पु० काशी। मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—अनुचरी या सहचरी—नवयुवक विद्यार्थियों के लिए सामाजिक शिक्षाप्रद—मौलिक उपन्यास, लेखक पंडित मदनमोहन लाल दीक्षित, मुद्रक और प्रकाशक पं० रामजीलाल शर्म्मा, हिन्दी प्रेस, प्रयाग, प्रथमवार सं० १९७७, पृ० सं० १९२।

में बच्चे और चम्पा के प्रेम और विवाह का वर्णन है। पुस्तक में स्थान-स्थान पर पातिव्रत्य का महत्त्व-प्रतिपादन किया गया है।

बात की चोट

सन् १९२१ ई० में ही श्रीयुत मदनमोहन लाल दीक्षित द्वारा लिखित 'बात की चोट' नामक उपन्यास हिन्दी ग्रन्थ भंडार कार्यालय, बनारस सिटी से प्रकाशित हुआ।[१] इस उपन्यास में एक पति की कहानी वर्णित है, जो अपनी पत्नी की एक बात से मर्माहत होकर घर से निकल पड़ता है तथा एक गोरी स्त्री की सहायता और अपने पुरुषार्थ से बड़ा आदमी बन जाता है।

वनदेवी

सन् १९२१ ई० में ही बालदत्त पांडेय लिखित 'वनदेवी' नामक उपन्यास भारतीय पुस्तक एजेंसी, कलकत्ता से प्रकाशित हुआ।[२] डॉ० माताप्रसाद गुप्त ने इसके प्रकाशक के सम्बन्ध में गलत सूचना दी है।[३] प्रस्तुत पंक्तियों का लेखक इसके प्रथम संस्करण को प्राप्त करने में असमर्थ रहा है। इस उपन्यास का द्वितीय संस्करण हिन्दी पुस्तकालय, मिर्जापुर से सितम्बर १९२४ ई० के पूर्व प्रकाशित हो चुका था।[४] सन् १९२८ ई० में प्रकाशित इस उपन्यास का तीसरा संस्करण माहेश्वर सार्वजनिक पुस्तकालय, पटना में उपलब्ध है।[५] देश के युवकों में सेवा भाव जागृत करना तथा देशसुधार की भावना की प्रेरणा देना इस उपन्यास का मुख्य लक्ष्य प्रतीत होता है। पति-पत्नी के आदर्श प्रेम, अशिक्षा के दोष, किसानों की दुरवस्था, ज़मीन्दारों के अत्याचार आदि का चित्रण उपन्यास में प्रमुख है।

टापू की रानी या समुद्र की सैर

सन् १९२१ ई० में ही ईश्वरी प्रसाद शर्मा द्वारा लिखित 'टापू की रानी या

---

१. प्रा० स्था०—आ० भा० पु०, काशी। मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—बात की चोट (सामाजिक, शिक्षाप्रद, रोचक—एक मौलिक उपन्यास) लेखक—श्रीयुत मदनमोहन लाल दीक्षित, हेडमास्टर, कन्नौज, प्रकाशक—हिन्दी ग्रंथ भंडार कार्यालय, बनारस सिटी, वि० १९७८, प्रथम बार. पृ० सं० ९० ।

२. प्रा० स्था०—आ० भा० पु०, काशी। मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—वनदेवी (उपन्यास), ले० पं० बालदत्त पाण्डेय, प्रकाशक भारतीय पुस्तक एजेंसी, न० ११, नारायण प्रसाद बाबू लेन, कलकत्ता प्रथमावृत्ति १०००, १९७८, आश्विन।

३. डा० गुप्त, हि० पु० सा०, पृ० ५२२।

४. मतवाला, १३ सितंबर १९२४, पुस्तक परिचय।

५. मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—वनदेवी, पं० बालदत्त पांडेय, प्र०—काशी पुस्तक भंडार, बनारस सिटी, तृतीय संस्करण सं० १९८५ ई०, सन् १९२८, प्रथम संस्करण १०००, द्वितीय संस्करण १५००, तृतीय संस्करण १०००, पृ० सं० ९० ।

हिन्दी ग्रंथ-भंडार कार्यालय, बनारस सिटी से प्रकाशित हुआ।[१] इस उपन्यास की कथावस्तु महायुद्ध और उसके बाद की १९१९ में घटित पंजाब की घटनाओं पर आधृत है।

आत्मविजय

सन् १९२२ में ही विश्वम्भर सहाय 'प्रेमी' द्वारा लिखित 'आत्मविजय' नामक उपन्यास विश्वसाहित्य भंडार, मेरठ से प्रकाशित हुआ[२] इस उपन्यास में पातिव्रत्य और सदाचार की महिमा दिखायी गयी है।

सत्याग्रह की मूर्ति गंगोत्तरी

सन् १९२२ ई० में ही पं० शेर सिंह काश्यप लिखित 'सत्याग्रह की मूर्ति गंगोत्तरी' नामक उपन्यास राष्ट्रीय पुस्तक माला, स्वराज्य आश्रम, अजमेर से प्रकाशित हुआ।[३] इस उपन्यास में गंगोत्तरी नामक एक युवती द्वारा एक अत्याचारी और दुराचारी राजा से अपने सतीत्व की रक्षा का वर्णन किया गया है।

सुहागिनी

सन् १९२२ ई० में श्री चंडिका प्रसाद मिश्र द्वारा लिखित 'सुहागिनी' नामक उपन्यास हरिदास एंड कम्पनी, कलकत्ता से प्रकाशित हुआ। आर्य भाषा पुस्तकालय में इस उपन्यास की एक प्रति है, पर मुखपृष्ठ के नष्ट हो जाने के कारण पुस्तक के सम्बन्ध में कोई सूचना नहीं प्राप्त होती। उपर्युक्त सूचनाएं आ० भा० पु० की पुस्तक-सूची तथा सरस्वती, अक्टूबर १९२२ के 'पुस्तक परिचय' से प्राप्त की गयी है। इस उपन्यास में हिन्दू समाज की रूढ़ियों का चित्रण किया गया है।

महारानी शशिप्रभा देवी

सन् १९२२ ई० में ही मणिराम शर्मा द्वारा लिखित 'महारानी शशिप्रभा देवी' नामक उपन्यास बेलवेडियर प्रेस, इलाहाबाद से प्रकाशित हुआ।[४] इस उपन्यास में शशिप्रभा नामक युवती के पातिव्रत्य का चित्रण किया गया है।

---

१. प्रा० स्था०—आ० भा० पु०, काशी। मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—सुलभ 'हिन्दी पुस्तकमाला' संख्या १८, पतितोद्धार (उपन्यास), ले० श्रीयुत जंग बहादुर सिंह, प्रकाशक–हिन्दी ग्रन्थ भंडार कार्यालय, बनारस सिटी, वि० १९७६, प्रथम बार।

२. प्रा० स्था०—मा० पु०, पटना। मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—आत्म विजय—सचित्र उपन्यास, लेखक विश्वम्भर सहाय 'प्रेमी', प्रकाशक विश्व साहित्य भंडार, मेरठ शहर, संवत् १९७९, प्रथम संस्करण।

३. प्रा० स्था०—मा० पु०, पटना। मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि–राष्ट्रीय पुस्तकमाला का पाँचवा पुष्प, सत्याग्रह की मूर्ति गंगोत्तरी उपन्यास, अर्थात् एक अत्याचारी राजा के साथ वीर रमणी का अपूर्व सत्याग्रह, लेखक श्रीयुत पंडित शेर सिंह काश्यप, प्रकाशक-'राष्ट्रीय पुस्तक माला' स्वराज्य आश्रम, अजमेर, प्रथम संस्करण २००० प्रति, आश्विन १९७९, सितम्बर १९२२।

४. प्रा० स्था०—आ० भा० पु० काशी। मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—महारानी शशि प्रभा देवी (एक

जीवन या बमविभ्राट्

१९२२ ई० में ही ब्रह्मचारी प्रभुदत्त शर्मा कृत 'जीवन या बमविभ्राट्' नामक उपन्यास हिन्दी ग्रन्थ भंडार कार्यालय, बनारस सिटी से प्रकाशित हुआ।[१]

सुन्दरी

सन् १९२२ ई० में ही श्रीमती कुन्ती द्वारा लिखित 'सुन्दरी' नामक उपन्यास सेठ अमरचन्द वैद्य द्वारा सरस्वती ग्रन्थमाला कार्यालय, आगरा से प्रकाशित हुआ।[२]

निकुंज

सन् १९२२ ई० में ही प्रताप नारायण श्रीवास्तव द्वारा लिखित 'निकुंज' नामक उपन्यास हिन्दी ग्रन्थ भंडार कार्यालय, बनारस से प्रकाशित हुआ।[३]

संसार रहस्य अथवा अधःपतन

इसी वर्ष प्रसिद्ध नारायण सिंह द्वारा लिखित 'संसार रहस्य अथवा अधःपतन' नामक उपन्यास स्वयं लेखक द्वारा कादिराबाद से प्रकाशित हुआ।[४]

सूरजमुखी

सन् १९२३ ई० में ज्योतिषी हरदेव प्रसाद मुदर्रिस रचित 'सूरजमुखी' नामक उपन्यास का द्वितीय संस्करण लाला श्याम लाल हीरालाल द्वारा श्याम काशी प्रेस, मथुरा से प्रकाशित हुआ। प्रस्तुत पंक्तियों का लेखक इस उपन्यास के प्रथम संस्करण को प्राप्त करने में असमर्थ रहा है।[५]

और मौलिक उपन्यास, लेखक-पुष्पलता, अंजना आदि के रचयिता श्रीयुत सुदर्शन, प्रकाशक नारायणदत्त सहगल एंड संस, लुहारी दरवाजा, लाहौर, प्रथम संस्करण २०००, सितम्बर १९२२।

१. प्रा० स्था०—आ० भा० पु० काशी। मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—जीवन या बम-विभ्राट्, एक अद्भुत, रसपूर्ण उपन्यास, लेखक श्रीयुक्त ब्रह्मचारी प्रभुदत्त शर्म्मा, प्रकाशक हिन्दी ग्रंथ-भंडार कार्यालय बनारस सिटी, प्रथमबार. वि० संवत १९८०, पृ० सं० ११०।

२. प्रा० स्था०—वि० रा० भा० प० पु०, पटना। मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—सुन्दरी, लेखिका श्रीमती कुन्ती देवी, सम्पादक—पं० गौरी शंकर शुक्ल, प्रकाशक—सेठ अमरचंद वैद्य, सरस्वती ग्रंथमाला कार्यालय, बेलनगंज. आगरा, प्रथम वार १९७९।

३. आ० भा० पु० काशी की पुस्तक सूची।

४. उपरिवत्।

५. यह उपन्यास मुझे डॉ० जगन्नाथ प्रसाद शर्मा, भूतपूर्व अध्यक्ष, हिन्दी विभाग, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय के सौजन्य से उपलब्ध हुआ था। मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—एक बिल्कुल नया उपन्यास, सूरजमुखी, जिसमें कोई विषय भी प्राचीन नहीं लिखा गया, चंपावती, कामकौतुक, सरला, सीताजी और रावण की बातचीत, भजन रूप बसंत इत्यादि कई गद्य और पद्य पुस्तकों के रचयिता ज्योतषी हरदेव प्रसाद मुदर्रिस ने रचा और लाला श्याम लाल हीरालाल मालिक श्यामकाशी प्रेस मथुरा ने प्रकाशित किया, सन् १९२३ ई०, द्वितीयावृत्ति २०००, पृ० सं० ६८।

सरला

इसी वर्ष पं० गौरीशंकर शुक्ल रचित 'सरला' नामक उपन्यास हिन्दी साहित्य प्रचार कार्यालय, कलकत्ता से प्रकाशित हुआ ।[1] इस उपन्यास में लेखक ने बम्बई के सामाजिक जीवन का चित्र खींचा है ।

चरित्र चित्रण

सन् १९२३ ई० में ही बाबू कन्हैयालाल गुप्त लिखित 'चरित्रचित्रण' नामक उपन्यास हिन्दी साहित्य प्रचार कार्यालय, कलकत्ता से प्रकाशित हुआ ।[2]

उपेक्षिता

इसी वर्ष लक्ष्मीनारायण गुप्त लिखित 'उपेक्षिता' नामक उपन्यास सुधा वर्धक कार्यालय, अलीगढ़ से प्रकाशित हुआ ।[3] इस उपन्यास में कथा के माध्यम से पातिव्रत्य तथा स्वधर्म की महत्ता का प्रतिपादन किया गया है ।

मायावती : जीवन

डॉ० माताप्रसाद गुप्त के अनुसार सन् १९२३ ई० में ही वेनी प्रसाद मेहरा लिखित 'मायावती' नामक उपन्यास दुर्गाप्रसाद खत्री द्वारा बनारस से[4] तथा प्रभुदत्त शर्मा लिखित 'जीवन' नामक उपन्यास अम्बिका प्रसाद गुप्त द्वारा बनारस से[5] प्रकाशित हुआ ।

उषा और अरुण

फरवरी १९२४ ई० के पूर्व श्रीयुत 'भानु' द्वारा लिखित 'उषा और अरुण' नामक उपन्यास तीन खंडों में प्रकाशित हुआ । प्रस्तुत पंक्तियों का लेखक इस उपन्यास को प्राप्त करने में असमर्थ रहा है । राखालदास वंद्यापाध्याय लिखित 'मयूख' नामक उपन्यास के हिन्दी अनुवाद (अ० वजरंग बली गुप्त, प्र० का० १९२९) के साथ संलग्न

---

१. प्रा० स्था०–बि० रा० भा० प० पु०, पटना तथा आ० भा० पु० काशी । मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि–सरला (शिक्षाप्रद-सामाजिक उपन्यास), लेखक–पं० गौरीशंकर शुक्ल, बी० काम०, प्र० हिन्दी साहित्य प्रचार कार्यालय कलकत्ता, प्रथमवार १००० , १५ जून सन १९२३. पृ० सं० २३४ ।

२. प्रा० स्था०—आ० भा० पु० काशी । मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—चरित्र चित्रण (सचित्र सामाजिक उपन्यास) लेखक—बाबू कन्हैया लाल गुप्त, प्रकाशक—हिन्दी साहित्य प्रचार कार्यालय, १६२-१६४, हरीसन रोड, कलकत्ता, प्रथम बार २०००, फरवरी १९२३. पृ० सं० १५३ ।

३. प्रा० स्था०—मा० पु०, पटना । मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—उपेक्षिता, एक अपूर्व भावपूर्ण गल्प—लेखक लक्ष्मीनारायण गुप्त, प्रकाशक—सुधावर्धक कार्यालय, अलीगढ़, प्रथमावृत्ति २०००, सन् १९२३ ।

४. डॉ० माताप्रसाद गुप्त, हि० पु० सा०, पृ० ५२५ ।

५. डॉ० माताप्रसाद गुप्त, हि० पु० सा०, पृ० २३६ तथा ५०८ ।

के अनुसार 'इसमें दिखलाया गया है कि विलासिनी गृहिणी से घर का किस प्रकार नाश और शीलवती शिक्षिता गृहलक्ष्मी से परिवार की कैसी उन्नति होती है।[१]

अपूर्व ब्रह्मचारी

'माधुरी' (जुलाई १९२४) में प्रकाशित 'पुस्तक परिचय' से ज्ञात होता है कि इसके पूर्व पं० विंध्येश्वरी दत्त शुक्ल द्वारा लिखित 'अपूर्व ब्रह्मचारी' नामक उपन्यास स्वयं लेखक द्वारा सिवान, सारन (बिहार) से प्रकाशित हो चुका था। उक्त 'परिचय' के अनुसार इस उपन्यास में 'लेखक ने बनारस के एक द्विजकुल की कथा द्वारा ब्राह्मणों का वर्तमान धार्मिक पतन और अविद्या का दिग्दर्शन कराया है।'[२]

रूप सुन्दरी

'माधुरी' (जुलाई १९२४) में प्रकाशित 'पुस्तक परिचय' से ज्ञात होता है कि इसके पूर्व पं० गणेशदत्त शर्मा गौण 'इन्द्र' द्वारा लिखित 'रूप सुन्दरी' नामक उपन्यास सुन्दर प्रेस, सनावट, नीमाड़ से प्रकाशित हुआ। उक्त 'परिचय' के अनुसार इस उपन्यास में एक पतिव्रता स्त्री द्वारा अपने पति की प्राणरक्षा का वर्णन किया गया है।[३]

पाप का अन्त

'सरस्वती' (सितम्बर १९२४) में प्रकाशित 'पुस्तक परिचय' से पता चलता है कि कुँवर ब्रजेन्द्र सिंह क्षत्रिय द्वारा लिखित 'पाप का अन्त' नामक उपन्यास स्वयं लेखक द्वारा कायस्थपाड़ा, धौलपुर से प्रकाशित हुआ। "इसमें लाल सिंह नामक परस्त्री, पतोहू और पुत्री तक को कुदृष्टि से देखनेवाले एक नर-पिशाच की दुष्टता का कल्पित चित्र खींचा गया है। जहाँ एक ओर पापी के पापों की पराकाष्ठा है, दूसरी ओर बेचारी किशोरी की सतीत्व-रक्षा, आदर्श दम्पती रमेश और मालती का अनुराग और प्रेमदर्शन है।"[४]

शान्तिनिकेतन

सन् १९२४ ई० में ही मुंशी नवजादिक लाल श्रीवास्तव लिखित 'शान्तिनिकेतन' नामक उपन्यास भारती पुस्तकमाला, सरकार लेन, कलकत्ता से प्रकाशित हुआ।[५] इस उपन्यास में भारतीय स्त्रियों को अँगरेजी ढंग से शिक्षा और स्वतन्त्रता देने का कुपरिणाम दिखाया गया है।

---

१. माधुरी, वर्ष २, खंड २, सं० ४, मई १९२४, पुस्तक परिचय।
२. माधुरी, वर्ष २, खंड २, सं० ६, जुलाई १९२४, पुस्तक परिचय।
३. उपरिवत्।
४. सरस्वती, सितम्बर १९२४, पुस्तक परिचय।
५. प्रा० स्था०—वि० रा० भा० प० पु० पटना, मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—शान्तिनिकेतन (बिलकुल मौलिक और देशभक्तिपूर्ण सामाजिक उपन्यास), ले०—श्रीमान् मुन्शी नवजादिक

रचना की थी, मुझे तनिक भी आशा न थी कि लोग इस प्रकार इसकी कदर करेंगे। परन्तु प्रसन्नता की बात है कि लोगों ने आशा से बहुत ज्यादा इसे अपनाकर मेरा हौसला बढ़ाया है।[१]

उमा सुन्दरी

सन् १९२४ ई० में ही शैलकुमारी देवी लिखित 'उमा सुन्दरी' नामक उपन्यास चाँद कार्यालय, इलाहाबाद से प्रकाशित हुआ। इसका दूसरा संस्करण १९२६ ई० में छपा।[२] प्रस्तुत पंक्तियों का लेखक इसके प्रथम संस्करण को प्राप्त करने में असमर्थ रहा है, पर प्रकाशकीय प्रस्तावना के अन्त में '१ जून १९२४' तिथि मुद्रित होने से इसके प्रथम संस्करण का प्रकाशनकाल ज्ञात हो जाता है। इस उपन्यास में सुशीला नामक बालिका की सुशीलता, सच्चरित्रता, पवित्रता, स्वार्थत्याग और पातिव्रत्य का चित्रण किया गया है।

अपूर्व ब्रह्मचारी

इसी वर्ष पं० विन्ध्येश्वरी दत्त शुक्ल कृत 'अपूर्व ब्रह्मचारी' नामक उपन्यास हितचिन्तक प्रेस, काशी से मुद्रित होकर स्वयं लेखक द्वारा प्रकाशित हुआ।[३] इस उपन्यास में लेखक ने ब्राह्मण जाति की वर्तमान अधोगति का चित्र प्रस्तुत किया है।

पुष्पकुमारी

१९२४ ई० में ही पं० टीकाराम सदाशिव तिवारी रचित 'पुष्पकुमारी' नामक उपन्यास स्वयं लेखक द्वारा होशंगाबाद से प्रकाशित हुआ।[४] इसकी 'भूमिका' के अन्त में 'फाल्गुन शुक्ल सं० १९८०' मुद्रित है। इस उपन्यास में एक बालिका और एक बालक के आदर्श प्रेम, धर्मोपासना, नीति, सदाचार, शिक्षा आदि का वर्णन किया गया है।

लाला वंशीधर कपूर, म्यूनिसिपल कमिश्नर, बानागुरु, अमृतसर, दूसरी बार १०००, जनवरी १९२९ ई०, मूल्य—स्वयं पढ़ना और दूसरों को सुनाना, पृ० ५३।

१. उपरिवत्, चार शब्द।
२. प्रा० स्था०—आ० भा० पु०, काशी। मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—उमा सुन्दरी, एक क्रांतिकारी मौलिक सामाजिक उपन्यास, लेखिका—श्रीमती शैलकुमारी देवी, प्रकाशक "चाँद"—कार्यालय इलाहाबाद, द्वितीय संस्करण २०००, १९२६। (पृष्ठभाग की सूचना—प्रथम संस्करण—१५००, द्वितीय संस्करण २०००)।
३. प्रा० स्था०—आ० भा० पु० काशी। मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—अपूर्व ब्रह्मचारी, जिसको श्री शिवाशिव नाटक के रचयिता श्री पण्डित विन्ध्येश्वरीदत्त शुक्ल, वकील, सीवान, जिला छपरा ने हिन्दी साहित्य प्रेमियों के विनोदार्थ रचकर प्रकाशित किया। बी० एल० पावगी द्वारा हितचिन्तक प्रेस, रामघाट, काशी में मुद्रित, प्रथम बार १०००, १९२४, पृ० सं० १८१।
४. प्रा० स्था०—आ० भा० पु०, काशी। मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—पुष्पकुमारी (सचित्र उपन्यास), लेखक—पं० टीकाराम सदाशिव तिवारी, प्रकाशक—पं० टीकाराम सदाशिव तिवारी, होशंगाबाद (मध्यप्रान्त), प्रथम बार, संवत् १९८०।

इस उपन्यास के प्रथम संस्करण को प्राप्त करने में असमर्थ रहा है। उपर्युक्त सूचनाएँ आ० भा० पु० काशी की पुस्तक-सूची तथा 'सरस्वती', दिसम्बर १९२५, में प्रकाशित विवेच्य उपन्यास के 'परिचय' से प्राप्त की गयी हैं।

'कर्त्तव्याघात' का तृतीय संस्करण १९३५ ई० में भार्गव पुस्तकालय, बनारस से प्रकाशित हुआ।[1] तृतीय संस्करण के साथ संलग्न भूमिका से ज्ञात होता है कि इसका द्वितीय संस्करण १९२९ ई० में प्रकाशित हुआ था।[2] इस उपन्यास का चतुर्थ संस्करण १९५५ ई० में ज्ञान मंडल लिमिटेड, बनारस से प्रकाशित हुआ।[3] इस उपन्यास में लेखक ने दहेज की कुप्रथा के एक दुःखजनक परिणाम का चित्र अंकित किया है।

'कर्त्तव्याघात' में अनमेल विवाह के दुष्परिणामों का चित्रण किया गया है। निर्धन परिवार की कन्या का विवाह सम्पन्न और धनलोलुप परिवार में हो जाने पर कन्या को जीवन में कितना अपमानित, लांछित और दुःखी होना पड़ता है यही इस उपन्यास का मुख्य विषय है। पूज्य पुरुषों के आदेश को भी अच्छी तरह सोचे समझे बिना, कर्त्तव्याकर्त्तव्य की कसौटी पर कसे बिना, कार्य रूप में परिणत नहीं करना चाहिए, इसका भी उपन्यास में स्पष्ट संकेत मिलता है। स्त्रियाँ दुष्टों और दुराचारियों के चंगुल में फँस कर किस प्रकार अपने सतीत्व और जीवन को संकट में डाल देती हैं तथा ग्रामीण अन्धविश्वास आदि का उपन्यास में सुन्दर चित्रण किया गया है। मनोरमा, चन्द्रकला, राजेन्द्र, सुशील आदि उपन्यास के प्रमुख पात्र हैं। चरित्र-चित्रण में उपन्यासकार को पर्याप्त सफलता मिली है।

माधुरी

सन् १९३५ ई० में ही बाबू गंगा प्रसाद सिंह 'विशारद' लिखित 'माधुरी' नामक उपन्यास लहरी बुक डिपो, काशी से प्रकाशित हुआ।[4] इस उपन्यास में विश्वेश्वर और माधुरी के पवित्र प्रेम का बड़ा ही सुन्दर और विश्वसनीय चित्र प्रस्तुत किया गया है।

प्रभाव की दृष्टि से उपन्यास पर्याप्त मर्मस्पर्शी है। तत्कालीन समाज में स्त्रियों की विवशता का चित्रण बहुत सुन्दर है। पिता का साया उठ जाने पर तथा भाई और भाभी के घर का मालिक होने पर विधवा लड़की की आत्मा को, अन्य सारे सुखों

गुरदित्ता मल, सोल एजेन्ट कटड़ा, आहलूवाला, अमृतसर, प्रथम बार १०००, सं० १९८२, पृ० सं० २८।

१. प्रा० स्था०—आ० भा० पु० काशी। मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—कर्त्तव्याघात (सामाजिक उपन्यास), लेखक—देवनारायण द्विवेदी, प्रकाशक—भार्गव पुस्तकालय, बनारस सिटी, तृतीय संस्करण बैशाख संम्वत् १९९२।

२. उपरिवत्, भूमिका।

३. प्रा० स्था०—आ० भा० पु०, काशी तथा सिनहा पुस्तकालय, पटना।

४. प्राप्ति स्थान—मा० पु०, पटना, मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—माधुरी ले०—बाबू गंगा प्रसाद

संयोग' नामक कथा प्रकाशित हुई थी।[१] इस कथा में किसी गाँव में आयोजित एक रुद्र यज्ञ तथा उसके प्रभाव से महामारी के दूर होने का वर्णन है।

जयश्री

अगस्त १९२६ ई० की 'सरस्वती' के 'पुस्तक परिचय' स्तम्भ से ही ज्ञात होता है कि इसके पूर्व ज्ञानचन्द्र शास्त्री लिखित 'जयश्री' नामक उपन्यास पं० अनन्तराम शर्मा द्वारा सद्धर्म प्रचारक मन्त्रालय, दरियागंज, दिल्ली से प्रकाशित हुआ।[२] इस उपन्यास में एक देशभक्त राजकुमारी की कथा वर्णित है।

अबला

इसी के आसपास श्री रमाशंकर सकसेना ने 'अबला' नामक 'स्त्रीशिक्षा-पूर्ण गार्हस्थ उपन्यास' की रचना की, जो दो वर्ष बाद, सन् १९२८ ई० में गंगा पुस्तकमाला कार्यालय, लखनऊ से प्रकाशित हुआ।[३] 'भूमिका' के अन्त में '२२ अगस्त १९२६ ई०' मुद्रित है, जिससे सिद्ध होता है कि इसकी रचना १९२६ ई० में हो चुकी थी।

इस उपन्यास में सीमाप्रान्त के हिन्दुओं, विशेष कर हिन्दू स्त्रियों, पर मुसलमानों द्वारा किये गये अत्याचारों का वर्णन है।

विचित्र योगी

सन् १९२६ ई० में श्री द्वारका प्रसाद मौर्य लिखित 'विचित्र योगी' नामक उपन्यास गंगा पुस्तकमाला कार्यालय, लखनऊ से प्रकाशित हुआ।[४]

महामाया

इसी वर्ष श्री हरदीप नारायण सिंह द्वारा लिखित 'महामाया' नामक उपन्यास श्रीयुत बाबू कुलदीप नारायण सिंह द्वारा फुलकहाँ, शिवहर (मुजफ्फरपुर) से प्रकाशित हुआ।[५] इस उपन्यास में तीर्थयात्रा, महन्थों तथा पंडों की चाल-ढाल तथा उनके कुचक्रों का वर्णन किया गया है।

---

१. सरस्वती, वर्ष २७, अंक १, जनवरी १९२६।

२. सरस्वती, वर्ष २७, अंक ८, अगस्त, १९२६।

३. प्रा० स्था०—आ० भा० पु०, काशी। मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—अबला (स्त्री शिक्षापूर्ण गार्हस्थ उपन्यास), लेखक—श्री रमाशंकर सकसेना, प्रकाशक—गंगा पुस्तकमाला कार्यालय २९-३०, अमीनाबाद पार्क, लखनऊ, प्रथमावृत्ति संवत् १९८५ वि०।

४. प्रा० स्था०-आ० भा० पु०, काशी। मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—गंगा पुस्तकमाला का चौसठवाँ पुष्प, विचित्र योगी, लेखक—श्री द्वारका प्रसाद मौर्य बी० ए०, एल्० बी०, प्रकाशक-गंगा पुस्तकमाला कार्यालय, प्रकाशक और विक्रेता, लखनऊ—प्रथमावृत्ति संवत् १९८३ वि०, पृ० सं० १६२।

५. प्रा० स्था०—बि० रा० भा० प० पु०, पटना। मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि— महामाया, ले० हरदीप नारायण सिंह, मो० फुलकहाँ, डा० शिवहर, जि० मुजफ्फरपुर, प्रथमबार १०००, १९२६ ई०।

पंक्तियों का लेखक इसके प्रथम संस्करण को प्राप्त करने में असमर्थ रहा है।

इस उपन्यास में प्रमुखतः देशभक्ति और समाजसेवा का वर्णन किया गया है। साहित्यिक दृष्टि से पुस्तक अत्यन्त साधारण है, पर सामाजिक चेतना की अभिव्यक्ति की दृष्टि से उल्लेखनीय है। इसकी कथा देशभक्ति और समाज सुधार की भावना से भरी हुई है, यद्यपि प्रतिभा की कमी के कारण उपन्यासकार इस कथा को सफल उपन्यास का रूप नहीं दे पाया है।

लोकवृत्ति

सन् १९२६ ई० में ही श्री जगन्मोहन वर्मा लिखित 'लोकवृत्ति' नामक उपन्यास भार्गव पुस्तकालय, गायघाट, काशी से प्रकाशित हुआ।[1] इस उपन्यास में मिशनरी लेडियों के हथकंडों, जमीन्दारों की चालबाजियों और सरकारी अमलों की चतुराई का वर्णन किया गया है। प्रेमचन्द के शब्दों में 'झिनकू लाल, दुर्गा प्रसाद, पंडित गंगाधर आदि चरित्र कोरी कल्पनाएँ नहीं हैं। दूषित शिक्षा से कन्याओं की क्या दशा हो जाती है, इसे आप झिनकूलाल की पुत्री के जीवन में देख सकते हैं। विलियम ग्रीव अध्यवसाय और सदुपयोग का बहुत ही जीता जागता चित्र है।····भाषा आदि से अन्त तक बहुत ही साफ, सुबोध और सरल है। स्वार्थ के वश होकर पिता तक अपनी दुधमुँही बालिकाओं के साथ कैसा पैशाचिक अत्याचार करते हैं इसका आपको यहाँ बहुत ही करुणाजनक वर्णन मिलेगा।' (भूमिका)

सोने की प्याली : परोपकारी

सन् १९२६ ई० में श्री 'विश्व' लिखित 'सोने की प्याली' नामक उपन्यास उपन्यास बहार ऑफ़िस, काशी से तथा जहूर बख्श 'हिन्दी कोविद' लिखित 'परोपकारी' नामक उपन्यास गंगा पुस्तकमाला कार्यालय, लखनऊ से प्रकाशित हुआ।[2]

प्रस्तुत पंक्तियों का लेखक इन पुस्तकों को प्राप्त करने में असमर्थ रहा है।

वेश्यारहस्य

सन् १९२७ ई० में अथवा उसके कुछ पूर्व गंगाप्रसाद गुप्त लिखित 'वेश्यारहस्य' नामक उपन्यास, स्वयं लेखक द्वारा, डी० पी० कम्पनी, अलीगढ़ से प्रकाशित हुआ।[3] प्रस्तुत पंक्तियों का लेखक इस उपन्यास को प्राप्त करने में असमर्थ रहा है। 'कृष्णकान्ता'

चाँद कार्यालय, इलाहाबाद, १९२६, प्रथम संस्करण १५००, द्वितीय संस्करण २०००।

१. प्रा० स्था०—आ० भा० पु०, काशी, मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—संजीवन ग्रन्थमाला रत्न-४, सम्पादक—प्रेमचन्द, लोकवृत्ति, ले०—स्व० जगन्मोहन वर्मा, प्र०—भार्गव पुस्तकालय गायघाट, काशी १९८३, प्रथम संस्करण।

२. आ० भा० पु० काशी की पुस्तक-सूची।

३. गंगा प्रसाद गुप्त, कृष्णकान्ता सन्तति, भाग २३, (प्र० का० १९२७), विज्ञापन।

'लक्ष्मीबहू'[१] नामक दो उपन्यास उपन्यास बहार आफिस, काशी से प्रकाशित हुए। 'गुणलक्ष्मी' का प्रतिपाद्य विषय यह है कि सच्चे धार्मिक व्यक्ति लाख विपत्ति पड़ने पर भी, प्रलोभनों के सामने आने पर भी, अपने मार्ग से विचलित नहीं होते और उन्हें कुछ दिनों तक भले ही विपत्ति का सामना करना पड़े पर अन्त में उनके सुदिन अवश्य लौटते हैं।

चारुशीला या कुत्सित कांड

सन् १९२७ ई० में ही लाला रुद्रनाथ सिंह द्वारा लिखित 'चारुशीला या कुत्सित कांड' नामक उपन्यास हरिदेव शर्मा द्वारा प्रकाशित हुआ[२]। इस उपन्यास में बालविवाह के कुपरिणाम तथा विधवाओं की दयनीय दशा का चित्रण किया गया है। उपन्यास का शिल्प आत्मकथात्मक है।

प्रेम का मूल्य

सन् १९२७ ई० में ही परिपूर्णानन्द वर्मा कृत 'प्रेम का मूल्य' नामक उपन्यास लहरी बुक डिपो, काशी से प्रकाशित हुआ।[३] इस उपन्यास की एक प्रति आ० भा० पु० काशी में उपलब्ध है, पर मुखपृष्ठ के नष्ट हो जाने से पुस्तक के सम्बन्ध में कोई सूचना नहीं मिलती। 'प्राक्कथन' के अन्त में 'ज्येष्ठ शुक्ल निर्जला एकादशी संवत् १९८३' मुद्रित है। इस उपन्यास में युवक-युवतियों के प्रेम पर हिन्दू समाज के बन्धनों के दोष चित्रित किये गये हैं।

प्रेम-परीक्षा

१९२७ ई० में ही ठाकुर श्रीनाथ सिंह कृत 'प्रेम-परीक्षा' नामक उपन्यास गृहलक्ष्मी कार्यालय, प्रयाग से प्रकाशित हुआ।[४] इसके 'दो शब्द' से ज्ञात होता है कि इसके प्रकाशित होने के पूर्व विवेच्य लेखक का 'क्षमा' नामक उपन्यास प्रकाशित हो चुका था।

शिक्षाप्रद उपन्यास, लेखक—श्रीयुत बाबू देवबली सिंह जी, प्रकाशक—उपन्यास बहार आफिस काशी, बनारस, प्रथम बार, सन् १९२७, पृ० सं० ७४।

१. लक्ष्मीबहू, एक शिक्षाप्रद सामाजिक कथा, लेखक—ठाकुर देवबली सिंह जी, प्र०—शिवराम दास गुप्त, उपन्यासबहार आफिस, काशी, बनारस, पहली बार १९२७, पृ० सं० ७८।

२. प्रा० स्था—मा० पु० काशी। मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—चारुशीला या कुत्सित कांड, हिन्दू समाज का नग्न चित्र, सामाजिक उपन्यास. लेखक—उषा सुन्दरी, हमीर, मुद्रा आदि अनेक पुस्तकों के लेखक लाला रुद्रनाथ सिंह, तहसीलदार, पन्ना स्टेट, प्रकाशक—हरिदेव शर्मा, सम्पादक—हिन्दू सम्बन्ध सहायक, सहारनपुर, यू० पी०, प्रथम बार २०००, दिसम्बर १९२७।

३. आ० भा० पु० काशी की पुस्तक सूची।

४. प्रा० स्था०—आ० भा० पु० काशी। मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—प्रेमपरीक्षा, स्त्रीशिक्षा से परिपूर्ण

मनोरमा

चाँद, फरवरी १९२८ ई०, में प्रकाशित एक विज्ञापन से ज्ञात होता है कि इसके पूर्व श्री चंडी प्रसाद 'हृदयेश' रचित 'मनोरमा' नामक उपन्यास का द्वितीय संस्करण चाँद कार्यालय, इलाहाबाद से प्रकाशित हो चुका था। प्रथम संस्करण की लोकप्रियता के सम्बन्ध में उक्त विज्ञापन की निम्नलिखित पंक्तियाँ उद्धृतव्य हैं—'इस मौलिक उपन्यास के पहले संस्करण ने समाज में एक बार ही क्रान्ति उत्पन्न कर दी थी। पुस्तक का पहला २००० कापियों का संस्करण केवल २५ रोज में समाप्त हो गया था।''[१]

प्रस्तुत पंक्तियों का लेखक इस पुस्तक को प्राप्त करने में असमर्थ रहा है। उक्त विज्ञापन के अनुसार इसमें बाल-विवाह के कुपरिणाम चित्रित किये गये है।[२]

गुरुदर्शन

'आशा', अप्रील १९२८, में प्रकाशित 'पुस्तक परिचय' से ज्ञात होता है कि इसके पूर्व पं० व्रजकृष्ण गुटू लिखित 'गुरुदर्शन' नामक उपन्यास पं० विश्वंभर नाथ शर्मा द्वारा कल्लन की लाट, लखनऊ से प्रकाशित हुआ।[३] इस उपन्यास में ज्योतिषियों और गुरुओं के प्रपंच का चित्रण किया गया है।[४] उक्त समीक्षा के अनुसार ''लेखक ने गुरु नीलकंठ जी का अच्छा चित्र खींचा है और यह दिखलाया है कि धन के लोभ में पड़कर उन्होंने दो प्रेमियों का विवाह यह झूठ कह कर रुकवा दिया कि लड़के और लड़की की जन्म-कुंडली एक दूसरे के विरुद्ध है।...केवल यही नहीं, कि दुष्ट व्यभिचारी से रुपया लेकर उसका विवाह उसी लड़की से ठीक करा दिया। फल यह हुआ कि लड़की ने प्रेम से निराश होकर दुराचारी के फन्दे में फँसने से पूर्व ही आत्मघात कर लिया। इधर उसका प्रेमी भी प्रेमिका की मृत्यु के आघात से बिलकुल पागल हो गया।''

स्मृतिकुंज

'चाँद' जून १९२८ ई० में प्रकाशित एक विज्ञापन से ज्ञात होता है कि इसके पूर्व एक 'निर्वासित ग्रेजुएट' लिखित 'स्मृतिकुंज' नामक उपन्यास चाँद कार्यालय, इलाहाबाद से प्रकाशित हुआ।[५] पत्र-शैली में लिखित यह एक प्रेमप्रधान उपन्यास है।

सत्य घटनाओं के आधार पर लिखित क्रांतिकारी पुस्तक, लेखिका—श्रीमती स्फुरना देवी, प्रकाशक—'चाँद' कार्यालय, इलाहाबाद, पहली बार, जुलाई १९२७ ई०।

१. चाँद, वर्ष ६, खंड १, फरवरी १९२८, 'मनोरमा'।

२. उपरिवत्।

३. आशा, मासिक पत्र, वर्ष २, अंक ३, एप्रिल १९२८, पृ० १३७-१३८।

४. उपरिवत्।

५. चाँद, वर्ष ६, खण्ड २ जून १९२८, विज्ञापन (स्मृतिकुंज)।

अनिवार्य बताया गया है। तलाक और पुनर्विवाह का प्रश्न उठाकर उनका विरोध किया गया है और जहाँ तहाँ पाश्चात्य आदर्शों की आलोचना की गयी है। इसमें एक ओर 'कमला' एवं 'मिस डैशर' नामक युवतियों के निःस्वार्थ प्रेम का चित्रण है तो दूसरी ओर इंगलैंड के कुख्यात डाकू 'चिक' के कारनामों की कहानी है। इसकी घटनाएँ इलाहाबाद, पुरी, मसूरी और इंगलैंड से सम्बद्ध हैं।'

फरमा देवी

डॉ० माताप्रसाद गुप्त के अनुसार सन् १९२८ ई० में श्री बनारसी लाल वर्मा द्वारा लिखित 'फरमा देवी' नामक उपन्यास चौधरी एंड सन्स, बनारस से प्रकाशित हुआ।[1]

अन्तरंग अथवा लक्ष्मी केशव

सन् १९२८ ई० में श्री सत्यदेवनारायण साही रचित 'अन्तरंग अथवा लक्ष्मी केशव' नामक उपन्यास बाबू बुजबासी लाल द्वारा, जौनपुर से प्रकाशित हुआ।[2] इस उपन्यास में विफल प्रेम की एक कहानी वर्णित है।

हृदय का काँटा

इसी वर्ष कुमारी तेजरानी दीक्षित ने 'हृदय का काँटा' नामक उपन्यास की रचना की जिसका द्वितीय संस्करण १९४८ ई० में तरुण भारत ग्रन्थावली कार्यालय, दारागंज, प्रयाग से प्रकाशित हुआ।[3] प्रस्तुत पंक्तियों का लेखक इस उपन्यास के प्रथम संस्करण को प्राप्त करने में असमर्थ रहा है। 'परिचय' के अन्त में 'आषाढ़ कृ० २ सम्वत् १९८५' मुद्रित रहने से इसका रचना काल ज्ञात होता है।[4]

पुस्तक के आरम्भ में दिये गये 'परिचय' के अनुसार 'इस ग्रन्थ द्वारा लेखिका ने हिन्दू समाज की एक मार्मिक दुर्बलता की ओर, विधवाओं की असहाय अवस्था की ओर, पाठकों का ध्यान आकर्षित किया है। अशिक्षिता, कुरूपा किन्तु अत्यन्त पतिपरायण प्रतिमा के रहन-सहन से असन्तुष्ट महेश अपनी रूपवती विधवा साली मालती के प्रेम में पड़कर उच्छृंखलता का आचरण कर बैठता है और इसके परिणामस्वरूप प्रतिमा गृह त्यागकर कहीं चली जाती है। तब महेश मालती के साथ अनेक स्थानों में विचरण करता है। कालान्तर में महेश मालती को त्याग देता है और मालती हिन्दू समाज में अनाश्रित

---

१. डॉ० माताप्रसाद गुप्त, हि० पु० सा०, पृ० ५०८।

२. प्रा० स्था०--आ० भा० पु० काशी। मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि--अन्तरंग अथवा लक्ष्मी केशव, लेखक--श्रीयुत सत्यदेव नारायण साही, प्रकाशक--बाबू बुजबासी लाल, 'समय' कार्यालय, जौनपुर, प्रथम बार मार्च १९२८ ई०, पृ० सं० १६०।

३. प्रा० स्था०--आ० भा० पु० काशी। मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि--हृदय का काँटा (मौलिक उपन्यास) लेखिका--कुमारी तेजरानी दीक्षित बी० ए०, प्रकाशक--तरुण भारत ग्रन्थावली कार्यालय, दारागंज, प्रयाग, द्वितीयावृत्ति, १९४८।

४. उपरिवत्, परिचय।

मंच

डॉ० माताप्रसाद गुप्त के अनुसार १९२८ ई० में ही राजेश्वर प्रसाद सिंह लिखित 'मंच' नामक उपन्यास नन्दकिशोर, इलाहाबाद से प्रकाशित हुआ।[१] डॉ० गुप्त के अनुसार इस उपन्यास में वेश्यावृत्ति की बुराइयों का चित्रण किया गया है।[२]

महिलामंडल : विचित्र संन्यासी

१९२८ ई० में ही बैजनाथ केडिया लिखित 'महिला मंडल' नामक उपन्यास हिन्दी पुस्तक एजेन्सी, कलकत्ता से और द्वारका प्रसाद मौर्य लिखित 'विचित्र संन्यासी' नामक उपन्यास चौधरी एंड सन्स, बनारस से प्रकाशित हुआ।[३]

रूबिया

'मतवाला', ५ अक्तूबर १९२९ ई० में छपे एक विज्ञापन से ज्ञात होता है कि इसके पूर्व पं० अवध उपाध्याय लिखित 'रूबिया' नामक उपन्यास प्रकाशित हो चुका था। प्रस्तुत पंक्तियों का लेखक इस उपन्यास को प्राप्त करने में असमर्थ रहा है। उक्त 'विज्ञापन' के अनुसार 'रूस की जारशाही का करुण दृश्य, परस्पर पति-पत्नी का प्रेम-भाव तथा अन्यान्य कितनी ही बातों का वर्णन ऐसे ढंग से किया गया है कि पुस्तक पढ़ते ही बनती है। आ० भा० पु० काशी की पुस्तकसूची के अनुसार यह उपन्यास १९२८ ई० में इंडियन प्रेस, प्रयाग से प्रकाशित हुआ था।

तुर्क रमणी

२ फरवरी १९२९ ई० के 'मतवाला' में प्रकाशित 'पुस्तक परिचय' से ज्ञात होता है कि इसके पूर्व श्री विश्वम्भर नाथ जिज्जा लिखित 'तुर्क रमणी' नामक उपन्यास उपन्यास बहार ऑफिस, काशी से प्रकाशित हो चुका था। प्रस्तुत पंक्तियों का लेखक इस उपन्यास को प्राप्त करने में असमर्थ रहा है। उपर्युक्त 'परिचय' के अनुसार यह एक प्रेमकहानी है जिसमें एक भोली-भाली बालिका से टर्की के उद्धारकर्त्ता मुस्तफा कमालपाशा के प्रेम का वर्णन है। मुस्तफा कमाल का यह प्रेम चिरस्थायी न हो सका और उनकी प्रेयसी तुर्की बाला ने निराश प्रेम के क्रूर दंशन को न सह सकने के कारण अपने प्राण त्याग दिये।'[४]

---

१. डॉ० गुप्त, हि० पु० सा०, पृ० ५७३।
२. उपरिवत्, पृ० ६६।
३. आ० भा० पु० की पुस्तक सूची।
४. मतवाला, २ फरवरी १९२९, पुस्तक-परिचय।

सेठ जी या सच्चा मित्र

इसी वर्ष राम स्वरूप शर्मा वैद्य कृत 'सेठ जी या सच्चा मित्र' नामक उपन्यास जैन बाल सभा, खुर्जा से प्रकाशित हुआ।[१]

अनाथ

१९२६ ई० मे ही जगदीशचन्द्र जी शास्त्री लिखित 'अनाथ' नामक उपन्यास चांद कार्यालय, इलाहाबाद से प्रकाशित हुआ।[२] इस उपन्यास में हिन्दू स्त्रियों पर मुसलमान गुंडों के अत्याचारों, ईसाइयों के हथकंडों और अनाथालयों में होनेवाले व्यभिचारों का वर्णन किया गया है। 'चाँद' अगस्त १९२९ में प्रकाशित विज्ञापन के अनुसार किस प्रकार मुसलमान गुंडे अनाथ बालकों को लुका छिपा तथा बहका कर यतीमखाने में ले जाकर मुसलमान बनाते हैं, ईसाई लोग किस चालाकी तथा धूर्त्तता से अपने मिशन की संख्या बढ़ाते हैं, अनाथालय के संचालकों की लापरवाही तथा कार्यकर्ताओं के अनुचित व्यवहार से ऊब कर किस प्रकार अनेक बालक बालिकाएँ ईसाई-मुसलमानों के चंगुल में पड़ जाती हैं, इसका विस्तृत वर्णन इस पुस्तक में है।"

कसौटी

१९२९ ई० में ही विश्वनाथ सिंह शर्मा लिखित 'कसौटी' नामक उपन्यास हिन्दी पुस्तक एजेंसी, कलकत्ता से प्रकाशित हुआ।[३]

यह उपन्यास 'समाज सुधार' की भावना पर आधृत है। इसमें मुख्य रूप से गरीब किसानों पर जमीन्दार तथा पुलिस विभाग के अत्याचार का चित्रण किया गया है। गाँव का युवक वर्ग मजदूर संघ की स्थापना कर इस अत्याचार का विरोध करता है। 'निर्भय' नामक पत्र के सम्पादक पं० दीनानाथ तथा डिपुटी कलक्टर उमाशंकर युवकों की सहायता करते हैं। उनके प्रयत्नों से 'प्रेम मन्दिर' नामक आश्रम की स्थापना होती है, जो ग्रामीण समाज की समस्याओं का समाधान करता है। जमीन्दार रामकिशोर

लेखक—पं० विश्वम्भर नाथ शर्मा 'कौशिक', विनोद पुस्तक मन्दिर, हास्पिटल रोड, आगरा द्वितीय संस्करण, जून, १९४८।

१. प्रा० स्था०—आ० भा० पु० काशी। मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—शिक्षाप्रद, रोचक उपन्यास, सेठजी या सच्चा मित्र, लेखक—श्री रामस्वरूप शर्म्मा वैद्य, प्रकाशक—जैन बाल सभा, खुर्जा, मिलने का पता—हिन्दी पुस्तक कार्यालय, कूचा पातीराम, देहली, सन् १९२९ ई०, पृ० सं० १४४।

२. प्रा० स्था०—आ० भा० पु० काशी। मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—अनाथ (हिन्दुओं की नालाय की मुसलमान गुंडों की शरारतें ईसाइयों के हथकंडे और अनाथालयों का भंडाफोड़) लेखक—श्री जगदीशचन्द्र जी शास्त्री, काव्यतीर्थ, प्रकाशक 'चाँद' कार्यालय, इलाहाबाद अप्रैल १९२९ प्रथम बार २०००।

३. प्रा० स्था०—सिनहा पुस्तकालय, पटना, मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—कसौटी, लेखक श्री युक्त विश्वनाथ सिंह शर्म्मा, प्रकाशक हिन्दी पुस्तक एजेन्सी २०३, हरिसन रोड, कलकता, प्रथम बार १९२९, मूल्य २), पृ० सं० २२६

उपन्यास में पर्दाफाश किया गया है। इसके अधिकांश पात्र मृत्यु को प्राप्त होते हैं। बाल-विधवा गिरिबाला उपन्यास की प्रमुख पात्र मानी जा सकती है।

उस ओर; नेत्रहीना की आत्मकथा

सन् १९२९ ई० में ही 'एक कहानी प्रेमी' द्वारा लिखित 'उस ओर' और 'नेत्रहीना की आत्मकथा' नामक दो उपन्यास एक ही शीर्षक 'उस ओर और नेत्रहीना' से पं० सुदर्शनाचार्य द्वारा, गृहलक्ष्मी कार्यालय, इलाबाद से प्रकाशित हुए।[१] पहला उपन्यास अन्य पुरुष शैली में लिखा गया है ओर दूसरा आत्मचरित की शैली में।

घृणामयी (लज्जा)

सन् १९२९ ई० में ही इलाचन्द्र जोशी लिखित 'घृणामयी' नामक उपन्यास हिन्दी ग्रंथ रत्नाकर कार्यालय, बम्बई से प्रकाशित हुआ। आर्य भाषा पुस्तकालय, काशी में इस उपन्यास की एक प्रति है पर मुखपृष्ठ के नष्ट हो जाने से इसके सम्बन्ध में कोई सूचना नहीं मिलती। उपर्युक्त सूचनाएँ आ० भा० पु० की पुस्तकसूची से प्राप्त की गयी हैं। डॉ० माताप्रसाद गुप्त ने भी 'घृणामयी' का यही प्रकाशनकाल लिखा है।[२] सन् १९४७ ई० में इस उपन्यास का दूसरा संस्करण 'अल्प संशोधित' रूप में 'लज्जा' शीर्षक से भारती भंडार, लीडर प्रेस, इलाहाबाद से प्रकाशित हुआ।[३] इस उपन्यास का तृतीय संस्करण १९५० ई० में प्रकाशित हुआ।[४]

इस उपन्यास में आत्मकथात्मक शैली में एक युवती के पश्चात्ताप की कहानी है, जो यौवन के प्रथम चरण में अपने पिता और भाई की इच्छा के प्रतिकूल एक चरित्र हीन डॉक्टर युवक से प्रेम करने लगती है। इस आघात को न सह सकने के कारण भाई आत्महत्या कर लेता है और पिता की, मस्तिष्क की नश फट जाने के कारण, मृत्यु हो जाती है।

इस उपन्यास में प्रेमचन्द के उपन्यासों की तरह सामाजिक जीवन का चित्रण न कर व्यक्तिगत समस्या को विषय बनाया गया है। मनोवैज्ञानिक दृष्टि से उपन्यास में कोई गहराई नहीं है। अचेतन मन के खिलवाड़ का कुछ चित्रण है, पर वह आरोपित लगता है, सहज नहीं। बीच बीच में किसी किसी विषय पर पात्रों के लम्बे व्याख्यान हैं

---

१. प्रा० स्था०—आ० भा० पु० काशी; मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि, उस ओर और नेत्रहीना, स्त्री पाठ्य और शिक्षाप्रद दो अनूठे उपन्यास : लेखक एक कहानी प्रेमी, संपादक और प्रकाशक–पं० सुदर्शनाचार्य गृहलक्ष्मी कार्यालय, इलाहाबाद, प्रथम बार सं० १९८६ वि० : पृष्ठ सं० क्रमश : ११५ और ९६, 'उस ओर' अन्य पुरुष शैली में और 'नेत्रहीन को आत्मकथा' आत्मचरित की शैली में रचित है।

२. डॉ० माताप्रसाद गुप्त, हि० पु० सा०, पृ० ३८४।

३. प्रा० स्था०—आ० भा० पु० काशी। मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—लज्जा, ले० इलाचन्द्र जोशी, प्र० भारतीभंडार, लीडर प्रेस, इलाहाबाद द्वितीय संस्करण सं० २००४।

४. प्रा० स्था०—बि० रा० भा० प० पु०, पटना।

हिन्दी पुस्तक-भंडार, प्रयाग से प्रकाशित हुआ।[१] पुस्तक के मुखपृष्ठ पर प्रकाशनकाल नहीं दिया हुआ है, पर 'दो बातें' के नीचे "सौर ८-८-१९८७ मुद्रित है, जिससे इसका प्रकाशन काल १९३० ई० सिद्ध होता है। यह एक अत्यन्त साधारण कोटि का उपन्यास है। आदर्श प्रेम तथा देशभक्ति आदि का चित्रण लेखक का उद्देश्य जान पड़ता है।

मृत्युंजय

सन् १९३० ई० में ही श्री गुलाब रत्न वाजपेयी 'गुलाब' द्वारा लिखित 'मृत्युंजय' नामक उपन्यास गंगा पुस्तकमाला कार्यालय, लखनऊ से प्रकाशित हुआ।[२]

मालिका : बहूरानी : स्वप्नों के चित्र

डॉ० माताप्रसाद गुप्त के अनुसार सन् १९३० ई० में श्री जनार्दन प्रसाद झा द्विज लिखित 'मालिका' नामक उपन्यास फाइन आर्ट प्रिंटिंग काटेज, इलाहाबाद से,[३] शंभूदयाल सक्सेना लिखित 'बहूरानी' नामक उपन्यास रामकली देवी, इलाहाबाद से[४] तथा रामनरेश त्रिपाठी लिखित 'स्वप्नों के चित्र' नामक उपन्यास हिन्दी मन्दिर इलाहाबाद से[५] प्रकाशित हुए।

महाकाल

सन् १९३० ई० में ही पं० श्रीकृष्ण मिश्र लिखित 'महाकाल' नामक उपन्यास वाणी मंदिर, मुंगेर से प्रकाशित हुआ।[६] इस उपन्यास में दार्जिलिंग और उसके आसपास के पार्वत्य प्रान्त में निवास करने वाले पहाड़ियों के जीवन का चित्रण किया गया है। लेखक के 'वक्तव्य' के अनुसार, "हिन्दू जाति का एक सबल अंग दार्जिलिंग और उसके आस पास के पार्वत्य प्रान्त में बसता है। पहाड़ी सुन्दर और बलिष्ट हैं परन्तु वे हैं अत्यन्त सीधे-सादे। उनकी स्त्रियों की दशा अत्यन्त शोचनीय है। आधुनिक सभ्यता के संसर्ग से विलासिता का उन लोगों में अधिक प्रसार है। शिक्षा, विशेषकर धार्मिक शिक्षा, के अभाव के

---

१. प्रा० स्था०—मा० पु०, पटना। मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—बड़े बाबू (एक मौलिक, सामयिक और भावपूर्ण उपन्यास) लेखक—'माया' सम्पादक श्री विजय वर्मा, प्र०—गान्धी हिन्दी पुस्तक भंडार, प्रयाग, प्रथम बार १ हजार, पृ० सं० २१८।

२. प्रा० स्था०—आ० भा० पु०, काशी। मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—मृत्युंजय (उपन्यास), ले०—गुलाब रत्न वाजपेयी 'गुलाब', प्रका०—गंगा पुस्तकमाला कार्यालय, प्रकाशक और विक्रेता लखनऊ, प्रथमावृत्ति सं० १९८७ वि०, पृ० सं० १४०।

३. डॉ० माताप्रसाद गुप्त, हि० पु० सा०, पृ० ४४९।

४. उपरिवत्, पृ० ६३२।

५. उपरिवत्, पृ० ५८६।

६. प्रा० स्था०—आ० भा० पु० काशी। मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—महाकाल, पार्वत्य प्रान्त की प्रेम-कहानी, अत्यन्त रोचक सामाजिक उपन्यास, लेखक पं० श्रीकृष्ण मिश्र, एम० ए०, बी० एल०, प्रकाशक वाणी मंदिर, मुंगेर, प्रथमबार २०००। (वक्तव्य के अन्त में 'होली सं० १९८६, तिथि मुद्रित है)

वेदना

फरवरी, १९३१ ई० की 'गंगा' मासिक पत्रिका के 'सामयिक साहित्य' प्रसंग से ज्ञात होता है कि इसके पूर्व श्रीयुत विश्वनाथ सिंह शर्मा लिखित 'वेदना' नामक उपन्यास सत्साहित्य प्रसारण मंडल, कलकत्ता से प्रकाशित हो चुका था। उक्त समीक्षा के अनुसार 'वेदना' पाठक के हृदय में अस्पृश्योद्धार और शुद्धि के प्रति संवेदना उत्पन्न करती है, और करती है इशारा हिन्दू-मुस्लिम ऐक्य की ओर।"[1]

डॉ० माताप्रसाद गुप्त के अनुसार यह उपन्यास सन् १९३० ई० में प्रकाशित हुआ था।

भ्रातृप्रेम

'गंगा' सितम्बर १९३१ ई० में प्रकाशित 'पुस्तक समीक्षा' से ज्ञात होता है कि इसके पूर्व ठाकुर लक्ष्मीनारायण सिंह 'सुधांशु' लिखित 'भ्रातृप्रेम' नामक शिक्षाप्रद सामाजिक उपन्यास (पृ० सं० ३६) बासुदेव मंडल (झिकटिया, गुरुबाजार, पूर्णिया) से प्रकाशित हो चुका था।[2] उक्त समीक्षा के अनुसार इस उपन्यास में "एक धनी परिवार के दो सहोदरों में उनकी अशिक्षित पत्नियों के कारण कलह होना, फिर अलग-अलग होना, अभिभावक के अभाव में छोटे भाई का शराबी और दुश्चरित्र तथा चोर निकल जाना, अदालत द्वारा छोटे भाई के दंडित हो जाने पर बड़े भाई का आत्महत्या कर लेना, बड़े भाई की आत्म-हत्या की खबर पाकर जेल ही में छोटे भाई का प्राण त्यागना आदि वर्णित हैं।"[3]

स्फुलिंग : अंजली

डॉ० माताप्रसाद गुप्त के अनुसार सन् १९३१ ई० में ही जहूरबख्श लिखित 'स्फुलिंग' नामक उपन्यास शिशु प्रेस, इलाहाबाद से[4] तथा तेजरानी पाठक लिखित 'अंजली' नामक उपन्यास फाइनआर्ट प्रिंटिंग काटेज, इलाहाबाद से[5] प्रकाशित हुआ।

आदर्श संन्यासी

सन् १९३१ ई० में रामानंद द्विवेदीकृत 'आदर्श संन्यासी' नामक उपन्यास बाबू बैजनाथ प्रसाद द्वारा, बनारस से प्रकाशित हुआ।[6]

---

१. गंगा, प्रवाह १, तरंग ४ फरवरी १९३१ सामयिक-साहित्य।

२. गंगा, प्रवाह १, तरंग ११, सितम्बर १९३१, पुस्तक-समीक्षा।

३. उपरिवत्।

४. डॉ० माताप्रसाद गुप्त, हि० पु० सा०, पृ० ४५५

५. उपरिवत्, पृ० ४७२।

६. प्रा० स्था०—आ० भा० पु० काशी। मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—आदर्श संन्यासी, एक शिक्षाप्रद सामाजिक उपन्यास, लेखक रामानंद द्विवेदी, जलालपुर, माफी, चुनार, मुद्रक तथा प्रकाशक—बाबू बैजनाथ प्रसाद, बुकसेलर—राजा दरवाजा, बनारस सिटी, प्रथम बार १०००, १९३१, पृ० सं० १५२।

प्यास

सन् १९३२ ई० मे कृपानाथ मिश्र लिखित 'प्यास' नामक उपन्यास श्री रमेश प्रसाद द्वारा पटना से प्रकाशित हुआ।[१] दिसंबर १९६२ की 'सरस्वती' में इस उपन्यास की आलोचना प्रकाशित हुई थी।[२]

इस उसन्यास में आत्मकथा के रूप में एक पात्र की भटकन की कहानी प्रस्तुत की गयी है। इसकी नवीनता यह है कि इसमें विशेष रूप से एक ही पात्र के मनोभावों का चित्रण है। मनोभावों के अंकन में मनोवैज्ञानिक यथार्थ एवं गहराई के स्थान पर भावोच्छ्वास की प्रधानता है। इसकी भाषा परम्परा से कुछ अलग हट कर है, जिस पर विचार किया जा सकता है। मेरी समझ से व्यक्तिवादी उपन्यास लेखन की दिशा में यह एक प्रयास मात्र है। किसी महत्त्वपूर्ण उपलब्धि के रूप में इसे स्वीकारना कठिन है।

माधुरी

सन् १९३२ ई० में ही श्रीयुत कन्हैया लाल जैन लिखित 'माधुरी' नामक उपन्यास लहरी बुक डिपो, बनारस सिटी से प्रकाशित हुआ।[३]

लखपती कैसे हुआ ?

इसी वर्ष श्री आनन्दि प्रसाद श्रीवास्तव लिखित 'लखपती कैसे हुआ ? 'नामक कथा-पुस्तक ओझा बन्धु आश्रम, इलाहाबाद से प्रकाशित हुई।[४] 'परिचय' के अनुसार एक बालक जिन गुणों के आधार पर विद्वान्, धनी और यशस्वी हो सकता है, इसे लेखक ने बड़ी सफलता के साथ इस पुस्तक में बतलाया है।

चन्द्रग्रहण

१९३२ ई० में ही श्री कांचीनाथ झा 'किरण' लिखित 'चंद्रग्रहण' नामक उपन्यास मैथिली साहित्य समिति, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, काशी से प्रकाशित हुआ।[५]

---

१. प्रा० स्था०—नवयुवक पुस्तकालय, चाँदपूरा, पो० विदूपुर, जिला मुजफ्फरपुर; मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—प्यास, ले० कृपानाथ मिश्र, प्र० श्री रमेश प्रसाद, पटना, १९३२, मूल्य ।।।), पृ० सं० १४१

२. सरस्वती, दिसम्बर १९३२ ई०, पुस्तक समीक्षा।

३. प्रा० स्था०—आ० भा० पु० काशी। मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—माधुरी, सामाजिक उपन्यास, लेखक श्रीयुत कन्हैया लाल जैन, प्रकाशक—लहरी बुक डिपो, बनारस सिटी, १९३२, पृ० सं० १३३।

४. प्रा० स्था०—आ० भा० पु० काशी। मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—लखपती कैसे हुआ ? (सेवा और स्वावलम्बन की एक रोचक कहानी), लेखक—श्री आनन्दि प्रसाद श्रीवास्तव, प्रकाशक—ओझाबन्धु आश्रम, इलाहाबाद, पहला संस्करण १ नवम्बर ३२, पृ० सं० ९६।

५. प्रा० स्था०—आ० भा० पु० काशी। मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—चन्द्रग्रहण (उपन्यास), लेखक—कांचीनाथ झा किरण, प्रकाशक—मैथिली साहित्य समिति, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, १९३२ ई०। प्रथम संस्करण।

मेरी आह

सन् १९३२ ई० में ही परिपूर्णानन्द वर्मा कृत 'मेरी आह' नामक उपन्यास बलदेव मित्र मंडल, बनारस से प्रकाशित हुआ।[१] इस उपन्यास में हिन्दू-मुस्लिम दंगे को विषय बनाकर दोनों धर्मों की सांस्कृतिक एकता पर बल दिया गया है।

किसान की बेटी

इसी वर्ष श्री नरसिंह राम शुक्ल लिखित 'किसान की बेटी' नामक उपन्यास सौन्दर्य प्रकाशन मन्दिर, प्रयाग से प्रकाशित हुआ।[2] पुस्तक के मुखपृष्ठ पर लेखक का नाम नहीं दिया हुआ है। 'आरम्भ के दो शब्द' के अन्त में लेखक का नाम है। इस उपन्यास का लगभग एक तिहाई अंश रीवां से प्रकाशित होने वाले 'प्रकाश' नामक पत्र में 'रामप्रिया देवी' के कल्पित नाम से प्रकाशित हुआ था।

नारी हृदय : कमला : कुबेर की चाकरी

१९३२ ई० में ही शिवरानी देवी लिखित 'नारी हृदय' नामक उपन्यास सरस्वती प्रेस, बनारस से[3], रूपनारायण पांडेय कृत 'कमला' नामक उपन्यास सरस्वती पुस्तक भंडार, लखनऊ से[४] तथा श्रीयुत 'मुकुर' लिखित 'कुबेर की चाकरी' नामक उपन्यास साहित्य सेवा मन्दिर कार्यालय, जबलपुर से[५] प्रकाशित हुआ।

त्यागी युवक

आषाढ़ १९९० (जून-जुलाई १९३३ ई०) के 'अग्रवाल' मासिक पत्र की 'पुस्तक-समीक्षा' से ज्ञात होता है कि इसके पूर्व श्री विश्वनाथ सिंह शर्मा लिखित 'त्यागी युवक' नामक उपन्यास सत्साहित्य प्रसारक मंडल, मुक्ताराम बाबू स्ट्रीट, कलकत्ता से प्रकाशित हो चुका था।[६] उक्त समीक्षा के अनुसार इस उपन्यास में 'नये समाज की कल्पना की गयी है जिसमें हिन्दू-मुसलमान-ईसाई आदि सब हिलमिल कर रहते हैं। साथ ही लेखक ने बड़ी खूबी के साथ एक ओर समाज में प्रचलित जमीन्दारी और अधिकार सम्पन्नता की ठसक तथा दूसरी ओर जन-साधारण में बढ़ते हुए सेवाभाव और उदार दृष्टिकोण का चित्रण किया है।'

---

१. प्रा० स्था०—आ० भा० पु० काशी। मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—मेरी आह (सामाजिक उपन्यास) लेखक—श्रीयुत् परिपूर्णानन्द जी वर्मा, १९३२, प्रकाशक—बलदेव मित्र मंडल, राजा दरवाजा, बनारस सिटी, प्रथम संस्करण।

२. प्रा० स्था०—आ० भा० पु० काशी। मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—किसान की बेटी, प्रथम बार १०००, प्रकाशक—श्री नन्दकिशोर चड्ढा, सौन्दर्य प्रकाशन मन्दिर, प्रयाग (पृष्ठ भाग) पृ० सं० १४०।

३. डॉ० माताप्रसाद गुप्त, हि० पु० सा०, पृ० ६४१।

४. आ० भा० पु० काशी की पुस्तक सूची।

५. उपरिवत्।

६ अग्रवाल, वर्ष ३, सं० १, आषाढ़ १९९०, पुस्तक समीक्षा (त्यागी युवक)

और अनुचित मार्गों का अवलम्बन करता है, परन्तु उसका परिणाम कितना क्लेशमय और विनाशकारी होता है, इसको वह नहीं जानता। यही नहीं, करुणा के समान रूपवान और शिक्षित युवतियाँ किस प्रकार अपने कर्मबल, चरित्रबल और आत्मबल के द्वारा जीवन की प्रतिकूल परिस्थितियों पर विजय प्राप्त करती हैं और अपने चरित्र की रक्षा, धर्म की रक्षा तथा सतीत्व की रक्षा में वे किस प्रकार अपने प्राणों की बाजी लगा देती हैं। इसकी रोमांचकारी घटनाएँ पढ़कर स्त्रियों और पुरुषों के अन्तःकरण में चरित्र और सतीत्व के प्रति श्रद्धा उत्पन्न होती है।"

अश्रुकण

सन् १९३३ ई० में पुरुषोत्तमदास गौड़ 'कोमल' लिखित 'अश्रुकण' नामक उपन्यास गौड़ पुस्तक भंडार, कटरा, प्रयाग से प्रकाशित हुआ।[1] इस उपन्यास में स्त्री जाति, विशेषकर विधवाओं के कष्टमय जीवन का चित्रण किया गया है। कमला उपन्यास की प्रमुख पात्र है। समूचा उपन्यास पत्र शैली में लिखित है।

रूपवती

सन् १९३३ ई० में ही अखौरी वासुदेव नारायण सिंह द्वारा लिखित 'रूपवती' नामक 'एक सामाजिक उपन्यास' स्वयं ग्रन्थकर्ता द्वारा, पटना से प्रकाशित हुआ।[2] इस उपन्यास में बड़े साहस के साथ विवाह और नैतिकता विषयक परम्परागत मान्यताओं को चुनौती दी गयी है। उपन्यास का नायक एक 'पर स्त्री' को प्यार ही नहीं करता उसके साथ शारीरिक सम्बन्ध भी स्थापित करता है और लेखक की सहानुभूति भी उसे प्राप्त है। अन्ततः उपन्यासकार 'रूपवती' को विधवा बनाकर नायक के साथ उसका विवाह सम्पन्न करा देता है। उपन्यास में धन के लोभ या अन्य कारणों से बेमेल विवाह की आलोचना की गयी है। कलात्मक दृष्टि से उपन्यास महत्त्वहीन है।

हत्यारे का व्याह : मकरंद : विधवा के पत्र

डॉ० माताप्रसाद गुप्त के अनुसार सन् १९३३ ई० में श्री कन्हैया लाल, बी० ए०, एल० एल० बी० लिखित 'हत्यारे का व्याह',[3] श्री आनंदि प्रसाद श्रीवास्तव लिखित 'मकरंद'[4] तथा चन्द्रशेखर शास्त्री लिखित 'विधवा के पत्र' नामक उपन्यास इलाहाबाद से प्रकाशित हुए।

---

१. प्रा० स्था०—सिनहा पुस्तकालय : मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—अश्रुकण, लेखक पं० पुरुषोत्तमदास गौड़ 'कोमल', प्रकाशक—गौड़ पुस्तक भंडार, कटरा, प्रयाग, प्रथम संस्करण १९३३, मूल्य १), पृ० संख्या १२४।

२. प्रा० स्था०—आ० भा० पु० काशी तथा सिनहा पुस्तकालय, पटना, मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—रूपवती, एक सामाजिक उपन्यास, अखौरी वासुदेव नारायण सिंह, मीठापुर, पटना, प्रथमावृत्ति १९३३, प्रकाशक—ग्रन्थकर्त्ता, पृ० सं० ५०।

३. डॉ० माताप्रसाद गुप्त, हि० पु० सा०, पृ० २९१।

४. उपरिवत्, पृ० ३८२।

सम्पादिका : दो विधवाएँ : वेश्या का हृदय

सन् १९३३ ई० में ही वेनीप्रसाद वाजपेयी कृत 'सम्पादिका' नामक उपन्यास रंगेश्वर पब्लिशिंग हाउस, इलाहाबाद से, शंकर शरण प्रसाद सिंह लिखित 'दो विधवाएँ' नामक उपन्यास हिन्दी पुस्तक एजेंसी, कलकत्ता से तथा धनीराम प्रेम लिखित 'वेश्या का हृदय' नामक उपन्यास भारत राष्ट्रीय कार्यालय, अलीगढ़ से प्रकाशित हुए ।[१]

प्रेम परिणाम

सन् १९३३ ई० में ही पं० विश्वम्भर नाथ जिज्जा कृत 'प्रेम परिणाम' नामक उपन्यास नारायण दत्त सहगल एंड सन्स, लाहौर से प्रकाशित हुआ ।[२]

प्रतिमा

सन् १९३४ ई० में श्री गोविन्दवल्लभ पन्त लिखित 'प्रतिमा' नामक उपन्यास गंगा ग्रन्थागार, लखनऊ से प्रकाशित हुआ ।[३]

सच्ची झूठ

सन् १९३४ ई० में ही लाला रामजीदास वैश्य लिखित 'सच्ची झूठ' नामक उपन्यास पुस्तक भवन, बनारस सिटी से प्रकाशित हुआ ।[४] डॉ० माताप्रसाद गुप्त ने इसका प्रकाशन काल १९४० ई० दिया है, जो भ्रामक है[५] । इसका द्वितीय संस्करण १९४० ई० में छपा ।[६]

लेखक—पं० नित्यानन्द पन्त, प्रकाशक—पन्त एंड को०, १००, हरीसन रोड कलकत्ता, प्रथम वार संवत् १९९०, पृ० सं० ७४ ।

१. आ० भा० पु० काशी की पुस्तक सूची ।

२. प्रा० स्था०—आ० भा० पु० काशी । मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—प्रेम परिणाम, शिक्षाप्रद, मनोरंजक और मौलिक उपन्यास, लेखक—श्रीयुत् पं० विश्वम्भर नाथ जिज्जा, भूतपूर्व सम्पादक भविष्य, हिन्दू पंच आदि, प्रकाशक—नारायण दत्त सहगल एंड सन्ज, पुस्तक विक्रेता, लाहौरी दरवाजा, लाहौर, प्रथम बार १०००, पृ० सं० १९६ । (मुखपृष्ठ पर प्र० का० नहीं दिया हुआ है । 'भूमिका' के अन्त में १० जुलाई सन् १९३३' मुद्रित है) ।

३. प्रा० स्था०—आ० भा० पु० काशी । मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—प्रतिमा, लेखक—गोविन्द वल्लभ पन्त, संपादक—श्री दुलारे लाल भार्गव (सुधा संपादक), १२ रेखाचित्र सहित, मिलने का पता—गंगा ग्रंथागार ३६, लाटूश रोड, लखनऊ, प्रथमावृत्ति सं० १९९१ वि० ।

४. प्रा० स्था०—वि० रा० भा० प० पु०, पटना । मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि-सच्ची झूठ (एक सामाजिक उपन्यास), ले०—लाला रामजीदास वैश्य, ताजिरुल मुल्क, प्रकाशक—पुस्तक भवन, बनारस सिटी, प्रथमावृत्ति जुलाई १९३४ ई० ।

५. डॉ० माताप्रसाद गुप्त, हि० पु० सा०, पृ० सं० २४० ।

६. प्रा० स्था०—आ० भा० पु०, काशी ।

प्रस्तुत किया गया है। उपन्यासकार की सामाजिक चेतना अपने युग से आगे की है। राम लाल के चरित्र के माध्यम से उसने सामाजिक विषमता तथा समाज में फैले भ्रष्टाचार का अच्छा चित्रण किया है। उपन्यास आत्मकथा की शैली में लिखा गया है। हरी बाबू आत्मकहानी के रूप में रामलाल का चरित्र प्रस्तुत करते हैं।

कुमार सुन्दर

इसी वर्ष पटना के रामजय श्री पाण्डेय लिखित 'कुमार सुन्दर' नामक उपन्यास हिन्दी साहित्य मंडल, दिल्ली से प्रकाशित हुआ।[1]

हीरे की अंगूठी

१९३४ ई० में ही श्रीमती जगदम्बा देवी रचित 'हीरे की अंगूठी' नामक उपन्यास साहित्य पुस्तकालय, बनारस सिटी से प्रकाशित हुआ।[2] इस उपन्यास में तत्कालीन शिक्षा प्रणाली के दोषों का चित्रण किया गया है।

बिजली का पंखा

इसी वर्ष सी० बी० गुप्त (छेदी लाल गुप्त) कृत 'बिजली का पंखा' नामक उपन्यास नवसंदेश ग्रन्थमंडल, बम्बई से प्रकाशित हुआ।[3] इस उपन्यास में बेकारी की समस्या का चित्रण किया गया है।

कपटी

१९२४ ई० में ही रूप नारायण पांडेय रचित 'कपटी' नामक उपन्यास साहित्य भवन लिमिटेड, प्रयाग से प्रकाशित हुआ।[4]

उलझन

१९३४ ई० में ही श्रीनाथ सिंह लिखित 'उलझन' नामक उपन्यास इंडियन प्रेस प्रयाग से प्रकाशित हुआ।[5]

---

१. प्रा० स्था०—आ० भा० पु० काशी, मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—कुमार सुन्दर (उपन्यास), लेखक—रामजय श्रीपाण्डेय, बी० ए०, प्रकाशक हिन्दी साहित्य मण्डल, बाजार सीताराम, दिल्ली, प्रथम संस्करण १९३४, पृ० सं० २०६।

२. प्रा० स्था०—आ० भा० पु० काशी। मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—हीरे की अंगूठी, लेखिका—श्रीमती जगदम्बा देवी, पुत्रवधू—श्रीमान् अशर्फीलाल जी वकील, जौनपुर, प्रकाशक-साहित्य पुस्तकालय, बनारस सिटी, प्रथम संस्करण १९३४।

३. प्रा० स्था०—आ० भा० पु० काशी; मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—बिजली का पंखा, एक मौलिक आर्थिक सामाजिक उपन्यास, लेखक—सी० बी० गुप्त, प्रकाशक नवसंदेश ग्रन्थ मण्डल, १४४, कालबा देवी रोड, बम्बई-२, प्रथमावृत्ति १९३४, पृ० सं० ३३०।

४. प्रा० स्था०—प० वि० पु०। मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—कपटी, रूपनारायण पांडेय, प्रकाशक साहित्य भवन लिमिटेड, प्रयाग, अप्रैल १९३४, पृ० सं० २५६ से ऊपर।

५. प्रा० स्था०—सिनहा पुस्तकालय; मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—उलझन (उपन्यास), लेखक

विद्यार्थी' नामक उपन्यास श्री राजस्थान साहित्य मंडल, अजमेर से प्रकाशित हुआ।[१] 'प्राक्कथन' के अनुसार 'इस पुस्तक के लिखने का मुख्य उद्देश्य यह है कि हिन्दुस्तान से इंगलैंड जाने वाले विद्यार्थी और उनके अभिभावक वहाँ की स्थिति को समझें, परखें और उससे जीवन निर्माण में सहायता ले सकें।[२]

भूला यात्री

सन् १९३५ ई० में ही बाँकेलाल चतुर्वेदी लिखित 'भूला यात्री' नामक उपन्यास चतुर्वेदी स्टोर्स, टूँडला से प्रकाशित हुआ।[३] इस 'उपन्यास' में अन्यापदेशिक शैली में 'जीवात्मा' की यात्रा का विवरण प्रस्तुत किया गया है।

समाज की बात

सन् १९३५ ई० में ही श्री आदित्य मिश्र 'कुमार' लिखित 'समाज की बात' नामक उपन्यास चाँद प्रेस लिमिटेड, इलाहाबाद से प्रकाशित हुआ।[४]

कर्त्तव्यपुरी की रानी

सन् १९३५ ई० में ही अवध उपाध्याय लिखित 'कर्त्तव्यपुरी की रानी' नामक उपन्यास साहित्य सेवक कार्यालय, काशी से प्रकाशित हुआ।[५] 'प्राक्कथन' के अनुसार 'इस छोटे से उपन्यास में दर्शन-शास्त्र के विषय को समझाने का प्रयत्न किया गया है। इसमें अपने तथा पाश्चात्य देश के दार्शनिकों के सिद्धान्तों का वर्णन है।"[६]

स्वयंसेवक

१९३५ ई० में ही द्वारका प्रसाद लिखित 'स्वयंसेवक' नामक उपन्यास अशोकाश्रम, लोहरदगा से प्रकाशित हुआ।[७] 'प्रस्तावना' के अनुसार यह एक बाल उपन्यास है।

---

१. प्रा० स्था०—मा० पु० पटना। मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—लन्दन में भारतीय विद्यार्थी, लेखक राजकुमार मानसिंह जी, प्रकाशक—श्री राजस्थान साहित्य मंडल, अजमेर, प्रथम बार १५५०, अप्रैल १९३५, पृ० सं० २५०।

२. उपरिवत्, प्राक्कथन।

३. प्राप्ति स्था०—रा० भा० प० पु०, पटना, मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—भूला यात्री (अध्यात्म ज्ञान सम्बन्धी अनूठा उपन्यास), लेखक—पं० बाँके लाल चतुर्वेदी, मन्त्री विद्या समर्द्धिनी समिति, टूँडला (आगरा), प्रकाशक—चतुर्वेदी स्टोर्स, टूँडला, १९३५, प्रथम बार १०००।

४. प्रा० स्था०—आ० भा० पु० काशी। मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—समाज की बात (मनोरंजक सामाजिक उपन्यास), लेखक—श्री आदित्य मिश्र 'कुमार,' प्रकाशक—चाँद प्रेस लिमिटेड, चन्द्रलोक, इलाहाबाद, पहला संस्करण मई १९३५, पृ० सं० २८४।

५. प्रा० स्था०—मा० पु० पटना। मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—कर्त्तव्यपुरी की रानी (दार्शनिक उपन्यास), लेखक-अवध उपाध्याय, प्रकाशक-साहित्य सेवक कार्यालय, काशी, प्रथमावृत्ति १९९२।

६. उपरिवत्, प्राक्कथन।

७. प्रा० स्था०—आ० भा० पु०, काशी। मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—स्वयंसेवक, लेखक—द्वारका प्रसाद, प्रकाशक—अशोकाश्रम, लोहरदगा, प्रथम बार १०००, १९३५ ई०।

इन्दिरा बी० ए०

इसी वर्ष पं० सुदर्शन लाल त्रिवेदी कृत 'इन्दिरा बी० ए०' नामक उपन्यास निराकार पुस्तकालय, बनारस सिटी से प्रकाशित हुआ।[1]

वे चारों

१९३५ ई० में ही पं० पुरुषोत्तम दास गौड़ 'कोमल' लिखित 'वे चारों' नामक उपन्यास गौड़ पुस्तक भंडार, कटरा, प्रयाग से प्रकाशित हुआ।[2] इस उपन्यास में चार व्यक्तियों के जीवन की घटनाओं का वर्णन है।

घर की राह

सन् १९३५ ई० में ही श्री इन्द्र बसावड़ा लिखित 'घर की राह' नामक उपन्यास सरस्वती प्रेस, बनारस से प्रकाशित हुआ।[3] यह एक सामाजिक समस्या प्रधान उपन्यास है। इसमें एक हरिजन अनाथ बालक और बालिका के जीवन का चित्रण किया गया है। हरिजनों और अछूतों की समाज में क्या स्थिति है तथा किस प्रकार उन्हें दर-दर की ठोकरें खानी पड़ती हैं, इसका लेखक ने वास्तविक चित्र प्रस्तुत किया है। उच्चवर्गीय समाज के अत्याचार और शोषण के फलस्वरूप हरिजन और अछूत ईसाई बन जाते हैं, लेखक ने इसका भी संकेत किया है। उपन्यासकार ने ढूँड़ा उर्फ मुन्नू नामक हरिजन बालक के चरित्र को आदर्श रूप में प्रस्तुत किया है जो प्रलोभनों और कठिनाइयों के बावजूद ईसाई नहीं बनता।

भूल पर भूल

सन् १९३५ ई० में ही श्री वेणीराम त्रिपाठी 'श्रीमाली' लिखित 'भूल पर भूल' नामक उपन्यास मेवालाल एंड को०, कचौड़ी गली, बनारस से प्रकाशित हुआ।[4] इस उपन्यास में सिनेमाजगत् में फैले व्यभिचारों तथा एक पतिव्रता रमणी की सच्ची पतिभक्ति का वर्णन किया गया है।

---

१. प्रा० स्था०—आ० भा० पु०, काशी। मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—इन्दिरा बी० ए०, लेखक—पण्डित सुदर्शन लाल जी त्रिवेदी वैद्य शास्त्री 'चक्र', प्रकाशक—निराकार पुस्तकालय, लाजपत राय रोड, बनारस सिटी, प्रथमावृत्ति १९३५, पृ० सं० १८०।

२. प्रा० स्था०—आ० भा० पु०, काशी। मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—वे चारों (एक उच्च कोटि का मौलिक उपन्यास), लेखक—पं० पुरुषोत्तमदास गौड़ 'कोमल', प्रकाशक—गौड़ पुस्तक भंडार, कटरा, प्रयाग, पहली बार बारह जनवरी १९३५ ई०, पृ० सं० १२५।

३. प्रा० स्था०—प० का० पु०, पटना। मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—घर की राह, श्री इन्द्र बसावड़ा, प्रकाशक—सरस्वती प्रेस, बनारस, प्रथम संस्करण सन् १९३५।

४. प्रा० स्था०—आ० भा० पु० काशी; मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—भूल पर भूल, "भोले-भाले जिस समाज में धँसी कुप्रथाएँ प्रतिकूल। होवें सब निर्मूल न हो भूलें फिर कभी भूल पर भूल।" लेखक—(सती सामर्थ्य, नारी निकुंज आदि के रचयिता) श्री वेणीराम त्रिपाठी 'श्रीमाली', प्रकाशक—मेवालाल एंड को०, कचौड़ी गली, बनारस, सं० १९९२, प्रथमावृत्ति, पृ० सं० ११२।

इस उपन्यास में प्रेम और विवाह की समस्या का चित्रण है। अलौकिक प्रेम और 'प्राण जाई बरु वचन न जाई' के आदर्श का प्रतिपादन लेखिका का प्रमुख उद्देश्य है। भारतीय नारी की समस्याओं और उलझनों का अच्छा चित्रण उपन्यास में हुआ है।

अपराधी कौन

इसी वर्ष श्री जीवनदास अग्रवाल लिखित 'अपराधी कौन' नामक उपन्यास चौधरी एंड संस, बनारस सिटी से प्रकाशित हुआ।[1]

कंचन

१९३६ ई० में ही बेनी प्रसाद वाजपेयी 'मंजुल' कृत 'कंचन' नामक उपन्यास इंडियन बुक एजेंसी, इलाहाबाद से प्रकाशित हुआ।[2] इस उपन्यास में अशिक्षित सासों द्वारा अपनी बहुओं पर किये जाने वाले अत्याचारों का वर्णन किया गया है। 'भूमिका' के अनुसार "बहू आयी कि सास ने रोब गाँठना शुरू कर दिया। अपने लड़के से उसे पिटाना, दिन-रात गालियाँ बकना, मेल के स्थान में लड़-झगड़ कर बहू को बदनाम करना देहात की राक्षसी सासों का नित्य कर्म हो रहा है। मैंने ऐसी सैकड़ों घटनाएँ स्वयं देखी हैं ····गाँव की शैतान मंडली भी कम नहीं है।····भले घर के लड़कों को बरबाद करना, दूसरे की बहू-बेटियों को ताकना, पवित्र चरित्र पर कलंक का धब्बा लगाने के लिए आगे बढ़ना उसका भी मुख्य कर्त्तव्य हो रहा है। फलस्वरूप स्वर्गीय ग्राम जीवन नरक की भयंकर अग्नि से भी अधिक दुखदायी हो गया है। ... इन्हीं समस्त बुराइयों को दूर भगाने के लिए, 'कंचन' पाठकों के समक्ष उपस्थित है।"

गरीब का धन

इसी वर्ष राजनारायण चतुर्वेदी 'आजाद' रचित 'गरीब का धन' नामक उपन्यास हिन्दी पुस्तकालय, बनारस से प्रकाशित हुआ[3]

समाज का पाप

१९३६ ई० में ही बनारसी प्रसाद 'भोजपुरी' लिखित 'समाज का पाप' नामक

उषा देवी मित्रा, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, नई सड़क, दिल्ली (पृष्ठ भाग), प्रथम संस्करण १९३६, द्वितीय संस्करण १९४२, तृतीय संस्करण १९५७।

१. प्रा० स्था०—आ० भा० पु० काशी। मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—अपराधी कौन, लेखक—श्री जीवन दास अग्रवाल, चौधरी एंड संस, पुस्तकविक्रेता तथा प्रकाशक, बनारस सिटी, प्रथम संस्करण, मार्च १९३६, पृ० सं० १४०।

२. प्रा० स्था०—आ० भा० पु० काशी। मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—कंचन (सामाजिक उपन्यास) लेखक—बेनी प्रसाद वाजपेयी 'मंजुल', प्रकाशक—इंडियन बुक एजेंसी, इलाहाबाद, प्रथम बार १९३६, पृ० सं० ७५।

३. प्रा० स्था०–आ० भा० पु० काशी। मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—गरीब का धन (मौलिक सामाजिक उपन्यास), लेखक—राजनारायण चतुर्वेदी 'आजाद', प्रकाशक शंकर सिंह पुस्तकालय, चौक, बनारस सिटी, प्रथम संस्करण सं० १९९३, पृ० सं० ८४।

जययात्रा : मेरा देश

१९३६ ई० में ही मन्मथ नाथ गुप्त लिखित 'जययात्रा' नामक उपन्यास साहित्य सेवक कार्यालय काशी से[1] तथा धनीराम प्रेम लिखित 'मेरा देश' नामक उपन्यास रतन पब्लिशिंग हाउस, हिन्दू कालोनी, बम्बई से प्रकाशित हुआ।[2] डॉ० गुप्त के अनुसार 'मेरा देश' राष्ट्रीय भावना पर आधृत उपन्यास है।[3]

हृदय की ताप

सन् १९३६ ई में ही कुटुम प्यारी देवी सक्सेना लिखित 'हृदय की ताप' नामक उपन्यास सरस्वती प्रेस, बनारस से प्रकाशित हुआ।[4]

इस उपन्यास में एक पारिवारिक और सामाजिक स्थिति का चित्रण है अंगरेजी पढ़ी लिखी ग्रेजुएट स्त्रियाँ अँगरेजी फैशन के वशीभूत होकर अपने दाम्पत्य जीवन को कष्टमय बना डालती हैं, जबकि पढ़ी लिखी होने पर भी भारतीय आदर्शों पर चलनेवाली पतिव्रता स्त्रियाँ कुछ दिनों तक कष्ट झेलने पर भी अन्त में सुखमय दाम्पत्य जीवन को प्राप्त करती हैं। धनी और विशेषकर धनलोलुप परिवार में गरीब घर की लड़की के आ जाने पर चाहें वह कितनी ही सुशील और गुणवती क्यों न हो, उसे नाना प्रकार के कष्ट और अपमान सहने पड़ते हैं। उपन्यास में इन स्थितियों का यथार्थ नारी चित्रण है, पर आदर्शवादी समाधान और संयोगाधृत घटनाओं के बाहुल्य के कारण कलाधृति की दृष्टि से उपन्यास बहुत साधारण है।

सुशीला : इन्द्रजाल : भ्रातृप्रेम

१९३६ ई० में ही सोमनाथ पंडित कृत 'सुशीला' नामक उपन्यास हरिहर पुस्तक भंडार, बनारस से[5], रघुनाथ सिंह रचित 'इन्द्रजाल' नामक उपन्यास नवीन प्रकाशन मन्दिर, बनारस से[6] तथा लक्ष्मी नारायण सिंह लिखित 'भ्रातृप्रेम' नामक उपन्यास वासुदेव मंडल, पूर्णिया से प्रकाशित हुआ।[7] 'इन्द्रजाल' और भ्रातृप्रेम' के प्रकाशन काल के सामने डॉ० गुप्त ने प्रश्नवाचक चिह्न लगाया है।

---

१. आ० भा० पु० काशी की पुस्तक सूची।
२. डॉ माताप्रसाद गुप्त, हि० पु० सा०, पृ० ४८५।
३. उपरिवत्, पृ० १०१
४. प्रा० स्था०—प्र० का० पु०, मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—हृदय की ताप(मौलिक सामाजिक उपन्यास), लेखिका कुटुम प्यारी देवी सकसेना, बनारस, सरस्वती प्रेस (पृष्ठ भाग) प्रथम संस्करण, दिसम्बर १९३६, पृ०सं० ३२२।
५. आ० भा० पु० काशी की पुस्तक सूची।
६. डॉ० माताप्रसाद गुप्त, हि० पु० सा०, पृष्ठ ५६४।
७. उपरिवत्, पृ० ६०१।

ऐतिहासिक उपन्यास

वृन्दावन लाल वर्मा

प्रेमचन्द युग में वृन्दावन लाल वर्मा द्वारा लिखित ऐतिहासिक उपन्यास केवल दो हैं—'गढ़ कुंडार' और 'विराट् की पद्‌मनी'।

गढ़ कुंडार

'गढ़ कुंडार' की रचना सन् १९२७ ई० में (१७ अप्रैल से १७ जून तक) हुई थी।[१] यह उपन्यास सर्वप्रथम १९३० ई० में प्रकाशित हुआ था। प्रस्तुत पंक्तियों का लेखक इसके प्रथम संस्करण को प्राप्त करने में असमर्थ रहा है, पर इसके छठे संस्करण के साथ संलग्न 'भूमिका' के अन्त में "वसन्त पंचमी, १९८६" मुद्रित है[२], जिससे इसके प्रथम संस्करण के प्रकाशन-काल का पता चलता है। 'गढ़ कुंडार' का पाँचवाँ संस्करण १९४५ ई० में[३] तथा छठा संस्करण १९५० ई० में[४] प्रकाशित हुआ।

'गढ़कुंडार' की मुख्य कथा कुंडार के खंगार राजकुमार नागदेव के महोनी के सोहनपाल बुन्देला की कन्या हेमवती से असफल प्रेम और कुंडार के खंगारों के पतन से सम्बद्ध है। नागदेव हेमवती से प्रेम करता है और उसे प्राप्त करने के लिए उसके पिता की मुसलमानों के विरुद्ध सहायता भी करता है, पर हेमवती तथा अन्य बुन्देलों को यह सम्बन्ध स्वीकार नही होता और बुन्देले छल से खंगारों को समाप्त कर देते हैं। कुंडार पर सोहनपाल बुन्देला का अधिकार हो जाता है।

दूसरी कथा अग्निदत्त के असफल प्रणय, अपमान और प्रतिशोध की तथा तीसरी दिवाकर और तारा के सफल प्रणय की है।

कथा की प्रकृति रूमानी है।

विराटा की पद्‌मनी

वर्मा जी के 'विराटा की पद्‌मनी' नामक उपन्यास का रचना-काल १९३०-३३ ई० है,[५] पर यह सर्वप्रथम १९३६ ई० में गंगा पुस्तकमाला कार्यालय, लखनऊ से प्रकाशित हुआ।

---

१. डॉ० शशिभूषण सिंहल, उपन्यासकार वृन्दावन लाल वर्मा, परिशिष्ट-२।

२. वृन्दावन लाल वर्मा, गढ़ कुंडार, षष्ठावृत्ति सं २००७, भूमिका।

३. उपरिवत् 'निवेदन'।

४. प्रा० स्था०—आ० भा० मु० काशी। मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—गढ़ कुंडार (ऐतिहासिक उपन्यास) लेखक—वृन्दावन लाल वर्मा, बी० ए०, एल० एल० बी०, ऐडवोकेट, भूमिका लेखक—श्री सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला', मिलने का पता—गंगा ग्रन्थागार, ३६, गौतम बुद्ध मार्ग, लखनऊ, षष्ठावृत्ति सं० २००७।

५. डॉ० शशिभूषण सिंहल, उपन्यासकार वृन्दावन लाल वर्मा, परिशिष्ट—२

प्रथम कथा 'शाहजादा और फकीर' में मुगल सम्राट् शाहजहाँ के प्रतिद्वन्द्वी शहरयार और दविरवख्श के, उसके विरोध में किये गये प्रयत्नों का वर्णन किया गया है। दूसरी कथा 'उमरा की बेटी' में शाहजहाँ के प्रतिपक्षी लोदी खाँ की वीर पुत्री जहाँनिरा की वीरता का विवरण है। 'चाँद' (नवम्बर, २६) में इसकी आलोचना करते हुए सम्पादक ने लिखा था, "लेखक ने जैसे नीरस विषय को औपन्यासिक ढंग से लिखकर सरस बनाने का प्रयत्न किया है, इसमें वे सफल नहीं हो सके। पुस्तक की भाषा अस्वाभाविक है।"[१]

सूर्यास्त

डॉ० माताप्रसाद गुप्त के अनुसार सन् १९२२ ई० में श्री गोविन्द वल्लभ पन्त द्वारा लिखित 'सूर्यास्त' नामक ऐतिहासिक उपन्यास भार्गव बुक डिपो, बनारस से प्रकाशित हुआ था।[२] माहेश्वर सार्वजनिक पुस्तकालय, पटना में विवेच्य उपन्यास की 'मैनेजर, हिन्दी काशी ग्रन्थमाला कार्यालय, बनारस सिटी से प्रकाशित और भार्गवभूषण प्रेस, त्रिलोचन काशी' से मुद्रित एक प्रति उपलब्ध है,[३] पर इसके मुखपृष्ठ पर प्रकाशन तिथि नहीं दी हुई है। पता नहीं उपर्युक्त दोनों प्रतियाँ एक हैं या भिन्न भिन्न। इस उपन्यास में महाराणा प्रताप के जीवन की घटनाओं का, जो इतिहास और किंवदन्तियों के रूप में लोकप्रचलित हैं, अत्यन्त साधारण कथा के रूप में वर्णन किया गया है।

स्वदेश की बलिवेदिका

फरवरी सन् १९२३ ई० में 'एक देश भक्त' द्वारा लिखित 'स्वदेश की बलिवेदिका अथवा देशभक्त हरमान द्वारा जर्म्मनों का स्वातन्त्र्य लाभ' नामक ऐतिहासिक उपन्यास मिश्रबन्धु कार्यालय, दीक्षितपुरा, जबलपुर से प्रकाशित हुआ।[४] उपन्यासकार ने अपना नाम प्रकाशित नहीं किया है। उपन्यास की विषयवस्तु को देखकर इसकी मौलिकता के सम्बन्ध में संदेह होता है, पर इसके अनुवाद होने का कोई प्रमाण मुझे अब तक नहीं मिला है। इस उपन्यास में प्राचीनकाल में जर्मन निवासियों की पराधीनता तथा उनके स्वतन्त्र होने के सफल प्रयास का वर्णन किया गया है।

पं० राम प्रसाद मिश्र, बी० ए० द्वारा संस्थापित मिश्र बंधु कार्यालय, दीक्षितपुरा, जबलपुर, प्रथम संस्करण १०००, सितम्बर सन् १९२२ ई०, पृ० सं० १०९।

१. चाँद, वर्ष ५, खंड २, संख्या १, नवंबर १९२६ 'साहित्य संसार'।

२. डॉ० माताप्रसाद गुप्त, हिन्दी पुस्तक साहित्य, पृ० १०७ तथा ४३१।

३. मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—सूर्यास्त, ऐतिहासिक उपन्यास, लेखक—गोविन्द वल्लभ पन्त, प्रकाशक—मै० हिन्दी काशी ग्रन्थमाला कार्यालय, बनारस सिटी, भार्गव भूषण प्रेस, त्रिलोचन, काशी।

४. प्रा० स्था०—आ० भा० पु० काशी। मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि-स्वदेश की बलि-वेदिका अथवा देशभक्त हरमान द्वारा जर्म्मनों का स्वातंत्र्य लाभ, एक अत्यन्त रोचक एवं शिक्षाप्रद ऐतिहासिक उपन्यास, लेखक 'एक देश भक्त', प्रकाशक-नर्म्मदा प्रसाद मिश्र, बी० ए०, मिश्र बन्धु कार्यालय, दीक्षितपुरा, जबलपुर, प्रथम संस्करण १००० प्रतियाँ, फरवरी सन् १९२३ ई०।

प्रेमपथिक

सन् १९२६ ई० में श्री रामचन्द्र मिश्र लिखित 'प्रेमपथिक' शीर्षक उपन्यास नन्द किशोर एन्ड ब्रदर्स, बनारस से प्रकाशित हुआ ।[1] इस उपन्यास की प्रेमचन्द द्वारा लिखित भूमिका से ज्ञात होता है कि "यह ऐतिहासिक उपन्यास है। इसमें मुगलों और मराठों के संघर्षकाल का दिग्दर्शन कराया गया है, जो भारतीय पुनरुत्थान का एक अद्भुत यद्यपि अल्पकालीन युग था । हमारी आयु के साथ-साथ हमारी साहित्यिक अवस्था में भी परिवर्तन होता रहता है। ऐतिहासिक उपन्यास कैशोर की प्रिय वस्तु है जब कल्पना आकाश में उड़ती है, और संसार की साधारण वस्तुएं फीकी, नीरस, चमत्कारहीन सी जान पड़ती है । हमें आशा है, युवक वृन्द इस वीर रस की कथा को चाव से पढ़ेंगे और उनके मन में भी 'माधव' बनने की उमंग उठेगी ।"[2]

यह एक ऐतिहासिक उपन्यास है। इस उपन्यास का उद्देश्य भारतीय क्षत्रिय बालाओं की वीरता, पातिव्रत्य, सत्यनिष्ठा आदि का चित्रण करना है। शिवाजी तथा अन्य मराठा सरदारों की वीरता का चित्रण भी उपन्यासकार का लक्ष्य है । किस प्रकार हिन्दू ही शिवाजी द्वारा हिन्दू राज्य की स्थापना के मार्ग में बाधक बन रहे थे, इस तरफ भी उपन्यासकार का ध्यान गया है; पर उपन्यास का मुख्य उद्देश्य माधव और शान्ता के प्रेम की एकनिष्ठता का चित्रण करना है। शान्ता के चरित्र में प्रेम और वीरता का अद्भुत समन्वय है ।

पतन

सन् १९२७ ई० में भगवतीचरण वर्मा कृत 'पतन' नामक उपन्यास गंगा पुस्तकमाला कार्यालय, लखनऊ से प्रकाशित हुआ ।[3] यह अतिलौकिक तथा अविश्वसनीय घटनाओं से पूर्ण एक अपराध और बलात्कार प्रधान उपन्यास है। वाजिदअली शाह का नाम जोड़ कर इस उपन्यास को ऐतिहासिक उपन्यास की संज्ञा देने का व्यर्थ प्रयत्न किया गया है।

मुगल दर्बार रहस्य उपनाम अमृत और विष

सन् १९२८ ई० में अथवा उसके कुछ पूर्व प्रो० रामकृष्ण शुक्ल द्वारा लिखित 'मुगल दर्बार रहस्य उपनाम अमृत और विष' नामक उपन्यास चाँद कार्यालय, इलाहाबाद से प्रकाशित हुआ । प्रस्तुत पंक्तियों का लेखक इस उपन्यास को प्राप्त करने में असफल रहा है । 'चाँद' (फरवरी १९२८) में प्रकाशित विवेच्य उपन्यास के विज्ञापन से उपर्युक्त

---

१. प्रा० स्था०—रा० भा० प० पु० पटना । मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—प्रेम पथिक (एक सचित्र मौलिक उपन्यास), ले०—श्री रामचन्द्र मिश्र, प्र०—नन्दकिशोर एंड ब्रदर्स पब्लिशर्स, चौक, बनारस, सन् १९२६, पृ० सं० २०८ ।

२. उपरिवत्, भूमिका ।

३. डॉ० माताप्रसाद गुप्त, हि० पु० सा०, पृ० ५२८ ।

इसके साथ ही दो परिवारों (धीरज और जमुना के परिवार) के ईर्ष्या, द्वेष और कलह, धीरज, हरिदास, कुंजन और धनंजय की युवकोचित वीरता और साहसिकता, धनंजय की उदारता और उच्चाशयता, यवनराज महमूद के आक्रमण तथा अन्तर्जातीय प्रेम और अन्तर्जातीय विवाह आदि का भी इसमें वर्णन किया गया है।

शिल्प आदि की दृष्टि से यह एक साधारण कृति है। धीरज और यमुना के प्रेम में कितनी ऐतिहासिकता है, नहीं कहा जा सकता।

बैरागढ़िया राजकुमार

सन् १९३० ई० में ही राजा चक्रधर सिंह लिखित 'बैरागढ़िया राजकुमार' और 'मायाचक्र' नामक उपन्यास श्रीयुक्त लक्ष्मण प्रसाद सिंह मिश्र द्वारा साहित्य समिति, रायगढ़ से प्रकाशित किये गये।[1] प्रथम उपन्यास में किंवदन्तियों के आधार पर गौड़ जाति के प्रजाप्रिय 'बैरागढ़िया राजकुमार' की कथा वर्णित की गयी है। यद्यपि पुस्तक के मुखपृष्ठ पर 'इसे सचित्र ऐतिहासिक उपन्यास' कहा गया है, पर वास्तविक अर्थ में यह ऐतिहासिक उपन्यास नहीं है।

मायाचक्र

दूसरा उपन्यास 'मायाचक्र' सूफी काव्यों के ढंग पर लिखित एक प्रेम कथानक है, यद्यपि इसे भी 'ऐतिहासिक उपन्यास' ही कहा गया है। इस उपन्यास में राजकुमार हीरा सिंह का उर्वशी के प्रति प्रेम, प्रतिनायक जयपाल का बाधक बनना, उसकी आसुरी माया में पड़कर हीरा सिंह का कष्ट भोगना, पर अन्त में सफल होना और उर्वशी को प्राप्त करना आदि घटनाएँ वर्णित हैं। यदि उपन्यासकार का यह कथन मान लिया जाय कि हीरा सिंह गौड़ वंश के एक ऐतिहासिक पुरुष हैं[2] तो भी इस उपन्यास को ऐतिहासिक उपन्यास की संज्ञा नहीं दी जा सकती।

खवास का ब्याह

सन् १९३२ ई० में आचार्य चतुरसेन शास्त्री लिखित 'खवास का ब्याह' नामक ऐतिहासिक उपन्यास गंगा पुस्तक माला कार्यालय, लखनऊ से प्रकाशित हुआ।[3]

---

१. प्रा० स्था०—आ० भा० पु० काशी। मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—
(१) बैरागढ़िया राजकुमार (सचित्र ऐतिहासिक उपन्यास), लेखक—राजा चक्रधर सिंह, प्रकाशक—श्रीयुत् लक्ष्मण प्रसाद मिश्र, साहित्य समिति, रायगढ़, प्रथम संस्करण सं० १९८७, सन् १९३०, पृ० सं० २०४।
(२) मायाचक्र (सचित्र ऐतिहासिक उपन्यास), लेखक राजा चक्रधर सिंह (रायगढ़ नरेश), प्रकाशक पं० लक्ष्मण प्रसाद मिश्र, साहित्य समिति, रायगढ़, प्रथम संस्करण १९८७, पृ० सं० लगभग ३१४।

२. मायाचक्र, भूमिका।

३. डॉ० माताप्रसाद गुप्त, हिन्दी पुस्तक साहित्य, पृ० ४३६।

प्यासी तलवार

सन् १९३६ ई० में सुदर्शन लाल जी त्रिवेदी कृत 'प्यासी तलवार' नामक ऐतिहासिक उपन्यास चौधरी ऐंड संस, बनारस से प्रकाशित हुआ।[1] प्रस्तुत पंक्तियों का लेखक इस उपन्यास को प्राप्त करने में असमर्थ रहा है।

प्रभावती

सन् १९३६ ई० में सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला' द्वारा रचित 'प्रभावती' नामक ऐतिहासिक उपन्यास सरस्वती पुस्तक भंडार, लखनऊ से प्रकाशित हुआ।[2] इस उपन्यास का द्वितीय संस्करण १९४५ ई० में और तृतीय संस्करण १९४८ ई० में किताब महल, इलाहाबाद से प्रकाशित हुआ।[3] इसका एक संस्करण १९५८ ई० में किताब महल, इलाहाबाद से ही प्रकाशित हुआ। पुस्तक के मुखपृष्ठ पर संस्करण-संख्या नहीं दी हुई है।[4]

'प्रभावती' निराला का एकमात्र ऐतिहासिक उपन्यास है। इसमें कान्यकुब्जेश्वर महाराज जयचन्द के शासनकाल में कनिष्ठ सामन्तों के परस्पर द्वेष, कलह, विग्रह, षड्यन्त्र आदि का चित्रण किया गया है, पर उपन्यासकार का जितना ध्यान भाषा के अलंकरण पर है उतना तत्कालीन जीवन और सांस्कृतिक-राजनीतिक-सामाजिक स्थितियों के चित्रण पर नहीं। इसे ऐतिहासिक उपन्यास की अपेक्षा ऐतिहासिक गद्यकाव्य कहना अधिक उचित है।

विस्मृत सम्राट्

सन् १९३६ ई० में बाबू ब्रजनन्दन सहाय द्वारा लिखित 'विस्मृत सम्राट्' नामक ऐतिहासिक उपन्यास खड्गविलास प्रेस, पटना से प्रकाशित हुआ।[5] यह उपन्यास दो खंडों में समाप्त हुआ है। इस में नूरजहाँ के अपने अधिकारों को सुरक्षित रखने के लिए किये गये षड्यन्त्रों, खुर्रम के साथ उसके संघर्ष तथा अन्त में उसके असफल होने का वर्णन किया गया है। बहुत थोड़े काल के लिए खुसरू का पुत्र दादिरबख्श गद्दी पर बिठाया जाता है, जो खुर्रम के आते ही गद्दीसे उतार कर दर दर का भिखारी बना दिया जाता है। इसी घटना पर उपन्यास का नामकरण किया गया है।

---

१. आ० भा० पु० काशी की पुस्तक सूची।

२. प्रस्तुत पंक्तियों का लेखक 'प्रभावती' के प्रथम संस्करण को प्राप्त करने में असमर्थ रहा है। उपर्युक्त सूचनाएँ 'सरस्वती' के नवम्बर १९३६ के अंक में प्रकाशित विवेच्य उपन्यास की समीक्षा से प्राप्त की गयी हैं।

३. प्रा० स्था०—रा० भा० प० पु० पटना तथा प० का० पु०, पटना। मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—प्रभावती (ऐतिहासिक उपन्यास), लेखक सूर्यकान्त त्रिपाठी निराला, प्रकाशक किताब महल, इलाहाबाद, प्रथम संस्करण १९३६, द्वितीय संस्करण १९४५, तृतीय संस्करण १९४८।

४. प्रा० स्था०—सिनहा पुस्तकालय, पटना।

५. विस्मृत सम्राट, खड्गविलास प्रेस, पटना, सन् १९३६ ई०, पृ० सं० २१६—श्री हरिहर नाथ, 'ब्रजनन्दन सहाय ब्रजवल्लभ, जीवनी और कृतियाँ' (अप्रकाशित शोधप्रबन्ध, प्राप्ति स्थान, हिन्दी

अपराध प्रधान और जासूसी कथाएँ
गोपालराम गहमरी

चाँदी का चक्कर : खूनी की चालाकी : मुहम्मद सरवर की जासूसी

सन् १९१८ ई० के 'जासूस' के अगस्त अंक में 'चाँदी का चक्कर', सितम्बर अंक में 'खूनी की चालाकी' और अक्टूबर अंक में 'मुहम्मद सरवर की जासूसी' नामक कथापुस्तकें प्रकाशित हुई।[१] जून १९१५ ई० में प्रकाशित 'मुहम्मद सरवर की जासूसी' से यह कथा भिन्न है।

जासूस के नवम्बर १९१८ ई० से अप्रैल १९१९ ई० तक के अंक प्रस्तुत पंक्तियों के लेखक को उपलब्ध नहीं हो सके हैं, अतः यह बताना कठिन है कि इन अंकों में गहमरी जी की कौन-सी पुस्तकें छपी थीं। किसी अन्य प्रमाण से भी इन अंकों में प्रकाशित कथाओं का पता नहीं चला है।[२]

जासूस के जबानी : जासूस की जवाँमर्दी

सन् १९१९ ई० में 'जासूस' के मई से लेकर अगस्त तक के चार अंकों में 'जासूस के जबानी'[३] तथा सितम्बर-अक्टूबर के अंक में 'जासूस की जवाँमर्दी' नामक कथाएँ छपीं। 'जासूस की जवाँमर्दी' नामक कथा १९२९ में पुनः 'गेरुआ बाबा' शीर्षक देकर प्रकाशित की गयी।[४] पर स्वयं लेखक या प्रकाशक ने इसकी सूचना नहीं दी है, बल्कि उन्होंने पुराने सिक्के को नये नाम पर चलाने का कौशल दिखाया है। दोनों उपन्यासों को पढ़ने से यह स्पष्ट हो जाता है कि दोनों एक ही उपन्यास हैं। डॉ० माताप्रसाद गुप्त ने 'गेरुआ बाबा' का रचना-काल १९१४ (?) दिया है[५], जो भ्रामक है।

नवम्बर १९१९ से लेकर १९२० तक के 'जासूस' के अंक प्रस्तुत पंक्तियों के लेखक को प्राप्त नहीं हो सके हैं।

---

१. आर्यभाषा पुस्तकालय में 'चाँदी का चक्कर' शीर्षक पुस्तक में 'जासूस' के ये तीनों अंक एक साथ जिल्द में बँधे हैं; 'खूनी की चालाकी' (पृ०४१), 'मुहम्मद सरवर की जासूसी' (पृ० सं० ३६)

२. 'आर्यभाषा पुस्तकालय' में उपलब्ध 'जासूस के जबानी' शीर्षक पुस्तक के अंतर्गत जासूस के मई १९१९ से लेकर अगस्त १९१९ तक के अंक एक साथ बँधे प्राप्त होते हैं। पृ० सं० १७४।

३. जासूस की जवांमर्दी, सितंबर-अक्टूबर १९१९ ई० के जासूस के अंकों में प्रकाशित, पृ० सं० ८७, प्राप्तिस्थान-आर्यभाषा पुस्तकालय, ना० प्र०स०, काशी।

४. गेरुआ बाबा, ले०-सुप्रसिद्ध उपन्यासकार और जासूस—संपादक श्री गोपाल राम गहमर निवासी, प्रकाशक-एस० एस० मेहता एँड ब्रदर्स, पुस्तक प्रकाशक, विक्रेता और स्टेशनर्स, काशी, सं० १९८६ वि०, पृ० सं० १८८, प्राप्ति स्थान—आर्यभाषा पुस्तकालय।

५. हिन्दी पुस्तक साहित्य, पृ० ४२८।

पुस्तक-संस्करण है, पर उसमें प्रकाशन-काल नहीं दिया हुआ है। पुस्तक की पृष्ठसंख्या १४२ है, जिससे अनुमान किया जा सकता है कि यह 'जासूस' के ३ अंकों में छपी होगी। पुस्तक के आवरणपृष्ठ पर एक विज्ञापन है कि 'यह सजी सजायी मासिक पुस्तक २५ वर्ष से हर पहली तारीख को जारी होती है।"[1] इससे अनुमान लगाया जा सकता है कि यह पुस्तक १९२५ या १९२६ ई० में प्रकाशित हुई होगी।

चोर की चालाकी : अपराधी की चालाकी

सन् १९२६ ई० में गहमरी जी का 'डबल चालाक' नामक उपन्यास प्रकाशित हुआ।[2] इसमें दो उपन्यास 'चोर की चालाकी' और 'अपराधी की चालाकी' एक साथ प्रकाशित किये गये है। पुस्तक के मुखपृष्ठ पर इसका रचना-काल नहीं दिया गया है, पर इतना ज्ञात हो जाता है कि यह 'जासूस' के अंकों में छपा था। चूँकि दोनों पुस्तकों की पृष्ठ संख्या क्रमश: ११२ और ४२ है, इससे अनुमान किया जा सकता है कि ये 'जासूस' के तीन अंकों में प्रकाशित हुई होंगी। पुस्तक में गहमरी जी ने एक सफाई दी है कि "हमारे सफर में रहने से जासूस के कई अंक ठीक समय पर नहीं निकले इसका बड़ा अफसोस है। २५ वर्ष में जो बात नहीं हुई वह विलम्ब इस साल हो गया। अब जून और जुलाई का अंक एक साथ जुलाई में निकलेगा।" इससे ज्ञात होता है कि कदाचित् १९२६ ई० के फरवरी-मई के अंक में उपर्युक्त उपन्यास प्रकाशित हुए थे।

अगस्त १९२३ से फरवरी १९२७ ई० तक के जासूस के अंक प्रस्तुत पंक्तियों के लेखक को नहीं प्राप्त हो सके हैं। अत: इन अंकों में प्रकाशित गहमरी जी के उपन्यासों की सूचना दे पाना कठिन है। इस बीच में प्रकाशित गहमरी जी के कुछ उपन्यासों की सूचना मैंने अन्य प्रमाणों के आधार पर दी है, पर उनका रचना-काल पुन:परीक्षणीय है।

जासूस की विजय

सन् १९२७ ई० में 'जासूस' के मार्च से मई तक के अंकों में 'जासूस की विजय'[3] नामक उपन्यास प्रकाशित हुआ।[4]

---

१. सुन्दर वेणी, एक संयोगस्त्त उपन्यास (जासूस मासिक से उद्धृत) बाबू गोपाल राम गहमर निवासी सम्पादित, मैनेजर पं० आत्माराम शर्मा द्वारा जार्ज प्रिंटिंग वर्क्स, काल भैरव, काशी में मुद्रित पृ० सं० १४२, प्राप्ति स्थान—आ० भा० पु० काशी।

२. मुखपृष्ठ से प्राप्त सूचना—डबल चालाक, चोर की चालाकी और अपराधी की चालाकी (दो मजेदार मामलों) का नवीन उपन्यास, बाबू गोपाल राम गहमर निवासी सम्पादित, जासूस मासिक पत्र से उद्धृत, काशी जार्ज प्रिंटिंग वर्क्स में मुद्रित, पृ० सं० ११+४२, प्राप्तिस्थान—आ० भा० पु० काशी।

३. जासूस की विजय, 'जासूस' वर्ष २७, अंक ३२३-३२५, मार्च-मई १९२७, पृ० सं० १४४, प्राप्ति स्थान—आ० भा० प० काशी।

१९३० ई० में 'घाट पर मुर्दा' नामक उपन्यास प्रकाशित हुआ।[1] सन् १९३३ ई० में गहमरी जी जी का 'उड़न खटोला' नामक उपन्यास प्रकाशित हुआ।[2] मुखपृष्ठ की सूचना से ज्ञात होता है कि यह भी 'जासूस' के ही कतिपय अंकों में प्रकाशित हुआ, पर अंकों का पता नहीं चलता। पुस्तक-संस्करण में इस उपन्यास की १००० प्रतियाँ छपी थीं।

डबल जासूस

१९३४ ई० में गहमरी जी की 'डबल जासूस' नाम की पुस्तक छपी।[3] इस पुस्तक में 'काशी की घटना' और 'उड़न खटोला' नामक दो उपन्यास संकलित किये गये हैं। ये दोनों उपन्यास इसके पूर्व 'जासूस' के अंकों में प्रकाशित हो चुके थे। 'काशी की घटना' 'काशी की गोलकधंधारी' नाम से 'जासूस' जुलाई-अगस्त १९०१ के अंक में और 'उड़नखटोला' १९३३ ई० में छप चुका था।

देवी नहीं दानवी उर्फ सोना बीबी

गहमरी जी का 'देवी नहीं दानवी उर्फ सोना बीबी' नामक उपन्यास शायद १९३४ ई० के पूर्व प्रकाशित हुआ था। आर्यभाषा पुस्तकालय में इस उपन्यास की एक प्रति उपलब्ध है पर उसके आरम्भिक पृष्ठों के फटे रहने के कारण कोई सूचना नहीं मिल पाती। पुस्तक कुल २०७ पृष्ठों में समाप्त हुई है, जिससे अनुमान किया जा सकता है कि यदि यह उपन्यास 'जासूस' के अंकों में निकला हो, तो कम से कम ४ अंकों में समाप्त हुआ होगा। आर्यभाषा पुस्तकालय की पुस्तक-सूची से ज्ञात होता है कि १९३४ ई० में इसका दूसरा संस्करण 'जासूस आफिस', काशी से प्रकाशित हुआ था।

पिशाच लीला : होली का हरभोंग उर्फ भयानक भंडाफोड़ : चक्करदार खून

१९३५ ई० में गहमरी जी का 'पिशाच लीला'[4] तथा १९३८ ई० में

---

१. यह उपन्यास एक और उपन्यास 'बेगुनाह का खून' के साथ 'जमना बेगम' नामक पुस्तक में सम्मिलित किया गया है, जिसका रचनाकाल १९३० ई० है। 'जमना बेगम' के मुखपृष्ठ पर निम्नलिखित सूचनाएँ दी हुई हैं—'जमना बेगम' (एक साहसी दिलचस्प उपन्यास) बाबू गोपाल राम गहमरी निवासी सम्पादित जासूस से उद्धृत, काशी, सन् १९३० ई०, प्राप्तिस्थान—आ० भा० पु०, काशी।

२. उड़नखटोला, श्री गोपाल राम गहमर निवासी सम्पादित (जासूस से उद्धृत) श्री बहादुर राम द्वारा हितैषी प्रिंटिंग वर्क्स काशी में मुद्रित, प्रथम वार १००० प्रति, सन् १९३३ ई०, प्राप्तिस्थान—आ० भा० पु० काशी।

३. डबल जासूस (काशी की घटना और उड़नखटोला), दो विकट घटना, श्री गोपाल राम गहमर निवासी लिखित, सन् १९३४ ई०, प्रा० स्था०—आ० भा० पु०, काशी।

४. पिशाच लीला, एक नरपिशाच का भयंकर भंडाफोड़, श्री गोपाल राम गहमर निवासी सम्पादित, जासूस से उद्धृत, प्रथम बार १००० प्रति, सन् १९३५, पृष्ठ सं० ४८, प्रा० स्था०—आ० भा० पु० काशी।

रहस्य विप्लव

गहमरी जी द्वारा लिखित 'रहस्य विप्लव' नामक एक उपन्यास भी आर्यभाषा पुस्तकालय में उपलब्ध है।[1] इस उपन्यास के आवरण पृष्ठ पर दी गयी सूचनाओं में प्रकाशन-काल नहीं है, पर यह पता चल जाता है कि यह उपन्यास 'जासूस' के अंकों में क्रमशः प्रकाशित हुआ था। पृष्ठसंख्या देखने से अनुमान किया जा सकता है कि यह 'जासूस' के कम से कम ५ अंकों में छपा होगा। इस उपन्यास के अन्तिम आवरणपृष्ठ पर एक विज्ञापन छपा हुआ है,[2] जिससे ज्ञात होता है कि यह जुलाई का अंक है (वर्ष का पता नहीं चलता) और इसके बाद अगस्त से नवम्बर तक के अंकों में २४० पृष्ठों का कोई मेस्मरिज्म सम्बन्धी उपन्यास छपा होगा। इस उपन्यास को प्राप्त कर पाने में मैं असमर्थ रहा हूँ।

आर्यभाषा पुस्तकालय की पुस्तक-सूची से भी गहमरी जी के कुछ उपन्यासों की सूचना प्राप्त होती है, पर ये उपन्यास नहीं मिलते। ये उपन्यास निम्नलिखित हैं :—

चक्रभेद, प्र० मैनेजर, जासूस, गहमर (गाजीपुर), १९२६ ई०।

गाड़ी में मुर्दा,[3] प्र० मैनेजर जासूस, गहमर (गाजीपुर), प्रथम संस्करण १९२६ ई०।

डकैत कालू राम, प्र० मैनेजर, जासूस, गहमर (गाजीपुर), प्रथम संस्करण १९३० ई०।

चतुर चौकड़ी, प्र० मैनेजर, जासूस, गहमर (गाजीपुर), १९३० ई०।

कंदी की कोठी, प्र० मैनेजर, जासूस, गहमर(गाजीपुर), प्रथम संस्करण १९३३ ई०।

भयंकर भेद, प्र० मैनेजर, जासूस, गहमर (गाजीपुर), प्र० सं० १९३७ ई०।

कामरूप का जादू,[4] प्र० मैनेजर, जासूस, गहमर (गाजीपुर), (रचना काल नहीं दिया हुआ है)।

डॉ० माताप्रसाद गुप्त के अनुसार गहमरी जी के दो उपन्यास **'हंसराज की डायरी'** और **'झंडा डाकू'** १९४१ ई० में इंडियन प्रेस, इलाहाबाद से प्रकाशित हुए थे।[5]

---

१. रहस्य विप्लव (जासूसी तिगड्डा), तीन जासूसों की बड़ी विकट कहानी, श्री गोपाल राम गहमर निवासी सम्पादित, जासूस से उद्धृत, पृष्ठ संख्या २७९, प्राप्तिस्थान—आ० भा० पु० काशी।

२. सुनिये! सुनिये!! सुनिये!!! जासूस का यह जुलाई का अंक आपके हाथ में है। अब अगस्त से नवम्बर तक जासूस आपकी ड्योढी पर न पहुँच कर पाँच महीने के लिए २४० पृष्ठों की विशाल पुस्तक आपको दिसम्बर के मध्य में मिलेगी।.........उसकी (मेस्मरिज्म) करामातों का वर्णन विस्तार सहित उस पुस्तक में होगा।'

३. नवम्बर १९०० ई० में गहमरी जी का 'गाड़ी में खून' नामक और सितम्बर-नवम्बर १९२० ई० में 'गाड़ी में लाश' नामक उपन्यास प्रकाशित हुए थे। पता नहीं 'गाड़ी में मुर्दा' कोई स्वतंत्र उपन्यास है अथवा उपर्युक्त दोनों उपन्यासों में से किसी का नामान्तरण मात्र।

४. सम्भव है, यह उपन्यास मनोरमा या पाँच खून का नामान्तरणमात्र हो।

५. हिन्दी पुस्तक साहित्य, पृ० ४२८।

हुआ है,[1] किन्तु यह तिथि अशुद्ध है। आर्यभाषा पुस्तकालय की पुस्तक-सूची में इसके विभिन्न भागों का प्रकाशन काल निम्नलिखित दिया हुआ है : 'भाग १—प्रथम संस्करण १९२६ ई०; भाग २—प्रकाशन काल नहीं दिया हुआ है; भाग ३—प्रथम संस्करण सन् १९२९ ई०; भाग ४—प्रथम संस्करण सन् १९३० ई०।' इनमें से प्रथम तीन भाग आ० भा० पु० में उपलब्ध नहीं है; चौथा भाग उपलब्ध है, जिससे उपर्युक्त प्रकाशन-काल की प्रामाणिकता सिद्ध होती है।[2] सन् १९३७ ई० में इस उपन्यास का तीसरा संस्करण लहरी बुक डिपो, बनारस सिटी से प्रकाशित हुआ।[3] सन् १९५४ ई० में इस उपन्यास का सातवाँ संस्करण प्रकाशित हुआ।[4]

काला चोर

सन् १९३२ ई० में विवेच्य उपन्यासकार का 'काला चोर' नामक जासूसी उपन्यास लहरी बुक डिपो, काशी से प्रकाशित हुआ।[5]

सुफेद शैतान

सन् १९३४-३८ ई० में खत्री जी का 'सुफेद शैतान' नामक उपन्यास, चार भागों में, लहरी बुक डिपो, काशी से प्रकाशित हुआ। आर्यभाषा पुस्तकालय की पुस्तक सूची में इसके विभिन्न भागों का निम्नलिखित प्रकाशन काल दिया हुआ है : 'भाग १—प्रथम संस्करण १९३४ ई०; भाग २—प्रथम संस्करण १९३५ ई०; भाग ३—प्रथम संस्करण १९३६ ई०; भाग ४—प्रथम संस्करण १९३८ ई०।' श्री दुर्गाप्रसाद खत्री के अनुसार इस उपन्यास के प्रथम भाग का पहला संस्करण १९३४ ई० में, दूसरा संस्करण १९३७ ई० में, तीसरा संस्करण १९४९ ई० में, चौथा संस्करण १९५४ ई० में, और पाँचवाँ संस्करण १९५९ ई० में प्रकाशित हुआ। इसी प्रकार खत्री जी के अनुसार इसके दूसरे भाग का तीसरा संस्करण १९४९ ई० में, चौथा संस्करण १९५४ ई० में और पाँचवाँ संस्करण १९५९ ई० में, तीसरे भाग का पहला संस्करण १९३६ ई० में, तीसरा संस्करण १९४९ ई० में, चौथा संस्करण १९५४ ई० में और पाँचवाँ संस्करण १९६० ई० में तथा चौथे भाग का दूसरा संस्करण १९४९ ई० में, चौथा संस्करण १९५४ ई० में तथा पाँचवाँ

---

१. प्रा० स्था०—प० वि० पु०, पटना।

२. मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—मृत्यु किरण अथवा रक्तमंडल, चौथा भाग, बाबू दुर्गाप्रसाद खत्री, प्रोप्रा० लहरी बुक डिपो, बनारस सिटी, प्रथम संस्करण सन् १९३० ई०, २००० प्रति।

३. इस संस्करण के प्रथम और चतुर्थ भाग आ० भा० पु० में उपलब्ध हैं।

४. प्रा० स्था०—आ० भा० पु०, काशी। मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—मृत्युकिरण अथवा रक्तमंडल (रहस्यपूर्ण वैज्ञानिक उपन्यास), लेखक दुर्गाप्रसाद खत्री, प्र० लहरी बुक डिपो, वाराणसी, प्रथम संस्करण सन् १९२८ ई०, सातवाँ संस्करण सन् १९५४ ई०।

५. आ० भा० पु०, की पुस्तक सूची में इस उपन्यास का उल्लेख है, पर प्रस्तुत पंक्तियों के लेखक को यह पुस्तक प्राप्त नहीं हो सकी। सूचनाएँ उक्त पुस्तकसूची से ली गयी हैं।

है—तो यह विश्वास के साथ नहीं कहा जा सकता कि ये सभी मौलिक ही हैं। चूँकि ये कथाएँ साहित्यिक महत्त्व की नहीं होतीं, इसलिए इनका विस्तृत विवरण और इनके मुखपृष्ठों की प्रतिलिपि न देकर केवल इनके सम्बन्ध में में संक्षिप्त सूचनाएँ ही दी जा रही हैं।

कृष्णवसना सुन्दरी

सन् १९१८ ई० में चन्द्रशेखर पाठक द्वारा लिखित 'कृष्णवसना सुन्दरी' नामक अपराध-प्रधान उपन्यास दुर्गा प्रेस, कलकत्ता से प्रकाशित हुआ।[१] इसका तीसरा संस्करण १९३० ई० में निकला।[२] लेखक के अनुसार 'इस उपन्यास में एक षड्यन्त्र का दृश्य दिखाया गया है। उसे पढ़कर पाठक पाठिकाएँ समझ सकेंगे कि सामान्य सा पाप भी मनुष्य को कैसी भयानक विपत्ति में डाल देता है और वास्तव में षड्यन्त्रकारी कैसे भयानक और स्वार्थलोलुप होते हैं।[३]

भयानक बदला,[४] पं० चन्द्रशेखर पाठक, प्र०-निहालचन्द वर्मा, कलकत्ता, प्रथम संस्करण १९१८

चालाक चोर,[५] पं० नरोत्तम व्यास, प्र०-आर० एल० वर्म्म एँड कं०, कलकत्ता, प्रथम संस्करण १९७५ वि०।

डाक्टर साहब,[६] ले० नरोत्तम व्यास, प्र०-रामलाल वर्मा, वर्म्मन प्रेस, कलकत्ता, प्रथम संस्करण १९७६ वि०।

खूनी मामला,[७] बिट्ठलदास कोठारी, प्र० हरिदास एँड कम्पनी, कलकत्ता, प्र० सं० १९१९।

मेरी जासूसी,[८] रुद्रदत्त भट्ट, प्र० हिन्दी ग्रन्थ भंडार कार्यालय, बनारस, प्रथम संस्करण १९७८ वि०।

शैतानी चक्कर,[९] ले० पारसनाथ त्रिपाठी, प्र० रिखबदास बाहिती एँड कम्पनी, कलकत्ता, प्रथम संस्करण १९७८ वि०।

---

१. प्रा० स्था—आर्यभाषा पुस्तकालय काशी। मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—कृष्णवसना सुन्दरी, उपदेश प्रधान जासूसी उपन्यास, लेखक—पंडित चन्द्रशेखर पाठक, मुद्रक और प्रकाशक निहालचन्द्र वर्मा, "दुर्गाप्रेस" नं० ७४, बड़तल्ला स्ट्रीट, कलकत्ता, प्रथमवार १०००, संख्या १९७५, पृष्ठ सं० १८१।

२. आ० भा० पु० की पुस्तक सूची।

३. कृष्णवसना सुन्दरी, उपसंहार।

४. आ० भा० पु० की पुस्तक सूची।

५. उपरिवत्।

६. उपरिवत्।

७. प्रा० स्था०—आ० भा० पु काशी।

८. आ० भा० पु० की पुस्तक सूची।

९. उपरिवत्।

जासूसी कुत्ता[1]

सन् १९२६ ई० में ही चतुर्भुज औदीच्य द्वारा लिखित 'जासूसी कुत्ता' नामक उपन्यास का तीसरा संस्करण आर० एल० वर्मन एंड कंपनी, कलकत्ता से प्रकाशित हुआ।

विचित्र डाकू[2]

सन् १९२७ ई० में जगन्नाथ शर्मा द्वारा लिखित 'विचित्र डाकू' नामक अपराध-प्रधान उपन्यास लक्ष्मी पुस्तकालय, बनारस से प्रकाशित हुआ।

शोणित चक्र

सन् १९२७ ई० चन्द्रशेखर पाठक द्वारा लिखित 'शोणित चक्र' नामक अपराधप्रधान कथा का द्वितीय संस्करण आर० एल० वर्मन एंड को०, कलकत्ता से प्रकाशित हुआ। इस संस्करण की एक प्रति आ० भा० पु० काशी में है 'किन्तु मुखपृष्ठ के नष्ट हो जाने के कारण पुस्तक के सम्बन्ध में कोई सूचना नहीं प्राप्त होती। इसका प्रथम संस्करण प्रस्तुत पंक्तियों के लेखक को नहीं प्राप्त हो सका है। द्वितीय संस्करण की 'भूमिका' की निम्नांकित पंक्तियों से इस पुस्तक की लोकप्रियता का पता चलता है:

'कई वर्ष पहले जब हम इस पुस्तक का पहला संस्करण निकाल रहे थे तब ऐसा विश्वास नहीं था कि इतने बड़े उपन्यास का दूसरा संस्करण भी हमें इतना शीघ्र निकालना पड़ेगा। परन्तु इस पुस्तक को हाथोहाथ बिकते देख हमें यह विश्वास हो गया है, कि बड़े बड़े जासूसी उपन्यास लोगों को बहुत अधिक पसन्द आते हैं। पाठकों को प्रिय होने के कारण हमने इस बार के संस्करण में इसमें कई चित्र भी जोड़ दिये हैं।'

डाकू की लड़की[3]

सन् १९२८ ई० में तारिणी प्रसाद मिश्र द्वारा लिखित 'डाकू की लड़की' नामक कथा उपन्यास बहार आफिस, काशी से प्रकाशित हुई।

चालाक चोर[4]

सन् १९२९ ई० में देवनाथ पाठक द्वारा लिखित 'चालाक चोर' नामक उपन्यास उपन्यास बहार आफिस, बनारस से प्रकाशित हुआ।

खूनी नकाबपोश[5] 'गौरी शंकर लाल' प्र०-गुल्लू प्रसाद केदार नाथ, बुकसेलर कचौड़ी गली, बनारस सिटी, दूसरा संस्करण १९२९ ई०।

---

१. आ० भा० पु०, काशी, पुस्तक सूची।
२. उपरिवत्।
३. उपरिवत्।
४. उपरिवत्।
५. प्रा० स्था—आ० भा० पु काशी।

एक रात में चालीस खून

बाबू द्वारका प्रसाद लिखित 'एक रात में चालीस खून' नामक १६ पृष्ठों का अपराधप्रधान उपन्यास इसी काल में प्रकाशित हुआ। मुखपृष्ठ पर प्रकाशन-काल सम्बन्धी सूचना न छपी रहने के कारण इसकी ठीक प्रकाशन-तिथि नहीं ज्ञात हो पाती।[1]

---

१. प्राप्ति स्थान—मा० पु०, पटना। मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—एक रात में चालीस खून, बाबू द्वारका प्रसाद लिखित. मुद्रक व प्रकाशक—बाबू किशन लाल, बम्बई भूषण मंत्रालय, मथुरा।

गया ।[1] आर्य भाषा पुस्तकालय में विवेच्य उपन्यास के प्रथम चार भाग उपलब्ध नहीं हैं, पर इसी उपन्यास के भाग ६ के साथ संलग्न विज्ञापन से ज्ञात होता है कि जनवरी १९२१ ई० में इसका प्रथम भाग प्रकाशित हुआ था । स्वयं लेखक के शब्दों में, "रसिकों के सुभीते के लिए··यह सन्तति आठ मास (जनवरी १९२१ ई०) से धड़ाधड़ छप रही है ।[2]

प्रस्तुत पंक्तियों के लेखक को इस उपन्यास का दूसरा संस्करण कहीं देखने को नहीं मिला है । कदाचित् इसका दूसरा संस्करण छपा ही नहीं । इस उपन्यास के विभिन्न भागों की मुद्रित प्रतियों की संख्याओं को देखने से हिन्दी पाठकों की रुचि से सम्बद्ध एक रोचक तथ्य की जानकारी होती है । इसके पहले भाग से लेकर नवें भाग तक प्रत्येक की

---

१. प्राप्ति स्थान—आ० भा० पु० काशी । मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—प्रथम चार भाग पुस्तकालय से गायब हो चुके हैं । कृष्णाकान्ता सन्तति, पाँचवाँ भाग, रचयिता और प्रकाशक—बाबू गंगा प्रसाद गुप्त, जिसको बाबू गंगा प्रसाद गुप्त ने अपने 'गंगा प्रेस' अलीगढ़ में छापकर प्रकाशित किया । प्रथम बार १०००, १९२१ ई० ।

अन्य भागों के मुखपृष्ठों पर केवल प्रकाशन-काल भिन्न-भिन्न हैं, शेष सूचनाएँ उपरिवत् हैं ।

छठवाँ भाग-प्रथम सं० १०००, १९२२, पृ० सं० ७३

सातवाँ भाग—पृष्ठ फटा रहने के कारण कोई सूचना नहीं मिलती ।

आठवाँ भाग—प्रथम बार १०००, सन् १९२२ ।

नवाँ भाग—प्रथम बार १०००, सन् १९२४ ।

दसवाँ भाग—प्रथम बार ५००, सन् १९२४ ।

ग्यारहवाँ भाग—प्रथम बार ५००, सन् १९२४ ।

बारहवाँ भाग—प्रथम बार ५००, सन् १९२४ ।

तेरहवाँ भाग—प्रथम बार ५००, सन् १९२६ ।

चौदहवाँ भाग—प्रथम बार ५००, सन् १९२६ ।

पन्द्रहवाँ भाग—प्रथम बार २५०, सन् १९२६ ।

सोलहवाँ भाग—प्रथम बार २५०, सन् १९२६ ।

सत्रहवाँ भाग—पृष्ठ फटा रहने के कारण कोई सूचना नहीं मिलती ।

अठारहवाँ भाग—प्रथम बार २५०, सन् १९२७ ।

उन्नीसवाँ भाग—प्रथम बार २५०, सन् १९२७ ।

बीसवाँ भाग—प्रथम बार २५०, सन् १९२७ ।

इक्कीसवाँ भाग—प्रथम बार २५०, सन् १९२७ ।

बाईसवाँ भाग—प्रथम बार सन् १९२७ ।

तेईसवाँ भाग—प्रथम बार सन् १९२७ ।

चौबीसवाँ भाग—प्रथम बार १९२७ ।

पच्चीसवाँ भाग—प्रथम बार १९२७ ।

छब्बीसवाँ भाग—पुस्तकालय में नहीं है ।

सत्ताईसवाँ भाग प्रथम बार १९२८ ।

अट्ठाईसवाँ भाग—प्रथम बार १९२८

२. कृष्णकान्ता सन्तति, भाग ६, १९२२ के साथ संलग्न विज्ञापन ।

के शब्दों में इस उपन्यास में "सच्चा प्रेम-जादूगरी के दिलकश नज़ारे—अय्यारी और तिलस्मात के हैरतअंगेज करश्मे—ईश्वर के नाम की महिमा और योगबल का प्रभाव निहायत मोअस्सर पैराये में दिखाया है। जो ऐसे उपन्यासों के प्रेमी हैं उन्हें एक बार इसे पढ़कर देखना चाहिए कि ग्रंथकार अपने उद्देश्य में कितना सफल हुए हैं।'

प्रेमकान्ता

सन् १९२०-१९२४ ई० के बीच में कभी शम्भुप्रसाद उपाध्याय द्वारा रचित 'प्रेमकान्ता' नामक ऐयारी-तिलस्म प्रधान उपन्यास आठ भागों में उपन्यास दर्पण कार्यालय, काशी से सर्वप्रथम प्रकाशित हुआ। आर्यभाषा पुस्तकालय में इस उपन्यास के केवल आठवें भाग का प्रथम संस्करण, जो सन् १६२४ ई में प्रकाशित हुआ था, उपलब्ध है।[1] इस उपन्यास का दूसरा संस्करण सन् १९२६-१९२८ ई० की अवधि में प्रकाशित हुआ।[2]

प्रेमकान्ता सन्तति

सन् १९२५-२६ ई० में शम्भु प्रसाद उपाध्याय द्वारा रचित 'प्रेमकान्ता सन्तति' नामक ऐयारी तिलिस्म प्रधान उपन्यास, चार भागों में, उपन्यास दर्पण आफिस, बनारस से प्रकाशित हुआ।[3]

भुवन मोहिनी

इसी समय के लगभग राधेलाल अग्रवाल द्वारा रचित 'भुवन मोहिनी' नामक

---

१. प्रेमकान्ता, आठवाँ भाग (एक प्रेम रस युक्त अत्यन्त मनमोहक उपन्यास), लेखक—आशु कवि शम्भु प्रसाद उपाध्याय—

'प्रेम का प्याला पिलाकर, प्रेम का अब दम भरो
प्रेम में दिल को मिलाकर, प्रेम से सब कुछ करो।'

उपन्यास-दर्पण के अध्यक्ष बाबू बनारसी प्रसाद वर्म्मा द्वारा प्रकाशित, दूसरी बार १०००, १९२६।

२. प्राप्ति स्थान—आ० भा० पु० काशी। पहले, दूसरे और तीसरे भाग के आवरण पृष्ठ नष्ट हो गये हैं। चौथे भाग के मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—प्रेमकान्ता (एक मनोरंजक ऐय्यारी उपन्यास) चौथा भाग, लेखक—आशुकवि शम्भु उपाध्याय—

'प्रेम का प्याला पिलाकर, प्रेम का अब दम भरो,
प्रेम में दिल को मिलाकर, प्रेम से सब कुछ करो।'

उपन्यास दर्पण के अध्यक्ष बाबू बनारसी प्रसाद वर्मा द्वारा प्रकाशित, दूसरी बार १०००, १९२६।

पाँचवाँ भाग—दूसरी बार १०००, १९८४ (शेष पाद टिप्पणी १ की तरह)

छठा भाग—उपरिवत्।

साँतवा भाग—द्वितीय बार १०००, संवत् १९८५ (शेष उपरिवत्)

३. प्राप्ति स्थान—आ० भा० पु० काशी। प्रेमकान्ता सन्तति या (हीरे का तिलस्म), दूसरा हिस्सा लेखक—आशु कवि शम्भु प्रसाद उपाध्याय, प्रकाशक—बाबू बनारसी प्रसाद खत्री, उपन्यास दर्पण आफिस, बनारस सिटी, प्रथम बार २०००), १९२५।

तीसरा हिस्सा—मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—उपरिवत्।

चौथा हिस्सा—प्रथम बार १०००—१९२६ शेष प्रतिलिपि उपरिवत्।

पद्मकुमारी : शशिप्रभा : आनन्दसुन्दरी अथवा कुहक सुन्दरी

आर्य भाषा पुस्तकालय में कुछ और भी ऐयारी-तिलस्म प्रधान उपन्यास उपलब्ध हैं, जिनका प्रकाशन-काल ज्ञात नहीं हो पाता। 'पद्मकुमारी' नामक एक ऐयारी-तिलिस्म प्रधान उपन्यास का तीसरा भाग पुस्तकालय में उपलब्ध है, किन्तु उसके मुखपृष्ठ के नष्ट हो जाने के कारण उसके सम्बन्ध में कोई सूचना नहीं प्राप्त हो पाती। 'शशिप्रभा' नामक ऐयारी-तिलिस्म प्रधान उपन्यास के पाँचवें, छठे, सातवें और आठवें भाग भी पुस्तकालय में उपलब्ध हैं, पर इनके भी मुखपृष्ठों के फटे रहने के कारण इनके सम्बन्ध में कोई सूचना नहीं प्राप्त होती। मदन मोहन पाठक द्वारा लिखित 'आनन्दसुन्दरी अथवा कुहकसुन्दरी' नामक तिलिस्मी प्रधान उपन्यास भी आर्यभाषा पुस्तकालय में उपलब्ध है, पर इसके प्रकाशन-काल का पता नहीं चलता।[1]

प्राणवल्लभा

सन् १९३५ ई० में पं० शिवाधार शुक्ल लिखित 'प्राणवल्लभा' नामक तिलस्मी उपन्यास राजपूत पब्लिशिंग हाउस, बनारस सिटी से प्रकाशित हुआ।[2]

---

१. प्राप्ति स्थान—आ० भा० पु० काशी। मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—आनन्द सुन्दरी अथवा कुहक सुन्दरी, उपन्यास, प्रथम भाग, काशी निवासी मदन मोहन पाठक द्वारा रचित, काशी राजराजेश्वरी यन्त्रालय में मुद्रित। मुखपृष्ठ का निचला अंश फटा रहने के कारण प्रकाशन-काल तथा संस्करण सम्बन्धी सूचना नहीं मिलती; पृ० सं० १२८।

२. प्राप्ति स्थान—आ० भा० पु० काशी। मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—प्राणवल्लभा, रचयिता—राजवैद्य पण्डित शिवधार शुक्ल ('सरस्वती'—सम्पादक), प्रकाशक—राजपूत पब्लिशिंग हाउस, पुस्तक-प्रकाशक और विक्रेता—चौक, बनारस सिटी, संवत् १९९२।



वर्माकृत 'कर्म्मक्षेत्र' शीर्षक एक अन्य अनुवाद सन् १९२१ ई० में वर्मन प्रेस, कलकत्ता से प्रकाशित हुआ।[1]

वनवीर

सन् १९२३ ई० में विवेच्य उपन्यासकार के 'राजभक्ति' नामक उपन्यास का पं० नरोत्तम व्यासकृत 'वनवीर' शीर्षक अनुवाद वर्म्मन प्रेस, कलकत्ता से प्रकाशित हुआ।[2] पुस्तक के मुखपृष्ठ पर मूल उपन्यास तथा उपन्यासकार के नाम नहीं दिये हुए हैं। ये सूचनाएँ अनुवाद की भूमिका से प्राप्त की गयी हैं।[3]

विमला

विवेच्य उपन्यासकार के 'विमला' नामक उपन्यास का गुलजारी लाल कृत एक अनुवाद आर्यभाषा पुस्तकालय, काशी में उपलब्ध है, पर पुस्तक के मुखपृष्ठ के फटे रहने के कारण कोई सूचना नहीं मिल पाती। उपर्युक्त सूचनाएँ, जो अपूर्ण ही हैं, आ० भा० पु० की पुस्तकसूची से प्राप्त की गयी हैं।

दामोदर मुखोपाध्याय के उपन्यास भी हिन्दी पाठकों के बीच अधिक लोकप्रिय न हो सके। यद्यपि इनके प्राय: सभी उपन्यासों के अनुवाद हिन्दी में प्रस्तुत किये गये थे, पर किसी का भी दूसरा संस्करण नहीं हुआ। हिन्दी पाठकों की वर्तमान पीढ़ी इनके उपन्यासों से अपरिचितप्राय है।

प्रभातकुमार मुखोपाध्याय

रमा सुन्दरी

प्रभात कुमार मुखोपाध्याय के 'रमासुन्दरी' नामक उपन्यास का रामेश्वर प्रसाद पांडेय कृत अनुवाद १९१९ ई० में हरिदास एंड कम्पनी, कलकत्ता से प्रकाशित हुआ। आर्य भाषा पुस्तकालय, काशी में इस उपन्यास की एक प्रति उपलब्ध है, पर मुखपृष्ठ के न रहने के कारण पुस्तक के सम्बन्ध में कोई सूचना नहीं प्राप्त होती। उपर्युक्त सूचनाएँ आ०

का अनुवाद), ले०—दामोदर देव शर्मा, अनुवादक व प्रकाशक—पं० गुलजारीलाल चतुर्वेदी (कायमगंज), प्रथमवार १०००, १९१९

१. प्राप्तिस्थान—आ० भा० पुस्तकालय, काशी। मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—कर्मक्षेत्र, शिक्षाप्रद—सचित्र सामाजिक उपन्यास, अनुवादक—रामलाल वर्मा, प्रकाशक—रामलाल वर्मा, प्रोप्राइटर—"वर्म्मन प्रेस" और आर० एल० वर्म्मन एंड को०, ३७१, अपर चितपुर रोड, कलकत्ता, सं० १९७७ वि०, प्रथम संस्करण २००० प्रति, पृ० सं० ३०८।

२. प्रा० स्था०—वि० रा० भा० प० पु०, पटना। मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—वनवीर (सचित्र शिक्षाप्रद राजनीतिक उपन्यास). अनुवाद—पं० नरोत्तम व्यास, प्रकाशक—रामलाल वर्मा, प्रोप्राइटर—'वर्मन प्रेस' और आर० एल वर्म्मन एण्ड को०, ३७१, अपर चितपुर रोड, कलकत्ता, वैशाख, सं० १९८० वि०, प्रथम संस्करण २०००, पृ० सं० २१०।

३. उपरिवत्, भूमिका।

से प्रकाशित हुआ ।[1] इसका दूसरा संस्करण १९३५ ई० में इंडियन प्रेस, प्रयाग से प्रकाशित हुआ । आर्यभाषा पुस्तकालय, काशी में इस संस्करण की एक प्रति उपलब्ध है, पर मुखपृष्ठ के फटे रहने के कारण पुस्तक के सम्बन्ध में कोई सूचना नहीं प्राप्त होती । सूचनाएँ आ० भा० पु० की पुस्तक-सूची से प्राप्त की गयी हैं ।

पतिव्रता विपुला

विवेच्य उपन्यासकार के 'पतिव्रता विपुला' नामक उपन्यास के हिन्दी अनुवाद का द्वितीय संस्करण १९२४ ई० में कलकत्ता से राजेन्द्रनाथ कांजीलाल द्वारा प्रकाशित किया गया ।[2] प्रस्तुत पंक्तियों का लेखक इस अनुवाद के प्रथम संस्करण को प्राप्त करने में असमर्थ रहा है । द्वितीय संस्करण के मुखपृष्ठ पर प्रकाशक के बारे में सूचना नहीं दी हुई है । यह सूचना आर्यभाषा पुस्तकालय की पुस्तकसूची से प्राप्त की गयी है ।

आदर्श मित्र

विवेच्य उपन्यासकार की 'बाल्यबन्धु' नामक कहानी के आधार पर, जो बँगला की 'मानसी' नामक मासिक पत्रिका में प्रकाशित हुई थी, श्री रामचन्द्र शर्मा ने 'आदर्श मित्र' नामक उपन्यास की रचना की थी, जो सरस्वती पुस्तकमाला कार्यालय, कनखल और हरिद्वार से प्रकाशित हुआ ।[3] पुस्तक के आवरणपृष्ठ पर प्रकाशन-काल नहीं दिया हुआ है । इस उपन्यास का मुख्य उद्देश्य शराबखोरी के दोषों तथा आदर्श मित्रता के स्वरूप को चित्रित करना है ।

प्रभातकुमार मुखोपाध्याय के उपन्यासों में 'इन्दुमती अथवा रत्नदीप' और 'पतिव्रता विपुला' हिन्दी पाठकों में विशेष लोकप्रिय हुए । वर्तमान हिन्दी पाठकों में इनके उपन्यास लोकप्रिय नहीं हैं ।

जलधर सेन

अभागिनी

जलधर सेन के किसी उपन्यास का श्री सुरेन्द्रनाथ उपाध्याय कृत 'अभागिनी' शीर्षक अनुवाद १९१८ ई० में कलकत्ता से पन्नालाल सिंघई द्वारा प्रकाशित किया गया ।

---

१. प्रा० स्था०—सिनहा लाइब्रेरी, पटना; मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—नवीन संन्यासी (सचित्र), बाबू प्रभात कुमार मुखोपाध्याय—बार-ऐट ला, की बँगला पुस्तक का अनुवाद, प्र० इंडियन प्रेस लिमिटेड, प्रयाग, प्रथम संस्करण १९२३, पृ० सं० ५४१ ।

२. प्राप्ति स्थान—आ० भा० पु० काशी । मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—ललना लहरी नं० १, पतिव्रता विपुला, एक अपूर्व नवीन भावपूर्ण उपन्यास, जिसकी सच्ची अद्भुत घटनाएँ और प्राकृत पतिप्रेम स्त्रियों के कोमल हृदय में पातिव्रत्य का बीज अंकुरित कर सकती हैं । रचयिता श्री प्रभातचन्द्र मुखोपाध्याय, द्वितीय संस्करण १९२४ ।

३. प्राप्ति स्थान — मा० पु०, पटना । मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—आदर्श मित्र, लेखक—रामचन्द्र शर्मा, प्रकाशक—सरस्वती पुस्तक माला कार्यालय, कनखल और हरिद्वार, पृ० सं० ७३ ।

ज्ञात होता है कि यह मूल पुस्तक का परिवर्तित और परिष्कृत स्वतन्त्र अनुवाद है।[1]

योगेन्द्रनाथ चट्टोपाध्याय

बड़ी बहू

सन् १९१९ ई० में योगेन्द्रनाथ चट्टोपाध्याय के 'विमाता' नामक उपन्यास का गिरिजा कुमार घोष कृत 'बड़ी बहू' शीर्षक अनुवाद रामनारायण लाल द्वारा इलाहाबाद से प्रकाशित किया गया।[2] पुस्तक के मुखपृष्ठ पर मूल लेखक का नाम नहीं दिया हुआ है। यह सूचना अनुवाद की भूमिका से प्राप्त होती है। अनुवाद की 'भूमिका' के अनुसार "छोटी बहू' से मेल रखने के उद्देश्य से इस पुस्तक के नाम का भी रूपान्तर किया गया है। आशा है कि ग्रन्थकार के अन्यान्य ग्रन्थों को जैसा आशातीत आदर हिन्दीभाषियों से मिला है, वैसा ही आदर इस ग्रन्थ को भी मिलेगा, क्योंकि इस बार भी उद्देश्य पूर्ववत् अन्तःपुरवासिनी माताओं की सेवा करना ही है।" इस उद्धरण से जान पड़ता है कि 'विमाता' के पूर्व विवेच्य उपन्यासकार का 'छोटी बहू' नामक उपन्यास अनूदित हो चुका था।

कलंकिनी

सन् १९२० ई० में विवेच्य उपन्यासकार के 'कलंकिनी' नामक उपन्यास का सावित्री कृत अनुवाद मनमोहन पुस्तकालय, काशी से प्रकाशित हुआ।[3]

योगेन्द्रनाथ चट्टोपाध्याय के उपन्यास भी हिन्दी पाठक-समुदाय के बीच अधिक लोकप्रिय न हो सके। इसका एक प्रमाण यह है कि इनके किसी भी उपन्यास के हिन्दी अनुवाद का दूसरा संस्करण नहीं प्रकाशित हुआ।

रवीन्द्रनाथ ठाकुर

रवीन्द्रनाथ ठाकुर के कुछ उपन्यासों के अनुवादों का परिचय 'हिन्दी उपन्यासकोश' के प्रथम खंड में दिया जा चुका है। प्रेमचन्द युग में अनूदित इनके उपन्यासों का परिचय यहाँ प्रस्तुत है।

उपन्यास, लेखक—श्रीयुत् पं० रामप्रसाद जी पांडेय, मूल लेखक—जलधर सेन, प्रकाशक—उपन्यास बहार आफिस, बनारस, सन् १९२५ ई०।

१. उपरिवत्, परिचय।

२. प्रा० स्था०—आ० भा० पु० काशी। मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—बड़ी बहू, एक शिक्षाप्रद स्त्री पाठ्य उपन्यास, लेखक—गिरिजा कुमार घोष, प्रकाशक—राम नारायण लाल, पब्लिशर और बुकसेलर, इलाहाबाद, प्रथमवार २०००, १९१९।

३. प्रा० स्था०—आ० भा० पु० काशी। मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—कलंकिनी, श्रीयुत बाबू योगेन्द्र नाथ चट्टोपाध्याय के एक सामाजिक उपन्यास का अनुवाद, अनुवादिका 'सावित्री', प्रकाशक—मनमोहन पुस्तकालय, काशी, प्रथमावृत्ति १९७७ वि०।

घर और बाहर

रवीन्द्रनाथ ठाकुर के 'घरे बाहरे'[१] नामक उपन्यास का अनुवाद सर्वप्रथम रूपनारायण पांडेय ने 'घर और बाहर' शीर्षक से प्रस्तुत किया था। 'सरस्वती' पत्रिका में जुलाई १९२३ से इसका धारावाहिक प्रकाशन आरम्भ हुआ और दिसम्बर १९२३ में पूर्ण हुआ। इसका एक अन्य अनुवाद भी प्रकाश पुस्तकालय, कानपुर से 'घर और बाहर' शीर्षक से से १९२४ ई० के पूर्व प्रकाशित हो चुका था।[२] अनुवाद रघुकुल तिलक ने किया था। इसका दूसरा संस्करण १९२५ ई० में प्रकाशित हुआ।[३] यही अनुवाद १९४९ ई० में कल्याण दास एँड ब्रदर्स, वाराणसी से प्रकाशित हुआ। १९५७ ई० तक इसके पाँच संस्करण निकल चुके थे और कुल मिलाकर इसकी ९००० प्रतियाँ मुद्रित हो चुकी थीं। इस उपन्यास का एक अनुवाद जयकृष्ण शुक्ल ने प्रस्तुत किया, जो अजय प्रेस व प्रकाशन, इलाहाबाद से प्रकाशित हुआ। १९५८ ई० के पूर्व इसके भी दो संस्करण हो चुके थे।

चार अध्याय

रवीन्द्रनाथ ठाकुर के 'चार अध्याय'[४] नामक उपन्यास का अनुवाद हिन्दी में, सर्वप्रथम, १९३६ ई० में, इसी शीर्षक से, विश्वभारती कार्यालय, कार्नवालिस स्ट्रीट, कलकत्ता से प्रकाशित हुआ। इसका अनुवाद धन्य कुमार जैन ने प्रस्तुत किया था। इसका दूसरा संस्करण इंडियन प्रेस, लिमिटेड, इलाहाबाद से प्रकाशित हुआ। इस उपन्यास का एक अन्य अनुवाद **'एला दीदी'** शीर्षक से कृष्णवल्लभ नामक सज्जन ने प्रस्तुत किया, जो १९५७ ई० में किताब महल, जीरो रोड, इलाहाबाद से प्रकाशित हुआ। कमला प्रसाद राय शर्मा ने भी इसका एक अनुवाद साहित्य सेवक कार्यालय, बनारस से प्रकाशित कराया।

शरच्चन्द चट्टोपाध्याय

शरच्चन्द्र चट्टोपाध्याय बँगला ही नहीं, समस्त हिन्दीतर भाषाओं से हिन्दी में अनूदित उपन्यासकारों में सर्वाधिक लोकप्रिय उपन्यासकार हैं। लोकप्रियता की दृष्टि से शरच्चंद्र चट्टोपाध्याय के हिन्दी में अनूदित उपन्यासों से केवल प्रेमचन्द के उपन्यास टक्कर ले सकते हैं।

---

१. यह उपन्यास सर्वप्रथम 'सुबुज पत्र' नामक बँगला पत्रिका में बं० १३२२ वैशाख-फाल्गुन (१९१५-१६) में प्रकाशित हुआ। पुस्तक रूप में इसका प्रकाशन ई० सन् १९१६ में हुआ।

२. गोरा, प्रकाश पुस्तकालय, कानपुर, १९२४ ई० के अन्तिम पृष्ठ का विज्ञापन।

३. आर्यभाषा पुस्तकालय की पुस्तक सूची से प्राप्त सूचना। पुस्तकालय से पुस्तक के खो जाने के कारण लेखक उसे देखने में समर्थ न हो सका।

४. इस उपन्यास की रचना जून १९३४ ई० में हुई थी। पुस्तक रूप में इसका प्रकाशन बं० १३४१ अग्रहायण (१९३४ ई०) में हुआ।

चरित्रहीन के 'द्वितीय संस्करण की भूमिका' संलग्न है। इसके अनुसार "इस नये संस्करण को यदि हम नया संस्करण न कहकर एक नवीन अनुवाद कहें तो इसमें कुछ भी अनौचित्य नहीं होगा। कारण, पहले संस्करण की भाषा ऐसी जटिल और शिथिल थी कि उसका कलेवर पूर्णतः पलटे बिना दुबारा प्रकाशित करना हमने ठीक न समझा। यद्यपि पिछले संस्करण की सभी कापियाँ कुछ ही वर्षों में निकल गयीं और हम चाहते तो उसका यह संस्करण भी ज्यों का त्यों पुनः मुद्रित कराकर प्रकाशित कर सकते थे, परन्तु वैसा न कर हमने इसकी भाषा में आमूल सुधार करने का भार पं० कार्तिकेय चरण मुखोपाध्याय को दिया और उन्होंने पूरे परिश्रम के साथ इसे यह नवीन रूप दिया है।"[1] 'भूमिका' के नीचे तिथि न दी जाने के कारण इसके द्वितीय संस्करण का प्रकाशन-काल नहीं ज्ञात हो पाता। यदि आर्यभाषा पुस्तकालय की पुस्तकसूची में दी गयी सूचना अशुद्ध नहीं है तो चरित्रहीन के इस नवीन संस्करण का प्रकाशन-काल १९३७ ई० सिद्ध होता है।

'चरित्रहीन' का रूप नारायण पांडेय कृत एक अन्य अनुवाद सर्वप्रथम १९५३ ई० में हिन्दी ग्रन्थ रत्नाकर कार्यालय, बम्बई से प्रकाशित हुआ।[2]

'चरित्रहीन' का एक दूसरा अनुवाद सुरेन्द्र एंड कम्पनी, कटरा, इलाहाबाद से भी १९५८ ई० के पूर्व प्रकाशित हो चुका था। यह सूचना उक्त प्रकाशन संस्था की १९५८ में मुद्रित पुस्तक-सूची से संगृहीत की गयी है।

उपर्युक्त विवरण को ध्यान से देखने पर हम पाते हैं कि सन् १९२३ ई० से लेकर १९३७ के बीच 'चरित्रहीन' का केवल एक संस्करण—पाठकों के बीच इसकी माँग होने पर भी—प्रकाशित हो सका। इसका कारण कदाचित् इस उपन्यास का दीर्घ कलेवर है। हिन्दी में बड़े उपन्यासों को प्रकाशित होने में तब तक कठिनाई होती ही है जब तक वे बहुत ज्यादा लोकप्रिय नहीं हो जाते। 'चरित्रहीन' के विषय में भी यही सत्य है। जब तक शरत् बाबू हिन्दी में बहुत ज्यादा लोकप्रिय नहीं हुए तब तक इस उपन्यास का केवल एक संस्करण निकल पाया, पर जब उनके उपन्यासों की माँग बहुत बढ़ गयी तो इसके नवीन संस्करण और नवीन अनुवाद धड़ाधड़ निकलने लगे। १९३६ के बाद चरित्रहीन के विभिन्न संस्करणों और नवीन अनुवादों के प्रकाशन का यही रहस्य है।

विराज बऊ

'विजया' नामक उपन्यास के 'वक्तव्य' से ज्ञात होता है कि सन् १९२४ ई० के पूर्व शरच्चन्द्र के 'विराज बऊ' नामक उपन्यास का अनुवाद हिन्दी में प्रकाशित हो चुका था।[3] प्रस्तुत पंक्तियों का लेखक इस अनुवाद को प्राप्त करने से असमर्थ रहा है।

पं० कार्तिकेय चरण मुखोपाध्याय, प्रकाशक—हिन्दी पुस्तक एजेन्सी, २०३, हरिसन रोड, कलकत्ता, छठवाँ संस्करण १९५०, पृ० सं० ७०२।

१. उपरिवत्, द्वितीय संस्करण की भूमिका।

२. आ० भा० पु० की पुस्तकसूची।

३. विजया, मूललेखक—शरच्चन्द्र चट्टोपाध्याय, अनुवादक—रूपनारायण पांडेय, प्र०—गंगा पुस्तक

१६५८ ई० में मुद्रित इंडियन प्रेस, प्रयाग की पुस्तक सूची से ज्ञात होता है कि सन् १९५८ ई० के पूर्व इंडियन प्रेस, प्रयाग से भी 'स्वामी' का कोई अनुवाद प्रकाशित हो चुका था।

देवदास

जनवरी, सन् १९२५ ई० में शरत् बाबू के 'देवदास' नामक उपन्यास का अखौरी गंगा प्रसाद सिंह 'विशारद' कृत अनुवाद सर्व प्रथम चाँद कार्यालय, इलाहाबाद से प्रकाशित हुआ।[1] इसका दूसरा संशोधित संस्करण १९३१ ई० में प्रकाशित हुआ।[2] चाँद, ज्योति, तरुण राजस्थान, प्रताप, हिन्दी मनोरंजन, आज, सैनिक आदि पत्रों में प्रकाशित इस उपन्यास की प्रशंसात्मक समीक्षाओं को देखने से प्रतीत होता है कि यह उपन्यास हिन्दी पाठकों में अत्यन्त लोकप्रिय था।

'देवदास' का एक अनुवाद श्री निहालचन्द्र वर्मा ने भी प्रस्तुत किया था, जिसका दूसरा संस्करण विद्यामन्दिर, वाराणसी से प्रकाशित हुआ।[3] पुस्तक के मुखपृष्ठ पर प्रकाशन-काल न दिये रहने के कारण यह नहीं ज्ञात हो पाता कि इसके प्रथम अथवा द्वितीय संस्करण का प्रकाशन-काल क्या है।

चन्द्रनाथ

सन् १९२५ ई० में शरच्चन्द्र के 'चन्द्रनाथ' नामक उपन्यास का रामचन्द्र वर्मा कृत अनुवाद हिन्दी ग्रन्थ रत्नाकर कार्यालय, बम्बई से प्रकाशित हुआ। आर्यभाषा पुस्तकालय, काशी में इस अनुवाद की एक प्रति उपलब्ध है, पर मुखपृष्ठ के न रहने के कारण पुस्तक के सम्बन्ध में कोई सूचना नहीं प्राप्त होती। उपर्युक्त सूचनाएँ आ० भा० पु० की पुस्तक-सूची से प्राप्त की गयी हैं। 'सरस्वती' के अगस्त १९२५ के अंक में प्रकाशित 'परिचय' से भी विवेच्य उपन्यास का प्रकाशन-काल १९२५ ई० प्रमाणित होता है।

सन् १९५८ ई० में मुद्रित एक सूचीपत्र से ज्ञात होता कि 'चन्द्रनाथ' का एक अन्य अनुवाद १९५८ ई० के पूर्व सुरेन्द्र एंड कम्पनी, कटरा, इलाहाबाद से प्रकाशित हुआ था।

बड़ी दीदी

सन् १९२५ ई० में ही शरत् बाबू के किसी उपन्यास का रूपनारायण पांडेय कृत

---

१. प्रा० स्था०—आ० भा० पु० काशी। मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—विद्याविनोद ग्रंथमाला का २२वाँ पुष्प, देवदास (सामाजिक उपन्यास), अनुवादक—श्रीयुत अखौरी गंगा प्रसाद सिंह 'विशारद', भूतपूर्व संपादक 'भारतजीवन', प्रकाशक—"चाँद' कार्यालय, इलाहाबाद, जनवरी १९२५, प्रथम संस्करण २०००, पृ० सं० १७७।

२. भविष्य, २८ दिसम्बर १९३१, देवदास का विज्ञापन।

३. प्राप्तिस्थान—आर्यभाषा पुस्तकालय, काशी।

पंडित जी

शरत् बाबू के किसी उपन्यास का रूपनारायण पांडेय द्वारा प्रस्तुत 'पंडित जी' शीर्षक अनुवाद सन् १९२५ ई० में इंडियन प्रेस लिमिटेड, प्रयाग से प्रकाशित हुआ।[1]

'पंडित जी' का श्री रामचन्द्र शर्मा द्वारा प्रस्तुत किया हुआ एक अन्य अनुवाद शरत् साहित्य (भाग ११) के अन्तर्गत १९३८ ई० में हिन्दी ग्रन्थ रत्नाकर कार्यालय, बम्बई से प्रकाशित हुआ। इसका दूसरा संस्करण १९४२ ई० में, चौथा संस्करण १९५१ में तथा पाँचवाँ संस्करण १९५५ ई० में प्रकाशित हुआ।

बैकुंठ का बिल

शरत् बाबू के किसी उपन्यास का 'बैकुंठ का बिल' शीर्षक अनुवाद सर्वप्रथम 'सरस्वती' के दो अंकों (दिसम्बर १९२५, अप्रैल १९२६) में प्रकाशित हुआ।[2] बाद में यह अनुवाद इंडियन प्रेस, प्रयाग से पुस्तक रूप में प्रकाशित हुआ।

बैकुंठ का दानपत्र

विवेच्य उपन्यास का रामचन्द्र वर्मा द्वारा प्रस्तुत एक दूसरा अनुवाद 'बैकुंठ का दानपत्र' शीर्षक से 'शरत् साहित्य' (भाग २) के अन्तर्गत हिन्दी ग्रन्थ रत्नाकर कार्यालय, बम्बई से १९३६ ई० में प्रकाशित हुआ, जिसका चौथा संस्करण १९५० ई० में, और पाँचवाँ संस्करण १९५३ ई० में प्रकाशित हुआ।

कुसुम

शरच्चन्द्र के 'कुसुम' नामक उपन्यास का रूपनारायण पांडेय कृत अनुवाद सर्वप्रथम १९२६ ई० में इंडियन प्रेस, प्रयाग से प्रकाशित हुआ।[3] इसका एक अन्य अनुवाद सत्य नारायण व्यास ने किया जो आदर्श पुस्तक मन्दिर, इलाहाबाद से प्रकाशित हुआ। इसके प्रकाशन-काल का पता नहीं चलता।[4]

नवविधान

सन् १९२६ ई० में ही शरत् बाबू के 'नव विधान' नामक उपन्यास का रूपनारायण पांडेय कृत अनुवाद इंडियन प्रेस, प्रयाग से प्रकाशित हुआ।[5]

---

१. प्रा० स्था०—प० वि० पु०, पटना। मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—पंडित जी, मूललेखक—श्री शरच्चन्द्र चट्टोपाध्याय, अनुवादकर्त्ता रूपनारायण पाण्डेय, प्रथमावृत्ति सं० १९८२ वि०, पृ० सं० १९८।

२. बैकुंठ का बिल, मूल लेखक—शरच्चन्द्र, सरस्वती, दिसम्बर १९२५, पृ० ५९५-६०२, अप्रैल १९२६ पृ० ४५९-६१।

३. आ० भा० पु० काशी की पुस्तक-सूची।

४. प्रा० स्था०—प० वि० पु०। मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—कुसुम, मूल लेखक—श्री शरच्चन्द्र चट्टोपाध्याय, अनुवादक—सत्यनारायण व्यास, प्रकाशक—आदर्श पुस्तक मन्दिर, चौक, इलाहाबाद, पृ०सं० १३०।

५. प्रा० स्था०—आ० भा० पु० काशी। मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—शरद् ग्रन्थावली—पुस्तक

नहीं हो सका है, पर इसका प्रकाशन-काल १९४० ई० के लगभग है। इसका तीसरा संस्करण दिसम्बर १९४७ में प्रकाशित हुआ।[1] इसके 'दो शब्द' के अनुसार यह उपन्यास शरत् बाबू के 'रमा' नामक नाटक का उपन्यास रूप में रूपान्तर है।

'देहाती समाज' का एक दूसरा अनुवाद सुरेन्द्र एंड कम्पनी, कटरा, इलाहाबाद से १९५८ ई० के पूर्व प्रकाशित हुआ।[2]

श्रीकान्त

शरच्चन्द्र के 'श्रीकान्त' नामक उपन्यास का रूपनारायण पांडेय कृत अनुवाद 'सरस्वती' के मार्च १९२८ से अगस्त १९२९ तक के अंकों में प्रकाशित हुआ।[3] आर्यभाषा पुस्तकालय, काशी की पुस्तकसूची से ज्ञात होता है कि इस अनुवाद का पुस्तक संस्करण १९४० ई० में इंडियन प्रेस, प्रयाग से प्रकाशित हुआ था।

सन् १९३६ ई० में 'श्रीकान्त' का हेमचन्द मोदी और धन्यकुमार जैन द्वारा प्रस्तुत अनुवाद हिन्दी ग्रन्थ रत्नाकर कार्यालय, बम्बई से प्रकाशित हुआ। यह अनुवाद पर्वों में बँटा है। प्रथम पर्व श्री हेमचन्द्र मोदी द्वारा तथा दूसरे, तीसरे और चौथे पर्व धन्य-कुमार जैन द्वारा अनूदित है। प्रथम पर्व के 'अनुवादकर्त्ता का वक्तव्य' के अन्त में १०-११-३६ तिथि मुद्रित है, जिससे इसके अनुवाद-काल का पता चलता है। प्रथम पर्व का पाँचवाँ संस्करण १९४७ ई० में तथा छठा संस्करण १९५२ ई० प्रकाशित हुआ था। इसी प्रकार दूसरे, तीसरे और चौथे पर्वों के चौथे संस्करण १९५० ई० में तथा पाँचवें संस्करण १९५४ ई० में प्रकाशित हुए थे।[4]

छुटकारा

सन् १९२९ ई० में शरत् बाबू के किसी उपन्यास का रूपनारायण पांडेय कृत 'छुटकारा' शीर्षक अनुवाद इंडियन प्रेस, प्रयाग से प्रकाशित हुआ।[5]

---

१. सुलभ साहित्य माला, उन्नीसवाँ पुष्प, शरत् साहित्य, ग्रामीण समाज, अनुवादकर्त्ता रामचन्द्र वर्मा, प्रकाशक नाथूराम प्रेमी, हिन्दी ग्रन्थ रत्नाकर कार्यालय, हीराबाग, बम्बई नं० ४, तीसरी बार, दिसम्बर १९४७, पृ० सं० १३२।

२. सुरेन्द्र एंड कम्पनी, कटरा, इलाहाबाद, नया सूची पत्र १९५८-५९।

३. श्रीकान्त, लेखक—श्री शरच्चन्द्र चट्टोपाध्याय, अनुवादक श्रीयुत् रूपनारायण पांडेय, सरस्वती मार्च १९२८ - अगस्त १९२९।

४. ये सूचनाएँ आर्यभाषा पुस्तकालय में उपलब्ध प्रतियों तथा वहाँ की पुस्तक सूची से प्राप्त की गयी हैं। प्राप्त प्रतियों के मुखपृष्ठों की प्रतिलिपि—

(१) सुलभ साहित्य माला-चौथा पुष्प, श्रीकान्त (प्रथम पर्व), अनुवादकर्त्ता—स्व० हेमचन्द्र मोदी, प्रकाशक हिन्दी ग्रन्थ रत्नाकर कार्यालय, बम्बई, छठी बार अक्टूबर १९५२, पृ० सं० १५२।

(२) सुलभ साहित्य माला—सप्तम पुष्प, शरत् साहित्य, श्रीकान्त (तृतीय पर्व) अनुवादकर्त्ता—धन्य कुमार जैन, प्रकाशक हिन्दी ग्रन्थ रत्नाकर कार्यालय, बम्बई, चौथी बार, जनवरी १९५०। पृ० सं० १६०।

५. आ० भा० पु० की पुस्तक सूची।

में प्रकाशित हुआ।[१] अनुवादक थे श्री धन्यकुमार जैन। इसका चौथा संस्करण १९४९ ई० में[२] तथा पाँचवाँ संस्करण १९५३ ई० में छपा।[३]

शरत् साहित्य : भाग-२

'शरत् साहित्य' का द्वितीय भाग भी १९३६ ई० में ही ग्रन्थ रत्नाकर कार्यालय से प्रकाशित हुआ। इसमें शरत् बाबू के तीन उपन्यासों के अनुवाद—'स्वामी' (पृ० सं० ५५), 'बैकुण्ठ का दान पत्र' (पृ० सं० ७८) और 'अंधकार में आलोक' (पृ० सं० २५)—संकलित किये गये थे। अनुवादक थे श्री रामचन्द्र वर्मा।[४] 'शरत् साहित्य' के दूसरे भाग का चौथा संस्करण १९५० ई० में[५] तथा पाँचवाँ संस्करण १९५३ ई० में प्रकाशित हुआ।[६]

शरत् साहित्य : भाग-३

'शरत् साहित्य' का तृतीय भाग भी १९३६ ई० में ही हिन्दी ग्रन्थ रत्नाकर कार्यालय, बम्बई से प्रकाशित हुआ।[७] इस भाग में शरत् बाबू के तीन उपन्यासों के अनुवाद—'चन्द्रनाथ' (पृष्ठ सं० ८८), 'तसवीर' (पृ० सं० २०) और 'दर्पचूर्ण' (पृ० सं० ३४)—संकलित किये गये थे। तीनों के अनुवादक थे क्रमशः रामचन्द्र वर्मा, हेमचन्द्र मोदी और धन्यकुमार जैन। इस भाग का दूसरा संस्करण १९३९ ई० में,[८] चौथा संस्करण १९५१ ई० में[९], तथा पाँचवाँ संस्करण १९५५ ई० में[१०] प्रकाशित हुआ।

शरत् साहित्य : भाग-४

'सुलभ साहित्य माला' के चौथे पुष्प के अन्तर्गत हेमचन्द्र मोदी द्वारा अनूदित

---

१. प्रा० स्था०—प० वि० पु०, पटना। मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—सुलभ साहित्य माला, प्रथम पुष्प, शरत् साहित्य (प्रथम भाग), सुमति, पथनिर्देश, काशीनाथ, अनुपमा का प्रेम, अनुवादकर्त्ता–धन्यकुमार जैन, प्रकाशक नाथूराम प्रेमी, हिन्दी ग्रन्थ रत्नाकर कार्यालय, हीराबाग, बम्बई, नं० ४, पहली बार १९३६।

२. प्रा० स्था०—आ० भा० पु० काशी।

३. आर्यभाषा पुस्तकालय, पुस्तक सूची।

४. आर्यभाषा पुस्तकालय, काशी, पुस्तकसूची।

५. प्रा० स्था—आ० भा० पु० काशी। मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—सुलभ साहित्य (दूसरा भाग), स्वामी, वैकुंठ का दानपत्र, अन्धकार में आलोक, अनुवादकर्ता–रामचन्द्र वर्मा, प्रकाशक–हिन्दी ग्रन्थ रत्नाकर कार्यालय, बम्बई, चौथी आवृत्ति, अक्टूबर १९५०।

६. आर्यभाषा पुस्तकालय, काशी, पुस्तक सूची।

७. प्रा० स्था०—आ० भा० पु० काशी। मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—सुलभ साहित्यमाला, तृतीय पुष्प। शरत् साहित्य (तीसरा भाग), चन्द्रनाथ, तसवीर, दर्पचूर्ण, अनुवादकर्त्ता–रामचन्द्र वर्मा, हेमचन्द्र मोदी, धन्यकुमार जैन, प्रकाशक—हिन्दी ग्रन्थ रत्नाकर कार्यालय, बम्बई। पहलीबार १९३६।

८. प्रा० स्था०—मा० पु०, पटना।

९. प्रा० स्था—आ० भा० पु०, काशी।

१०. उपरिवत्

शरत् साहित्य : भाग-८

'सुलभ साहित्यमाला' के आठवें पुष्प के अन्तर्गत श्री धन्यकुमार जैन द्वारा अनूदित शरत् साहित्य (आठवाँ भाग), जिसके अन्तर्गत 'विन्दो का लल्ला' (पृ० सं० ५६), 'बोझ' (पृ०सं० २०), 'मन्दिर' (पृ०सं० १८), 'मुकद्दमे का नतीजा' (पृ०सं० १४), 'हरिचरण' (पृ०सं० ५), 'हरिलक्ष्मी' (पृ० सं० १८), और 'अभागिनी' (पृ० सं० ११) संकलित किये गये थे, १९३७ ई० में, हिन्दी ग्रन्थ रत्नाकर कार्यालय बम्बई से प्रकाशित हुआ।[1] इस भाग का पाँचवाँ संस्करण १९४७ ई० में[2] और छठा संस्करण १९५३ ई० में प्रकाशित हुआ।[3] इनमें से पहला लघु उपन्यास और शेष छोटी कहानियाँ हैं।

शरत् साहित्य : भाग-९

'सुलभ साहित्य माला' के नवें पुष्प के अन्तर्गत धन्य कुमार जैन द्वारा अनूदित 'षोडशी' शीर्षक नाटक और 'निष्कृति' नामक उपन्यास हिन्दी ग्रन्थ रत्नाकर कार्यालय, बम्बई से प्रकाशित हुआ। इसका तीसरा संस्करण सितम्बर १९४६ में छपा।[4]

शरत् साहित्य : भाग-१०

'सुलभ साहित्य माला' के दसवें पुष्प के अन्तर्गत रामचन्द्र वर्मा द्वारा अनूदित 'शरत् साहित्य' का दसवाँ भाग, जिसके अन्तर्गत शरत् बाबू के दो उपन्यासों के अनुवाद—'देवदास' (पृ०सं० ११६) और 'बड़ी बहन' (पृ०सं० ५२)—संकलित किये गये थे, सर्वप्रथम १९३८ ई० में हिन्दी ग्रन्थ रत्नाकर कार्यालय, बम्बई से प्रकाशित हुआ।[5] इस भाग का तीसरा संस्करण १९५० ई० में[6], तथा चौथा संस्करण १९५४ ई०[7] में प्रकाशित हुआ।

रत्नाकर कार्यालय, बम्बई, चौथी बार जनवरी १९५०, पृ० सं० १६०।

१. आ० भा० पु०, पुस्तक सूची।

२. प्राप्तिस्थान—प० वि० पु०, पटना। मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—सुलभ साहित्य माला, आठवाँ पुष्प शरत् साहित्य, विन्दो का लल्ला, बोझ, मंदिर, मुकद्दमे का नतीजा, हरिचरण, हरिलक्ष्मी, अभागिनी का स्वर्ग, अनुवादकर्ता-धन्य कुमार जैन, प्रकाशन—हिन्दी ग्रंथ रत्नाकर कार्यालय, बंबई, पाँचवी बार नवम्बर १९४७।

३. प्रा० स्था०—आ० भा० पु० काशी।

४. प्रा० स्था०—प० वि० पु० पटना। मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—सुलभ साहित्य-माला, नवाँ पुष्प शरत् साहित्य—षोडशी, निष्कृति, अनुवाकर्ता—धन्यकुमार जैन, प्रकाशक—नाथूराम प्रेमी, हिन्दी ग्रन्थ रत्नाकर कार्यालय, हीराबाग, बम्बई ४, तीसरी बार, सितम्बर १९४६।

५. प्रा० स्था०—आ० भा० पु० काशी। मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—सुलभ साहित्यमाला, दसवाँ पुष्प, शरत् साहित्य, देवदास, बड़ी बहन, अनुवादक—रामचन्द्र वर्मा, प्रका०—नाथूराम प्रेमी, हिन्दी ग्रंथ रत्नाकर कार्यालय, हीरा बाग, बम्बई, पहली बार अप्रैल १९३८।

६. प्रा० स्था०—आ० भा० पु० काशी।

७. आ० भा० पु० की पुस्तक सूची।

और 'पारस' (कहानी, पृ० १२) संकलित किये गये थे, १९३९ ई० में, पहली बार हिन्दी ग्रन्थ रत्नाकर कार्यालय, बम्बई से प्रकाशित हुआ।[१] इस भाग का चौथा संस्करण १९५१ ई० में[२] तथा पाँचवाँ संस्करण १९५५ ई० में[३] प्रकाशित हुआ।

शरत् साहित्य : भाग १६-१७

'सुलभ साहित्य माला' के सोलहवें-सत्रहवें पुष्प के अनुवादक धन्यकुमार जैन तथा प्रकाशक हिन्दी ग्रन्थ रत्नाकर कार्यालय, बम्बई थे। इसके अन्तर्गत शरच्चन्द्र का 'गृहदाह' नामक उपन्यास प्रकाशित हुआ। प्रस्तुत पंक्तियों के लेखक को इसका प्रथम संस्करण नहीं मिल सका है। इसका तीसरा संस्करण सितम्बर १९४८ में प्रकाशित हुआ।[४]

शरत् साहित्य : भाग १८

'सुलभ साहित्यमाला' के अठारहवें पुष्प के अन्तर्गत सुन्दर लाल त्रिपाठी और हेमचन्द्र मोदी द्वारा अनूदित 'शरत् साहित्य' (अठारहवाँ भाग), जिसमें शरत् बाबू के 'दत्ता' नामक उपन्यास का अनुवाद सम्मिलित किया गया था, १९४० ई० में हिन्दी ग्रन्थ रत्नाकर कार्यालय, बम्बई से प्रकाशित हुआ।[५] इसका तीसरा संस्करण १९४७ ई० में प्रकाशित हुआ।[६]

'सुलभ साहित्य माला' के उन्नीसवें पुष्प के अन्तर्गत **'ग्रामीण समाज'** नामक उपन्यास प्रकाशित हुआ, जिसका परिचय अन्यत्र दिया जा चुका है।

शरत् साहित्य : भाग २०-२१

'सुलभ साहित्यमाला' के बीसवें-इक्कीसवें पुष्प के अन्तगत धन्य कुमार जैन द्वारा अनूदित शरत् बाबू का 'शेष प्रश्न' नामक उपन्यास हिन्दी ग्रन्थ रत्नाकर कार्यालय, बम्बई से प्रकाशित हुआ, जिसका तीसरा संस्करण १९४६ ई० में निकला।[७]

---

१. आर्यभाषा पुस्तकालय, काशी, पुस्तक सूची।

२. प्राप्तिस्थान—आर्यभाषा पुस्तकालय काशी। मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—सुलभ साहित्य माला, पन्द्रहवाँ पुष्प, शरत् साहित्य, नारी का मूल्य, अनुराधा, महेश, पारस, अनुवादकर्ता—रामचन्द्र बर्मा, धन्यकुमार जैन, प्रकाशक हिन्दी ग्रंथ रत्नाकर कार्यालय, बंबई, चौथी बार, मार्च १९५१।

३. आ० भा० पु० काशी, पुस्तक सूची।

४. प्रा० स्था०—सिनहा पुस्तकालय, मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—शरत् साहित्य (सोलहवाँ-सत्रहवाँ भाग) गृहदाह, अनुवादकर्त्ता—धन्य कुमार जैन, प्रकाशक—नाथूराम प्रेमी, हिन्दी ग्रन्थ रत्नाकर कार्यालय, हीराबाग, गिरगाँव, बम्बई नं० ४, तीसरी बार सितम्बर १९४८, पृ० सं० २९६।

५. प्रा० स्था०—आ० भा० पु० काशी। मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—सुलभ साहित्य माला, अठारहवाँ पुष्प, शरत् साहित्य (अठारहवाँ भाग), दत्ता, अनुवादकर्त्ता—सुन्दर लाल त्रिपाठी, हेमचन्द्र मोदी, प्र०—हिन्दी ग्रन्थ रत्नाकर कार्यालय बम्बई, पहली बार जून १९४०, पृ० सं० २९७।

६. प्रा० स्था०—प० वि० पु०, पटना।

७. प्रा० स्था० आ० भा० पु० काशी। मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि सुलभ साहित्य माला, बीसवाँ-

शरत् साहित्य : भाग-२६

'सुलभ साहित्यमाला' के छब्बीसवें पुष्प के अन्तर्गत डॉ० महादेव शाहा द्वार अनूदित 'शरत् साहित्य' का छब्बीसवाँ भाग, जिसमें जागरण, आगामी काल, रसचक्र भला-बुरा और अरक्षणीया संकलित किये गये थे, १९५२ ई० में हिन्दी ग्रन्थ रत्नाकर कार्यालय, बम्बई से प्रकाशित हुआ।[१] उपर्युक्त शीर्षकों में से प्रथम चार शरच्चन्द्र की अधूरी रचनाएँ हैं और चौथा 'अरक्षणीया' लघु उपन्यास है।

नवीन प्रकाशन मन्दिर, काशी से शरच्चन्द्र के तीन उपन्यास—**'बिन्दो का लल्ला'** (पृ० स० ७७), **'हरिलक्ष्मी'** (पृ० सं० २७) और **'मुकदमे का परिणाम'** (पृ० सं० २५)—एक ही जिल्द में छपे। अनुवादक थे श्री विश्वम्भरनाथ गुप्त। पुस्तक में प्रकाशन-काल नही दिया हुआ है।[२]

पथ के दावेदार

सन् १९२९ ई० में ही शरत् बाबू के 'पथेर दावी' नामक उपन्यास का अनुवाद 'पथ के दावेदार' शीर्षक से प्रकाशित हुआ। इसका दूसरा संस्करण 'अधिकार' शीर्षक से छपा। आर्यभाषा पुस्तकालय में इस अनुवाद का दूसरा संस्करण ('अधिकार') उपलब्ध है, पर आरम्भिक पृष्ठों के फटे रहने के कारण पुस्तक के सम्बन्ध में कोई सूचना नहीं मिल पाती। उपर्युक्त सूचनाएँ पुस्तक के 'निवेदन' से प्राप्त की गयी है।

सविता

आर्यभाषा पुस्तकालय की पुस्तक-सूची के अनुसार शरच्चन्द्र चटर्जी के 'सविता' नामक उपन्यास का श्री द्विजेन्द्रनाथ मिश्र 'निर्गुण' द्वारा प्रस्तुत अनुवाद जनता पुस्तक मन्दिर, बनारस से प्रकाशित हुआ। प्रस्तुत पंक्तियों का लेखक इस अनुवाद को प्राप्त करने में असमर्थ रहा है। पुस्तक-सूची में प्रकाशन काल सम्बन्धी सूचना नहीं दी हुई है।

ब्राह्मण की बेटी

शरच्चन्द्र के किसी उपन्यास का श्री धनप्रकाश अग्रवाल द्वारा प्रस्तुत 'ब्राह्मण की बेटी' शीर्षक अनुवाद हिन्दी साहित्य भंडार, प्रयाग से प्रकाशित हुआ। पुस्तक में इसका प्रकाशन काल नहीं दिया हुआ है।[३]

---

१. प्रा० स्था०—आ० भा० पु० काशी। मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—सुलभ साहित्य माला, छब्बीसवाँ पुष्प, शरत् साहित्य, जागरण, आगामी कल, रसचक्र, भलाबुरा, अरक्षणीया, अनुवादक—डॉ० महादेव साहा, प्र० हिन्दी ग्रन्थ रत्नाकर कार्यालय, बम्बई, पहली बार अक्तूबर १९५२ ई०।

२. प्रा० स्था०—प० वि० पु०। मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—विन्दो का लल्ला, हरिलक्ष्मी, मुकदमे का परिणाम (सामाजिक उपन्यास), लेखक—स्वर्गीय शरत्चन्द्र चट्टोपाध्याय, अनुवादक—श्री विश्वम्भर नाथ गुप्त, प्रकाशक—नवीन प्रकाशन मन्दिर, मान मन्दिर, काशी, प्रथम संस्करण।

३. प्रा० स्था०—प० वि० पु०, पटना। मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—ब्राहमण की बेटी, उच्च कोटि का सामाजिक उपन्यास, मूल लेखक—श्री शरच्चन्द्र चट्टोपाध्याय, अनुवादक—श्री धनप्रकाश अग्रवाल बी० ए०, एल० एल० बी०, प्रकाशक—हिन्दी साहित्य भण्डार, कर्नलगंज, प्रयाग, पृ० सं० १२८।

उपन्यासों की हिन्दी पाठकों के बीच लोकप्रियता पूरी तरह से सिद्ध नहीं हुई थी। प्रकाशक शरत् बाबू के उपन्यासों की लोकप्रियता से परिचित होते हुए भी उन्हें प्रकाशित करने में हिचकते थे। हिन्दी ग्रन्थ रत्नाकर कार्यालय ने डरते-डरते ही 'शरत् साहित्य' का प्रकाशन आरम्भ किया था। पर दूसरे संस्करण के 'निवेदन' से यह स्पष्ट हो जाता है, कि शरत् बाबू के उपन्यास हिन्दी पाठकों के बीच १९३६ ई० के लगभग काफी लोकप्रिय हो चुके थे। इस प्रसंग में द्वितीय संस्करण के निवेदन की कुछेक पंक्तियाँ उद्धर्तव्य हैं—

"'सुलभ साहित्यमाला' की योजना को प्रारम्भ करते हुए हमने लिखा था—'इसके द्वारा हम यह निश्चित कर लेना चाहते हैं कि वास्तव में जन साधारण की वाचनाभिरुचि बढ़ रही है या नहीं, और वह केवल पुस्तकों की बहुमूल्यता या दुर्लभता के कारण ही तो नहीं दब रही है?"....इस माला में हम महान् लेखकों की जो रचनाएँ प्रकाशित करना चाहते हैं वे इतनी उत्कृष्ट हैं कि यदि वास्तव में अच्छा साहित्य पढ़ने की रुचि बढ़ी है तो इनकी अधिक खपत होनी ही चाहिए और हमारी यह योजना भी सफल होनी ही चाहिए।

आज हम बड़ी प्रसन्नता के साथ स्वीकार करते हैं कि हमारी योजना बहुत कुछ सफल हुई है और वह अच्छे साहित्य के पढ़ने की रुचि बढ़ने का स्पष्ट प्रमाण है। 'सुलभ साहित्य माला' के अब तक चौदह पुष्प प्रकाशित हो चुके हैं और प्रथम-द्वितीय पुष्प के बाद इस पुष्प की भी दो हजार प्रतियाँ समाप्त हो जाने के कारण आज दूसरी आवृत्ति प्रकाशित हो रही है। चौथे पुष्प की दूसरी आवृत्ति भी शीघ्र ही प्रकाशित होगी।"[१]

इस निवेदन से तथा शरत् बाबू के अनूदित उपन्यासों की संस्करण-संख्या से यह पूरी तरह सिद्ध हो जाता है कि प्रेमचन्द के जमाने में शरच्चन्द्र भी हिन्दी पाठकों के प्रिय लेखक थे।

चारुचन्द्र वंद्योपाध्याय

आलोकलता

चारुचन्द्र वंद्योपाध्याय के 'आलोकलता' नामक उपन्यास का श्री प्रकाशचन्द्र सेठी कृत अनुवाद राष्ट्रीय साहित्य भण्डार, अजमेर से सर्वप्रथम १९२३ ई० में प्रकाशित हुआ। प्रस्तुत पंक्तियों का लेखक इस अनुवाद को प्राप्त करने में असमर्थ रहा है। उपर्युक्त सूचनाएँ आर्यभाषा पुस्तकालय की पुस्तक-सूची से प्राप्त की गयी हैं।

विवाह कुसुम

विवेच्य उपन्यासकार के किसी अन्य उपन्यास का प्रकाशचन्द्र सेठी कृत 'विवाह-

---

१. शरत् साहित्य, तीसरा भाग, अनुवादकर्ता—रामचन्द्र वर्मा, हेमचन्द्र मोदी, धन्यकुमार जैन, प्र०—हिन्दी ग्रन्थ रत्नाकर कार्यालय, बम्बई, दूसरी बार अप्रैल १९३९ ई० दूसरे संस्करण का निवेदन।

विवेच्य अनुवाद का तृतीय संस्करण बिहार राष्ट्रभाषा परिषद् पुस्तकालय, पटना में उपलब्ध है।[1] इस प्रति के मुखपृष्ठ पर प्रकाशन काल नहीं दिया हुआ है। इस कारण इस संस्करण का प्रकाशन-काल तो नहीं ज्ञात हो पाता, पर इस उपन्यास की लोकप्रियता सिद्ध होती है।

बहता हुआ फूल

सन् १९२३ ई० में विवेच्य उपन्यासकार के 'स्रोतेर फूल' नामक उपन्यास का रूप नारायण पांडेय कृत, 'बहता हुआ फूल' शीर्षक अनुवाद गंगा पुस्तकमाला कार्यालय, लखनऊ से प्रकाशित हुआ। इस अनुवाद का दूसरा संस्करण १९२५ ई० में, चौथा संस्करण १९४७ ई० में तथा पाँचवाँ संस्करण १९५३ ई० में प्रकाशित हुआ था। प्रस्तुत पंक्तियों का लेखक इस अनुवाद के प्रथम चार संस्करणों को प्राप्त करने में असमर्थ रहा है। उपर्युक्त सूचनाएँ आर्यभाषा पुस्तकालय, काशी की पुस्तक-सूची, 'प्रभा' (फरवरी १९२४ ई०) तथा 'मतवाला' (दिसम्बर १९२३ ई०) में प्रकाशित विवेच्य उपन्यासकार की समीक्षाओं तथा उपन्यास के पंचम संस्करण के 'वक्तव्य' से प्राप्त की गयी हैं।[2] इस अनुवाद का पाँचवाँ संस्करण राष्ट्रभाषा परिषद् पुस्तकालय, पटना में उपलब्ध है।[3]

धोखाधड़ी

सन् १९२९-३० ई० में 'सरस्वती' के कतिपय अंकों में विवेच्य उपन्यासकार के किसी उपन्यास का श्री ठाकुरकान्त मिश्र द्वारा प्रस्तुत 'धोखाधड़ी' शीर्षक अनुवाद प्रकाशित हुआ।[4] प्रारम्भ में इस अनुवाद का शीर्षक 'धोखे की टट्टी' रखा गया था, पर बाद में शीर्षक बदल कर 'धोखाधड़ी' कर दिया गया। यह पता नहीं चलता कि यह चारु बाबू के किस उपन्यास का अनुवाद है। इस अनुवाद का पुस्तक संस्करण प्रस्तुत पंक्तियों के लेखक को नहीं प्राप्त हो सका है।

---

१. मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—घर जमाई या दुनियाँ का नक्शा (दुनियाँ के दुरंगपन का मार्मिक चित्र), मूल लेखक—श्री चारुचन्द्रवन्द्योपाध्याय, अनुवादक—श्री रामनाथ लाल 'सुमन', प्रकाशक—भार्गव पुस्तकालय, गायघाट, बनारस, तृतीय बार।

२. 'मतवाला', २९ दिसम्बर १९२३, समालोचना (बहता हुआ फूल); 'प्रभा', फरवरी १९२४, समीक्षा (बहता हुआ फूल); बहता हुआ फूल, गंगा पुस्तकमाला, कार्यालय, लखनऊ, पंचमावृत्ति, अक्तूबर १९५३ ई० 'वक्तव्य'।

३. मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—बहता हुआ फूल (सचित्र उपन्यास), मूल लेखक—श्री चारुचन्द्र बनर्जी बी० ए०, अनुवादक—श्री रूपनारायण पांडेय, प्रकाशक—श्री दुलारे लाल, अध्यक्ष, गंगा पुस्तक-माला कार्यालय, लखनऊ, पंचमावृत्ति—अक्तूबर १९५३ ई०।

४. सरस्वती, सितम्बर १९२९ (पृ० ३१७-३२५), अक्तूबर १९२९ (पृ० ४३१-४३९), नवम्बर १९२९ पृ० ५५६-५६०), दिसम्बर १९२९ (पृ० ६७४-६७९), फरवरी १९३० (पृ० २८०-२८७), मार्च १९३०

इस उपन्यास में यह दिखाने का प्रयत्न किया गया है कि किस प्रकार साधारण मनुष्य ही नहीं, वरन् धुरन्धर विद्वान् भी सांसारिक प्रलोभनों में फँसकर आत्मा-परमात्मा के अस्तित्व में शंका करने लगते हैं, धर्म को त्याग अधर्म को अपनाते हैं, तथा सात्विक प्रेम को छोड़कर वासना को ग्रहण करने लगते हैं।

प्रेमिका

सन् १९३६ ई० में ही मेरी कॉरेली के 'थेल्मा' नामक उपन्यास का ईश्वरी प्रसाद शर्मा द्वारा प्रस्तुत 'प्रेमिका' शीर्षक संक्षिप्त हिन्दी रूपान्तर हिन्दी पुस्तक भंडार, लहेरियासराय से प्रकाशित हुआ।[१] इस उपन्यास में पाश्चात्य सभ्यता, पाश्चात्य देशों के नारी स्वातन्त्र्य, वहाँ के कृत्रिम और वासनात्मक प्रेम आदि पर तीक्ष्ण प्रहार किया गया है तथा भारतीय ढंग के आदर्श प्रेम, पातिव्रत्य, पतिभक्ति आदि का समर्थन किया गया है। पादरियों के कृत्रिम धर्म पालन पर भी उपन्यास लेखिका ने प्रहार किया है। लेखिका के आदर्श भारतीय आदर्शों से इतने मिलते जुलते हैं कि देखकर आश्चर्य होता है।

प्रतिशोध

सन् १९२७ ई० में मेरी कॉरेली के प्रसिद्ध उपन्यास 'वेंडेट्टा' का बाबूराम मिश्र कृत 'प्रतिशोध' शीर्षक अनुवाद हिन्दी पुस्तक एजेन्सी, कलकत्ता से दो भागों में प्रकाशित हुआ।[२] आर्यभाषा पुस्तकालय, काशी में इस उपन्यास की एक प्रति उपलब्ध है पर उसके प्रथम भाग का मुखपृष्ठ नहीं है। उपर्युक्त सूचनाएँ दूसरे भाग के मुखपृष्ठ तथा पुस्तकालय की पुस्तक-सूची से प्राप्त की गयी हैं।

इस उपन्यास में पाश्चात्य दाम्पत्य जीवन की विषमताओं पर प्रकाश डाला गया है तथा वासनात्मक स्वेच्छाचार की भर्त्सना की गयी है।

'निवेदन' से ज्ञात होता है कि हिन्दी पाठकों ने मेरी कॉरेली के उपन्यासों को पसन्द किया था। 'निवेदन' की कुछ पंक्तियाँ उद्धर्तव्य हैं—

"इसके पहले प्रसिद्ध उपन्यास-लेखिका मेरी कॉरेली के 'सारोज आव शैतान' नामक शिक्षाप्रद उपन्यास का हिन्दी अनुवाद पाठकों की सेवा में उपस्थित किया गया था।

---

१. प्रा० स्था०—आ० भा० पु० काशी तथा सिनहा पुस्तकालय, पटना। मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि-प्रेमिका, मिस 'मेरी कारेली' के 'थेल्मा' उपन्यास का मर्मानुवाद, पं० ईश्वरीप्रसाद शर्मा, हिन्दू पंच सम्पादक, हिन्दी पुस्तक भंडार, लहेरिया सराय (विहार), विजयादशमी संवत् १९८३, पृ० सं० ३४१।

२. मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—प्रतिशोध, द्वितीय भाग, लेखिका—जगत्प्रसिद्ध उपन्यासलेखिका मेरी कॉरेली, अनुवादक—'हिन्दू संसार' के स्था० सम्पादक पं० बाबू राम मिश्र, प्र० हिन्दी पुस्तक एजेन्सी, हरिसन रोड, कलकत्ता, प्रथम बार सं० १९८४, दोनों भागों की पृ० सं० ३९२।

रूपान्तर में उपन्यास के मूल पात्रों तथा स्थानों के नामों का भारतीयकरण कर दिया गया है तथा मूल उपन्यास के उन स्थलों को निकाल दिया गया है, जिनमें इंगलैंड की परिस्थितियों का वर्णन है।

इस उपन्यास में धनवान व्यक्तियों की निष्ठुरता एवं अभिमान आदि दुर्गुणों का चित्रण करते हुए द्रव्य को विशुद्ध प्रेम के मार्ग की सबसे बड़ी बाधा सिद्ध किया गया है।

उपर्युक्त विवरण से प्रतीत होता है कि मेरी कॉरेली के उपन्यास हिन्दी उपन्यास-पाठकों में अधिक लोकप्रिय न हो सके, यद्यपि उनके अनुवादकों ने उन्हें लोकप्रिय बनाने के लिए हिन्दी पाठकों की रुचि का पूरा ध्यान रखा था। मेरी कॉरेली के किसी भी उपन्यास का अविकल अनुवाद हिन्दी में इसलिए नहीं हो सका कि हिन्दी उपन्यास पाठकों का पठन स्तर उतना ऊँचा नहीं था। विदेशीउपन्यासों के अविकल अनुवाद उन्हीं पाठकों को रुचिप्रद प्रतीत हो सकते हैं जिनमें विदेशी स्थानों, पात्रों, परिस्थितियों तथा भौगोलिक वर्णनों को पढ़ने की जिज्ञासा, और धैर्य हो। जो लोग केवल समय काटने के लिए उपन्यास पढ़ते है, उनमें विदेशी उपन्यासों के अविकल अनुवाद पढ़ने का धैर्य नहीं हो सकता। इतना ही नहीं, अविकल अनुवाद को पढ़ने के लिए पठन-प्रौढ़ता की भी आवश्यकता होती है, जिसका १९२५ ई० के लगभग हिन्दी उपन्यास-पाठकों में अभाव था।

भावानुवाद) अनुवादक—पशुपाल वर्मा, प्र०—गंगा पुस्तकमाला कार्यालय, लखनऊ, प्रथमावृत्ति सं० १९८६ वि०, पृ० सं० १४६।

यह पता नहीं चलता कि इसका लेखक कौन है ।[१] सम्भवतः यह अनुवाद है । डॉ० माता प्रसाद गुप्त ने दुर्गाप्रसाद खत्री को ही इसका लेखक माना है, जो निराधार है । डॉ० गुप्त ने 'हि० पु० सा०' में पृ० ४७८ पर इसका-प्रकाशन-काल १९१९ और पृ० ९९ पर १९१८ लिखा है, जो भ्रामक है ।

चित्र

१९१९ ई० में ही बँगला उपन्यासकार बाबू प्रियनाथ कृत 'छवि' नामक उपन्यास का धनीराम बख्शी द्वारा प्रस्तुत 'चित्र' शीर्षक अनुवाद दुर्गा प्रसाद खत्री द्वारा लहरी प्रेस, बनारस से प्रकाशित हुआ ।[2]

कलंक

इसी वर्ष रामचन्द्र शर्मा द्वारा किसी बँगला पुस्तक के आधार पर रचित 'कलंक' नामक उपन्यास हरिदास एंड कंपनी, कलकत्ता से प्रकाशित हुआ ।[३] भूमिका में लेखक ने स्वीकार किया है कि 'इस पुस्तक के लिखने में वंग भाषा में प्रकाशित 'कलंक' से सहायता ली गयी है' पर मूल उपन्यासकार की सूचना नहीं दी हुई है ।

अभिमानिनी

सन् १९१९ ई० में शरच्चन्द्र घोषाल के किसी उपन्यास का पं० ईश्वरी प्रसाद शर्मा कृत 'अभिमानिनी' शीर्षक अनुवाद हरिदास एंड कम्पनी, कलकत्ता से प्रकाशित हुआ ।[४] पुस्तक के मुखपृष्ठ पर न तो मूल उपन्यासकार का नाम दिया हुआ है न मूल पुस्तक का । 'निवेदन' से मूल लेखक का पता चलता है । 'निवेदन' से यह भी ज्ञात होता है कि उसके पूर्व विवेच्य उपन्यासकार के 'वारुणी' नामक उपन्यास का पं० ईश्वरी प्रसाद शर्मा द्वारा प्रस्तुत किया हुआ अनुवाद पाटलिपुत्र कार्यालय, पटना से प्रकाशित हो चुका था ।[५]

---

१. प्रा० स्था०—आ० भा० पु० काशी । मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—बलिदान, 'एकै धर्म एक व्रत नेमा, काय बचन मन पति पद प्रेमा', बाबू दुर्गा प्रसाद खत्री द्वारा प्रकाशित, पं० पन्ना लाल राय द्वारा काशी 'लाहरी प्रेस' में मुद्रित, १९१९ ।

२. प्रा० स्था०—आ० भा० पु० काशी । मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—रेलवे सिरीज नं० ६, चित्र, बाबू प्रियनाथ कृत 'छवि' का हिन्दी अनुवाद, अनुवादक—बाबू धनी राम बख्शी, चाईबासा (सिंहभूम), बाबू दुर्गा प्रसाद खत्री द्वारा प्रकाशित, प्रिंटेड बाई बाबू पन्ना लाल राय ऐट दि लहरी प्रेस, बनारस सिटी, प्रथमबार १०००, १९१९, पृ० सं० ३६

३. प्रा० स्था—आ० भा० पु० काशी । मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—कलंक, ले०—रामचन्द्र शर्मा, प्र०—हरिदास एंड कम्पनी, कलकत्ता, २०१, हरिसन रोड के नरसिंह प्रेस में बाबू राम प्रताप भार्गव द्वारा मुद्रित, सन् १९१९ ई०, प्रथमावृत्ति १००० ।

४ प्रा० स्था०—आर्यभाषा पुस्तकालय, काशी । मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—अभिमानिनी (उपन्यास), अनुवादक—ईश्वरी प्रसाद शर्मा, प्रकाशक—हरिदास एंड कम्पनी, कलकत्ता, प्रथम बार १०००, सन् १९१९, पृ० सं० २८७ ।

५. उपरिवत्, निवेदन ।

नाम दिया गया है। 'प्रभाषण' की निम्नलिखित पंक्ति से इसके अनुवाद होने का अनुमान होता है : "पाठक इस पुस्तक में एक फ्रेंच लेखिका द्वारा उसके (जारीना के) जीवन की गुप्त बातें पढ़ेंगे। प्रकाशक है इंग्लैंड की एक कम्पनी।"[१]

हाजी बाबा

सन् १९१९ ई० में ही जेम्स मोरियर लिखित अँगरेजी गद्यकथा 'हाजीबाबा' के आधार पर 'एक हिन्दी सेवक' द्वारा लिखित 'हाजीबाबा' नामक कथापुस्तक मैनेजर, हिन्दी नोवेल, हरिसन रोड, कलकत्ता से प्रकाशित हुई।[2] इसका प्रथम भाग नवम्बर १९१९ ई० में, द्वितीय भाग दिसम्बर १९१९ ई० में तथा तृतीय भाग जनवरी १९२० में प्रकाशित हुआ।

कर्मपथ

इसी वर्ष हरिदास हलधर लिखित किसी उपन्यास का पं० नरोत्तम व्यास कृत 'कर्मपथ' शीर्षक अनुवाद दुलीचन्द परवार द्वारा कलकत्ता से प्रकाशित हुआ। इस उपन्यास का दूसरा संस्करण १९३८ ई० में प्रकाशित हुआ,[3] जिसके 'निवेदन' के अन्त में १९१९ ई० मुद्रित है। प्रस्तुत पंक्तियों का लेखक इस उपन्यास के प्रथम संस्करण को प्राप्त करने में असमर्थ रहा है।

भाग्यचक्र

सन् १९२० ई० के पूर्व पं० उमाशंकर द्विवेदी द्वारा किसी बँगला उपन्यास के आधार पर लिखित 'भाग्यचक्र' नामक उपन्यास सुलभ ग्रन्थ प्रचारक मंडल, कलकत्ता से प्रकाशित हुआ।[४] मुखपृष्ठ पर न तो मूल उपन्यासकार का नाम दिया हुआ है, न मूल

रानी), लेखक 'मिलन मन्दिर', भीष्म, कल्यानी, रूस का राहु, स्वराज्य, सर रवीन्द्र आदि के लेखक—पं० विश्वम्भर नाथ शर्मा 'कौशिक', प्रकाशक—बीसवीं सदी, पुस्तक माला, बंगाली मुहाल, कानपुर, मई १९१९ ई०।

१. जारीना, प्रभाषण।

२. प्राप्ति स्थान—आर्यभाषा पुस्तकालय, काशी। मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—हिन्दी नोवेल, ३ री पुस्तक, १ नवम्बर १९१९ ई०, हाजीबाबा (प्रथम भाग), फारस के सहकारी अंगरेज दूत (सन् १८११/१२) जेम्स मोरियर लिखित और कर्जन सम्पादित अँगरेजी हाजीबाबा के आधार पर एक हिन्दी सेवक द्वारा लिखित तृतीय भाग, पाँचवीं पुस्तक, जनवरी १९२०, पृ० सं० २४०

३. प्रा० स्था०—प० वि० पु०, पटना। मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—कर्मपथ, मूल लेखक—हरिदास हलधर, अनुवादक—पं० नरोत्तम व्यास, प्रकाशक—दुलीचन्द परवार, १६११, हरिसन रोड, कलकत्ता, द्वितीयावृत्ति १९३८।

४. प्राप्ति स्थान—आर्यभाषा पुस्तकालय, काशी। मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—भाग्यचक्र (एक अपूर्व सामाजिक उपन्यास), लेखक—पंडित उमाशंकर द्विवेदी, प्र०—सुलभ ग्रन्थ प्रचारक,

बिखरा फूल (छिन्न मुकुल)

सन् १९२१ ई० में 'छिन्न मुकुल' का श्रीयुत कुंज बिहारी सेठ द्वारा प्रस्तुत 'बिखरा फूल' शीर्षक अनुवाद हिन्दी ग्रन्थ माला कार्यालय, कानपुर से प्रकाशित हुआ। माहेश्वरी पुस्तकालय, पटना में इस उपन्यास की एक प्रति है, पर मुखपृष्ठ के नष्ट हो जाने के कारण कोई सूचना नहीं मिल पाती। उपर्युक्त सूचनाएँ 'सरस्वती' "(दिसम्बर १९२१) में प्रकाशित उक्त उपन्यास की 'समीक्षा' से प्राप्त की गयी हैं। समीक्षक के अनुसार, 'बिखरा फूल' में प्रणय की कथा है। और प्रणय की कथा में ईर्ष्या-द्वेष, आशा-निराशा, सुख और दुःख की जितनी बातें आ सकती हैं वे सब इसमें वर्तमान हैं। उपन्यास प्रेमियों के लिए इसमें मनोरंजन की काफी सामग्री है। तो भी इतना हम अवश्य कहेंगे कि 'बिखरा फूल' में कला का वह सौष्ठव नहीं है, जो लेखिका के दूसरे उपन्यासों में—दीपनिर्वाण और प्राणघातक माला में है।"

अधखिली कली (छिन्न मुकुल)

सन् १९२५ ई० में 'छिन्न मुकुल' का श्री धनेश्वर प्रसाद अध्यापक कृत एक अन्य अनुवाद 'अधखिली कली' शीर्षक से निहालचन्द्र वर्मा द्वारा कलकत्ते से प्रकाशित किया गया। इस अनुवाद का द्वितीय संस्करण सन् १९२७ ई० में प्रकाशित हुआ। आर्यभाषा पुस्तकालय, काशी में इस अनुवाद का द्वितीय संस्करण उपलब्ध है, पर मुखपृष्ठ के न रहने के कारण पुस्तक के सम्बन्ध में कोई सूचना नहीं प्राप्त होती। उपर्युक्त सूचनाएँ आ० भा० पु० की पुस्तक-सूची तथा द्वितीय संस्करण की 'भूमिका' से प्राप्त की गयी हैं।[1] 'भूमिका' से यह भी ज्ञात होता है कि यह अविकल अनुवाद न होकर स्वतन्त्र अनुवाद है।

विवेच्य अनुवाद के द्वितीय संस्करण के प्रकाशकीय वक्तव्य से इस उपन्यास की लोकप्रियता सिद्ध होती है। प्रकाशक के अनुसार 'हमें जैसी आशा थी उसी प्रकार पाठकों ने इस ग्रन्थ को अपनाया भी है। ....यह ग्रन्थ केवल एक ही वर्ष में समाप्त हो गया था परन्तु अनेक कारणों से हम इसे पुनः प्रकाशित न कर सके। बहुत दिनों तक हमें इस ग्रन्थ के थोक तथा फुटकर आर्डर काटने पड़े हैं।'[2]

टूटी कली

सन् १९२९ ई० में 'छिन्न मुकुल' का 'एक कहानी प्रेमी' कृत एक दूसरा

---

१. अधखिली कली, ले०—स्वर्णकुमारी देवी, अनुवाद—धनेश्वर प्रसाद अध्यापक, प्र०—निहाल चन्द्र वर्मा, कलकत्ता, द्वितीय संस्करण १९८४ वि०, भूमिका।

२. उपरिवत्, प्रकाशक का वक्तव्य।

आधार पर प्रेमचन्द द्वारा लिखित 'सुखदास' शीर्षक लघु उपन्यास हिन्दी ग्रन्थ रत्नाकर कार्यालय, बम्बई से प्रकाशित हुआ। प्रस्तुत पंक्तियों का लेखक इस संस्करण को प्राप्त करने में असमर्थ रहा है। उपर्युक्त सूचना आर्यभाषा पुस्तकालय, काशी की पुस्तक-सूची तथा १-११-१९२० के 'प्रताप' में प्रकाशित 'सुखदास' के विज्ञापन से प्राप्त की गयी है। इसका चतुर्थ संस्करण दिसम्बर १९४५ ई० में सरस्वती प्रेस, बनारस से प्रकाशित हुआ।[1] सरस्वती प्रेस इलाहाबाद से १९६१ ई० में प्रकाशित इस उपन्यास का एक 'वर्तमान संस्करण' भी उपलब्ध है।[2]

गुलाब में काँटा

सन् १९२० ई० में ही बँगला उपन्यासकार दीनेन्द्र कुमार राय कृत किसी उपन्यास का ईश्वरी प्रसाद शर्मा द्वारा प्रस्तुत 'गुलाब में काँटा' शीर्षक उपन्यास आर० एल० बर्मन एंड कम्पनी, कलकत्ता से प्रकाशित हुआ।[3] प्रस्तुत पंक्तियों का लेखक इस उपन्यास को प्राप्त करने में असमर्थ रहा है।

रहस्य कुंड वा आश्चर्यजनक गुप्त वृत्तान्त

सन् १९२१ ई० में अथवा उसके पूर्व श्री भुवनचन्द्र चट्टोपाध्याय कृत 'रहस्य दर्पण' नामक उपन्यास का पं० पारसनाथ त्रिपाठी द्वारा प्रस्तुत किया हुआ 'रहस्य कुंड वा आश्चर्यजनक गुप्त वृत्तान्त' शीर्षक अनुवाद उपन्यास बहार आफिस, काशी से प्रकाशित हुआ।[4] यह 'लन्दन रहस्य' की शैली पर लिखित एक अपराधप्रधान उपन्यास है।

बिछड़ी हुई दुलहिन

सन् १९२१ ई० में उर्दू उपन्यासकार पं० रतननाथ सरसार के 'बिछड़ी हुई दुलहिन' नामक उपन्यास का हरिदास वैद्य द्वारा प्रस्तुत हिन्दी अनुवाद का दूसरा संस्करण हरिदास एंड कम्पनी, कलकत्ता, से प्रकाशित हुआ।[5] इसके प्रथम संस्करण की सूचना प्रस्तुत पंक्तियों के लेखक को प्राप्त नहीं हो सकी है।

---

१. प्रा० स्था०—प० वि० पु०, पटना।

२. प्रा० स्था०—दिल्ली पुस्तक सदन, पटना।

३. आ० भा० पु० की पुस्तक-सूची।

४. प्राप्ति स्थान—माहेश्वर पुस्तकालय, पटना। मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—रहस्य कुंड वा आश्चर्यजनक गुप्त वृत्तान्त: द्वितीय भाग, पं० पारसनाथ त्रिपाठी द्वारा अनूदित, प्रकाशक—बाबू शिवराम दास उपन्यास बहार आफिस, काशी।

(प्रकाशन तिथि आवरणपृष्ठ के थोड़ा फटे रहने के कारण ज्ञात नहीं हो पाती। 'सोने की राख वा पद्मिनी' (प्रकाशन काल १९२१) में इस उपन्यास का एक विज्ञापन दिया हुआ है, जिससे इसके रचना-काल का कुछ अनुमान किया जा सकता है।)

५. प्रा०स्था०-आ० भा०पु० काशी तथा सिनहा लाईब्रेरी, पटना, मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि-सचित्र, बिछुड़ी हुई दुलहिन, अनुवादक—बाबू हरिदास वैद्य, प्रकाशक—हरिदास एंड कम्पनी कलकत्ता २०१, हरिसन रोड के नरसिंह प्रेस में बाबू राम प्रताप भार्गव द्वारा मुद्रित, सन् १९२१ ई०, दूसरी बार १५००, पृ०सं० १५१

लेखक का नाम तो मिलता है, पर मूल उपन्यास के नाम का पता नहीं चलता। इस उपन्यास में पति-पत्नी का निर्मल प्रेम, भाई-भाई का प्रेम, देवर-भाभी का प्रेम, बुरे विचारों पर अच्छे विचारों की विजय आदि चित्रित किये गये हैं।

प्रवासिनी

१९२१ ई० में ही मराठी उपन्यासकर्त्री मनोरमा बाई कृत उपन्यास का गोकुल प्रसाद वर्मा द्वारा प्रस्तुत 'प्रवासिनी' शीर्षक अनुवाद उपन्यास बहार आफिस, काशी से प्रकाशित हुआ।[1] इस उपन्यास में स्त्री स्वातन्त्र्य की निन्दा करते हुए स्त्रियों को पति-भक्ति, सास-ससुर की सेवा, गृहप्रवन्ध आदि की शिक्षा दी गयी है।

दुःखिनी : भिखारिणी

१९२१ ई० में ही किसी 'नयन' द्वारा अनूदित 'दुःखिनी' नामक उपन्यास गृहलक्ष्मी कार्यालय, प्रयाग से तथा किसी 'विनोद' द्वारा अनूदित भिखारिणी' नामक उपन्यास सरस्वती ग्रन्थ माला कार्यालय, आगरा से प्रकाशित हुआ। प्रस्तुत पंक्तियों का लेखक इन उपन्यासों को प्राप्त करने में असमर्थ रहा है।

सरोजबाला

सन् १९२१ ई० में ही श्री शरच्चन्द्र दास के बँगला उपन्यास 'सरोजबाला' का श्री सूर्यनारायण सिंह कृत अनुवाद प्रकाशित हुआ।[2] अनुवादक के अनुसार 'लेखक ने अपनी ओजस्विनी भाषा में दिखलाया है कि जिस कुल में सज्जन, सदाचारी, परोपकारी तथा उद्योगी पुरुष का जन्म होता है वह कुल धीरे-धीरे धन-धान्य, ऋद्धि-सिद्धि आदि से परिपूर्ण हो उन्नति की चरम सीमा पर पहुँच जाता है। दुर्भाग्यवश यदि ऐसे कुल में स्वार्थी, धूर्त, लम्पट, सदाचारभ्रष्ट, कुल कलंक, कुपूत का जन्म होता है तो उस कुल की सारी शोभा धूल में मिल जाती है और संसर्गवश उस घर के सज्जन से सज्जन पुरुष को भी नरक-यातना भोगनी पड़ती हैं। यही नहीं, किन्तु कुल कुटुम्बी भी कुछ काल तक कठोर कष्ट अनुभव करते हैं। अन्त में सत्य की विजय होती है···धर्माधर्म, अतिथि सेवा, प्रेम-शासन; बुरी संगति का प्रभाव, विमाता द्वारा समय समय पर गृहस्थाश्रम में दारुण संकटों का आना इत्यादि अनेक दुःख सुखपूर्ण घटनाओं का उल्लेख मुख्य लेखक ने ऐसे हृदय

१. प्रा० स्था०—आ० भा० पु० काशी; मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—प्रवासिनी (एक मराठी पुस्तक का भावानुवाद), अनुवादक श्रीयुत बा० गोकुल प्रसाद वर्म्मा (कवि रंजन), संशोधक "विश्व" प्रकाशक : उपन्यास बहार आफिस, काशी, बनारस, प्रथम बार —'पृ० सं० २५८

२. प्राप्तिस्थान-आर्यभाषा पुस्कालय, काशी, तथा सिनहा पुस्तकालय, पटना; मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—सरोजबाला, गार्हस्थ उपन्यास, श्री शरच्चन्द दास के प्रसिद्ध बंगला उपन्यास 'सरोज बाला' का हिन्दी

उपन्यास का श्री गणेश शंकर विद्यार्थी द्वारा प्रस्तुत किया हुआ 'बलिदान' शीर्षक अनुवाद प्रताप प्रेस, कानपुर से प्रकाशित हुआ।[१] इस उपन्यास में फ्रांस की राज्यक्रान्ति का चित्र उपस्थित किया गया है।

अहंकार

सन् १९२३ ई० में आनतोले फ्रांस के 'थाया' नामक उपन्यास का प्रेमचन्द द्वारा प्रस्तुत किया हुआ 'अहंकार' शीर्षक अनुवाद श्री राधा कृष्ण नेवटिया, मंत्री, कुमार सभा द्वारा बड़ाबाजार, कलकत्ता से प्रकाशित किया गया।[२] श्री अमृतराय ने इसे प्रथम बार १९२६ ई० में सरस्वती प्रेस प्रकाशित बताया है, जो भ्रामक है।[३] अहंकार का दूसरा सं० १९२७ ई० में, तीसरा संस्करण १९४४ ई० में, चौथा संस्करण १९४५ ई० में और पाँचवाँ संस्करण १९४८ ई० में सरस्वती प्रेस, बनारस से प्रकाशित हुआ। 'अहंकार' का पाँचवाँ संस्करण, जिससे उपर्युक्त सूचनाएँ प्राप्त हुई हैं, बिहार राष्ट्रभाषा परिषद् पुस्तकालय में उपलब्ध है।[४]

ताया

'थाया' का श्री सर्वदानन्द वर्मा द्वारा प्रस्तुत किया हुआ 'ताया' शीर्षक एक दूसरा अनुवाद इंडियन प्रेस लिमिटेड, प्रयाग से प्रकाशित हुआ[५] पुस्तक के मुखपृष्ठ पर प्रकाशन काल न दिये रहने के कारण यह नहीं ज्ञात होता कि यह अनुवाद कब प्रकाशित हुआ।

सुहासिनी

सन् १९२३ ई० में ही श्री राम नाथ लाल 'सुमन' द्वारा बँगला उपन्यास 'लक्ष्मीबहू' से अनूदित 'सुहासिनी' नामक उपन्यास भार्गव पुस्तकालय, बनारस से प्रकाशित हुआ।[६] 'प्राक्कथन' से ज्ञात होता है कि यह स्वतन्त्र अनुवाद है। पुस्तक में मूल लेखक का नाम नहीं दिया हुआ है। इस उपन्यास में एक बंगाली परिवार का चित्र प्रस्तुत किया गया है।

कोविद, श्री गोपाल नेवटिया 'कोविद' (युगलात्मा), कृष्ण जन्माष्टमी, १९७९, प्रथमावृत्ति।

१. प्रताप, ११-९-१९२२, बलिदान (विज्ञापन), तथा आ० भा० पु० काशी की पुस्तक सूची।

२. सरस्वती, नवम्बर १९२३, अहंकार (पुस्तक-परिचय)

३. अमृत राय, प्रेमचन्द कलम का सिपाही, जीवनी खंड पृ० ६५५।

४. मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—अहंकार, मू० ले० अनातोले फ्रांस, अनु०-प्रेमचन्द, सरस्वती प्रेस, बनारस द्वि० सं० १९२७, अगस्त, तृ० सं० १९४४ अक्टूबर, चतु० सं०—१९४५ अक्टूबर, पाँचवाँ सं०-मई १९४८

५. प्राप्तिस्थान—आर्यभाषा पुस्तकालय, काशी मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—ताया, अनातोले फ्रांस की सर्व प्रसिद्ध कृत 'यात्रा' का स्वतंत्र भावानुवाद, सर्वदानंद 'वर्मा, सरस्वती सिरीज नं० १५, प्र०—इंडियन प्रेस लिमिटेड, प्रयाग, पृ० सं० १९१।

६. प्रा० स्था०—आ० भा० काशी। मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि-सुहासिनी (लक्ष्मी बहू), (हिन्दू घरों की अवस्था का एक प्रकृत चित्र) अनुवादक 'साहित्य भषण' श्री राममाथ लाल सुमन, प्रकाशक भार्गव पुस्तकालय, बनारस, प्रथमावृत्ति सन् १९२३ ई०।

पुस्तक एजेन्सी, कलकता से प्रकाशित हुआ।[१] प्रस्तुत पंक्तियों का लेखक इन उपन्यासों को प्राप्त करने में असमर्थ रहा है।

प्रेम

जनवरी १९२४ ई० की 'प्रभा' में प्रकाशित 'पुस्तक समीक्षा' से ज्ञात होता है कि इसके पूर्व बाबू अश्विनी कुमार दत्त लिखित बँगला उपन्यास का पं० भुवनेश्वर झा, बी० ए० कृत 'प्रेम' शर्षक हिन्दी अनुवाद भारती पुस्तक माला २२/सरकार लेन, कलकता से प्रकाशित हो चुका था उक्त समीक्षा के अनुसार 'आर्य-सभ्यता के आदर्श प्रेम का लक्षण जितनी सुन्दरता के साथ उसमें दिया गया है, गूढ़ विषय को जैसी सीधी तथा रोचक भाषा में समझाया गया है, वह वास्तव में श्लाघनीय है।

शैलबाला

सन् १९२४ ई० में ही, अथवा उसके कुछ पूर्व, बँगला से अनूदित 'शैलबाला' नामक उपन्यास साहित्य सेवा सदन, काशी प्रकाशित हुआ। यह सूचना 'सरस्वती' (मई १९२४) में प्रकाशित विवेच्य अनुवाद के'पुस्तक परिचय' से प्राप्त की गयी है।[२] उक्त 'पुस्तक परिचय' से इसके मूल लेखक तथा अनुवादक का पता नहीं चलता।

सुशीला कुमारी

सन् १९२४ ई० में ही मुहम्मदी बेगम के एक कथानक के आधार पर प्रो० राम स्वरूप कौशल द्वारा लिखित 'सुशीला कुमारी' नामक उपन्यास प्रकाशित हुआ।[३] इस उपन्यास में मँगनी की सामयिक कुप्रथा के परिणामों का चित्रण किया गया है। यह पता नहीं चलता कि पुस्तक कहाँ से प्रकाशित हुई।

अपना और पराया

सन् १९२४ ई० में ही बँगला उपन्यासकार श्री हेमेन्द्र प्रसाद घोष के 'आपन ओ पर' नामक उपन्यास का ठाकुर युगल किशोर नारायण सिंह द्वारा प्रस्तुत 'अपना और पराया' नामक उपन्यास नवल किशोर बुक डिपो, लखनऊ से प्रकाशित हुआ।[४] इस उपन्यास में यह दिखाया गया है कि 'स्नेह-पराये को अपना और स्वार्थ अपने को पराया बना देता है।

१. प्रभा, १ जनवरी १९२४, प्रेस रसमीशक बलदेव—उपध्याय, एम० एस०।

२. सरस्वती, मई १९२४, शैल वाला (पुस्तक परिचय)।

३. प्रा० स्था०—आ० भा० पु० काशी। मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि-सुशीला कुमारी, अथवा बचपन की मँगनी का शोचनीय परिणाम एक रोचक गार्हस्थ्य उपन्यास, लेखक प्रो० राम स्वरूप कौशल, विद्याभूषण, एम० ए०, एम० आर० ए० एस० जुलाई १९१४ ई०, पृ० सं० १०१।

४. प्रा० स्था०—आ० भा० पु० काशी तथा सिनहा पुस्तकालय पटना; मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि-.ना ओर पराया (बंगभाषा के प्रसिद्ध उपन्यास 'अपनो ओ पर का हिन्दी अनुवाद, अनुवादक 'राजपूत मणि।" "राजस्थान केसरी" आदि-पुस्तकों के लेखक, पोइआवाँ (गढ़) जिला गया निवासी ठाकुर ।ल किशोर नारायण सिंह—मैनेजर गोरा राज, जिला रायबरेली, प्रकाशक नवल किशोर बुक डिपो

माला कार्यालय, लखनऊ से प्रकाशित हुआ।[१] भूमिका से ज्ञात होता है कि "यह छोटी सी कहानी पहले 'स्त्री दर्पण' नामक मासिक पत्र में क्रमशः प्रकाशित हो चुकी है। स्त्री शिक्षा के प्रेमी विद्वानों ने इसे, उपन्यास होने पर भी, निर्दोष और स्त्रियों के लिये बहुत ही उपयोगी बताया है। इसलिये स्त्रियों के उपकारार्थ अब यह पुस्तकाकार प्रकाशित की जाती है। आशा है, हिन्दी पढ़ने वाली देवियाँ इसे पढ़ कर सच्ची हिन्दू स्त्री का पद प्राप्त करेंगी"[२] अनुवाद के मुखपृष्ठ पर मूल उपन्यासकार अथवा मूल पुस्तक का नाम नहीं दिया हुआ हैं, पर 'भूमिका' में ये सूचनाएँ दी हुई हैं।

उपन्यास सागर

सन् १९२५ ई० में अथवा उसके कुछ पूर्व ही संस्कृत की प्रसिद्ध कथा पुस्तक 'कथा सरित्सागर' का उपन्यास सागर शीर्षक अनुवाद प्रकाशित हुआ।[३]

चुड़ैल

इसी समय के लगभग अर्थात् सन् १९२५ ई० में अथवा उसके कुछ-पूर्व फरांसीसी औपन्यासिक पाल डी काक के 'वैम्पायर' (अँग्रेजी अनुवाद) नामक उपन्यास का 'चुड़ैल' शीर्षक अनुवाद प्रकाशित हुआ। प्रस्तुत पंक्तियों का लेखक इन दोनों पुस्तकों में से किसी को भी प्राप्त करने में असमर्थ रहा है। उपयुक्त सूचनाएँ गंगा प्रसाद सिंह लिखित 'माधुरी' नामक उपन्यास (प्र० का० १९२५) के अंतिम पृष्ठों के विज्ञापन से प्राप्त की गयी हैं।

ऋण-परिशोध

सन् १९२५ ई० में कालीप्रसन्न दास गुप्त के किसी उपन्यास का पं० रामेश्वर प्रसाद पांडेय कृत 'ऋण-परिशोध' शीर्षक अनुवाद गाँधी हिन्दी पुस्तक भंडार बम्बई से प्रकाशित हुआ।[४] 'प्रभा' (अप्रैल १९२५ ई०) में इस अनुवाद की समीक्षा करते हुए

---

१. प्राप्ति स्थान—आर्य भाषा पुस्तकालय, काशी; मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—लक्ष्मी (स्त्रियों और तरुण लड़कियों की शिक्षा के लिये एक सामाजिक उपन्यास) लेखक —गिरिजा कुमार घोष, प्रकाशक—गंगा पुस्तक माला कार्यालय, २९-३०, अमीनाबाद पार्क, लखनऊ, संवत् १९८१ वि०, प्रथम बार ४०००, पृ०सं० ७६।

२. उपरिवत्, भूमिका।

३. माधुरी, ले० गंगा प्रसाद सिंह (प्रकाशन काल १९२५ ई०), अंतिम पृष्ठों का विज्ञापन।

४. प्राप्ति स्थान—राष्ट्रभाषा परिषद् पुस्तकालय, पटना, मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—ऋण परिशोध (सामाजिक उपन्यास), मूल लेखक काली प्रसन्न दास गुप्त, अनुवादक पं० रामेश्वर प्रसाद पाण्डेय, प्रकाशक गाँधी हिन्दी पुस्तक भंडार, ३९७, कालवा देवी, बम्बई, प्रथम संस्करण १९२५, पृ० सं० २६२।

पुस्तकालय, मोहन लाल रोड, लाहौर से प्रकाशित हुई।[१] 'आर्य' (अक्टूबर १९२५) में इसकी समीक्षा करते हुए सम्पादक ने लिखा था, "आजकल रंगभूमि, प्रेमाश्रम आदि उपन्यासों की हिन्दी साहित्य में वृद्धि देखकर जहाँ एक ओर प्रसन्नता होती है वहाँ दूसरी ओर 'उर्वशी' जैसे उपन्यास (?) की रचना को देखकर दिव्य में कुछ खेद होता है।[२]

बिजली

सन् १९२५ ई० में जगेश्वर नाथ वर्मा द्वारा बँगला से अनूदित 'बिजली' नामक उपन्यास आकाशवाणी आफिस, बिहारीपुर, बरेली से प्रकाशित हुआ।[३] पुस्तक में मूल उपन्यास अथवा उसके लेखक का नाम नहीं बताया गया है। इस उपन्यास में हिन्दू समाज की उन कठोरताओं का वर्णन किया गया है, जिनके कारण सुन्दरी बालिकाएँ वेश्या वृत्ति अपनाने को बाध्य होती हैं।

बंगालीबाबू तथा चम्पा

इसी वर्ष मजहर हुसैन द्वारा अनूदित 'बंगाली बाबू' तथा श्रीकृष्ण हसरत द्वारा 'चम्पा' नामक उपन्यासिकाएँ (पृ० सं० क्रमशः ४९ और २२) 'बंगाली बाबू तथा चम्पा' शीर्षक पुस्तक के अन्तर्गत दुर्गा प्रसाद खत्री द्वारा लहरीबुक डिपो, काशी से प्रकाशित हुईं।[४]

गरीब की लड़की

सन् १९२६ ई० ही श्रीकृष्ण हसरत द्वारा अनूदित 'गरीब की लड़की' नामक उपन्यास लहरी बुक डिपो, काशी से प्रकाशित हुआ।[५] पुस्तक में इस बात की सूचना नहीं मिलती कि यह किस भाषा के किस लेखक के किस उपन्यास का अनुवाद है।

मौत का नजारा

इसी वर्ष श्री जगमोहन 'विकसित' द्वारा अनूदित 'मौत का नजारा' नामक

---

१. आर्य, (मासिक पत्र) भाग ६, अंक ५, अक्टूबर १९२५, उर्वशी (सचित्र उपन्यास) पुस्तकसमीक्षा।

२. उपरिवत्।

३. प्रा० स्था० —आ० भा० पु० काशी। मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—बिजली, एक बंगला पुस्तक का हिन्दी अनुवाद, अनुवादकर्ता-"शुआ" संपादक जगेश्वर नाथ वर्म्मा, पौष १९८२ विक्रम, आकाशवाणी आफिस, बिहारीपुर, बरेली।

४. प्रा० स्था०—आ० भा० पु० काशी। मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—बंगाली बाबू तथा चम्पा, दुर्गा प्रसाद खत्री, प्रो० लहरी बुक डिपो, काशी, द्वारा प्रकाशित, प्रथम बार १०००, १९२५, बंगाली बाबू—अनुवादक मजहर हुसैन, चम्पा—अनुवादक श्रीकृष्ण हसरत, पृ० सं० ४९+२२

५. प्रा० स्था०—आ० भा० पु० काशी। मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि-गरीब की लड़की, अनुवादक श्रीकृष्ण हसरत, दुर्गा प्रसाद खत्री, प्रोप्राइटर लहरी बुक डिपो, काशी द्वारा प्रकाशित, प्रथम बार १०००, १९२६, पृ० सं० ८७।

प्रतिपादित किया गया है कि 'नारी के न तो दर्प है, न तेज, न गर्व है न अभिमान, है केवल प्रेम, आत्म-बलिदान, पतिपद परायणता, पति के चरण कमलों में अपने सर्वस्व का का समर्पण।''[१]

ग्रह का फेर या शनि की दृष्टि

सन् १९२५ ई० में योगेन्द्र नाथ चौधरी के किसी बँगला उपन्यास का श्री श्याम सुन्दर द्विवेदी 'सहृदय' द्वारा प्रस्तुत किया हुआ 'ग्रह का फेर या शनि की दृष्टि' शीर्षक अनुवाद चाँद कार्यालय, इलाहाबाद से प्रकाशित हुआ।[2] इस उपन्यास में इन्दु नामक लड़की के जीवन से सम्बद्ध घटनाओं का वर्णन किया गया है। यह एक घटनाप्रधान उपन्यास है जिसमें प्रेम, ईर्ष्या और संयोग से उत्पन्न घटनाओं का तानाबाना खड़ाकर सामान्य पाठकों का मनोरंजन करने का प्रयत्न किया गया है। 'चाँद' (१९२९) में प्रकाशित विवेच्य अनुवाद की समीक्षा के अनुसार 'लड़के-लड़कियों के शादी विवाह में असावधानी करने से जो भयंकर परिणाम होता है, उसका इसमें अच्छा दिग्दर्शन कराया गया है। इसके अतिरिक्त यह बात भी इसमें अंकित की गई है कि अनाथ हिन्दू बालिकाएँ किस प्रकार ठुकराई जाती हैं और उन्हे किस प्रकार ईसाई अपने चंगुल में फँसाते हैं।'[३]

अपराधिनी

सन् १९२६ ई० में या उसके कुछ पूर्व हरिसाधन मुखोपाध्याय के किसी उपन्यास का श्रीयुत् विश्व कृत 'अपराधिनी' शीर्षक अनुवाद चौधरी एँड सन्स, बनारस से प्रकाशित हुआ। प्रस्तुत पंक्तियों का लेखक इस संस्करण को प्राप्त करने में असमर्थ रहा है। उपर्युक्त सूचनाएँ पाँचकौड़ी दे लिखित 'सहधर्मिणी' (हिन्दी में अनूदित, प्रकाशनवर्ष १९२६ ई०) के अन्त में संलग्न विज्ञापन से प्राप्त की गयी हैं। इस अनुवाद का दूसरा संस्करण १९३३ ई० में चौधरी एँड संस, बनारस सिटी से प्रकाशित हुआ।[४]

विष विवाह तथा राय साहब

सन् १९२६ ई० में श्री कृष्ण हसरत द्वारा अनूदित 'विष विवाह' और 'रायसाहब'

---

१. मेरी कॉरेली, शैतान की शैतानी, १९२६, विज्ञापन।

२. प्राप्ति स्थान—माहेश्वर सार्वजनिक पुस्तकालय, पटना; मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—ग्रह का फेर या शनि की दृष्टि, ले० श्री योगेन्द्र नाथ चौधरी, अनु० श्री श्याम सुन्दर द्विवेदी 'सहृदय', प्र० 'चाँद' कार्यालय, इलाहाबाद, प्रथम बार २०००, जून १९२५, पृ० सं० १०९।

३. ग्रह का फेर, मूल लेखक—श्री योगेन्द्र नाथ चौधरी, चाँद (१९२९)

४. प्रा० स्था०—सिनहा पुस्तकालय, पटना,। मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—अपराधिनी, मूल लेखक—हरिसाधन मुखोपाध्याय, अनुवादक—श्रीयुत् 'विश्व', प्रकाशक चौधरी एँड सन्स, पुस्तक विक्रेता तथा प्रकाशक, बनारस सिटी, द्वितीय संस्करण १९३३, पृ० सं० ३११

'प्रस्तावना' के अनुसार "उपन्यास एक विपन्न सन्त पुरुष की करुण कहानी है—एक वीर पुरुष के जीवन संघर्ष का इतिहास है, एक पतित समाज के घृणित अत्याचारों का रोमांचकारी वर्णन है, मूर्ख अमीरों की मूर्खताभरी सनकों की ऐसी यथार्थ आख्यायिका है, जिसे पढ़कर, यदि हम मनुष्य हैं, तो हमारा मस्तक लज्जा से झुक जाता है।"

अधःपतन

सन् १९२७ ई० में ही बाबू श्रीकृष्ण हसरत द्वारा प्रस्तुत किया हुआ किसी बँगला उपन्यास का 'अधःपतन' शीर्षक अनुवाद लहरी बुक डिपो, काशी से प्रकाशित हुआ।[१] पुस्तक के मुखपृष्ठ पर मूल लेखक और मूल उपन्यास का नाम नहीं दिया हुआ है।

अवतार

सन् १९२७ ई० में श्री बजरंग गिरि गुप्त विशारद कृत फ्रेंच भाषा के थियोफाइल गाटिये के किसी उपन्यास का 'अवतार' शीर्षक अनुवाद सरस्वती प्रेस, काशी से प्रकाशित हुआ।[२] उपन्यास के 'वक्तव्य' से ज्ञात होता है कि इस उपन्यास का अनुवाद श्री ज्योतीन्द्र नाथ ठाकुर ने बँगला में किया था। यह अनुवाद बँगला का अविकल हिन्दी अनुवाद है। इस में 'परकाम प्रवेश' और सदाचरण पर आधारित करनामों का प्रधानता है।

मुझको इससे क्या अथवा मलावार में मोपलों का गदर

सन् १९२८ ई० में श्रीयुत गणेश दामोदर सावरकर लिखित एक मराठी उपन्यास का 'मुझको इससे क्या अथवा मलावार में मोपलों का गदर' शीर्षक हिन्दी अनुवाद सुदर्शन प्रेस, लाल बाग, दरभंगा से प्रकाशित हुआ।[३] पुस्तक के मुखपृष्ठ पर अनुवादक का नाम नहीं दिया हुआ है। 'प्रस्तावना' के नीचे 'लक्ष्मण नारायण गर्दे' लिखा हुआ है। सम्भव है, श्री लक्ष्मण नारायण गर्दे ही इसके अनुवादक हों।

विधाता का विधान

सन् १९२८ ई० में, श्रीमती निरुपमा देवी द्वारा लिखित 'विधि-लिपि' नामक

---

१. प्राप्ति स्थान—आर्यभाषा पुस्तकालय, काशी; मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि— अधःपतन, वंगभाषा के एक अत्यन्त रोचक और भावपूर्ण उपन्यास का अनुवाद, अनुवादक—श्रीकृष्ण हसरत, प्रकाशक—दुर्गा प्रसाद खत्री, लहरी बुक डिपो, काशी, प्रथम बार १९२७, पृ० सं० १०५।

२. प्रा० स्था०—प० वि० पु०, पटना। मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—अवतार (अद्भुत रस का एक अपूर्व उपन्यास) अनुवादक—श्री बजरंगबली गुप्त 'विशारद', सम्पादक श्री प्रेमचन्द, प्रकाशक—सरस्वती प्रेस, मध्यमेश्वर, काशी, प्रथमावृत्ति १९२७, पृ० सं० १२५।

३. प्राप्ति स्थान—विहार राष्ट्र भाषा परिषद् पुस्तकालय, पटना; मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—मुझको इससे क्या अथवा मलावार में मोपलों का गदर, मूल लेखक—देशभक्त श्रीयुत गणेश दामोदर सावरकर, १९२८ ई०, प्रथम संस्करण १५००, प्रकाशक—पं० श्री जगदीश्वर प्रसाद ओझा, श्री सुदर्शन प्रेस, लाल बाग, दरभंगा।

कप्तान की कन्या

१९२९ई० में ही अलेक्जेंडर पुश्किन के किसी रूसी उपन्यास का 'कप्तान की कन्या' शीर्षक हिन्दी अनुवाद सुलभ ग्रन्थ प्रचारक मंडल, ३६, शंकर घोष लेन, कलकत्ता से प्रकाशित हुआ। प्रस्तुत पंक्तियों का लेखक इस उपन्यास को प्राप्त करने में समर्थ नहीं हो सका है। उपर्युक्त सूचनाएँ 'मतवाला' (६ अप्रैल १९२९) में छपे विवेच्य उपन्यास के विज्ञापन से प्राप्त की गयी हैं।[१] पर विज्ञापन में इस उपन्यास के अनुवादक का नाम नहीं दिया हुआ है।

काँटों में फूल

सन् १९२९ ई० में बँगला उपन्यासकार नरेशचन्द्र सेन गुप्त के किसी उपन्यास का बाबू देवबली सिंह द्वारा प्रस्तुत 'काँटों में फूल' नामक अनुवाद उपन्यास बहार आफिस, बनारस से प्रकाशित हुआ।[२] मुखपृष्ठ पर मूल उपन्यास का नाम नहीं दिया हुआ है।

उषा और अरुण

इसी वर्ष श्री भानुप्रसाद मणिराम व्यास द्वारा रचित 'ऊषा अने अरुण आवशे त्यारेज सूर्योदय थशे' नामक गुजराती उपन्यास का 'उषा और अरुण' शीर्षक हिन्दी अनुवाद एस० एस० मेहता एँड ब्रदर्स, बनारस सिटी से प्रकाशित हुआ।[३] पुस्तक से इस बात का पता नहीं चलता इस के अनुवादक कौन हैं। इस उपन्यास में हिन्दू समाज की दयनीय अवस्था का चित्र उपस्थित किया गया है।

बैरिस्टर की बीबी या बी०ए० की बर्बादी

१९२९ ई० में ही गुजराती उपन्यासकार श्री गोपाल जी कल्याण जी देलवालकर के 'बैरिस्टर नी वेरी अथवा बी० ए० बनेली नी जिन्दगी बर्बाद' नामक उपन्यास का उमाशंकर मेहता द्वारा सम्पादित **'बैरिस्टर की बीबी या बी० ए० की बर्बादी'** शीर्षक अनुवाद एस० एस० मेहता एँड ब्रदर्स, काशी से प्रकाशित हुआ।[४] पुस्तक से इस बात

---

१. मतवाला, ६ अप्रैल १९२९, कप्तान की कन्या (आवरणपृष्ठ का विज्ञापन)।

२. प्रा० स्था०—आ० भा० पु० काशी, मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—काँटों में फूल, एक शिक्षाप्रद नवीन सामाजिक उपन्यास, मूल लेखक श्रीयुत नरेशचन्द्र सेन गुप्त, अनुवादक श्रीयुत देवबली सिंह जी, प्रकाशक उपन्यास बहार आफिस, बनारस, प्रथम बार सन् १९२९, पृ० सं० १२३।

३. प्रा० स्था०—आ० भा० पु० काशी: मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—उषा और अरुण (प्रथम भाग) मूल लेखक श्री भानु प्रसाद मणिराम व्यास, प्रकाशक एस० एस० मेहता एँड ब्रदर्स, अध्यक्ष, प्राचीन कवि माला कार्यालय, पुस्तक प्रकाशक, विक्रेता और स्टेशनर्स, बनारस सिटी, सं० १९८६ वि०, पृ० सं० १६०।

४. प्रा० स्था०—आ० भा० पु० काशी; मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि-बैरिस्टर की बीबी या बी० ए० की बर्बादी, मूल लेखक श्री गोपालजी कल्याणजी देलवालकर, सम्पादक पं० उमाशंकर मेहता, प्रकाशक

का उपाध्याय चन्द्रबली मिश्र द्वारा प्रस्तुत किया हुआ 'लीला' शीर्षक हिन्दी रूपान्तर लक्ष्मी पुस्तकालय, बनारस सिटी से प्रकाशित हुआ।[१]

रंगीले राजा साहब

१९३० ई० में ही मराठी के प्रसिद्ध लेखक श्रीयुत 'चिपलूनकर' के किसी उपन्यास के आधार पर श्री पशुपाल वर्मा द्वारा लिखित 'रंगीले राजा साहब' नामक कथा एम० एम० सोजतिया एण्ड कम्पनी द्वारा प्रकाशित की गयी[२]। इस उपन्यास में आदर्श प्रेम का चित्रण किया गया है।

विधि-विधान

सन् १९३१ ई० में पं० रामचन्द्र शर्मा द्वारा अनूदित 'विधि विधान' नामक उपन्यास दी पपुलर ट्रैडिंग कम्पनी, कलकत्ता से प्रकाशित हुआ।[३] मुखपृष्ठ पर मूल लेखक तथा मूल उपन्यास का नाम नहीं दिया हुआ है न यही पता चलता है कि यह किस भाषा का अनुवाद है।

पुनर्जीवन

जनवरी १९३१ ई० में ही विश्व प्रसिद्ध रूसी उपन्यासकार काउंट लियो टॉलसटॉय के अन्तिम उपन्यास (रिसरेक्शन) का प्रो० रुद्रनारायण अग्रवाल कृत 'पुनर्जीवन' शीर्षक अनुवाद चाँद कार्यालय, चन्द्रलोक, इलाहाबाद से प्रकाशित हुआ।[४]

देहाती सुन्दरी

सन् १९३१ में रूसी उपन्यासकार टॉलसटॉय के 'दी कोस्सावस' नामक उपन्यास का

---

१. प्राप्ति स्थान—आर्यभाषा पुस्तकालय, काशी : मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—लीला, "आदर्श हिन्दू नारी" (शिक्षाप्रद सामाजिक उपन्यास), अनुवादक उपाध्याय चन्द्रबली मिश्र, प्रकाशक लक्ष्मी पुस्तकालय, बनारस सिटी, प्रथम संस्करण सन् १९३० ई०, पृ० सं० १५३।

२. प्राप्ति स्थान—माहेश्वर सार्वजनिक पुस्तकालय, पटना; मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—दो आना माला, चौदहवाँ अंक, रंगीले राजा साहब, मराठी के सुप्रसिद्ध लेखक श्रीयुत 'चिपलूनकर' की एक प्रसिद्ध पुस्तिका के आधार पर लिखी हुई यह मनोरंजक कहानी है। लेखक—श्रीयुत "पशुपाल वर्मा" ता० १ जुलाई सन् १९३०, प्रकाशक-एम० एम० सोजतिया एंड कम्पनी, दो आना माला, ऑफिस, इन्दौर, प्रथम बार, पृ० सं० ४३।

३. प्राप्ति स्थान—आर्यभाषा पुस्तकालय, काशी, मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—विधि-विधान (ऊँचे दर्जे का सामाजिक उपन्यास) अनुवादक—श्रीयुत पं० रामचन्द्र शर्मा, प्रकाशक—दी पोपुलर ट्रेडिंग कम्पनी, १४/१ ए०, शम्भू चटर्जी स्ट्रीट, कलकत्ता, प्रथम संस्करण संवत् १९८८, पृ० सं० २७४।

४. प्राप्ति स्थान—सिनहा पुस्तकालय, पटना; मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—पुनर्मिलन, मूल लेखक—महर्षि टॉल्सटाय, अनुवादक—प्रो० रुद्रनारायण जी अग्रवाल, बी० ए०, प्रकाशक—'चाँद' कार्यालय, चन्द्रलोक, इलाहाबाद; जनवरी १९३१, प्रथम संस्करण २००० प्रतियाँ, पृ० सं० ७६६।

प्रकाशित हुआ ।[१] प्रस्तुत पंक्तियों का लेखक इस उपन्यास को प्राप्त करने में असमर्थ रहा है ।

सबला

सन् १९३२ ई० में किसी बँगला उपन्यास के आधार पर पं० चन्द्रदीप नारायण त्रिपाठी द्वारा लिखित 'सबला' नामक उपन्यास हिन्दी पुस्तक एजेंसी, कलकत्ता से प्रकाशित हुआ ।[2] स्वयं लेखक के शब्दों में "इस पुस्तक के लिखने में हमें एक बँगला के पुराने उपन्यास से बहुत अधिक सहायता मिली है, जिसके लेखक महोदय के हम कृतज्ञ हैं ।"[३]

जीवन मरण

सन् १९३२ ई० में ही फिलिप्स ओपेनहम के 'दि ब्लैक वाचर' नामक राजनीतिक उपन्यास का ज्योतिप्रसाद मिश्र निर्मल कृत 'जीवन मरण' नामक रूपान्तर 'भारत' कार्यालय, लीडर प्रेस, प्रयाग से प्रकाशित हुआ[४] इस उपन्यास की एक प्रति प० वि० पु०, पटना में उपलब्ध है, पर मुखपृष्ठ के नष्ट हो जाने से पुस्तक के सम्बन्ध में कोई सूचना नहीं प्राप्त होती । उपर्युक्त सूचनाएँ पुस्तक के 'दो शब्द' से प्राप्त की गयी हैं । 'दो शब्द' से यह भी ज्ञात होता है कि यह अविकल अनुवाद नहीं है । इस उपन्यास में मर्जीलैण्ड की स्वाधीनता प्राप्ति की कथा वर्णित है ।

सन्दिग्ध संसार

इसी वर्ष श्री विजय बहादुर सिंह द्वारा अनूदित 'सन्दिग्ध संसार' नामक उपन्यास बलदेव मित्र मंडल , बनारस से प्रकाशित हुआ ।[५] पुस्तक से मूल उपन्यास अथवा उसके लेखक के नाम का पता नही चलता । इस उपन्यास में मन्दिरों तथा तीर्थ स्थानों में होने वाले दुष्कर्मों तथा व्यभिचारों का उद्घाटन किया गया है ।

दीप निर्वाण

इसी वर्ष बँगला उपन्यासकर्त्री श्रीमती स्वर्णकुमारी देवी के 'दीप निर्वाण'

---

१. आ० भा० पु० काशी की पुस्तकसूची ।

२. प्राप्ति स्थान—आर्यभाषा पुस्तकालय, काशी । मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—सबला (एक शिक्षाप्रद सामाजिक उपन्यास), पं० चन्द्रदीप नारायण त्रिपाठी, प्रकाशक—हिन्दी पुस्तक एजेंसी २०३, हरिसन रोड, कलकत्ता, शाखा—ज्ञानवापी, काशी, प्रथम बार १९८९, पृ० सं० २३३ ।

३. उपरिवत्, भूमिका ।

४. प्राप्तिस्थान—प० वि० पु०, पटना ।

५. प्रा० स्था०—आ० भा० पु० काशी । मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—संदिग्ध संसार, अनुवादक—श्रीयुत् विजय बहादुर सिंह जी, बी० ए०, संवत् १९८९ विक्रम, (पृष्ठ भाग की सूचना), प्रकाशक—साहित्य रत्न, बलदेव दास अग्रवाल, बलदेव मित्र मंडल, राजा दरवाजा, बनारस सिटी, प्रथम संस्करण ।

उपन्यास 'अन्ना करेनिना' का पं० छविनाथ पांडेय द्वारा प्रस्तुत किया हुआ 'अन्ना' शीर्षक अनुवाद पुस्तक मन्दिर, काशी से प्रकाशित हुआ। यह सूचना 'सरस्वती' (अक्टूबर १९३३) में प्रकाशित विवेच्य अनुवाद की समीक्षा तथा आ० भा० पु० की पुस्तकसूची से प्राप्त की गयी है।[१]

स्त्री का हृदय

सन् १९३३ ई० में फ्रेंच उपन्यासकार मोपाँसा के किसी उपन्यास के अँगरेजी अनुवाद 'वुमेन्स लाइफ' का ज्योति प्रसाद मिश्र 'निर्मल' द्वारा प्रस्तुत 'स्त्री का हृदय' शीर्षक अनुवाद एस० एस० मेहता एंड ब्रदर्स, काशी से प्रकाशित हुआ।[२]

बहिष्कार

इसी वर्ष स्वेडन की प्रसिद्ध उपन्यास लेखिका, नोबेल पुरस्कार विजयिनी सेल्मा लेजर लाफ के किसी उपन्यास का कृष्णवल्लभ द्विवेदी द्वारा प्रस्तुत 'बहिष्कार' नामक उपन्यास विश्ववाणी ग्रन्थमाला, दारागंज, प्रयाग से प्रकाशित हुआ।[३]

इस उपन्यास में युद्ध के प्रति घृणा और जीवन के प्रति सम्मान का भाव जगाने के लिए एक बड़ी हा मार्मिक कथा प्रस्तुत की गयी है। आधुनिक संसार की अधोगति और क्रूरता का चित्र प्रस्तुत करने में उपन्यासकार को अद्भुत सफलता मिली है।

प्रेमचक्र

१९३३ ई० में ही सेल्मा लेजर लाफ के 'दि टेल ऑफ ए माउवर (The Tale of a mouor) नामक उपन्यास का श्री गंगापति सिंह ने 'प्रेमचक्र' शीर्षक अनुवाद प्रस्तुत किया जिसका तृतीय संस्करण १९४५ ई० में साहित्य सेवक कार्यालय बनारस से प्रकाशित हुआ।[४] प्रस्तुत पंक्तियों का लेखक इसके प्रथम दो संस्करणों को प्राप्त करने में असमर्थ

---

१. अन्ना, अनुवादक—पं० छविनाथ पांडे, बी० ए०, एल० एल० बी०, प्रकाशक—'पुस्तक मन्दिर', काशी, आकार १६ पेजी, पृ० सं० ७१७ और मूल्य ३), सजिल्द—सरस्वती, अक्तूबर १९३३, पुस्तक-परिचय।

२. प्रा० स्था०—आ० भा० पु० काशी। मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—स्त्री का हृदय (फ्रेंच उपन्यास ले० मोपाँसा लिखित वोमन्स लाइफ का मर्मानुवाद) अनुवादक—श्री ज्योति प्रसाद 'निर्मल', संयुक्त सम्पादक 'भारत' भूतपूर्व सम्पादक 'मनोरमा', 'भारतेन्दु' आदि, प्रकाशक—एस० एस० मेहता एंड ब्रदर्स ६३ सूत टोला काशी, सजिल्द, संस्करण १९३३, पृ० सं० १८८।

३. प्रा० स्था०—आ० भा० पु० काशी। मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—बहिष्कार (स्वीडन की सर्वश्रेष्ठ उपन्यास-लेखिका और नोबुल पुरस्कार विजयिनी सर्व प्रथम महिला सेल्मा लेजरलाफ का सर्वोत्कृष्ट उपन्यास), अनुवादक—कृष्णवल्लभ द्विवेदी, बी० ए०, प्रकाशक—विश्ववाणी ग्रन्थमाला, दारागंज, प्रयाग, प्रथम संस्करण १९३३, पृ० सं० २६२।

४. प्रा० स्था०—आ० भा० पु० काशी। मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—प्रेमचक्र, मूल लेखिका—सेल्मा लोगर लाफ (नोबुल पुरस्कार प्राप्त सन् १९०९), सम्पादक—पं० विश्वनाथ प्रसाद मिश्र, एम० ए०

पं० देवी प्रसाद द्विवेदी कृत 'फूलवाली' शीर्षक अनुवाद तरुण भारत ग्रन्थावली कार्यालय, दारागंज, प्रयाग से प्रकाशित हुआ ।[१]

शक्ति

डॉ० माताप्रसाद गुप्त के अनुसार ग्लादकोव लिखित किसी उपन्यास का 'शक्ति' शीर्षक अनुवाद बलदेव दास द्वारा बनारस से प्रकाशित किया गया।[२] आर्यभाषा पुस्तकालय, काशी की पुस्तकसूची के अनुसार इसके अनुवादक श्री गंगापति सिंह, प्रकाशक बलदेव मित्र-मंडल, काशी तथा प्रकाशन काल १९३३ ई० था ।

गरीबी के दिन

सन् १९३४ ई० में ही क्यूर हामसन लिखित किसी उपन्यास का अनूप लाल मंडल कृत 'गरीबी के दिन' शीर्षक अनुवाद साहित्य मंडल, दिल्ली से प्रकाशित हुआ । आर्यभाषा पुस्तकालय, काशी में इस अनुवाद की एक प्रति है, पर पुस्तक के मुखपृष्ठ के न रहने के कारण कोई सूचना नहीं प्राप्त होती । उपर्युक्त सूचनाएँ आर्यभाषा पुस्तकालय की पुस्तकसूची से प्राप्त की गयी हैं ।

दो धारा

सन् १९३४ ई० में ही बँगला उपन्यासकार श्री दिलीप कुमार राय के किसी उपन्यास का गुप्तेश्वर प्रसाद श्रीवास्तव द्वारा प्रस्तुत 'दो धारा' नामक उपन्यास साहित्य मंडल, दिल्ली से प्रकाशित हुआ ।[३] मुखपृष्ठ पर मूल उपन्यास का नाम नहीं दिया गया है ।

रानी की अंगूठी

इसी वर्ष राइडर हैगर्ड के किसी उपन्यास का राजबहादुर सिंह द्वारा प्रस्तुत 'रानी की अंगूठी' नामक उपन्यास नवयुग साहित्य मंदिर, दिल्ली से प्रकाशित हुआ ।[४] प्रस्तुत पंक्तियों का लेखक इस उपन्यास को प्राप्त करने में असमर्थ रहा है ।

वैर का बदला

सन् १९३५ ई० में श्री कन्हैयालाल माणिकलाल मुंशी लिखित किसी उपन्यास का

---

१. प्रा० स्था०—सिनहा पुस्तकालय, पटना; मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि-फूलवाली (श्रीयुत सुरेन्द्र मोहन भट्टाचार्य की बँगला पुस्तक का अनुवाद); अनुवादक पं० देवीप्रसाद द्विवेदी; प्रकाशक तरुण भारत ग्रन्थावली कार्यालय, दारागंज, प्रयाग, प्रथमावृत्ति सं० १९९० वि०, मूल्य २ रुपये, पृ० सं० ३२२ ।

२. डॉ० माताप्रसाद गुप्त, हिन्दी पुस्तक साहित्य, पृ० ४३५ ।

३. प्रा० स्था०—आ० भा० पु० काशी । मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—दो धारा (उपन्यास), मूल लेखक श्रीयुक्त दिलीप कुमार राय, अनुवादक गुप्तेश्वर प्रसाद श्रीवास्तव, प्रकाशक साहित्य मण्डल, दिल्ली (पृष्ठ भाग) पहली बार अप्रैल १९३४, पृ० सं० २५६ ।

४. आ० भा० पु० काशी की पुस्तकसूची ।

निर्मला

सन् १९३६ ई० में ही चतुर्भुज माणकेश्वर भट्ट कृत किसी उपन्यास का राधेश्याम दूबे द्वारा प्रस्तुत 'निर्मला' नामक उपन्यास प्रभुदयाल मित्तल द्वारा अग्रवाल इलेक्ट्रिक प्रेस, मथुरा से प्रकाशित हुआ।[1] प्रस्तुत पंक्तियों का लेखक इस उपन्यास को प्राप्त करने में असमर्थ रहा है।

दौलत का नशा

इसी के आस पास श्री 'विश्व' द्वारा अनूदित 'दौलत का नशा' नामक उपन्यास, उपन्यास बहार आफिस, काशी से प्रकाशित हुआ। इस पुस्तक के मुखपृष्ठ पर न तो मूल उपन्यासका नाम दिया गया है, न उसके लेखक का, और न ही प्रकाशन काल दिया हुआ है।[2]

---

१. आ० भा० पु० काशी, की पुस्तक सूची।

२. प्रा० स्या०–आ० भा० पु० काशी। मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—दौलत का नशा, एक शिक्षाप्रद सामाजिक उपन्यास, अनुवादक श्रीयुत "विश्व", प्रकाशक–उपन्यास बहार आफिस, काशी, बनारस। प्रथमावृत्ति।

'सरस्वती' में फरवरी १९२९ से प्रकाशित होना शुरू हुआ और अगस्त १९२९ तक लगातार प्रकाशित होता रहा।[1] 'सरस्वती' में यह उपन्यास पूरा नहीं छप सका। पुस्तक रूप में भी प्रकाशित इसका कोई संस्करण उपलब्ध नहीं होता।

जैसा को तैसा

सन् १९३१ ई० में 'ड्यूमा' के किसी उपन्यास का आर० आर० सिंह कृत अनुवाद 'जैसा को तैसा' शीर्षक से हिन्दी पुस्तक एजेन्सी, कलकत्ता से प्रकाशित हुआ। आर्यभाषा पुस्तकालय, काशी में इस अनुवाद की एक प्रति है पर आरम्भिक पृष्ठों के गायब रहने के कारण अनुवादक, प्रकाशक तथा प्रकाशन काल आदि से सम्बद्ध कोई सूचना नहीं मिल पाती। उपर्युक्त सूचना उक्त पुस्तकालय की पुस्तकसूची से प्राप्त की गयी है।

षड्यन्त्रकारी

सन् १९३१ ई० में ड्यूमा के Chevalier de Maison Ronge नामक उपन्यास का ऋषभचरण जैन कृत अनुवाद 'षड्यन्त्रकारी' शीर्षक से प्रकाशित हुआ। आर्यभाषा पुस्तकालय, काशी में इस उपन्यास की एक प्रति है, पर उसके आवरणपृष्ठ के फटे रहने के कारण कोई सूचना नहीं मिल पाती। केवल संस्करण तथा प्रकाशन काल बचा हुआ है। १ अगस्त १९३१ के 'मतवाला' नामक पत्र में 'शिवेलर डि मैसन रग' के मतवाला कार्यालय, गऊघाट, मिर्जापुर सिटी से प्रकाशित 'षड्यन्त्रकारी' शीर्षक अनुवाद का विज्ञापन निकला था। सम्भवत: यह ऋषभचरण जैन कृत अनुवाद का ही विज्ञापन है। विवेच्य उपन्यास का श्रीचन्द्रभाल त्रिपाठी कृत एक दूसरा अनुवाद 'षड्यन्त्र' शीर्षक से १९३२ ई० में, हिन्दी पुस्तक एजेन्सी, कलकत्ता से प्रकाशित हुआ।[2]

कंठहार

सन् ११३२ ई० में ही ड्यूमा के 'दि क्वीन्स नेकलेस' का ऋषभचरण जैन कृत अनुवाद 'कंठहार' शीर्षक से हिन्दी साहित्य प्रकाशन मंडल, दिल्ली से प्रकाशित हुआ। प्रस्तुत

---

१. सरस्वती, फरवरी १९२९; पृ० १९८-२०३।
,, मार्च १९२९; पृ० २६५-२६९।
,, अप्रैल १९२९; पृ० ४०१-४०६।
,, मई १९२९; पृ० ४९६-५०१
,, जून १९१९; पृ० ६३१-६४०।
,, जुलाई १९२९; पृ० २२-२८।
,, अगस्त १९२९; पृ० १५२-१५७।

२. प्राप्ति स्थान—आ० भा० पु०, काशी; मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—षडयंत्रकारी राजनैतिक उपन्यास, अनुवादक पं० चन्द्रभाल त्रिपाठी, प्रकाशक हिन्दो पुस्तक एजेन्सी, २०३, हरिसन रोड, कलकत्ता १९८९ पृ० सं० २४७।

राज जयगोपाल कृत अनुवाद १९१९ ई० में नारायण दत्त सहगल एंड सन्स, लाहौर से प्रकाशित हुआ।[१] इसका दूसरा संस्करण १९२२ ई० में उपर्युक्त संस्था से ही प्रकाशित हुआ।[२] 'भूमिका' में इसे 'ऐतिहासिक उपन्यास' कहा गया है, पर यह उपन्यास नाममात्र को ही ऐतिहासिक है। इसमें अपराध प्रधान और कौतूहलवर्द्धक घटनाएँ ही प्रधान हैं। मुगल सम्राट के साथ एक छोटी सी राजपूत रियासत का युद्ध तथा राजपूत राजा की वीरता, नीतिनैपुण्य, जासूसी और चातुर्य आदि विवेच्य उपन्यास में मुख्य कथा के रूप में वर्णित हैं।

शाही पतिपरायण

सन् १९१९ ई० में ही शिवव्रत लाल वर्मन के किसी उर्दू उपन्यास का कविराज जयगोपाल कृत अनुवाद, 'शाही पतिपरायण' शीर्षक से, नारायण दत्त सहगल एंड सन्स लोहारी दरवाजा लाहौर से प्रकाशित हुआ।[३] आवरणपृष्ठ पर इसे भी 'ऐतिहासिक उपन्यास' की संज्ञा दी गयी है पर है यह अर्धऐतिहासिक कथा ही।

'शाही पतिपरायण' का ही तीसरा संस्करण १९३१ ई० में **'पतिभक्ति'** शीर्षक से उपर्युक्त प्रकाशन संस्था से प्रकाशित हुआ।[४] किसी उपन्यास के परवर्ती संस्करण को भिन्न नाम से छपाकर तथा पाठकों के बीच नवीन उपन्यास के रूप में उसका आभास कराकर व्यावसायिक चातुर्य का परिचय देना आज के लेखकों और प्रकाशकों की ही विशेषता नहीं, उसके दर्शन विवेच्य अनुवाद के प्रसंग में भी होते हैं।

शाही जादूगरनी

सन् १९२१ ई० में विवेच्य उपन्यासकार के 'शाही जादूगरनी' नामक उर्दू उपन्यास का कविराज जयगोपाल 'उत्तम' कृत अनुवाद नारायण दत्त सहगल एंड सन्स, लाहौर से प्रकाशित हुआ। इस उपन्यास की एक प्रति आर्यभाषा पुस्तकालय, काशी में है, किन्तु मुखपृष्ठ के न रहने के कारण प्रकाशन-काल आदि के सम्बन्ध में कोई सूचना नहीं मिल

---

१. प्राप्ति स्थान—आर्यभाषा पुस्तकालय, काशी। मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—शाही डाकू, बूंदी राज्य के संस्थापक एक हाड़ा राजपूत की वीरता, राजनैतिक डाके, अद्भुत जासूसी, देशभक्ति और प्रेम का जीता जागता चित्र, बाबू शिवव्रत लाल वर्मन, एम० ए० के उर्दू ग्रन्थ का हिन्दी उल्था। अनुवादक—कविराज जयगोपाल, प्रकाशक—नारायण दत्त सहगल एंड सन्स, लोहारी दरवाजा, लाहौर, १९१९ ई०, प्रथम बार १०००

२. प्रा० स्था०—प० वि० पु०, पटना।

३. प्राप्तिस्थान—आ० भा० पु० काशी। मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—शाही पतिपरायण, मनोहर ऐतिहासिक उपन्यास, बाबू शिवव्रत लाल वर्मन, एम० ए० के उर्दू ग्रन्थ का भाषानुवाद, अनुवादक—कविराज जय गोपाल 'उत्तम', प्रकाशक—नारायणदत्त सहगल एंड सन्स, लाहौरी दरवाजा, लाहौर, प्रथम बार अक्टूबर १९१९।

४. प्राप्ति स्थान—आर्यभाषा पुस्तकालय, काशी। अतिरिक्त सूचनाएँ—पतिभक्ति……तृतीय बार १०००, १९३१ ई०

बार, प्रकाशित हुआ ।[१] इस अनुवाद का प्रथम संस्करण प्रस्तुत पंक्तियों के लेखक को उपलब्ध नहीं हो सका है, इस कारण उसके सम्बन्ध में कोई सूचना दे पाना कठिन है।

शाही लकड़हारा

विवेच्य उपन्यासकार के 'शाही लकड़हारा' नामक उपन्यास का हिन्दी अनुवाद नारायण दत्त सहगल एंड संस द्वारा १९२८ ई० में चौथी बार प्रकाशित किया गया। प्रस्तुत पंक्तियों का लेखक इस अनुवाद को प्राप्त करने में असमर्थ रहा है। उपर्युक्त सूचनाएँ आर्यभाषा पुस्तकालय, काशी की पुस्तकसूची से प्राप्त की गयी हैं। 'प्रताप' के १४ जनवरी १९१८ के अंक में मुद्रित विज्ञापन से ज्ञात होता है कि उर्दू में इसकी कई हजार प्रतियाँ बिकी थीं। "२६० पृष्ठों की सजिल्द पुस्तक है मुखपृष्ठ पर शाही लकड़हारे का सुन्दर रंगीन चित्र है।[२]

इस उपन्यास में एक राजपुत्र के दुर्भाग्यवश लकड़हारा बनने और नाना प्रकार की विपत्तियों को झेलते हुए अन्ततः राजसिंहासन पर आरूढ़ होने की घटनाप्रधान कथा का वर्णन किया गया है।

शाहवार मोती

सन् १९२८ ई० में विवेच्य उपन्यासकार के 'शाहवार मोती' नामक उपन्यास का अनुवाद राधास्वामी धाम, ज्ञानपुर, मिरजापुर से प्रकाशित हुआ।[३] प्रस्तुत पंक्तियों का लेखक इस अनुवाद को प्राप्त करने में असमर्थ रहा है। उपर्युक्त सूचनाएँ आर्यभाषा पुस्तकालय की पुस्तकसूची तथा 'सरस्वती' (जुलाई १९२८) में प्रकाशित विवेच्य अनुवाद की समीक्षा से प्राप्त की गयी हैं। समीक्षक के अनुसार "इसमें प्राचीन काल की धार्मिक, सामाजिक और राजनैतिक सभ्यता का विलक्षण दृश्य अंकित हुआ है।...इसमें अहिंसा की महत्ता वर्णित हुई है और बौद्धमत और वेदान्त धर्म की विवेचना की गई है। तो भी कथा की सरसता में कोई हानि नहीं हुई है।"

शाही भिखारी

सन् १९२९ ई० में विवेच्य उपन्यासकार के 'शाही भिखारी' नामक उपन्यास का अनुवाद नारायण दत्त सहगल एंड संस, लाहौर से प्रथम बार प्रकाशित हुआ। प्रस्तुत पंक्तियों का लेखक इस उपन्यास को प्राप्त करने में असमर्थ रहा है। उपर्युक्त सूचनाएँ आर्यभाषा पुस्तकालय, काशी की पुस्तकसूची से प्राप्त की गयी हैं।

---

१. प्राप्ति स्थान—आर्यभाषा पुस्तकालय, काशी। मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—भारत की शूर-वीर स्त्रियों के कारनामे, मानवती अर्थात् चित्तौड़ का शाका, राजपूतों की वीरता तथा देश और जाति-भक्ति का ऐतिहासिक वृत्तान्त, लेखक—बाबू शिवव्रत लाल वर्मन, उर्दू पुस्तक का अनुवाद, प्रकाशक—राम दित्तामल एंड सन्ज, लुहारी गेट, लाहौर, द्वितीय बार २०००, १९२५, पृ० सं० ५० ।

२. प्रताप १४ जनवरी १९१८, विज्ञापन (शाही लकड़हारा)

३. सरस्वती, जुलाई १९२८, शाहवार मोती (पुस्तक परिचय)

बंकिमचन्द्र चट्टोपाध्याय

सीताराम

सन् १९१९ ई० में बंकिम बाबू के 'वंग शार्दूल सीताराम' नामक उपन्यास का रामेश्वर प्रसाद पांडेय कृत अनुवाद हरिदास एंड कम्पनी, कलकत्ता से, प्रथम बार प्रकाशित हुआ।[1] इस ग्रन्थ के 'वक्तव्य' से ज्ञात होता है कि 'हरिदास एंड कम्पनी' के स्वामी ने बंकिम बाबू के सभी उपन्यासों का अनुवाद प्रकाशित करने का संकल्प किया था।[2] इससे सिद्ध होता है कि १९१९ ई० के लगभग हिन्दी पाठकों में बंकिम बाबू के उपन्यासों की माँग काफी थी। उपर्युक्त 'वक्तव्य' से यह भी ज्ञात होता है कि इस अनुवाद के पूर्व इस उपन्यास के 'दो-एक और अनुवाद' हो चुके थे।[3] प्रस्तुत पंक्तियों का लेखक इन अनुवादों को प्राप्त कर सकने में असमर्थ रहा है।

विवेच्य उपन्यास का रामाशीष सिंह कृत अनुवाद १९३४ ई० में हिन्दी पुस्तक एजेन्सी, कलकत्ता से बंकिम ग्रन्थमाला, भाग-१ के अन्तर्गत प्रकाशित हुआ था।[4]

इसका एक अन्य अनुवाद श्रीकृष्ण हसरत ने भी प्रस्तुत किया था, जिसका तृतीय संस्करण १९५८ ई० में हिन्दी प्रचारक पुस्तकालय, वाराणसी से प्रकाशित हुआ।[5] इसके प्रथम दो संस्करणों को प्राप्त करने में प्रस्तुत पंक्तियों का लेखक असमर्थ रहा है।

विवेच्य उपन्यास का साहित्य भूषण पं० महावीर प्रसाद मिश्र कृत एक अन्य अनुवाद १९५४ ई० में श्री प्रभाकर साहित्य लोक, रानी कटरा, लखनऊ द्वारा प्रकाशित किया गया।[6]

इस प्रकार सन् १९१९ ई० से लेकर १९५४ ई० तक 'वंग शार्दूल सीता राम' के कम से कम ५ अनुवाद और उनके कुल मिलाकर सात संस्करण, जिनकी सूचना ऊपर की पंक्तियों में दी गयी है, प्रकाशित हुए।

हेमचन्द्र

आर्यभाषा पुस्तकालय की पुस्तकसूची से ज्ञात होता है कि बंकिम बाबू के

---

१. प्राप्ति स्थान—आर्यभाषा पुस्तकालय, काशी। मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—सीताराम, ले० बंकिमचन्द्र चटर्जी, अनु० रामेश्वर प्रसाद पांडेय, प्र० हरिदास एण्ड को०, कलकत्ता, प्रथम संस्करण १९१९ ई०।

२. उपरिवत्, वक्तव्य।

३. उपरिवत्।

४. द्रष्टव्य. हिन्दी उपन्यास कोश, खंड १, पृ० २६१।

५. प्राप्ति स्थान—आर्यभाषा पुस्तकालय, काशी। मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—सीताराम, ले० बंकिमचन्द्र चटर्जी, हिन्दी रूपान्तरकार—श्रीकृष्ण हसरत, प्र०—हिन्दी प्रचारक पुस्तकालय, वाराणसी-१, संस्करण तृतीय, ११०० (अप्रैल १९५८)

६. प्राप्ति स्थान—वि० रा० भा० प० पु०, पटना।

मयूख

सन् १९२९ ई० में विवेच्य उपन्यासकार के 'मयूख' नामक ऐतिहासिक उपन्यास का बजरंगबली गुप्त 'विशारद' कृत अनुवाद एम० एस० मेहता एंड ब्रदर्स, काशी से प्रकाशित हुआ।[१] प्रस्तुत उपन्यास में शाहजहाँ के राजत्वकाल में बंगाल पर पुर्तगीजों के अत्याचार और 'मयूख' तथा अँगरेजों की सहायता से पुर्तगीज सैनिकों और पादरियों को मार भगाने का वर्णन, प्रमुख कथा के रूप में, किया गया है। 'परिचय' से ज्ञात होता है कि यह अविकल न होकर स्वतन्त्र अनुवाद है।

वीर प्रतिज्ञा

सन् १९३५ ई० में राखाल बाबू के 'वीर प्रतिज्ञा' नामक उपन्यास का पं० कमला प्रसाद राय कृत अनुवाद साहित्य पुस्तकालय बनारस से, प्रथम बार, प्रकाशित हुआ। प्रस्तुत पंक्तियों का लेखक इस उपन्यास को प्राप्त करने में असमर्थ रहा है। उपर्युक्त सूचनाएँ आर्यभाषा पुस्तकालय की पुस्तक सूची से प्राप्त की गयी हैं।

ध्रुवा, असीम, पाषाण कथा

सन् १९३६ ई० तक रखाल बाबू के उपर्युक्त चार उपन्यासों के ही अनुवाद हिन्दी में प्रस्तुत किये गये। तत्पश्चात् १९४२ ई० में इनके 'ध्रुवा' नामक उपन्यास का पं० बलदेव प्रसाद शुक्ल कृत अनुवाद शक्ति कार्यालय, राजापुर, बाँदा से हुआ।[२] इनके 'असीम' तथा 'पाषाण कथा' नामक उपन्यास के शम्भुनाथ वाजपेयी कृत अनुवाद नागरी प्रचारिणी सभा, काशी से क्रमशः १९५४ और १९५५ ई० प्रकाशित हुए।[३]

राखालदास वन्द्योपाध्याय के उपन्यास भारत की समस्त भाषाओं के ऐतिहासिक उपन्यासों में मूर्धन्य होने पर भी हिन्दी में यथोचित रूप में लोकप्रिय न हो सके। जहाँ वंकिम बाबू के एक एक उपन्यास के चार चार, पाँच पाँच अनुवाद और उन अनुवादों के एकाधिक संस्करण हिन्दी में प्रकाशित हुए, वहाँ राखाल बाबू के 'करुणा' को छोड़कर अन्य किसी भी उपन्यास के हिन्दी अनुवाद का दूसरा संस्करण १९५७ ई० तक नहीं प्रकाशित हुआ।[४] राखाल बाबू के उत्तम कोटि के ऐतिहासिक उपन्यासों की अपेक्षा हरिसाधन मुखोपाध्याय के मिथ्यैतिहासिक उपन्यास हिन्दी पाठकों में ज्यादा लोकप्रिय हो

---

१. प्राप्ति स्थान—आर्यभाषा पुस्तकालय, काशी। मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—मयूख (ऐतिहासिक उपन्यास), मूल लेखक—राखालदास वन्द्योपाध्याय, एम० ए०, अनुवादक—बजरंगबली गुप्त, 'विशारद', प्रकाशक एस० एम० मेहता एंड ब्रदर्स, अध्यक्ष प्राचीन कवि माला कार्यालय, काशी, सं० १९८६ वि०। पृ० सं० १८८।

२. प्राप्ति स्थान—आर्यभाषा पुस्तकालय, काशी।

३. प्राप्ति स्थान—आर्यभाषा पुस्तकालय, काशी।

४. असीम, राखाल दास वंद्योपाध्याय, अनु० शम्भुनाथ वाजपेयी, नागरी प्रचारिणी सभा, काशी, प्रथम संस्करण, सं० २०११, भूमिका।

जिससे उपर्युक्त प्रकाशन-काल की प्रामाणिकता सिद्ध होती है। उक्त समीक्षा से ज्ञात होता है कि यह अनुवाद ५३० पृष्ठों में समाप्त हुआ है।

'वज्राघात' में विजय नगर के राज्य, उसके शासकों की विलासिता और प्रतिवेशी मुसलमानी राज्यों के षड्यंत्रों के कारण घटित विनाश का वर्णन, प्रमुख कथा के रूप में, किया गया है।

चाणक्य और चन्द्रगुप्त

सन् १९२४ ई० में विवेच्य उपन्यासकार के 'चन्द्रगुप्त नामक ऐतिहासिक उपन्यास का पं० लक्ष्मीधर वाजपेयी कृत 'चाणक्य और चन्द्रगुप्त' शीर्षक अनुवाद सरस्वती भंडार, मुरादपुर, पटना से प्रकाशित हुआ। यह अनुवाद ५०० से भी अधिक पृष्ठों में समाप्त हुआ था। प० वि० पु० में इस उपन्यास की एक प्रति है पर पुस्तक के मुखपृष्ठ पर प्रकाशन काल नहीं दिया हुआ हैं। 'भूमिका' के अन्त में 'ज्येष्ठ शुक्ला २, सं० १९८१ वि०' तिथि मुद्रित है जिससे इसके प्रकाशन काल का पता चल जाता है। २ अगस्त १९२४ के 'मतवाला' में इस उपन्यास का 'परिचय' प्रकाशित हुआ था।[1]

विवेच्य उपन्यास का महावीर प्रसाद गहमरी कृत 'सम्राट चन्द्रगुप्त' शीर्षक एक अन्य अनुवाद उपन्यास बहार आफिस, काशी से भी प्रकाशित हुआ था। आर्य भाषा पुस्तकालय, काशी में इस अनुवाद की एक प्रति उपलब्ध है, पर मुखपृष्ठ गायब रहने के कारण अनुवादक, प्रकाशन तथा प्रकाशनकाल सम्बन्धी सूचनाएँ नही मिल पातीं। उपर्युक्त सूचनाएँ उक्त पुस्तकालय की पुस्तकसूची से प्राप्त की गयी हैं। पुस्तक-सूची से इसके प्रकाशनकाल का पता नहीं चलता।

उषाकाल

हरिनारायण आप्टे के 'उषाकाल' नामक उपन्यास का एक अनुवाद हिन्दी पुस्तक एजेन्सी, कलकता से १९२४ ई० में प्रकाशित हुआ। आर्यभाषा पुस्तकालय में इस अनुवाद की जो प्रति है उसके मुखपृष्ठ के गायब रहने के कारण अनुवादक, प्रकाशक तथा प्रकाशन काल के सम्बन्ध में कोई सूचना नहीं मिल पाती। उपर्युक्त सूचनाएँ उक्त पुस्तकालय की पुस्तकसूची से प्राप्त की गयी हैं। इस अनुवाद का तृतीय संस्करण १९५३ ई० में हिन्दी पुस्तक एजेन्सी, कलकता से प्रकाशित हुआ। पुस्तक में अनुवादक की सूचना नहीं दी हुई हैं।

अजेय तारा

विवेच्य उपन्यासकार के 'अजिक्य तारा' नामक उपन्यास का श्री जे० पी० चौधरी कृत 'अजेय तारा' शीर्षक अनुवाद चौधरी एंड संस, नीची बाग, बनारस से प्रकाशित हुआ। प्रस्तुत पंक्तियों का लेखक इस अनुवाद को प्राप्त करने में असमर्थ रहा है। 'प्रभा' के

१. मतवाला, २ अगस्त १९२४, पुस्तक परिचय, चाणक्य और चन्द्रगुप्त,

एक अन्य अनुवाद, 'अश्रुपात' शीर्षक से प्रथम बार, १९२७ ई० में, गंगा पुस्तकमाला कार्यालय, लखनऊ से प्रकाशित हुआ।[१] इस उपन्यास में मुख्य कथा के रूप में दिल्ली के गदर के बाद मुगल वंश की राजकुमार-राजकुमारियों की दयनीय अवस्था का चित्रण किया गया है। 'अश्रुपात' की 'प्रस्तावना' से ज्ञात होता है कि उर्दू में 'बेगमात के आँसू' की सात आवृत्तियाँ निकल चुकी थीं तथा गुजराती में इसका अनुवाद हो चुका था।[२] हिन्दी में 'बेगमात के आँसू' के उपर्युक्त अनुवादों के एक से अधिक संस्करण अब तक प्रकाशित नहीं हो सके हैं, जिससे सिद्ध होता है कि हिन्दी पाठकों में उपन्यास लोकप्रियता नहीं प्राप्त कर सका।

'बेगमात के आँसू' का मुंशी नवजादिक लाल श्रीवास्तव द्वारा प्रस्तुत किया हुआ **'बेगमों के आँसू'** शीर्षक अनुवाद १९३४ ई० में अथवा उसके कुछ पूर्व प्रकाशित हुआ। प्रस्तुत पंक्तियों का लेखक इस अनुवाद को प्राप्त करने में असमर्थ रहा है। उपर्युक्त सूचनाएँ 'सरस्वती' (जुलाई, १९३४) में प्रकाशित विवेच्य अनुवाद की समीक्षा से प्राप्त की गयी हैं।

बहादुरशाह का मुकदमा

सन् १९३४ ई० में निजामी साहब के 'बहादुरशाह का मुकदमा' नामक ऐतिहासिक उपन्यास का श्री गोपीनाथ सिंह कृत अनुवाद नरेन्द्र पब्लिशिंग हाउस, रैन बसेरा, देहरादून से, प्रथम बार, प्रकाशित हुआ।[३] इस उपन्यास का द्वितीय संस्करण प्रकाशित हुआ था या नहीं, इसका पता प्रस्तुत पंक्तियों के लेखक को नहीं है।

उपर्युक्त तथ्यों से यह भली भाँति सिद्ध है कि ख्वाजा हसन निजामी के ऐतिहासिक उपन्यास हिन्दी में लोकप्रिय न हो सके।

तथा राजकुमारियों से सम्बन्ध रखनेवाले लेखों का हिन्दी रूपान्तर, अनुवादक उमराँव सिंह कारुणिक, बी० ए०, रचयिता "कार्नेगी" इत्यादि, प्रकाशक चौधरी शिवनाथ सिंह शांडिल्य, ज्ञान प्रकाश मन्दिर, पो० माछरा, जि० मेरठ, पहिला संस्करण सन् १९२२ ई०, पृ० सं० १४८।

१. प्राप्तिस्थान—आर्यभाषा पुस्तकालय, काशी। मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—अश्रुपात ('बेगमात के आँसू' का अनुवाद) मूल लेखक ख्वाजा हसन निजामी, छायानुवादकर्ता श्रीराम शर्मा, बी० ए०, प्रकाशक गंगा पुस्तकमाला कार्यालय, २९-३०, अमीनाबाद पार्क, लखनऊ, प्रथमावृत्ति सं० १९८४ वि०, पृ० सं० १६६।

२. उपरिवत्, प्रस्तावना।

३. प्राप्ति स्थान—आर्यभाषा पुस्तकालय, काशी। मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—भारत के अन्तिम सम्राट बहादुर शाह का मुकद्मा, लेखक—बेगमात के आँसू, मोहासराय-देहली के खुतूत, गदर-देहली के अखबार, देहली की जाँकनी, गालिब का रोजनामचा, गदर-देहली की सुबह-शाम, देहली का आखिरी शमआ आदि गदर सम्बन्धी अनेक पुस्तकों के रचयिता—ख्वाजा हसन निजामी साहब, अनुवादक—श्री गोपीनाथ सिंह, बी० ए० (आनर्स), प्रकाशक—नरेन्द्र पब्लिशिंग हाउस, रैन बसेरा, देहरादून, पहला संस्करण मार्च १९३४, पृ० सं० ३१०।

हात' नामक उपन्यास का बाबू गोकुल प्रसाद वर्मा 'कविरंजन' कृत 'शिवाजा का दाहिना हाथ' शीर्षक अनुवाद उपन्यास बहार आफिस, काशी से प्रकाशित हुआ।[1] पुस्तक के मुखपृष्ठ पर उपन्यास के मूल नाम तथा लेखक की सूचना नहीं दी हुई है पर 'अनुवाद के दो शब्द' से ये सूचनाएँ प्राप्त हो जाती हैं।

सोने की राख या पद्मिनी

सन् १९२१ ई० में बँगला से पं० गुलजारी लाल चतुर्वेदी द्वारा अनूदित 'सोने की राख वा पद्मिनी' नामक ऐतिहासिक उपन्यास बाबू शिवराम दास गुप्त द्वारा प्रकाशित किया गया।[2] पुस्तक के मुखपृष्ठ पर मूल पुस्तक अथवा लेखक का नाम नहीं दिया हुआ है।

महेन्द्र मोहिनी

सन् १९२१ में ही बालकृष्ण दामोदर शास्त्री द्वारा लिखित और शिवराम दास द्वारा सम्पादित 'महेन्द्रमोहिनी' नामक ऐतिहासिक उपन्यास का द्वितीय संस्करण उपन्यास बहार आफिस, काशी से प्रकाशित हुआ।[3] यद्यपि पुस्तक में कहीं भी इसके अनुवाद होने की सूचना नहीं दी हुई है, पर लेखक के नाम तथा 'सम्पादित' होने से इसके अनुवाद होने की सम्भावना ही अधिक है। प्रस्तुत पंक्तियों का लेखक इसके प्रथम संस्करण को प्राप्त करने में असमर्थ रहा है।

महाराज नन्दकुमार को फाँसी

सन् १९२२ ई० में या उसके कुछ पूर्व बँगला से अनूदित 'महाराज नन्दकुमार को फाँसी' नामक उपन्यास प्रताप प्रेस, कानपुर से प्रकाशित हुआ। प्रस्तुत पंक्तियों का लेखक इस अनुवाद को प्राप्त करने में असमर्थ रहा है। उपर्युक्त सूचनाएँ 'सरस्वती' (दिसम्बर १९२२ ई०) की 'पुस्तक समीक्षा' से प्राप्त की गयी हैं।[4]

---

१. प्राप्ति स्थान—राष्ट्रभाषा परिषद् पुस्तकालय, पटना। मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—शिवाजी का दाहिना हाथ, अनुवादक—श्रीयुत् बा० गोकुल प्रसाद वर्मा 'कविरंजन', मुद्रक—चन्द्रप्रभा प्रेस, बनारस सिटी, प्रकाशक और संशोधक—उपन्यास बहार आफिस, काशी, बनारस, दिसम्बर १९२०।

२. प्राप्ति स्थान—माहेश्वरी पुस्तकालय, पटना। मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—सोने की राख वा पद्मिनी, एक प्रसिद्ध और सचित्र ऐतिहासिक उपन्यास, पं० गुलजारी लाल चतुर्वेदी द्वारा अनुवादित, जिसे काशीस्थ 'उपन्यास बहार आफिस' के मालिक उपन्यास बहार मासिक पत्र के सम्पादक तथा अनेक उपन्यासों के लेखक बाबू जयरामदास गुप्त द्वारा संशोधित, और शिवराम दास गुप्त द्वारा प्रकाशित, काशी जून १९२१।

३. प्रा० स्था०—आ० भा० पु० काशी। मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—महेन्द्रमोहिनी (ऐतिहासिक उपन्यास) लेखक—बालकृष्ण दामोदर शास्त्री, सम्पादक—शिवराम दास गुप्त, उपन्यास बहार आफिस, राजघाट, काशी, द्वितीय संस्करण १९२१।

४. सरस्वती, भाग २३, संख्या १२, दिसम्बर १९२२, पुस्तक परीक्षा (महाराज नन्द कुमार को फाँसी)।

उद्देश्य से श्रीयुत नलिनीरंजन चौधरी महाशय ने प्रचलित इतिहास और जनश्रुतियों के आधार पर बँगला में इस उपन्यास की रचना की थी। सन् १९२४ ई० की 'सरस्वती' में उसका हिन्दी अनुवाद प्रकाशित हो चुका है। लोगों की रुचि देखकर अब यही पुस्तक के आकार में प्रकाशित किया जा रहा है।"[1]

सुर सुन्दरी

सन् १९२५ ई० में या इसके कुछ पूर्व पं० मुरलीधर शर्मा द्वारा बँगला से अनूदित 'सुरसुन्दरी' नामक ऐतिहासिक उपन्यास लहरी प्रेस, बनारस से बाबू दुर्गाप्रसाद खत्री द्वारा प्रकाशित किया गया। प्रस्तुत पंक्तियों का लेखक इस अनुवाद को प्राप्त करने में असमर्थ रहा है। उपर्युक्त सूचनाएँ 'मतवाला' (अक्टूबर-१९२५) में प्रकाशित पुस्तक-परिचय' से प्राप्त का गयी हैं।[2]

वीर राजपूत

सन् १९२५ ई० में या उसके कुछ पूर्व मराठी उपन्यासकार श्री 'नाथ माधव' के 'तरुण राजपूत सरदार' नामक ऐतिहासिक उपन्यास का पं० लक्ष्मीधर वाजपेयी कृत 'वीर राजपूत' शीर्षक अनुवाद छात्र हितकारी पुस्तकमाला, दारागंज, इलाहाबाद से प्रकाशित हुआ। यह उपन्यास राजा मान सिंह के समय की एक ऐतिहासिक घटना के आधार पर रचित है। आ० भा० पु० काशी में इस उपन्यास की एक प्रति है पर उसके मुखपृष्ठ के नष्ट हो जाने के कारण पुस्तक के सम्बन्ध में कोई सूचना नहीं मिलती। उपर्युक्त सूचनाएँ 'मतवाला' (अक्टूबर १९२५) में प्रकाशित विवेच्य पुस्तक की 'पुस्तक परीक्षा' तथा आ० भा० पु० की पुस्तकसूची से प्राप्त की गयी हैं।[3]

वीरव्रत पालन

सन् १९२६ ई० में हाराचन्द्र रक्षित लिखित किसी ऐतिहासिक उपन्यास का ईश्वरी प्रसाद शर्मा द्वारा प्रस्तुत 'वीरव्रत पालन' शीर्षक अनुवाद वर्मन प्रेस, कलकत्ता से प्रकाशित हुआ।[4] प्रस्तुत पंक्तियों का लेखक इस उपन्यास को प्राप्त करने में असमर्थ रहा है।

श्री

सन् १९२७ ई० में बँगला उपन्यासकार पंचानन राय चौधरी कृत किसी ऐतिहासिक उपन्यास का बाबू नन्दकिशोर लाल द्वारा प्रस्तुत 'श्री' शीर्षक अनुवाद उपन्यास बहार

---

१. शीलादेवी, ले० नलिनी रंजन चौधरी, अ० लल्ली प्रसाद पांडेय, निवेदन, प्रा० स्था०—आ० भा० पु० काशी।

२. मतवाला, १० अक्टूबर—१९२५, पुस्तक परिचय (सुरसुन्दरी)।

३. उपरिवत्, पुस्तकपरिचय (वीर राजपूत)।

४. आ० भा० पु० काशी, पुस्तक सूची।

बँगला पुस्तक के आधार पर लिखित 'राजपूत नन्दिनी' शीर्षक उपन्यास चौधरी एंड सन्स, बनारस सिटी से प्रकाशित हुआ। इस उपन्यास का दूसरा संस्करण १९३३ ई० में उपर्युक्त प्रकाशन-संस्था से ही प्रकाशित हुआ।[१] प्रस्तुत पंक्तियों का लेखक इस उपन्यास के प्रथम संस्करण को प्राप्त करने में असमर्थ रहा है। दूसरे संस्करण के 'निवेदन' से ही पहले संस्करण का प्रकाशन-काल ज्ञात होता है।[२] 'निवेदन' में लेखक ने लिखा है—'कुछ वर्ष हुए, मुझे दिल्ली में 'वीरांगना' नामक एक बँगला पुस्तक पढ़ने का अवसर प्राप्त हुआ। पुस्तक मुझे इतनी पसन्द आई कि मैंने उसी समय उसका अनुवाद करना निश्चय कर लिया, पर अनेक झंझटों के कारण उस समय मैं अनुवाद न कर सका। ......यद्यपि मेरे खयाल से 'वीरांगना' में इतिहास के साथ कल्पना से भी काफी काम लिया गया मालूम होता है, तथापि 'वीरांगना' की लेखिका ने उसे इतना सरस, मधुर और ओजमय बनाया है कि मैं उससे सहायता लेने में—उसका अनुकरण करने के लोभ को संवरण न कर सका। पुस्तक की घटना मेरे हृदय पर अंकित हो गयी थी; अतएव स्मृति के आधार पर मैंने उसे स्वतन्त्र रूप से लिख डाला। 'कर्मदेवी' के चरित्र पर हिन्दी में—अभीतक—कोई पुस्तक का न होना भी मेरे इस साहस का एक कारण है।"

मराठा तलवार याने किलेदार की लड़की

सन् १९३० ई० में खांडेकर कृत किसी मराठी उपन्यास का पशुपाल वर्मा द्वारा प्रस्तुत किया हुआ 'मराठा तलवार याने किलेदार की लड़की' शीर्षक अनुवाद एम० एम० सोजतिया एण्ड कम्पनी, इन्दौर से प्रकाशित हुआ।[३]

लीलावती का स्वप्न

सन् १९३० ई० में ही श्री मनमोहन राय कृत एक बँगला ऐतिहासिक उपन्यास का पं० कात्यायनी दत्त द्विवेदी द्वारा प्रस्तुत 'लीलावती का स्वप्न' नामक अनुवाद इंडियन प्रेस, प्रयाग से प्रकाशित हुआ।[४] 'प्रकाशक के वक्तव्य' से मूल लेखक का पता चलता

---

१. प्राप्ति स्थान—माहेश्वर सार्वजनिक पुस्तकालय, पटना। मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि— राजपूत नन्दिनी (कर्मदेवी का नवीन रूप) लेखक—श्री प्रवासी लाल वर्मा मालवीय, प्रकाशक—चौधरी एंड सन्स, बुकसेलर्स एंड पब्लिशर्स, ज्ञानवापी चौक, बनारस सिटी, द्वितीय संस्करण सन् १९३२, पृ० सं० १६३।

२. उपरिवत्, निवेदन।

३. प्राप्ति स्थान—आ० भा० पु० काशी। मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—मराठा तलवार याने किलेदार की लड़की, रणकुशल मराठों की शानदार तलवार की धार से सच्चे स्वराज्य का राष्ट्रीय झंडा फहरानेवाला यह एक मातृभूमि प्रेम के रंग में रँगा हुआ ऐतिहासिक उपन्यास है। लेखक श्रीयुत् पशुपाल वर्मा (यह उपन्यास मराठों के सुप्रसिद्ध लेखक श्री खांडेकर जी की एक प्रसिद्ध पुस्तिका का रूपान्तर है) १ दिसम्बर सन् १९३०, प्रकाशक—एम० एम० सोजतिया एंड कम्पनी, दो-आना माला आफिस, इन्दौर, प्रथम बार।

४. प्रा० स्था०—आ० भा० पु० काशी। मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—लीलावती का स्वप्न, (बंगभाषा

अग्रवाल कृत 'हुगली का इमामबाड़ा' शार्षक अनुवाद पुस्तक भवन, बनारस से प्रकाशित हुआ।[१] यह एक ऐतिहासिक उपन्यास है। पुर्तगालियों से शाहजहाँ की अनबन तथा अँगरेजों द्वारा कलकत्ता नगर बसाने आदि की ऐतिहासिक घटनाओं को इस उपन्यास का मुख्य आधार बनाया गया है।

उपर्युक्त तथ्यों से यह निष्कर्ष निकलता है कि यद्यपि १९००-१९३६ ई० की अवधि में हिन्दीतर भाषाओं से, विशेषकर बँगला से, अनेक ऐतिहासिक उपन्यासों के अनुवाद हिन्दी में प्रस्तुत किये गये, पर हिन्दी पाठकों के बीच ये लोकप्रिय न हो सके। हिन्दी पाठकों के बीच वे हो ऐतिहासिक उपन्यास लोकप्रिय हुए जिनमें ऐयारी, तिलिस्म, अपराध-प्रधान घटनाओ तथा कामुकता की प्रधानता रहती थी। विशुद्ध ऐतिहासिक उपन्यास, जो कला की दृष्टि से साहित्य की अनुपम और स्थायी निधि हो सकते हैं—जैसे चंडीचरण सेन और राखालदास वन्द्योपाध्याय के उपन्यास—हिन्दी पाठकों के बीच लोकप्रियता नहीं प्राप्त कर सके।

१. प्राप्ति स्थान—आर्यभाषा पुस्तकालय, काशी तथा सिनहा लाइब्रेरी, पटना। मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—हुगली का इमामबाड़ा, मूल लेखिका—स्व० स्वर्णकुमारी देवी घोषाल, अनुवादक—स्व० मुरारी दास अग्रवाल, प्रकाशक पुस्तक भवन, बनारस सिटी, प्रथमावृत्ति, अप्रैल १९३६, पृ० सं० २२६।



वे मौत से खेले

सन् १९३४ ई० में श्री ए० एस० नील लिखित किसी अँगरेजी पुस्तक के आचार्य श्री गिजु भाई कृत गुजराती अनुवाद का श्री काशिनाथ त्रिवेदी द्वारा प्रस्तुत 'वे मौत से खेले थे' शीर्षक हिन्दी रूपान्तर ओझा बन्धु आश्रम, इलाहाबाद से प्रकाशित हुआ।[1] इस कथा में नील नामक एक शिक्षक द्वारा अपने पाँच छात्रों को कहानी सुनाने का वर्णन है। नील ने एक विचित्र मोटर गाड़ी का आविष्कार किया है जिस में सवार होकर वह अपने छात्रों के साथ अफ्रीका की यात्रा करता है। पुस्तक बालकोपयोगी है, जिसमें कथा के माध्यम से बच्चों के ज्ञानवर्धन योग्य बातों का वर्णन किया गया है।

---

१. प्रा० स्था०—आ० भा० पु० काशी। मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—वे मौत से खेले थे, ए० एस० नील लिखित अंग्रेजी पुस्तक के आचार्य श्री गिजु भाई कृत गुजराती अनुवाद से रूपान्तरित, रूपान्तरकार श्री काशीनाथ त्रिवेदी, बी० ए०, प्र० ओझा बंधु आश्रम, इलाहाबाद, पहली बार १०००, अक्टूबर, '३४।

किसी उपन्यास का 'जर्मन षड्यन्त्र' शीर्षक अनुवाद आर० एल० वर्मन एंड कम्पनी, कलकत्ता से प्रकाशित हुआ ।[१] इसका दूसरा संस्करण भी उपर्युक्त प्रकाशन-संस्था से प्रकाशित हुआ ।[२] उपन्यास की भूमिका से ज्ञात होता है कि यह 'ब्लैक सिरीज' के किसी उपन्यास का अनुवाद है ।

क्लर्क का भाग्य

सन् १९२१ ई० में अथवा उसके कुछ पूर्व पं० रामानन्द द्विवेदी द्वारा अँगरेजी से अनूदित 'क्लर्क का भाग्य' नामक जासूसी उपन्यास कन्हैया लाल बुकसेलर, चौक, बनारस सिटी द्वारा प्रकाशित हुआ ।[३]

विकट जासूस

सन् १९२१ ई० में ही अथवा उसके निकट पूर्व सर कानन डायल की तीन कहानियों का पं० कृष्णानन्द जोशी द्वारा प्रस्तुत किया 'विकट जासूस' शीर्षक अनुवाद-संग्रह लक्ष्मी नारायण प्रेस, मुरादाबाद से प्रकाशित हुआ ।[४] यह अविकल अनुवाद है । प्रस्तुत पंक्तियों का लेखक इस पुस्तक को प्राप्त करने में असमर्थ रहा है । उपर्युक्त सूचनाएँ सरस्वती, अक्तूबर १९२१ में प्रकाशित विवेच्य उपन्यास की 'पुस्तक परीक्षा'-से प्राप्त की गयी हैं ।[४]

साहसी सुन्दरी या समुद्री डाकू

सन् १९२१ ई० में बँगला उपन्यासकार दीनेन्द्र कुमार राय के किसी उपन्यास का ईश्वरी प्रसाद शर्मा द्वारा प्रस्तुत किया हुआ 'साहसी सुन्दरी या समुद्री डाकू' शीर्षक अनुवाद रामलाल वर्मा एंड कम्पनी, कलकत्ता से प्रकाशित हुआ ।[५] इसका द्वितीय संस्करण १९२६ ई० में उपर्युक्त प्रकाशन-संस्था से प्रकाशित हुआ ।[६] इस उपन्यास के पात्रों तथा स्थानों के नाम विदेशी हैं, जिससे जान पड़ता है कि यह बँगला का भी मौलिक उपन्यास न होकर किसी अँगरेजी उपन्यास का बँगला अनुवाद है ।

---

१. आ० भा० पु० काशी की पुस्तक सूची ।

२. प्राप्ति स्थान—आ० भा० पु० काशी । मुख पृष्ठ पर प्रकाशन काल नहीं दिया हुआ है । भूमिका से ज्ञात होता है कि यह दूसरा संस्करण है ।

३. प्रस्तुत पंक्तियों का लेखक इस पुस्तक को प्राप्त करने में असमर्थ रहा है । एतत् सम्बन्धी सूचनाएँ प्रभा, वर्ष १, खंड २, संख्या ६, १ जून १९२१ में प्रकाशित 'सामयिक साहित्यावलोकन' से प्राप्त की गयी हैं ।

४. सरस्वती, अक्तूबर—१९२१ में प्रकाशित 'पुस्तक' परीक्षा की सूचना—विकट जासूस, अनुवादक पं० कृष्णानन्द जोशी, बी० ए०, एल० टी०, प्रकाशक—लक्ष्मी नारायण प्रेस, मुरादाबाद, पृ० सं० १२३ ।

५. प्रा० स्था०—आ० भा० पु०, काशी ।

६. आ० भा० पु० काशी, पुस्तक सूची ।

बालिका हरण

१९२३ ई० में ही बँगला के 'विवाह-विप्लव' नामक 'जासूसी उपन्यास का श्री 'सरोज' द्वारा प्रस्तुत 'बालिका हरण' शीर्षक अनुवाद भार्गव बुक डिपो बनारस से प्रकाशित हुआ ।[1]

हवाई जहाज

सन् १९२४ ई० में कार्तिकेय चरण मुखोपाध्याय द्वारा अनूदित ब्लेक सिरीज का 'हवाई जहाज' नामक उपन्यास, वर्म्मन प्रेस, कलकत्ता से प्रकाशित हुआ ।[2]

सुन्दरी हेलीजा

सन् १९२४ ई० में ही गुलजारी लाल चतुर्वेदी द्वारा अनूदित ब्लेक सिरीज का 'सुन्दरी हेलीजा' शीर्षक उपन्यास, हिन्दी ग्रन्थ भंडार कार्यालय, बनारस सिटी से प्रकाशित हुआ ।[3]

सन् १९२५ ई० में पं० प्रद्युम्न कौल द्वारा रूपान्तरित कई अपराधप्रधान उपन्यास, जिनका विवरण निम्नलिखित पंक्तियों में प्रस्तुत किया जा रहा है, प्रकाशित हुए । इन उपन्यासों के मुखपृष्ठ पर प्रद्युम्न कृष्ण कौल को लेखक बताया गया है, अनुवादक या रूपान्तरकार नहीं । पर इनके 'अरब-सरदार' नामक उपन्यास की भूमिका में कार्तिकेय चरण मुखोपाध्याय ने लिखा है, "आपने यह उपन्यास किसी अँगरेजी उपन्यास के आधार पर ही लिखा है; पर हिन्दी पाठकों की रुचि के अनुसार इसे नये साँचे में ढाल दिया है और जहाँ कहीं आवश्यकता पड़ी है, वहाँ घटाया बढ़ाया भी है ।"[4] मुखोपाध्याय महोदय का यह कथन कौल साहब के सभी उपन्यासों के सम्बन्ध में लागू होता है । प्रद्युम्न कृष्ण कौल के १९२५ ई० में प्रकाशित उपन्यासों का विवरण निम्नलिखित है ।

जवाहरात का गोला, ले० प्रद्युम्न कृष्ण कौल, प्र० रामलाल वर्मा, प्रोप्राइटर, 'वर्म्मन प्रेस' और 'आर० एल० वर्म्मन एंड को० कलकत्ता, प्रथम संस्करण, १९८१ वि०[5]

अरब सरदार, ले० पंडित प्रद्युम्न कृष्ण कौल, प्र० रामलाल वर्मा, प्रोप्राइटर 'वर्म्मन प्रेस' और० आर० एल० वर्म्मन एंड को०, कलकत्ता, प्रथम संस्करण, आषाढ़ सं० १९८२ वि० ।[6]

---

१. प्रा० स्था०—आ० भा० पु० काशी । मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—बालिका हरण (बँगला के विवाह विप्लव का छायानुवाद), अनु० 'सरोज', प्रकाशक—मैनेजर भार्गव बुक डिपो बनारस, प्रथम बार २०००. सन् १९२३, पृ० सं० १८२ ।

२. आ० भा० पु० की पुस्तकसूची ।

३. प्रा० स्था०—आ० भा० पु०, काशी ।

४. अरब सरदार, ले० पं० प्रद्युम्न कृष्णकौल, प्रथम संस्करण १९८२ वि०, भूमिका ।

५. आ० भा० पु० काशी की पुस्तकसूची ।

६. प्रा० स्था—आ० भा० पु, काशी ।

सहधर्मिणी

सन् १९२६ ई० मे ही दे साहब के किसी उपन्यास का विश्वनाथ पोखरैल 'विश्व' द्वारा प्रस्तुत किया हुआ 'सहधर्मिणी' शीर्षक अनुवाद चौधरी एंड संस, बनारस से प्रकाशित हुआ।[१] मुखपृष्ठ पर इसे सामाजिक उपन्यास कहा गया है, पर इसे अपराधप्रधान उपन्यास कहना अधिक युक्तिसंगत है।

आखिरी दुश्मन

सन् १९२८ ई० में पं० कार्तिकेय चरण मुखोपाध्याय द्वारा अनूदित 'ब्लेक सिरीज' का 'आखिरी दुश्मन' नामक उपन्यास रामलाल वर्मा, प्रोप्राइटर "वर्म्मन प्रेस" और "आर० एल० वर्म्मन एंड को०" कलकत्ता से प्रकाशित हुआ।[2]

टार्जन की बहादुरी

सन् १९३१ ई० में एडगर वैलेस के किसी उपन्यास का मथुरा प्रसाद खत्री द्वारा किया हुआ 'टार्जन की बहादुरी' शीर्षक अनुवाद लहरी बुक डिपो, बनारस से प्रकाशित हुआ।[३] इस उपन्यास का द्वितीय संस्करण १९५१ ई० में निकला।[४]

हीरे की चोरी

सन् १९३१ ई० मे ही 'सेक्सटन ब्लेक सिरीज' के किसी जासूसी उपन्यास का रमाकान्त त्रिपाठी द्वारा किया हुआ 'हीरे की चोरी' शीर्षक अनुवाद हिन्दी पुस्तक एजेन्सी, कलकत्ता से प्रकाशित हुआ।[५]

ब्लेक सिरीज की जासूसी कथाओं के अन्य अनुवाद :—

खूनी ताबीज, अ० परमानन्द खत्री, प्र०-बम्बई बुक एजेन्सी, कलकत्ता, प्रथम संस्करण १९९० वि०।[६]

जहरीली सुई, अ० — जगन्नाथ शर्मा अग्निहोत्री प्र०-लक्ष्मी पुस्तकालय, बनारस, प्रथम संस्करण १९३३ ई०।[७]

राबर्ट ब्लेक की फाँसी, अ०—जगन्नाथ शर्मा अग्निहोत्री, प्र०-लक्ष्मी पुस्तकालय, बनारस, प्रथम संस्करण १९३३ ई०।[८]

---

१. प्रा० स्था०-मा० पु०, पटना। मुखपृष्ठ की प्रतिलिपि—सहधर्मिणी, ले० पंचकौड़ी दे, अनुवादक विश्वनाथ पोखरैल, "विश्व" प्रकाशक—चौधरी एंड संस, बनारस, सचित्र सामाजिक उपन्यास, टूवरक्अ १९२६, १००० प्रतियाँ पृ० सं० १२९।

२. आ० भा० पु० की पुस्तकसूची।

३. प्रा० स्था०—आ० भा० पु० काशी।

४. आ० भा० पु० की पुस्तकसूची।

५. प्रा० स्था—आ० भा० पु०, काशी।

६. आ० भा०पु० की पुस्तकसूची।

७. उपरिवत्।

८. उपरिवत्।

छिपा हुआ भेद, परमानन्द खत्री, प्र० लक्ष्मी पुस्तकालय, बनारस, प्रथम संस्करण १९३५ ई० ।[१]

मोटर में हत्या—शेष सूचनाएँ उपरिवत् ।[2]

सुन्दरी का साहस—शेष सूचनाएँ उपरिवत् ।[३]

डाकुओं के करश्मे—अ० देवनारायण द्विवेदी, प्र० भार्गव पुस्तकालय, गायघाट बनारस, प्रथम संस्करण १९३५ ई० ।[४]

राबर्ट ब्लेक का फंदा—सूचनाएँ उपरिवत् ।[५]

लुटेरा बौना—सूचनाएँ उपरिवत् ।[६]

मौतघर—सूचनाएँ उपरिवत् ।[७]

अनोखा चालाक--सूचनाएँ उपरिवत् ।[८]

रहस्यमय रजिस्टर—सूचनाएँ उपरिवत् ।[९]

खूनी मराठा—सूचनाएँ उपरिवत् ।[१०] सन् १९३६ ई० में इस उपन्यास का द्वितीय संस्करण प्रकाशित हुआ ।[११]

रहस्यमयी हत्याएँ--अ० देवनारायण द्विवेदी, प्र०-भार्गव पुस्तकालय, गायघाट, बनारस, प्रथम सं० १९३५ ई० ।[१२]

संकट में सुन्दरी-अ० जगन्नाथ शर्मा अग्निहोत्री, प्र० लक्ष्मी पुस्तकालय, बनारस सिटी, प्रथम संस्करण १९३५ ई० ।[१३]

खूनी बैरिस्टर-सूचनाएँ उपरिवत् ।[१४]

चक्कदार—सूचनाएँ उपरिवत् ।[१५]

शैतानी चक्कर—सूचनाएँ उपरिवत् ।[१६]

---

१. प्रा० स्था आ० भा० पु० काशी ।
२. आ० भा० पु० की पुस्तक सूची ।
३. उपरिवत् ।
४. उपरिवत् ।
५. उपरिवत् ।
६. उपरिवत् ।
७. उपरिवत् ।
८. प्रा० स्था०—आ० भा० पु० काशी ।
९. उपरिवत् ।
१०. उपरिवत् ।
११. भा० पु० पटना ।
१२. प्रा० स्था०—आ० भा० पु० काशी ।
१३. उपरिवत् ।
१४. उपरिवत् ।
१५. उपरिवत् ।
१६. उपरिवत् ।

पौराणिक कथाएँ

महारानी दमयन्ती, ले० मणीराम शर्मा, प्र० ओंकार प्रेस, प्रयाग, प्रथम संस्कर० १८१८ ई० ।[1]

महाराणी सीता का जीवन वृत्तान्त, ले० पं० मणीराम शर्मा, प्र० ओंकार प्रेस प्रयाग, प्रथम संस्करण १९१८ ई० ।[2]

द्रौपदी, ले० पं० कात्यायनी दत्त त्रिवेदी, प्र० हरिदास एंड कम्पनी, कलकत्ता, द्वितीय संस्करण सन् १९२१ ई० ।[3] 'भूमिका' के अन्त में 'महामहावारुणी १९७५' तिथि मुद्रित है, जिससे इसके प्रथम संस्करण का प्रकाशनकाल १९१८ ई० सिद्ध होता है।

महारानी शैव्या का जीवन-वृत्तान्त, ले० पं० मणीराम शर्मा, प्र० पं० ओंकारनाथ वाजपेयी, प्रथम संस्करण १९१८ ई० ।[4]

सावित्री-सत्यवान, अ० बाबू नवजादिक लाल श्रीवास्तव, प्र० आर० एल० वर्म्मन एंड को, ३७१, अपर चितपुर रोड, कलकत्ता, प्रकाशन काल ७-७-१९१९ ई० के पूर्व ।[5] आ० भा० पु० की पुस्तक सूची के अनुसार प्रकाशन काल १९१९ ई० ।

सावित्री, ले० बद्रीप्रसाद भार्गव, प्र० हरिदास एंड कम्पनी, कलकत्ता, तृतीय संस्करण १९१९ ई० ।[6]

नल दमयन्ती, ले० बाबू नवजादिक लाल श्रीवास्तव, प्र० रामलाल वर्मा, प्रोप्राइटर 'वर्म्मन प्रेस' और 'आर० एल० वर्म्मन एंड को०', ३७१, अपर चितपुर रोड, कलकत्ता, प्रथम संस्करण १९१९ ई० ।[7]

पाण्डव वनवास, ले० श्रीमन्त शर्मा विद्याभूषण, अनुवादक पं० पारसनाथ त्रिपाठी, प्र० हरिदास एंड कम्पनी, कलकत्ता, प्रथम बार फरवरी सन् १९२० ई० ।[8] 'निवेदन' से ज्ञात होता है कि यह पुस्तक 'पांडव निर्वासन' नामक बँगला पुस्तक का अनुवाद है। 'निवेदन' के अन्त में १५-७-१९१९' तिथि मुद्रित है, जिससे इसका रचना काल १९१९ ई० सिद्ध होता है ।

---

१. आ० भा० पु० की पुस्तक-सूची ।

२. प्रा० स्था०—आ० भा० पु०, काशी ।

३. प्रा० स्था०—आ० भा० पु०, काशी ।

४. उपरिवत् ।

५. प्रताप, ७-७-१९१९, 'साहित्यावलोकन' तथा आ० भा० पु० की पुस्तक सूची ।

६. उपरिवत् ।

७. प्रा० स्था०—आ० भा० पु०, काशी ।

८. उपरिवत् ।

१९२१ ई० में प्रकाशित हुआ था।[२] प्रकाशक के अनुसार, इस ग्रन्थ का प्रथम संस्करण केवल छह महीने में ही समाप्त हो गया था, परन्तु कितनी ही बाधाएँ आ जाने के कारण हम इस ग्रन्थ का द्वितीय संस्करण प्रकाशित करने में सफल मनोरथ न हो सके थे।'

भारतीय उपाख्यानमाला, सं० चतुर्वेदी द्वारिका प्रसाद शर्मा, प्र० नेशनल प्रेस, प्रयाग, द्वितीय संस्करण।[३] प्रकाशन काल नहीं दिया हुआ है। पुस्तक की 'भूमिका' के अन्त में 'चैत्र शुक्ल ९ सं० १९६८' तिथि दी हुई है, जिससे इसके प्रथम संस्करण का प्रकाशन काल १९२१ ई० सिद्ध होता है। 'भूमिका' से यह भी ज्ञात होता है कि यह कथा बँगला की 'महाभारतेर गल्प' नामक पुस्तक पर आधृत है।[३]

चिन्ता, ले० हसरत, प्र० शिवराम दास गुप्त, उपन्यास बहार ऑफिस, काशी बनारस, प्रथम बार १९२१ ई०।[४]

शर्मिष्ठा, ले० हसरत, प्र० उपन्यास बहार आफिस, काशी, बनारस, प्रथम बार जून १९२१ ई०।[५] 'भूमिका' से पता चलता है कि यह किसी बँगला पुस्तक का अनुवाद है।

सती विपुला, ले० पं० नरोत्तम व्यास, प्र० रिखबदास वाहिती, प्रोप्राइटर दुर्गा प्रेस और आर० डी० वाहिती एंड को, नं० ४, चोर बगान, कलकत्ता, द्वितीय बार १९२४ ई०।[६] पुस्तक की 'भूमिका' के अन्त में '१५-१२-२१' तिथि मुद्रित है, जिससे इसका रचनाकाल १९२१ ई० प्रमाणित होता है।

एकलव्य, ले० दुर्गा प्रसाद वर्मा, प्र० उपन्यास बहार आफिस काशी, बनारस प्रथम बार, १९२१ ई०।[७]

पतिव्रता, ले० योगेन्द्रनाथ वसु, अ० श्री जनार्दन झा, प्र० इंडियन प्रेस लिमिटेड, प्रयाग, तृतीय बार १९२१ ई०।[८] इसके प्रथम और द्वितीय संस्करण प्रस्तुत पंक्तियों के लेखक को नहीं प्राप्त हो सके हैं।

देवी द्रौपदी, रामचरित उपाध्याय, प्र० गंगा पुस्तक माला कार्यालय, लखनऊ प्रथमावृत्ति १९२१।

चन्द्रकला, पं० ईश्वरी प्रसाद शर्मा, प्र० रिखबदास वाहिती, कलकत्ता, प्रथम संस्करण १९२१, द्वितीय संस्करण १९२४।

---

१. लवकुश, पं० नरोत्तम व्यास, द्वितीय संस्करण सं० १९७८, भूमिका।
२. प्रा० स्था०—चै० पु०, गायघाट, पटना सिटी।
३. भारतीय उपाख्यान माला, चतुर्वेदी द्वारका प्रसाद शर्मा, द्वितीय संस्करण भूमिका।
४. प्रा० स्था०—आ० भा० पु०, काशी।
५. उपरिवत्।
६. उपरिवत्।
७. उपरिवत्।
८. उपरिवत्।

सती बेहुला, ले० पारसनाथ त्रिपाठी, प्र० आर० एल० वर्म्मन एंड को०, कलकत्ता, द्वितीय संस्करण १९२५ ई० ।[१]

महासती अनुसूया, ले० जगदीश झा 'विमल', प्र०—एस० आर० बेरी एंड कम्पनी, २०१, हरिसन रोड, कलकत्ता, द्वितीय संस्करण सन् १९२६ ई० ।[२]

महासती वृन्दा, ले० रामकृष्ण शर्मा, प्र० एस० आर० बेरी एंड कम्पनी, कलकत्ता, द्वितीय संस्करण १९२६ ई० ।[३]

दमयन्ती, ले० भगवान दीन पाठक, प्र० इंडियन प्रेस, लिमिटेड, प्रयाग, १९२६ ई० ।[४]

सती सुलक्षणा, ले० जगदीश झा 'विमल', प्र०—एस० आर० बेरी एंड कम्पनी, २०१, हरिसन रोड, कलकत्ता, तृतीय संस्करण १९२७ ई० ।[५]

सुभद्रा, ले० कार्तिकेय चरण मुखोपाध्याय, प्र० रामलाल वर्मा, प्रोप्राइटर, 'वर्म्मन प्रेस' और 'आर० एल० वर्म्मन एंड को०', कलकत्ता, प्रथम संस्करण मार्गशीर्ष सं० १९८३ वि० (१९२७ ई० ।)[६]

युधिष्ठिर, ले० शशिभूषण वसु, अनुवादक का नाम नहीं दिया हुआ है । प्रकाशक इंडियन प्रेस, लिमिटेड, प्रयाग १९२७ ई० ।[७]

देवी पार्वती, ले० जहूरबख्श, अ० कृष्ण कुमारी, प्र० गंगा पुस्तकमाला कार्यालय, लखनऊ १९२७ ई० ।[८]

पशुपत प्राप्ति, ले० विष्ण नरहर ललित हरिकीर्तनाचार्य, प्र० ग्रन्थाकार, काशी, प्रथम संस्करण १९२७ ई० ।[९]

श्री रामचरित्र, ले० श्री चिन्तामणि विनायक वैद्य, एम० ए०, अ०—श्रीभास्कर रामचन्द्र भालेराव, प्र० सस्ता साहित्य मंडल, अजमेर, प्रथम वार १९२८ ई० ।[१०]

बाल आख्योपन्यास, प्र० इंडियन प्रेस प्रा०लि०, प्रयाग, तृतीय संस्करण १९२८ ।[१०]

सती उषा, ले० शिवयत्न सिंह, प्र० एस० आर० बेरी एंड कम्पनी, कलकत्ता, द्वितीय संस्करण १९२८ ई० ।[११]

---

१. आ० भा० पु० की पुस्तकसूची ।
२. प्रा० स्था०—आ० भा० पु० काशी ।
३. आ० भा० पु० की पुस्तकसूची ।
४. प्रा० स्था०—आ० भा० पु० काशी ।
५. प्रा० स्था०—आ० भा० पु० काशी ।
६. उपरिवत् ।
७. उपरिवत् ।
८. आ० भा० पु० की पुस्तकसूची ।
९. प्रा० स्था०—आ० भा० पु० काशी ।
१०. प्रा० स्था०—आ० भा० पु० काशी ।
११. प्रा० स्था०—प० वि० पु० पटना ।

देवर्षि नारद, ले०—इन्द्रनारायण द्विवेदी, प्र० गीता प्रेस, गोरखपुर, प्रथम संस्करण १९३१ ई०।[1]

योगेश्वर कृष्ण, ले०—चमूपति एम० ए०, प्र० मुख्याधिष्ठाता, गुरुकुल विश्वविद्यालय, कांगड़ी, हरिद्वार १९३१ ई०।[2]

भक्त पंचरत्न, सं०—हनुमान प्रसाद पोद्दार, प्र० घनश्याम दास जालान, गीता प्रेस, गोरखपुर, प्रथम सं० १९३१ ई०, द्वितीय सं० १९३२ ई०, तृतीय सं० १९३४ ई०, चतुर्थ सं० १९३६ ई०।[3] इस पुस्तक का प्रथम सस्करण ५२५० का और शेष संस्करण पाँच-पाँच हजार के थे, अर्थात् केवल पाँच वर्षों में इस पुस्तक की २२२५० प्रतियाँ मुद्रित हुईं।

देवर्षि नारद, ले०—चतुर्वेदी पं० श्री द्वारका प्रसाद शर्मा तथा पं० इन्द्रनारायण द्विवेदी, मुद्रक तथा प्रकाशक—गीता प्रेस, गोरखपुर, प्रथम संस्करण १९३१ ई०।[4]

भागवतरत्न प्रह्लाद, ले० चतुर्वेदी पं० श्री द्वारकाप्रसाद शर्मा तथा पं० श्री इन्द्रनारायण द्विवेदी, प्र०—गीता प्रेस, गोरखपुर, प्रथम संस्करण ३२५०, १९३२ ई०।[5]

शैव्या हरिश्चन्द्र, ले० पं० कार्तिकेयचरण मुखोपाध्याय, प्र०-हिन्दी पुस्तक एजेंसी, २०३ हरिसन रोड, कलकत्ता, प्रथम बार-१९३२ ई०।[6]

सावित्री सत्यवान, ले० पं० कार्तिकेय—चरण मुखोपाध्याय, प्र० हिन्दी पुस्तक एजेंसी, कलकत्ता, प्रथम बार १९३२ ई०।[7]

पंच सती, ले०—देवीदत्त शुक्ल, प्र० इंडियन प्रेस लि०, प्रयाग, १९३२ ई०।[8]

रामायणीय कथा कानन, ले० रामनाथ पांडेय, प्र० कलकत्ता पुस्तक भंडार, कलकत्ता, प्रथम संस्करण १९३२ ई०।[9]

भक्त चन्द्रिका, सं० हनुमान प्रसाद पोद्दार, मुद्रक तथा प्रकाशक—घनश्याम दास जालान, गीता प्रेस, गोरखपुर।[10]

महाभारतीय सुनीति कथा, ले०—राम दहिन मिश्र, प्र० ग्रन्थमाला कार्यालय, नवीन संस्करण १९३५ ई०।[11]

---

१. आ० भा० पु० की पुस्तकसूची।
२. प्रा० स्था—आ० भा० पु० काशी।
३. प्रा० स्था०—मा० पु०, पटना। सूचनाएँ चतुर्थ संस्करण के मुखपृष्ठ से ली गयी हैं।
४. प्रा० स्था०—आ० भा० पु०, काशी।
५. उपरिवत्।
६. उपरिवत्।
७. उपरिवत्।
८. प्रा० स्था०—आ० भा० पु० काशी।
९. उपरिवत्।
१०. प्रा० स्था०—आ० भा० पु० काशी।
११. उपरिवत्।

आदर्श भक्त सं०—हनुमान प्रसाद पोद्दार, मुद्रक तथा प्रकाशक, प्र० सं० (५२४०) १९३३ ई०, द्वितीय सं० (५०००) १९३४ ई०, तृतीय सं० (३०००) १९३८ ई०।[1] इस प्रकार ५ वर्षों में इस पुस्तक की १३२४० प्रतियाँ मुद्रित हुईं।[2]

ययाति, ले०-बनवारी लाल सेवक, प्र०-राम नारायण लाल, पब्लिशर, इलाहाबाद, प्रथम स० १९३३ ई०।[3]

भक्त प्रह्लाद, ले० प्रबोधचंद्र मिश्र, प्र०—विद्या भास्कर शुक्ल, धर्म ग्रन्थावली, प्रयाग, प्रथम संस्करण १९३३ ई०।[4]

धार्मिक चरित्र, ले० ज्वाला प्रसाद सिंह, प्र०-सद्ज्ञान सदन, इन्दौर-, १९३३ई०।[5]

भगवान रामचन्द्र, ले० विद्या भास्कर शुक्ल, प्र० धर्म ग्रन्थावली, दारागंज, प्रयाग, १९३३ ई०।[6]

भक्त ध्रुव, ले० हर्षवर्द्धन शुक्ल, प्र० धर्म ग्रन्थावली, प्रयाग, प्रथम सं० १९३३ ई०।[7]

आदर्श भक्त, ले०-हनुमान प्रसाद पोद्दार, प्र० गीताप्रेस, गोरखपुर, प्रथम संस्करण १९३३ ई०।[8]

महावीर हनुमान जी, ले०-पं० रूपनारायण पांडेय, प्र०-विष्णु नारायण भार्गव, अध्यक्ष-हिन्दुस्तानी बुक डिपो, लखनऊ, १९३४ ई०।[9]

महारथी अर्जुन, ले०—राम बहोरी शुक्ल, प्र०-विद्या भास्कर बुक डिपो, काशी, प्रथम सं० १९३४ ई०।[10]

महारथी अर्जुन, ले०-पं० रूपनारायण पाण्डेय, प्र०-पं० विष्णु नारायण भार्गव, अध्यक्ष—हिन्दुस्तानी बुक डिपो, लखनऊ, सन् १९३५ ई०।[11] इसके प्रथम संस्करण का प्रकाशन-काल १९३६ ई० के पूर्व होना चाहिए।

इस प्रकार, इस युग में प्रकाशित पौराणिक कथाओं की संख्या, उनकी संस्करण संख्या और प्रत्येक संस्करण की मुद्रित प्रतियों की संख्या को देखने से यह स्पष्ट हो जाता है कि हिन्दी पाठक-वर्ग में ऐसी कथाओं की लोकप्रियता पहले की अपेक्षा दिनोदिन बढ़ती

---

१. प्रा० स्था०—मा० पु० पटना। सूचनाएँ तृतीय संस्करण के मुखपृष्ठ से प्राप्त की गयी हैं।
२. उपरिवत्।
३. प्रा० स्था०—आ० भा० पु० काशी।
४. उपरिवत्।
५. उपरिवत्।
६. उपरिवत्।
७. उपरिवत्।
८. उपरिवत्।
९. प्रा० स्था०—आ० भा० पु०, काशी।
१०. प्रा० स्था०—आ० भा० पु० काशी।
११. प्रा० स्था०—आ० भा० पु०, काशी।

हमें इन पुस्तकों के प्रति वर्ष तीन-तीन हजार के संस्करण करते देख आश्चर्य से दाँतो तले उँगली दबाते हैं और कहते हैं, 'हिन्दी में एकाएक इतने पाठक कहाँ से पैदा हो गए ? हमलोग एक अत्युपयोगी पुस्तक की केवल १००० या ५०० कापियों का संस्करण ५ साल में बेच पाते हैं और वर्मन कम्पनी साल में अपनी पुस्तकों की २५००० प्रतियाँ हिन्दी संसार में खपा देती है । वह कौन सा बीजमन्त्र है. जिसमें इच्छानुसार ग्राहक पैदा किए जा सकते हैं ? वह कौन सी तर्कीब है, जिससे एक पुस्तक की हजार कापियाँ शीघ्र से शीघ्र बेची जा सकती हैं ।....

......लोग कहते हैं, भारत में मुद्रण-कला का निर्वाह कैसे हो ? यहाँ तो लोग एक पैसा जुजमी पुस्तकें खरीदना चाहते है ? प्रयाग के इंडियन प्रेस ने अपना हजारों रुपया खर्चकर रामायण का एक सर्वांग सुन्दर, सचित्र संस्करण प्रकाशित किया पर १० वर्ष बीत जाने पर भी उसकी सन्तोषजनक बिक्री न हुई; आखिर उसे आधी कीमत में बेचना पड़ा । लेकिन हमारा अनुभव इस बात को मानने से लिए तैयार नहीं है । हमने जब से इस क्षेत्र में पैर रखा है तबसे हमने बराबर बढ़िया, नेत्ररंजक और सचित्र पुस्तकें निकालने का प्रयत्न किया है । लोगों में रुचि उत्पन्न करना अपना काम है । हमने जैसा क्षेत्र निर्माण किया, वैसी ही लोगों में रुचि भी उत्पन्न हो गयी । यही कारण है कि आज-कल जितनी खपत हमारी पुस्तकों की है, हिन्दी में उतनी खपत शायद अन्य प्रकाशकों की पुस्तकों की न होगी और इसी से समस्त हिन्दी संसार में हमारा वर्म्मन प्रेस सुन्दर छपाई करने में आदर्श समझा जा रहा है ।

" 'रमणी रत्नमाला', 'आदर्श ग्रन्थमाला, 'इतिहास ग्रन्थमाला' आदि आजकल हमारे यहाँ से पाँच मालाएँ ही प्रधान रूप से निकल रही है । जिस समय हमने इनके निकालने में हाथ लगाया था उस समय हमें यह आशा न थी कि हिन्दी जनता हमारी इन पुस्तकों का इतना आदर करेगी । किन्तु अब देखते है कि हम जो भी नयी पुस्तक निकालते हैं, उसका छै सात महीने के अन्दर ही नया संस्करण करना पड़ता है । ये पुस्तकें केवल नयनाभिराम ही नहीं होतीं; भाषा की सुन्दरता और विषय की महत्ता में भी देश के सैंकड़ों नामी पत्र सम्पादकों ने उन्हें उच्च स्थान दिया है । अनेक कन्या पाठशालाओं और सरकारी स्कूलों में भी उक्त मालाओं की पुस्तकें पढ़ायी तथा उपहार में दी जाती हैं ।"[१]

वर्म्मन प्रेस और आर० एल वर्म्मन एंड कंपनी, कलकत्ता से रमणी रत्नमाला, 'आदर्श ग्रन्थ माला' तथा 'बाल बंधुमाला' के अंतर्गत पौराणिक कथा-पुस्तकें प्रकाशित होती थीं । इन प्रकाशन-संस्थाओं से, जो एक ही व्यक्ति के स्वत्वाधीन थीं, प्रकाशित पौराणिक कथाएँ हिन्दी पाठकों में सर्वाधिक लोकप्रिय हुईं । आर० एल वर्म्मन एंड को० की व्याव-सायिक सफलता देखकर कलकत्ते तथा बाहर की दशाधिक प्रकाशन संस्थाओं ने विभिन्न

---

१. चिन्ता, ले०—नवजादिक लाल श्रीवास्तव, प्र० रामलाल वर्मा, द्वितीय संस्करण १९७९ वि०. प्रकाशकीय

रचना वर्ष	पुस्तक का नाम	लेखक	पृ० सं०
१९२१	खरा सोना	जगदीश झा विमल	३२
	टापू की रानी या समुद्र की सैर	ईश्वरी प्रसाद शर्मा	७०
	तरंग	राधिकारमण प्रसाद सिंह	७१
	पुनरुत्थान	कृष्णलाल वर्मा	६९
	बात की चोट	मदनमोहन लाल दीक्षित	७०
	वनदेवी	बालदत्त पांडेय	७०
	वरदान	प्रेमचन्द	६
	विचित्र संसार अथवा लाले वो बच्चे	ऋपीश्वरशरण गुप्त	६९
	सुशीला या स्वर्गदेवी	छविनाथ पांडेय	६९
१९२२	अंजना देवी	रामस्वरूप शर्मा शार्दूल	७१
	आत्मविजय	विश्वम्भर सहाय 'प्रेमी'	७२
	आदर्श महिला	श्रीराम बेरी	७१
	अनाथ सरला	विश्वम्भर सहाय 'प्रेमी'	७३
	करुणा देवी	मणिराम शर्मा	७१
	कृष्ण कुमारी	हरदीप नारायण सिंह	७३
	जीवन ज्योति	जगदीश झा विमल	७२
	जीवन या वमविभ्राट्	ब्रह्मचारी प्रभुदत्त शर्मा	७४
	दुलारी बहू	श्रीकृष्ण हसरत	७३
	निकुंज	प्रताप नारायण श्रीवास्तव	७४
	पतितोद्धार	जंगबहादुर सिंह	७१
	प्रेमाश्रम	प्रेमचन्द	८
	भागवन्ती	सुदर्शन	७३
	महारानी शशिप्रभा देवी	मणिराम शर्मा	७२
	संसार रहस्य अथवा अधःपतन	प्रसिद्ध नारायण सिंह	७४
	सत्याग्रह की मूर्ति गंगोत्तरी	शेरसिंह काश्यप	७२
	सुन्दरी	कुन्ती	७४
	सुहागिनी	चंडिका प्रसाद मिश्र	७२
	हेरफेर	मोहन	७३
१९२३	आदर्श माता	पारसनाथ त्रिपाठी	७५
	उपेक्षिता	लक्ष्मीनारायण गुप्त	७६
	कामिनी	विमला देवी चौबरानी	७५
	गौरी शंकर	मदारी लाल गुप्त	३७

रचना वर्ष	पुस्तक का नाम	लेखक	पृ० सं०
१९२५	उषा	शिवदास गुप्त 'कुसुम'	८३
	कमला कुसुम	गिरिजा देवी	८१
	कर्त्तव्याघात	देवनारायण द्विवेदी	८१
	कलकत्ता रहस्य	बेचन शर्मा उग्र	३८
	क्षमा	श्रीनाथ सिंह	८३
	प्राणनाथ	जी० पी० श्रीवास्तव	३५
	भीषण पाप और उसका परिणाम	गुरांदित्ता खन्ना	८१
	महात्मा की जय	व्रजकृष्ण गुटू	८३
	माधुरी	गंगा प्रसाद सिंह 'विशारद'	८२
	रंगभूमि	प्रेमचन्द	११
	रमणी रहस्य	गौरीशंकर शुक्ल 'पथिक'	८१
	सन्देह	गिरिजादत्त शुक्ल 'गिरीश'	४१
१९२६	अपूर्व संयोग	जगन्नाथ प्रसाद शर्मा,	८३
	अबला	रमाशंकर सक्सेना	८४, ९१
	कायाकल्प	प्रेमचन्द	१५
	जयश्री	ज्ञानचन्द्र शास्त्री	८४
	देहाती दुनिया	शिवपूजन सहाय	८५
	परोपकारी	जहूरबख्श 'हिन्दी कोविद'	८६
	प्रेमपथ	भगवती प्रसाद वाजपेयी	४२
	मंगल प्रभात	चंडी प्रसाद हृदयेश	८५
	महामाया	हरदीप नारायण सिंह	८४
	मानिक मन्दिर	मदारी लाल गुप्त	३७
	रमणी रहस्य	जगदीश झा विमल	३३
	लोकवृत्ति	जगन्मोहन वर्मा	८६
	विचित्र योगी	द्वारका प्रसाद मौर्य	८४
	शान्ता	रामकिशोर मालवीय	८५
	संन्यासिनी	प्रफुल्लचन्द्र ओझा 'मुक्त'	४४
	सोने की प्याली	विश्व	८६
१९२७	अवलाओं का इन्साफ	स्फुरना देवी	८९
	गंगा जमुनी	जी० पी० श्रीवास्तव	३६
	गुणलक्ष्मी	देवबली सिंह	८७
	चन्द हसीनों के खतूत	बेचन शर्मा 'उग्र'	३९
	चारुशीला या कुत्सित कांड	लाला रुद्रनाथ सिंह	८८

रचना वर्ष	पुस्तक का नाम	लेखक	पृ० सं०
१९२८	विदा	प्रतापनारायण श्रीवास्तव	९१
	विधवाश्रम	जमुनादास मेहरा	९३
	स्मृतिकुंज	'निर्वासित ग्रेजुएट'	९०
	हृदय का काँटा	कुमारी तेजरानी दीक्षित	९२
१९२९	अनाथ	जगदीशचन्द्र जी शास्त्री	९६
	अबलाओं के आँसू	एम० एल० सोजतिया 'प्रभात किरण'	५२
	उस ओर और नेत्रहीना	'एक कहानी प्रेमी'	९८
	औरतों के गुलाम	एम० एल० साजतिया 'प्रभात किरण'	५२
	कसौटी	विश्वनाथ सिह शर्मा	९६
	गिरिबाला	व्रजकृष्ण गुटू	९७
	घृणामयी	इलाचन्द्र जोशी	९८
	तुर्क रमणी	विश्वम्भर नाथ जिज्जा	९४
	त्यागमयी	भगवती प्रसाद वाजपेयी	४३
	दिल्ली का व्यभिचार	ऋषभचरण जैन	४९
	निर्वासिता	अनूपलाल मंडल	५५
	प्रणय	देवनारायण द्विवेदी	९७
	प्रतिज्ञा	प्रेमचन्द	१८
	भिखारिणी	विश्वम्भर नाथ शर्मा 'कौशिक'	९५
	मा	विश्वम्भर नाथ शर्मा 'कौशिक'	९५
	मास्टर साहब	ऋषभचरण जैन	४८
	मुसकान	भगवती प्रसाद वाजपेयी	४३
	रूबिया	अवध उपाध्याय	९४
	वेश्यापुत्र	ऋषभचरण जैन	४८
	शुक्ल और सोफिया	ठाकुर कल्याण सिह शेखावत	९७
	सेठजी या सच्चा मित्र	रामस्वरूप शर्मा वैद्य	९६
	सोहागरात का चाँद	एम० एल० सोजतिया 'प्रभात किरण'	५३
१९३०	अरुणोदय	गिरिजा दत्त शुक्ल 'गिरीश'	४१
	कंकाल	जयशंकर प्रसाद	५९
	गदर	ऋषभचरण जैन	५०
	गहरी दोस्ती का फल	छोटेराम शुक्ल	९९
	गोरी	रमाशंकर सक्सेना	१०१
	घिरचा	व्यग्र	१०१
	छूईमुई	शिलीमुख	९९

रचना वर्ष	पुस्तक का नाम	लेखक	पृ० सं०
१९३१	भ्रातृप्रेम	ठाकुर लक्ष्मीनारायण सिंह 'सुधांशु'	१२०
	मिलन पूर्णिमा	जगमोहन विकसित	१०३
	रहस्यमयी	ऋषभचरण जैन	५०
	लतखोरी लाल	जी० पी० श्रीवास्तव	३६
	विधवा	हेरम्ब मिश्र	१०३
	वेदना	विश्वनाथ सिंह शर्मा	१०२
	समाज की वेदी पर	अनूपलाल मंडल	५५
	स्फुलिंग	जहूरबख्श	१०२
१९३२	अद्भुत वनवीर (भाग-१)	कैलाश बिहारी	१०५
	अद्भुत वनवीर (भाग-२)	महावीर प्रसाद	१०५
	कर्मभूमि	प्रेमचन्द	२१
	कलंक कालिमा	दुर्गाप्रसाद खत्री	२८
	कमला	रूपनारायण पाण्डेय	१०६
	कसक	रामाविलास शुक्ल 'उदय'	१०५
	किसान की बेटी	नरसिंह राम शुक्ल	१०६
	कुवेर की चाकरी	मुकुर	१०६
	चन्द्रग्रहण	कांचीनाथ झा 'किरण'	१०४
	तपोभूमि	जैनेन्द्र कुमार और ऋषभचणजैन	८५
	तलाक	प्रफुल्लचन्द्र ओझा मुक्त	४५
	दिल की आग उर्फ दिल जले की आह	जी० पी० श्रीवास्तव	३५
	नारी हृदय	शिवरानी देवी	१०६
	प्यास	कृपानाथ मिश्र	१०४
	फूलरानी	केदारनाथ खुरशीद	१०५
	बलिदान की चिनगारियाँ	सोजतिया 'प्रभातकिरण'	५४
	बाबू साहब	गिरिजादत्त शुक्ल 'गिरीश'	४२
	मुन्नी की डायरी	आदित्य प्रसन्न राय	१०५
	माया	चंडिका प्रसाद मिश्र	१०३
	माधुरी	कन्हैयालाल जैन	१०४
	मेरी आह	परिपूर्णानन्द वर्मा	१०६
	लखपती कैसे हुआ ?	आनन्दि प्रसाद श्रीवास्तव	१०४
	विलायती उल्लू	जी० पी० श्रीवास्तव	३६
	साकी	अनूपलाल मंडल	५६

रचना वर्ष	पुस्तक का नाम	लेखक	पृ० सं०
१९३४	पराजय	प्रभावती भटनागर	११३
	प्रतिमा	गोविन्दवल्लभ पंत	११०
	प्रेमनिर्वाह	भगवती प्रसाद वाजपेयी	४४
	बिजली का पंखा	छेदी लाल गुप्त	११२
	मधुवन	वृन्दावन विहारी	१११
	मालती	सुरेन्द्र शर्मा	१३
	राक्षाबन्धन	देवचरण	१११
	रूपरेखा	अनूपलाल मंडल	५६
	लालिमा	भगवती प्रसाद वाजपेयी	४४
	सच्ची झूठ	लाला रामजी दास वैश्य	११०
	हीरे की अँगूठी	जगदम्बा देवी	११२
१९३५	अपराधी कौन	जीवनदास अग्रवाल	११८
	आत्मदाह	चतुरसेन शास्त्री	२७
	इन्दिरा बी० ए०	सुदर्शन लाल त्रिवेदी	११६
	एक रात	पुरुषोत्तमदास गौण कोमल	११७
	कर्त्तव्यपुरी की रानी	अवध उपाध्याय	११४
	घर की राह	इन्द्र वसावड़ा	११६
	प्राणवल्लभा	देवीदत्त शुक्ल	११७
	मदारी	गोविन्दवल्लभ पन्त	११५
	भूल पर भूल	वेणीराम त्रिपाठी श्रीमाली	११६
	भूला यात्री	बांके लाल चतुर्वेदी	११४
	लन्दन में भारतीय विद्यार्थी	राजकुमार मानसिंह	११३
	वे चारों	पुरुषोत्तम दास गौड़ कोमल	११६
	श्यामा	कृष्ण विहारी प्र० सिंह	११३
	सद्गुणी सुशीला	चन्द्रशेखर पाठक	३१
	समाज की बात	आदित्य मिश्र कुमार	११४
	सुनीता	जैनेन्द्र कुमार	५८
	स्वयंसेवक	द्वारका प्रसाद	११४
	हिन्दू विधवा या सती गौरव	के० सी० चटर्जी 'प्रेमी'	११[illegible]
१९३६	इन्द्रजाल	रघुनाथ सिंह	१२[illegible]
	उर्वशी उर्फ सजायाफ्ता प्रोफेसर	गोपी नाथ मिश्र	११[illegible]
	कंचन	वेनी प्रसाद वाजपेयी मंजुल	११[illegible]

ऐतिहासिक उपन्यास

रचना वर्ष	पुस्तक का नाम	लेखक	पृ० सं०
१९२१	वीर बाला	लक्ष्मीसहाय माथुर 'विशारद'	१२३
१९२२	शाहजादा और फकीर तथा उमरा की बेटी	रघुवर प्रसाद द्विवेदी	१२३
	सूर्यास्त	गोविन्द वल्लभ पन्त	१२४
१९२३	सुर सुन्दरी	मुरलीधर वर्मा	१२५
	स्वदेश की बलिवेदिका	एक देशभक्त	१२४
१९२४	सुहराब रुस्तम	रामनाथ पाण्डेय	१२५
१९२५	जादूगर	गौरीशंकर शुक्ल 'पथिक'	१२५
	तुर्क रमणी	विश्वम्भर नाथ जिज्जा	१२५
	नरेन्द्र भूषण	माताशरण मालवीय	१२५
१९२६	प्रेमपथिक	रामचन्द्र मिश्र	१२६
१९२७	गढ़ कुंडार	वृन्दावन लाल वर्मा	१२२
	पतन	भगवतीचरण वर्मा	१२६
१९२८	बंगाल की बुलबुल	जमुनादास मेहरा	१२७
	मुगल दरबार रहस्य उपनाम अमृत और विष	रामकृष्ण शुक्ल	१२६
१९२९	अमर सिंह राठौर	विश्वनाथ सिंह पोखरैल	१२७
	वीर बादल	जगदीश झा विमल	१२७
१९३०	केन	कृष्णानन्द गुप्त	१२७
	वैरागढ़िया राजकुमार	चक्रधर सिंह	१२८
१९३२	खवास का व्याह	चतुरसेन शास्त्री	१२८
	मायाचक्र	चक्रधर सिंह	१२८
	राजपूत रमणी	अम्बलिका देवी	१२९
१९३३	दिल्ली की शाहजादी	रामप्यारे त्रिपाठी	१२९
	विराटा की पद्मिनी (प्र० का० १९३६)	वृन्दावन लाल वर्मा	१२२
१९३६	प्रभावती	सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला'	१३०
	प्यासी तलवार	सुदर्शन लालजी त्रिवेदी	१३०
	विस्मृत सम्राट्	ब्रजनन्दन सहाय	१३०
	शरणवत्सल हम्मीर	चौधरी शिवनारायण लाल वर्मा	१३१
	लखनऊ रहस्य	श्रीकृष्ण हसरत	१३१
	सम्राट् चन्द्रगुप्त	महावीर प्रसाद गहमरी	१६१

अनूदित उपन्यास

(*बँगला, सामान्य*)

रचना वर्ष	पुस्तक का नाम	लेखक	पृ० सं०
१९१८	अभागिनी	जलधर सेन	१५८
	अभागिनी	भवानीचरण घोष	१८७
	नवीना	दामोदर मुखोपाध्याय	१५५
१९१९	अदृष्ट	तारकनाथ गंगोपाध्याय	१८७
	अभिमानिनी	शरचन्द्र घोषाल	१८८
	कलंक	— —	१८८
	कार्यक्षेत्र	दामोदर मुखोपाध्याय	१५५
	चित्र	प्रियनाथ	१८८
	दो साहित्य सेवी	प्रभात कुमार मुखोपाध्याय	१५७
	रमा सुन्दरी	,, ,,	१५६
	बड़ी बहू	योगेन्द्रनाथ चट्टोपाध्याय	१६०
	विरागिनी	— —	१८७
१९२०	आदर्श रमणी	जलधर सेन	१५९
	कलंकिनी	योगेन्द्रनाथ चट्टोपाध्याय	१६०
	कर्म्म मार्ग	हरिदास हलधर	१९३
	गुलाब में काँटा	दीनेन्द्र कुमार राय	१९४
	छिन्नलता वा मुरझाई कली	स्वर्णकुमारी देवी	१९१
	दयावती	मेजर वामनदास वसु	१९३
	बड़े घर की बड़ी बात	जलधर सेन	१५९
	भाग्यचक्र	उमाशंकर द्विवेदी	१९०
	सुकुमारी (नवीना)	दामोदर मुखोपाध्याय	१५५
१९२१	अपूर्व आत्मत्याग	सुरेन्द्र मोहन भट्टाचार्य	१९७
	इन्दुमती वा रत्नदीप	प्रभात कुमार मुखोपाध्याय	१५७
	बिखरा फूल	स्वर्णकुमारी देवी	१९२
	रहस्य कुंड वा आश्चर्यजनक गुप्त वृत्तान्त	भुवनचन्द्र चट्टोपाध्याय	१९४
	सरोज बाला	शरच्चन्द्र दास	१९६
१९२१	होमर गाथा	गिरिजा कुमार घोष	१९५
१९२२	गौरमोहन	रवीन्द्रनाथ ठाकुर	१६१
	रानी जयमती	शरच्चन्द्र धर	१९७

रचना वर्ष	पुस्तक का नाम	लेखक	पृ० सं०
१९२५	ऋणपरिशोधक	कालीप्रसन्न दास गुप्त	२०२
१९२६	अज्ञात दिशा की ओर	सौरीन्द्र मोहन मुकर्जी	२१६
	अपराधिनी	हरिसाधन मुखोपाध्याय	२०६
	अरक्षणीया	शरच्चन्द्र चट्टोपाध्याय	१६९
	कुसुम	,, ,,	१६८
	जयमाला	,, ,,	१६७
	नवविधान	,, ,,	१६८
	प्रिया	देवेन्द्र प्रसाद घोष	२०५
	बैकुंठ का बिल	शरच्चन्द्र चट्टोपाध्याय	१६८
	मंझली दीदी	,, ,,	१६९
	सर्वस्व समर्पण	निरुपमा देवी	२०५
	सहधर्मिणी	पाँच कौड़ी दे	२४९
	काला साँप	पाँच कौड़ी दे	२४९
१९२७	अधःपतन	— —	२०८
	देहाती समाज	शरच्चन्द्र चट्टोपाध्याय	१६९
	पाप की छाप	— —	२०१
१९२८	घरेलू घटना	गोपालराम गहमरी	२०९
	मिलन मन्दिर	सुरेन्द्र मोहन भट्टाचार्य	२०९
	विधाता का विधान	निरुपमा देवी	२०८
१९२८-२९	श्रीकान्त	शरच्चन्द्र चट्टोपाध्याय	१७०
१९२९	काँटों का फूल	नरेशचन्द्र सेन गुप्त	२१०
	गोरा	रवीन्द्रनाथ ठाकुर	१६१
	छुटकारा	शरच्चन्द्र चट्टोपाध्याय	१७०
	टूटी कली	स्वर्णकुमारी देवी	१९२
	दौलत का नशा	— —	२०९
	पथ के दावेदार	शरच्चन्द्र	१७८
१९२९-३०	धोखाधड़ी	चारुचन्द्र वंद्योपाध्याय	२११
१९३०	लीला	चारुशीला मित्र	२११
	लेनदेन	शरच्चन्द्र चट्टोपाध्याय	१७१
१९३१	विवाह मन्दिर	नारायणचन्द्र भट्टाचार्य	२१२
१९३२	दीप निर्वाण	स्वर्ण कुमारी देवी	२१४
	सबला	— —	२१४
१९३३	गृहदाह	शरच्चन्द्र चट्टोपाध्याय	१७१

रचना वर्ष	पुस्तक का नाम	लेखक	पृ० सं०
—	आदर्श मित्र	प्रभात कुमार मुखोपाध्याय	१५८
—	ब्राह्मण की बेटी	शरच्चन्द्र चटर्जी	१७८
—	विमला	दामोदर मुखोपाध्याय	१५६
—	शुभदा	—	१७९
—	सविता	शरच्चन्द्र चटर्जी	१७८

(बँगला, ऐतिहासिक)

१९१९	सीताराम	बंकिमचन्द्र चट्टोपाध्याय	२२८
	हेमचन्द्र	,,	२२८
१९२०	मेहरुन्निसा	हरिसाधन मुखोपाध्याय	२२७
	लाल चिट्ठी	,,	२२७
१९२१	करुणा	राखालदास वन्द्योपाध्याय	२२९
	साहसी सुन्दरी या समुद्री डाकू	दीनेन्द्र कुमार राय	२४६
	सोने की राख या पद्मिनी	—	२३६
१९२२	महाराज नन्दकुमार को फाँसी	—	२३६
	राजपूत बाला	प्रमथनाथ चट्टोपाध्याय	२३७
	शशांक	राखालदास वन्द्योपाध्याय	२२९
१९२४	शीला देवी	नलिनीरंजन चौधरी	२३७
१९२५	सुर सुन्दरी	—	२३८
१९२६	दीवान गंगा गोविन्द सिंह	चंडीचरण सेन	२३५
	वीरव्रत पालन	हाराणचन्द्र रक्षित	२३८
१९२७	राजकुमार कुणाल	हरप्रसाद जी शास्त्री	२३९
	श्री	पंचानन राय चौधरी	२३८
१९२८	राजपूत नन्दिनी	—	२३९
१९२९	मयूख	राखालदास वन्द्योपाध्याय	२३०
	वीर बाला	चंडीचरण सेन	२३५
१९३०	लीलावती का स्वप्न	मनमोहन राय	२४०
१९३१	राजपूत नन्दिनी	श्री प्रमथनाथ चट्टोपाध्याय	२३१
	वीर पत्नी	नारायण भट्टाचार्य	२४१
१९३५	वीर प्रतिज्ञा	राखालदास वन्द्योपाध्याय	२३०
१९३६	हुगली का इमामबाड़ा	स्वर्णकुमारी देवी	२४१
	कंकणचोर	हरिसाधन मुखोपाध्याय	२२७

रचना वर्ष	पुस्तक का नाम	लेखक	पृ० सं०
१९३५	वैर का बदला	कन्हैयालाल माणिकलाल मुंशी	२१८
१९३६	पूर्णिमा	रमणलाल वसन्तलाल देसाई	२१९

(*मराठी, सामान्य*)

१९१६	नन्दन भवन	— —	१८९
१९२२	प्रवासिनी	मनोरमा बाई	१९६
	प्रेम मन्दिर	श्रीपति प्रभाकर भसे	१९५
१९२३	रागिनी	वामन मल्हारराव जोशी	१९९
१९२८	मुझको इससे क्या अथवा मालावार में मोपलों का ग़दर	गणेश दामोदर सावरकर	२०८
१९३०	रंगीलेराजा साहब	चिपलूनकर	२१२

(*मराठी, ऐतिहासिक*)

१९२०	शिवाजी का दाहिना हाथ	प्रभाकर श्रीपतमसे	२३५
१९२१	महेन्द्र मोहिनी	बालकृष्ण दामोदर शास्त्री	२३६
१९२२	सूर्यग्रहण	हरिनारायण आप्टे	२३१
१९२३	वज्राघात	,,	२३१
१९२४	उषाकाल	,,	२३२
	चाणक्य और चन्द्रगुप्त	,,	२३२
	भगिनीद्वय याने मरुभूमिमें जलविन्दु	यशवन्त सूर्याजी देसाई	२३७
१९२५	अजेय तारा	हरिनारायण आप्टे	२३२
	वीर राजपूत	नाथ माधव	२३८
१९३०	मराठा तलवार याने किलेदार कीलड़की	खांडेकर	२४०
—	राष्ट्र पतन अथवा भारतीय स्वाधीनता की सन्ध्या	हरिनारायण आप्टे	२३३

(*उड़िया*)

१९२४	समाज कंटक वा मामा	सरस्वती फकीर मोहन सेनापति	२०१

रचना वर्ष	पुस्तक का नाम	लेखक	पृ० सं०
१९२३	बालिका हरण (विवाह-विप्लव)	—	२४८
	बोलसेविक रहस्य या खून का प्यासा	ब्लेक सीरीज	२४७
	सुन्दर अमेलिया	,,	२४७
१९२४	जवाहरात का गोला	—	२४८
	सुन्दरी हेलीजा	ब्लेक सिरीज	२४८
	हवाई जहाज	,,	२४८
१९२५	आफत की पुड़िया	—	२४९
	खूनी सरपंच	—	२४९
	अरब सरदार	—	२४८
	विचित्र बूढ़ा	—	२४९
१९२६	आत्महत्या या खून	—	२४९
	भूत लीला	—	२४९
१९२७	जेल रहस्य	ब्लेक सिरीज	२४९
१९२८	आखिरी दुश्मन	,,	२५०
१९३१	टार्जन की बहादुरी	एडगर वैलेस	२५०
	हीरे की चोरी	ब्लेक सीरीज	२५०
१९३३	जहरीली सुई	,,	२५०
	नकली नेता	,,	२५१
	प्याले की चोरी	,,	२५०
	पैशाचिक प्रतिहिंसा	,,	२५०
	फाँसी का तख्ता	,,	२५१
	भेदभरा खून	,,	२५०
	रावर्ट ब्लेक को फांसी	,,	२५०
	खूनी तावीज	,,	२५०
१९३४	अद्भुत जाल	,,	२५१
	खूनी डाक्टर	,,	२५१
	चक्करदार चोरी	,,	२५१
	चालाक जोहरी	,,	२५१
	छिपा दुश्मन	,,	२५१
	जबरदस्त ठग	,,	२५१
	बंबई में ब्लेक	,,	२५१
	भयानक षड्यन्त्र	,,	२५१

रचना वर्ष	पुस्तक का नाम	लेखक	पृ०सं०
१९२२	बलिदान	विक्टर ह्यूगो	१९७
१९२३	अहंकार (थाया)	अनातोले फ्रांस	१९८
१९२५	घातक सुधा	बलजाक	२०३
	चुड़ैल	पाल डी कॉक	२०२
	ताया	अनातोले फ्रांस	१९८
१९२७	अनोखा	विक्टर ह्यूगो	२०७
	अवतार	थियोफाइल गाटिये	२०८
१९३३	स्त्री का हृदय	मोपाँसा	२१६

(फ्रेंच, ऐतिहासिक)

रचना वर्ष	पुस्तक का नाम	लेखक	पृ०सं०
१९१४-२१	मोतियों का खजाना	अलेक्जान्डर ड्यूमा	२२१
१९२९	जोसेफ वाल्सेमो		२२०
१९३१	जैसा को तैसा		२२१
	षड़यंत्रकारी		२२१
१९३२	कंठहार		२२२
१९३३	दि ब्लैक ट्यूलिप		२२३
	बादशाह की बेटी		२२३
१९३५	काला फूल		२२३

(रूसी)

रचना वर्ष	पुस्तक का नाम	लेखक	पृ०सं०
१९२१	कप्तान की कन्या	अलेक्जेन्डर पुश्किन	२१०
१९३१	देहाती सुन्दरी	टॉलसटॉय	२१२
	पुनर्जीवन	टॉलसटॉय	२१२
	यौवन की आँधी	तुर्गनेव	२१३
१९३३	अन्ना	टॉलसटॉय	२१६
	पिता और पुत्र	तुर्गनेव	२१७
	शक्ति	ग्लादकोव	२१८
	संघर्ष	तुर्गनेव	२१७

(स्वीडिश)

रचना वर्ष	पुस्तक का नाम	लेखक	पृ०सं०
१९३३	प्रेमचक्र	सेल्मा लेजरलाफ	२१६
	बहिष्कार	,, ,,	२१६

(इटालियन)

रचना वर्ष	पुस्तक का नाम	लेखक	पृ०सं०
१९३३	बेचारी माँ	ग्रेजिया डेलेडा	२१५

पौराणिक कथाएँ

रचना वर्ष	पुस्तक का नाम	लेखक	पृ० सं०
१९१८	द्रौपदी	कात्यायनी दत्त त्रिवेदी	२५४
	महारानी दमयन्ती	मणीराम शर्मा	२५४
	महारानी शैव्या का जीवन-वृत्तान्त	,, ,,	२५४
	महाराणी सीता का जीवन-वृत्तान्त	,, ,,	२५४
१९१९	नल दमयन्ती	नवजादिक लाल श्रीवास्तव	२५४
	पाण्डव वनवास	श्रीमन्त शर्मा	२५४
	सावित्री	बद्रीनाथ भार्गव	२५४
	सावित्री सत्यवान	नवजादिक लाल श्रीवास्तव	२५४
१९२०	अनन्तसती	कृष्णलाल वर्मा	२५५
	देवी द्रौपदी	रामचरित उपाध्याय	२५५
	द्रौपदी	भागमल शर्मा	२५५
	विशाखा का कथा	छोटेलाल	२५५
	सती सामर्थ्य	भगवान दीन पाठक	२५५
	सीता	ईश्वरी प्रसाद शर्मा	२५५
१९२१	एकलव्य	दुर्गा प्रसाद वर्मा	२५६
	चिन्ता	हसरत	२५५
	पतिव्रता	योगेन्द्रनाथ बसु	२५६
	भारतीय उपाख्यान माला	चतुर्वेदी द्वारिका प्रसाद शर्मा	२५६
	लवकुश	नरोत्तम व्यास	२५५
	शकुन्तला	ईश्वरी प्रसाद शर्मा	२५७
	शर्मिष्ठा	हसरत	२५६
	सती महिमा	,, ,,	२५५
	सती विपुला	नरोत्तम व्यास	२५६
१९२२	चिन्ता	नवजादिक लाल श्रीवास्तव	२५५
१९२५	वीर अर्जुन	गणेश शर्मा गौड़	२५७
	वीर बाल पंचरत्न	विमल झा	२५७
	सती देवी	श्रीकृष्ण हसरत	२५७
	सती वेहुला	पारसनाथ त्रिपाठी	२५८
	सावित्री	शिवकुमारी देवी	२५७
	सुदर्शन शशिकला	गुरुगोविन्द श्रीवास्तव	२५७
१९२६	दयमन्ती	भगवान दीन पाठक	२५८

रचना वर्ष	पुस्तक का नाम	लेखक	पृ० सं०
१९३३	भगवान रामचन्द्र	विद्याभास्कर शुक्ल	२६२
	ययाति	वनवारी लाल सेवक	२६२
	आदर्श भक्त	हनुमान प्रसाद पोद्दार	२६२
	सावित्री सत्यवान	जगदीश झा 'विमल'	२६१
१९३४	महारथी अर्जुन	राम बहोरी शुक्ल	२६२
	महावीर हनुमान जी	रूपनारायण पांडेय	२६२
१९३५	उपनिषदों के चौदह रत्न	हनुमान प्रसाद पोद्दार	२६१
	महाभारतीय सुनीति कथा	रामदहिन मिश्र	२६०
	महारथी अर्जुन	रूपनारायण पांडेय	२६२
	राम राज्य	प्रभाशंकर दलपत राय जी पट्टणी	२६१
१९३६	पौराणिक महापुरुष	केदार नाथ गुप्त	२६१
	भक्त चिन्तामणि	रामस्वरूप दास	२६१
	व्यास	विट्ठल शर्मा चतुर्वेदी	२६१
	वीर परशुराम	वेणीराम त्रिपाठी श्रीमाली	२६१
	सती सीता	विमल	२६१
	हनुमान जी की जीवनी	व्रजरत्न दास	२६२
	भक्त चन्द्रिका	हनुमान प्रसाद पोद्दार	२६२